ख़ुतबात ज़ुलफ़क़ार फ़क़ीर

2

इफ़ादात

हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी

तर्तीब

प्रोफ़ेसर मुहम्मद असलम नक़्शबंदी

ख़ुतबात ज़ुलफ़क़ार फ़क़ीर

इफ़ादात

हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबन्दी

तर्तीब

प्रोफ़ेसर मुहम्मद हनीफ़ नक़्शबन्दी मुजद्दिदी

فرید بُک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

ख़ुतबात ज़ुलफ़क़ार फ़क़ीर (2)

इफ़ादात: हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबन्दी

तर्तीब: प्रोफ़ेसर मुहम्मद हनीफ़ नक़्शबन्दी मुजद्दिदी

संस्करण: 2010

पृष्ठ: 318

मूल्य: 120/-

प्रस्तुत-कर्ता:

मुहम्मद नासिर ख़ान

प्रकाशक:

فرید بک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off.: 2158, M.P. Street,
Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-110002
Tel.: 011-23247075, 23289786, 23289159 Fax: 23279998
E-mail: farid@ndf.vsnl.net.in www.faridexport.com

<u>*Name of the Book*</u>

Khutbat Zulfaqar Faqeer (Vol. 2)

By: **Prof. Muhammad Haneef Naqshbandi Mujaddidi**

Edition: 2010 Price: Rs. 120/-

Printed at: Farid Enterprises, Delhi-2

(विषय-सूची)

इस्लाम मेरा पसंदीदा दीन क्यों है?

❋ ❋ ❋

साइंस और इस्लाम

❋ ❋ ❋

हमारा परवरदिगार

❁ ❁ ❁

इश्क़-ए-रसूल
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

❁ ❁ ❁

सोज़-ए-इश्क़ और कैफ़-ए-इल्म

मुसबत और मन्फ़ी सोच

❁ ❁ ❁

सूफ़ियाए किराम और जिहाद

❁ ❁ ❁

सल्फ़ सालिहीन के सबक़ आमोज़ वाक़िआत

❁ ❁ ❁

इस्लाम में औरत का मुक़ाम

❁ ❁ ❁

औरतों की ज़िंदगी के मुख़्तलिफ़ दर्जे

❀ ❀ ❀

पेश-ए-लफ़्ज़

الحمد لله الذى نور قلوب العارفين بنور الايمان وشرح
صدور الصادقين بالتوحيد والايقان صلى الله تعالىٰ على خير
خلقه سيدنا محمد وعلى اله واصحابه اجمعين اما بعد.

इस्लाम ने उम्मते मुस्लिमा को ऐसे मशहूर लोगों से नवाज़ा है जिनकी मिसाल दूसरे मज़हबों में मिलना मुश्किल है। इस ऐतिबार से सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम पहली सफ़ के सिपाही हैं। जिनमें से हर सहाबी ﴿الصحابى كالنجوم﴾ के मिसदाक़ चमकते हुए सितारे की तरह है जिसकी रोशनी में चलने वाले हिदायत पाने की बड़ी बशारत हासिल करते हैं और कामयाबी और हिदायत उनके क़दम चूमती है। उनके बाद ऐसी ऐसी रूहानी शख़्सियतें दुनिया में आयीं कि वक़्त की रेत पर अपने क़दमों के निशान छोड़ गयीं। साइंस के मैदान में भी ऐसी कमाल वाली हस्तियाँ पैदा हुईं कि जिनके नज़रियों और तजुरिबों को बुनियाद बनाकर आज का इंसान चाँद पर क़दम रख चुका है।

मौजूदा दौर की नाबग़ा असर हस्ती, तरीक़त के शहसवार, हक़ीक़त में गहरे, अल्लाह के भेदों के मर्कज़, नूर की किताब ज़ाहिद, आबिद, नक़्शबंदी सिलसिले के ख़ास सरमाया हज़रत मौलाना पीर हाफ़िज़ ज़ुलफ़क़ार मुजद्दी दामत बरकातुहुम हैं। आप परवाने की तरह एक ऐसी पहलूदार हस्ती के मालिक हैं कि

जिस तरफ़ से भी देखा जाए उसमें इंद्रधनुष की तरह रंग समेटे हुए नज़र आते हैं। आपके बयानों में ऐसा असर होता है कि हाज़िरीन के दिल मोम हो जाते हैं। आजिज़ के दिल में यह जज़्बा पैदा हुआ कि इन बयानों को तहरीरी शकल में एक जगह कर दिया जाए तो आम लोगों के लिए फ़ायदा का सबब होंगे। लिहाज़ा आजिज़ ने तमाम ख़ुत्बात को लिखकर हज़रत आलिया दामत बरकातुहुम की ख़िदमत आलिया में सही करने के लिए पेश किए। अल्लाह का शुक्र है कि हज़रत ने अपनी आलमी सतह की मशग़ूलियों के बाजवजूद ज़र्रा नवाज़ी फ़रमाते हुए न सिर्फ़ उनको सही किया बल्कि इनकी तर्तीब वग़ैरह को पसंद भी फ़रमाया। यह उन्हीं की दुआओं और तवज्जेह हैं कि इस आजिज़ के हाथों यह किताब तर्तीब दी जा सकी।

ममनून हूँ मैं आपकी नज़रे इंतिख़ाब का

आजिज़ हज़रत मौलाना मुफ़्ती अहमद अली नक़्शबंदी साहब का बहुत ममनून है कि उन्होंने इस ना चीज़ पर ख़ास शफ़क़त फ़रमाई और इस क़ीमती किताब की तर्तीब में रहनुमाई फ़रमाई। अल्लाह का शुक्र है कि अब यह किताब आपके हाथों में है। अल्लाह तआला मदद करने वालों को बेहतरीन अज्र अता फ़रमाए।

आख़िर में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से दुआ है कि वह इस अदना सी कोशिश को क़ुबूलियत का शर्फ़ अता फ़रमाकर बंदे को भी अपने चाहने वालों में शुमार फ़रमा ले। *(आमीन सुम्मा आमीन)*

डाक्टर शाहिद महमूद नक़्शबंदी

ख़ादिम मक्तबा-तुल-फ़क़ीर फ़ैसलाबाद

अर्ज़-ए-नाशिर

الحمد لوليه والصلوة والسلام على نبيه وعلى آله

وصحبه واتباعه اجمعين الى يوم الدين اما بعد.

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने विदाई हज के ख़ुत्बे के मौक़े पर अपने सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को फ़रमाया,

﴿بلغوا انی ولو آية﴾

"तुम मुझसे जो कुछ सुनो दूसरों तक पहुँचा दो।"

लिहाज़ा सहाबा किराम से लेकर मौजूदा दौर तक उलमा और नेक लोग अपनी बिसात भर यह ज़िम्मेदारी पूरी करते चले आए हैं। हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी साहब दामत बरकातुहुम ने अपने मशाइख़ से इल्म व हिकमत और माअरिफ़त के जो मोती जमा किए और हम तक पहुँचाए, हमने भी अपना फ़र्ज़ जाना कि इन मोतियों की माला बनाकर आम लोगों तक पहुँचाएं ताकि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़रमान मुबारक पर किसी न किसी दर्जे में अमल करने की सआदत हमें भी हासिल हो जाए और हज़रत की बरकत वाली ज़ात का फ़ैज़ान हर ख़ास व आम तक पहुँचे। यह हमारे इदारे का एक मिशन है जो इंशाअल्लाह लगातार जारी रहेगा।

हज़रत अक़्दस दब के बयानों का पहला मजमूआ "इस्लाही बयानात" के उनवान से सन् 1996 ई० में शाए करने की सआदत हासिल हुई थी जिसे मोहतरम प्रो० मुहम्मद असलम साहिब नक़्शबंदी ने अपनी रात दिन की कोशिशों से तर्तीब दिया था। लेकिन अब साथियों के मशवरे पर बयानों के इस मजमूए का नाम अब 'खुत्बाते फ़क़ीर' रख दिया गया है और इस की दूसरी जिल्द आपके हाथों में है। अज़ीज़ मुहम्मद हनीफ़ साहब नक़्शबंदी के अदबी ज़ौक़-शौक़ को देखते हुए यह ज़िम्मेदारी उनको सौंप दी गई। उन्होंने भी इस सदक़ा-ए-जारिया के हासिल करने के लिए अपनी दूसरी मसरूफ़ियतों को एक तरफ़ करके इस काम को आगे रखा। अल्लाह तआला उनके इल्म के पौधे पर अमल के फल लगाकर उनमें इख़्लास की मिठास भर दे। अज़ीज़ डा० शाहिद महमूद साहब ने इस किताब की कम्पोज़िंग बड़े जज़्बे से की है और इसको ख़ूबसूरत बनाने में हमारा दिल खुश कर दिया। अल्लाह तआला उनसे खुश हो और उन्हें अपना शौक़ व जज़्बा नसीब फ़रमाए।

पढ़ने वाले हज़रात की ख़िदमत में ज़रूरी गुज़ारिश यह है कि इस किताब को एक आम किताब समझकर न पढ़ा जाए क्योंकि यह मआरिफ़त के समुंद्र के ऐसे मोतियों की माला है जिनकी क़दर व क़ीमत दिल वाले ही जानते हैं यही नहीं बल्कि यह बयान करने वाले की बेमिसाल फ़साहत व बलाग़त, ज़हानत व दानाई और हलावत व ज़कावत का बहुत क़ीमती इज़्हार है जिससे अहले ज़ौक़ हज़रात को भी नफ़ा उठाने का बेहतरीन मौक़ा मिला है। इसके अलावा इस किताब में कहीं कोई ग़लती हो गई हो या

इसमें और ज़्यादा बेहतरी के लिए कोई सुझाव हो तो इत्तिला देकर अल्लाह तआला के यहाँ अज्र हासिल फ़रमाएं ताकि आइंदा ऐडीशन में उसको सही किया जाए सके। अल्लाह तआला से दुआ है कि हमें सारी ज़िंदगी अपनी रज़ा के लिए यह ख़िदमत अंजाम देने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। *(अमीन सुम्मा आमीन)*

मुफ़्ती अहमद अली नक़्शबंदी
मुदीर शोबः नश्र व इशाअत
जामिया-तुल-हबीब फ़ैसलाबाद

इस्लाम मेरा पसंदीदा दीन क्यों है?

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اما بعد.

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِo

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِo

وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْناً فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْه. قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى فِىْ مَقَامٍ آخَرَ اَلْيَوْ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِىْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْناً o سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ o وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ o وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ o

दीन इंसानी ज़रूरत है

दीन इंसान की रूह के लिए ऐसा है जैसे हवा इंसान के जिस्म के लिए। इंसान पैदा ही मज़हब की फ़िज़ा में होता है ﴿فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِىْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا﴾ दुनिया की तारीख़ इस बात पर गवाह है कि जाहिलियत के ज़माने में अरब सब ख़राबियों में सरदार थे। इस्लाम इस तरह आया जिस तरह सख़्त गर्मी के बाद रहमत की बारिश या अंधेरी रात के बाद दुनिया को चमकाने वाला सूरज।

आज साइंस की तरक़्क़ी ने पूरब व पश्चिम के फ़ासलों को इस तहर समेटकर दिया है कि पूरी दुनिया एक आलमी गाँव बन गई है। पैग़ाम पहुँचाने के ज़रियों ने एक दूसरे के अंदर की बात सुनने व जानने में आसानियाँ पैदा कर दी हैं। नौजवान नसल इंटरनैट वग़ैरह के ज़रिए हक़ाएक़ तक पहुँचने की कोशिश कर रहे हैं। हर मज़हब का यह दावा है कि उनके दामन में सच्चाईयों का ख़ज़ाना मौजूद है। आज के बयान में अलग-अलग दीनों का तक़ाबुली मुताला पेश करके यह साबित किया जाएगा कि इस्लाम मेरा पसंदीदा मज़हब क्यों है?

'इस्लाम' ही पसंदीदा दीन है

इर्शादे बारी तआला है :

﴿إِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْإِسْلَامُ﴾

अल्लाह के नज़दीक पसंदीदा दीन इस्लाम है।

दूसरी जगह इर्शाद फ़रमायाः

﴿وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِيْناً فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ.﴾

और जो चाहेगा इस्लाम के अलावा कोई और दीन तो उसे हर्गिज़ क़ुबूल नहीं किया जाएगा।

फिर एक जगह पर फ़रमायाः

﴿اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِيْناً.﴾

आज के दिन मैंने तुम्हारे दीन को मुकम्मल कर दिया है और मैंने तुम्हारे ऊपर अपनी नेमत को मुकम्मल कर दिया और मैंने तुम्हारे लिए दीने इस्लाम को पसंद किया।

दलील न० 1

दुनिया के दीनों पर 'इस्लाम' की फ़ज़ीलत

दुनिया के बहुत से आसमानी दीन अपने अपने वक़्त पर रब्बुल आलमीन की तरफ़ से भेजे गए। दीने इस्लाम सबसे आख़िर में आया। लिहाज़ा सबसे ज़्यादा कामिल और मुकम्मल है। पहले के दीनों के नाम आमतौर पर किसी शख़्सियत के नाम पर रखे गए या किसी क़बीले के नाम पर। मिसाल के तौर पर यहूद एक क़बीला था। जिसकी वजह से यहूदी मशहूर हो गए। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को जेसुस क्रिस्ट कहते हैं। जिसकी वजह से क्रिशचन मशहूर हुए। ज़रतश्त का मज़हब अपने बानी के नाम पर मशहूर हुआ। बुद्धमत का मज़हब बुद्धा के नाम पर मशहूर हुआ जबकि दीने इस्लाम का मामला अलग है। इस्लाम न किसी आदमी का नाम था, न किसी क़बीले का, न किसी जगह का नाम था। इस्लाम का लफ़्ज़ी मतलब है फ़रमांबरदारी। इंगलिश में कहते हैं To surrender यानी किसी के सामने अपने हथियार डाल देना। मानो जो आदमी कलिमा पढ़कर मुसलमान होता है वह अल्लाह तआला के सामने हथियार डाल देता है। बस दीने इस्लाम अपने नाम की निस्बत और मतलब के एतिबार से दूसरे दीनों पर फ़ज़ीलत रखता है।

दलील न० 2

आसमानी किताब का तारीख़ी जाएज़ा

बनी इस्राईल में हज़ारों अंबिया अलैहिमुस्सलाम गुज़रे। कुछ

पर इल्हामी किताबें भी नाज़िल हुईं। आइए इस बात का जाएज़ा लें कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम के हालात और उनकी किताबों मुनासिब वक़्त पर महफ़ूज़ हो गई थीं या नहीं।

ज़बूर में तहरीफ़ (उलट-फेर)

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर ज़बूर नाज़िल हुई मगर उनकी वफ़ात से पाँच सौ साल बाद लिखी गई। इसमें सौ शायरों का कलाम भी दाख़िल कर दिया गया। जैसे मसनवी रोम, गुलिस्तान और बोस्तान वग़ैरह के कुछ अश्आर बड़े अच्छे हैं फिर भी उनको क़ुरआन पाक में शामिल नहीं किया जा सकता लेकिन उन्होंने अपने वक़्त के सौ शायरों का चुना हुआ कलाम ज़बूर में शामिल कर दिया।

तौरेत में उलट-फेर

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर तौरेत नाज़िल हुई। बाबुल वालों ने छठी सदी क़ब्ल मसीह में बैतुल मुक़द्दस को तबाह किया तो तौरेत की तख़्तियाँ बर्बाद हो गयीं। फिर पाँचवी सदी क़ब्ल मसीह में जब बनी इस्राईल रिहा हुए तो उन्होंने नई तौरेत लिखी। तारीख़ आज तक इस बात को साबित नहीं कर सकी कि नई तौरेत ठीक पुरानी तौरेत के मुताबिक़ है।

हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम 800 साल क़ब्ल मसीह नबी हुए मगर 300 साल क़ब्ल मसीह एक आदमी ने उनकी ज़िंदगी के हालात लिखे।

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की वफ़ात 933 साल क़ब्ल मसीह हुई मगर 'इम्साल सुलेमान' (Proverb) 250 साल पहले

मसीह लिखी गई।

ये सब किताबें सन् 70 ई० में बैतुल मुक़द्दस की दूसरी तबाही के वक़्त बर्बाद हो गईं। सिर्फ़ यूनानी तर्जुमा रह गया। यह साफ़ ज़ाहिर है कि तर्जुमा असल किताब तो नहीं हो सकता।

यह मसूअला हक़ीक़त है कि आज भी यहूदियों के पास पुरानी इबरानी ज़बान का नुस्ख़ा सन् 914 ई० का लिखा हुआ है।

बैहरे मुर्दार (Black Sea) के क़रीब ग़ारे क़मरान में से जो इबरानी तख़्तियाँ मिली हैं वे भी पहली और दूसरी सदी क़बूल मसीह के हैं।

सामरियों के यहाँ तौरेत का पुराना नुस्ख़ा ग्याहरवीं सदी ईसवीं में लिखा गया है।

औरल लॉ (Oral Law) की हक़ीक़त

यहूदियों के कुछ क़ानून हैं जिनको वह सीना-ब-सीना आगे चलाते हैं जैसे हमारे यहाँ कहावत होती है जो पिछले लोगों ने बनाएं उनके बाद आने वाले इस्तेमाल करें। इनको ज़र्बुल मिस्लों को (Oral Law) कहा जाता है। यहूदियों की ओरल लॉ तेरह सौ साल तक बग़ैर लिखे रहें सिर्फ़ एक से दूसरे की तरफ़ मुन्तक़िल होते रहे। अब बताइए जो बातें तेरह सौ साल तक सीने से सीने में मुन्तक़िल होती रहीं, वे तो रांई पहाड़ बन जाती हैं। यही हाल ओरल लॉ के साथ हुआ। दूसरी सदी ईसवी में एक आदमी अबी यहूदा बिन शमऊन ने उनको 'मिशना' के नाम से तहरीरी शक्ल दी। फ़लस्तीनी यहूदियों ने तर्जुमा किया तो उसका नाम (Halakah) रखा। बाबली यहूदियों ने जब तर्जुमा किया तो उन्होंने उसका नाम

(Haggadah) रखा। इन तीनों उलट-फेर हुई किताबों का मजमूआ 'क़लमूद' कहलाता है और यही यहूदियों का सरमाया है।

इन्जील मे उलट-फेर

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ज़बान सुरयानी थी। इन्जील (बाइबल) पहली बार हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के आसमान पर उठाए जाने के बाद लिखी गई। इसमें इख़्तिलाफ़ है कि यूनानी ज़बान में लिखी गई या आरामी ज़बान में। जब हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की वफ़ात हो गई तो उनके बाद 'इम्सिाले सुलेमानी' नामी एक किताब जमा की गई और उसको सुलेमान अलैहिस्सलाम के नाम से जोड़ दिया गया। फिर इन किताबों को बैतुल मुक़द्दस में महफ़ूज़ किया गया मगर सन् 70 ई० में जब बैतुल मुक़द्दस को दोबारा तबाह किया गया तो ये सारी किताबें ज़ाए हो गयीं। सिर्फ़ बाइबल का यूनानी तर्जुमा बाक़ी रहा।

ईसाईयों को लाजवाब कर देने वाले सवालात

अगर ईसाईयों से पूछा जाए कि (New Testament) का तर्जुमा लातीनी ज़बान में किसने किया? कब किया? क्यों किया? तो इसकी तारीख़ उनके पास मौजूद नहीं। चौथी सदी ईसवी में ईसाई पादरियों ने सोचा कि यह तो अच्छी बात नहीं कि हमारे हज़ारों नुस्ख़ें हों और हमारी किताबें आपस में न मिलती हों। लिहाज़ा हमें इसका कुछ करना चाहिए। लिहाज़ा पॉप के हुक्म पर ग़ौर किया गया और सत्तर इंजीलों को जमा किया गया मगर ईसाई मज़हब के पेशवाओं ने उनमें से चार को चुना। क्यों ऐसा हुआ? ईसाई पॉप क़यामत तक इसका जवाब नहीं दे सकते।

इन चार में से एक का नाम (Sir King James Version) है। वह आजकल ईसाईयों के यहाँ बहुत पसंद की जाती हैं। पता है वरसन किसे कहते हैं? अगर किसी किताब में अदल-बदल कर दी जाए, कमी-ज़्यादती कर दी जाए तो उसके दूसरे ऐडिशन को वरसन कहते हैं। बहरहाल वरसन का लफ़्ज बताता है कि इस किताब में कमी ज़्यादती हो चुकी है और हक़ीक़त भी यही है कि पहली किताब में पाँच बाब का फ़र्क़ है। पाँच बाब ज़्यादा थे बाद में कम कर दिए गए। वह पाँच बाब क्यों निकाल दिए गए इसका जवाब आज तक ईसाई दुनिया के पास आज तक कोई नहीं है।

स्वीडन में एक ईसाई लड़की से बहस

फ़क़ीर ने एक बार स्वीडन के एक कालेज में इस्लाम के उनवान पर लैक्चर देते हुए कहा कि क़ुरआन दुनिया में अकेली किताब है जो आज तक असली हालत में मौजूद है। एक ईसाई लड़की ने सवाल किया कि क्या हमारे पास असली किताब नहीं है? फ़क़ीर ने पूछा कि यह बताएं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर इन्जील किस ज़बान में नाज़िल हुई? कहने लगी सुरयानी ज़बान में। मैंने पूछा आज किस ज़बान में है? कहने लगी अंग्रेज़ी ज़बान में। फ़क़ीर ने कहा कि जिस ज़बान में नाज़िल हुई थी आज उस ज़बान में इंजील आपके पास मौजूद नहीं है। वह लड़की कहने लगी हाँ मैं तसलीम करती हूँ कि हमारे पास उसका अंग्रेज़ी तर्जुमा है। फ़क़ीर ने कहा कि इसको आप ख़ुदा का कलाम (Words of God) नहीं कह सकते। उसने सारी क्लास के सामने तसलीम किया कि वाक़ई असल इन्जील इस वक़्त मौजूद नहीं है।

इन्जील का तर्जुमा कैसे किया गया

इन्जील का तर्जुमा करते हुए ईसाईयों ने एक अनोखा काम यह किया कि लोगों के नामों का भी तर्जुमा कर दिया हालाँकि किसी ज़बान में भी तर्जुमा किया जाए तो इंसानी नामों का तर्जुमा नहीं करते। मिसाल के तौर पर एक आदमी का नाम 'मिस्टर ब्लैक' है तो उर्दू में उसका तर्जुमा करते हुए 'मिस्टर काला' नहीं कह सकते, 'मिस्टर ब्राउन' को 'मिस्टर भूरा' नहीं कह सकते। बहरहाल यह मानी हुई बात है कि किसी किताब का तर्जुमा करते हुए इंसानी नामों का तर्जुमा नहीं किया जाता।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नामे नामी इन्जील में मौजूद था, अहमद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम से। अहमद का लफ़्ज़ी तर्जुमा है 'सबसे ज़्यादा तारीफ़ करने वाला' तो ईसाईयों ने इसका तर्जुमा कर दिया 'दि प्रेज़्ड वन' अब अगर कोई प्रेज़्ड वन का लफ़्ज़ कहे तो सुनने वाला आदमी हर्गिज़ हर्गिज़ नहीं समझ सकता कि हम किसकी बात कर रहे हैं अगर अहमद के लफ़्ज़ से बात करें तो हर आदमी समझेगा कि अहमद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुराद अल्लाह के पैग़म्बर का नाम है। ईसाईयों ने किताब का तर्जुमा करते हुए न सिर्फ़ नामों का तर्जुमा कर दिया बल्कि नामों को भी बदलकर रख दिया। मसलन उनके पैग़म्बर का नाम था ईसा अलैहिस्सलाम। इसको उन्होंने ऐसेज़ (Esis) बना दिया। फिर आदत के मुताबिक़ शुरू में 'जे' का हर्फ़ शामिल कर दिया और जेसिज़ (Jesis) बना दिया। आज की ईसाई दुनिया हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को जेसिज़ कहती है। इसी तरह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का नाम यूसुफ़ था।

ईसाईयों ने शुरू में 'जे' लगाकर उसे जोसफ़ (Joseph) बना। यूहन्ना एक लफ़्ज़ था उसके शुरू में 'जे' लगाकर उसे जोहन (John) बना दिया। एक पैग़म्बार अलैहिस्सलाम का नाम याक़ूब था उसको उन्होंने 'जैकब' (Jacob) बना दिया। बहरहाल ईसाईयों ने कुछ नामों का तर्जुमा कर दिया और कुछ नामों में हर्फ़ शामिल करके उनकी असली सूरत को फेर दिया। सोचने की बात है कि जब नामों के साथ यह सुलूक किया तो फिर बाक़ी किताब का क्या हश्र किया होगा?

ज़रतश्त मज़हब की किताबों का जाएज़ा

ज़रतश्त मज़हब के बानी की पैदाइश का सही ज़माना ही मालूम नहीं है। अंदाज़न सिकंदर के ईरान फ़तेह करने के 250 साल पहले था। उसकी किताब 'औस्ता' अब नापैदा हो चुकी है। जिस ज़बान में थी वह ज़बान भी अब नापैद । सीरत के बारे में इस सिर्फ़ इतना मालूम हुआ कि 40 साल की उम्र में तबलीग़ की। वक़्त का बादशाह गुस्तासप मुरीद हुआ। जिसकी की वजह से ज़रतश्त सरकारी मज़हब बनकर दुनिया की कुछ हिस्सों में फैला।

बुद्धमत की किताबों का हाल

बुद्धमत के पेशवा ने सिरे से कोई किताब ही नहीं लिखी और न ही लिखवाई। उसकी वफ़ात के सौ साल के बाद एक आदमी ने उसके क़ौल और ज़िंदगी के हालात जमा किए।

इस्लाम में क़ुरआन पाक की हिफ़ाज़त

अब आइए क़ुरआन पाक की तदवीन और उसके जमा होने

का जाएज़ा लिया जाए। क़ुरआन पाक नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में चार तरह से महफ़ूज़ किया गया :

- एक सूरत तो यह थी कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जब 'वही' आती तो उस वक़्त आप कुछ सहाबा किराम को बुलाते और ख़ुद उनको लिखवा दिया करते। उन सहाबा को 'कातिबीन-ए-वही' कहते हैं। उनके नाम तक आज तक बाक़ायदा किताबों में महफ़ूज़ हैं।
- दूसरी सूरत यह थी कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुद हाफ़िज़ क़ुरआन थे। जब रमज़ानुल मुबारक आता तो आप हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम के साथ बैठकर दौर किया करते थे।
- तीसरी सूरत यह थी कई हज़ार सहाबा किराम ऐसे भी थे कि जिन्हें शुरू से लेकर आख़िर तक क़ुरआन पाक याद हो गया था।
- नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में क़ुरआन पाक को इस तरह महफ़ूज़ किया गया कि किसी ने चमड़े पर लिखा, किसी ने पत्थर पर लिखा और किसी ने पत्तों पर लिखा।

पत्तों पर लिखा हुआ क़ुरआन मजीद

फ़क़ीर को समरकंद जाने का मौक़ा नसीब हुआ तो वहाँ की लाइब्रेरी में लोहे के तख़्तियों पर लिखा हुआ क़ुरआन पाक देखा। लाइब्रेरी की इंचार्ज औरत ने एक दूसरा नुस्ख़ा दिखाया। कहने लगी यह एक नादिर चीज़ है। जब फ़क़ीर ने देखा तो आप यक़ीन कीजिए

कि उसके पत्ते की रगें अभी तक ऐसी साफ़ नज़र आती थीं जैसे शीशम के पेड़ के पत्ते को सामने रख लें तो उसके अंदर रगें चलती हुई नज़र आती हैं। फ़क़ीर ने उन्हें हाथ लगाकर देखा वह पेड़ के पत्ते थे मगर उन्हें किताबी शकल में बंद किया गया था। यह मालूम नहीं कि कब लिखा गया था। लेकिन फिर भी यक़ीनी तौर यह काग़ज़ की ईजाद से पहले से की बात होगी। सुब्हानअल्लाह! आज तक पत्तों पर लिखा हुआ क़ुरआन पाक महफ़ूज़ है।

सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर में क़ुरआन मजीद की हिफ़ाज़त

जंगे यमामा में बहुत से हाफ़िज़ (क़ुरआन हाफ़िज़) शहीद हुए थे तो हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के मश्वरे से क़ुरआन पाक के लिखे हुए हिस्सों को एक जगह करवा दिया था। हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़िम्मेदारी में हाफ़िज़ सहाबा किराम की जमाअत बना दी और फ़रमाया कि सारे क़ुरआन पाक को इस तरह एक जगह जमा करें कि एक हर्फ़ भी तब्दील न हो। लिहाज़ा सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को 'जामेअ क़ुरआन' बनने की इज़्ज़त नसीब हुई।

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के नुस्खे

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी ख़िलाफ़त के दौर में क़ुरआन पाक के चार नुस्ख़े एक जैसे लिखवाए और दुनिया के अलग-अलग मुल्कों में भेजे। उन चार नुस्ख़ों में से दो आज भी महफ़ूज़ हैं। एक ताशक़ंद में और दूसरा इस्तंबूल में। इस आजिज़

ने ताशक़ंद वाला नुस्ख़ा अपनी आँखों से देखा है। मैंने तारीख़ की किताबों में पढ़ा था कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के सहीफ़े पर उनकी शहादत के वक़्त ख़ून मुबारक गिरा था। जब मैं,

﴿فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللّٰهُ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ.﴾

वाली आयत पर पहुँचा तो ठीक उसी जगह एक धब्बा सा नज़र आया। ख़्याल किया जाता है कि यह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़ून का धब्बा था। अल्लाह का शुक्र है सहाबा किराम के दौर के लिखे हुए क़ुरआन पाक आज तक उम्मते मुस्लिमा के पास महफ़ूज़ हैं।

क़ुरआन मजीद के बारे में दुश्मनों की गवाही

जर्मनी में म्युनख़ा युनिर्वसिटी का एक मज़हबी शोबा 'डिपार्टमेंट आफ़ थियालोजी' के नाम से मशहूर है। वहाँ के प्रोफ़सर ने बहुत सारी रक़म ख़ास कराई ताकि वह दुनिया के अलग-अलग हिस्सों से मुसलमानों की किताब (क़ुरआन पाक) को इकठ्ठा करके देखें कि उनमें कोई फ़र्क़ तो नहीं। लिहाज़ा पूरी दुनिया से अलग-अलग इलाक़ों से क़ुरआन पाक के चालीस हज़ार नुस्ख़ें इकठ्ठे किए गए और उन नुस्ख़ों के एक-एक हर्फ़ और एक एक नुक़्ते को जब मिलाया गया तो आपस में कहीं फ़र्क़ न निकला। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का फ़रमान है,

﴿إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ۝﴾

इस नसीहत नामे को हमने नाज़िल किया है और इसकी हिफ़ाज़त भी हमारे ज़िम्मे है।

बहरहाल क़ुरआन के जमा होने में कोई आदमी शक नहीं कर

सकता। बस यह खुदा का कलाम है।

क़ुरआन मजीद की ज़बान भी महफ़ूज़ है

जिस तरह खुदा का कलाम महफ़ूज़ है उसी तरह जिस ज़बान में यह उतरा वह ज़बान भी आज तक महफ़ूज़ है। जब क़ुरआन पाक उतरा था उस वक़्त सिर्फ़ एक मुल्क की ज़बान अरबी थी और आज इक्कीस मुल्कों की ज़वान अरबी है। वह ज़बान भी ज़िंदा है, वह किताब भी ज़िंदा है और उस पर अमल करने वाली क़ौम भी ज़िंदा है। बस साबित हुआ कि इस्लाम के दामन में महफ़ूज़ आसमानी किताब आज भी मौजूद है। जबकि ईसाईयों और यूहदियों के पास आसमानी किताबें मौजूद नहीं सिर्फ़ उन किताबों के वदले हुए अंग्रेज़ी तर्जुमे मौजूद हैं।

दलील न03

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत महफ़ूज़ है

एक अहम उसूल यह भी है कि अल्लाह के जिस नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हम तक दीन इस्लाम पहुँचाया उसकी सीरत भी तो महफ़ूज़ होनी चाहिए। इसके के बग़ैर उनकी इत्तिबा नहीं की जा सकती। यहूदी उलटे लटक जाएं तो भी हमें हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की सीरत नहीं दिखा सकते मगर दीन इस्लाम वह मज़हब है कि जिसके मानने वाले मुसलमान अपने महबूब की बातचीत, किरदार के बारे में, मामलात के बारे में, रहन-सहन के बारे में, गुज़ारे के बारे में, उनके नबुव्वत के ज़माने

से लेकर उनके दुनिया से रुख़्सत होने तक के रात-दिन की एक-एक चीज़ का सबूत पेश कर सकते हैं।

दलील न0 4

इस्लाम दीने फ़ितरत है

हदीस पाक में आता है कि,

﴿كل مولود ديولد على فطرة الاسلام.﴾

हर बच्चा इस्लाम की फ़ितरत पर पैदा होता है।

मतलब यह कि इस्लाम का इल्मी ज़ौक़ हर सही फ़ितरत वाले आदमी में मौजूद होता है। एक आम सादा आदमी किसी मस्अले में शरिअत का हुक्म जानना चाहे तो उसके अपने सीने में मुफ़्ती मौजूद होता है। हदीस पाक में है:

﴿استفت قلبك ولو افتاك المفتيون.﴾

जब तुझे मुफ़्ती फ़त्वा दें तो अपने दिल से भी पूछ ले।

यह नेमत यहूदियों, ईसाईयों और हिंदुओं वग़ैरह को नसीब नहीं है। ईसाईयों में शादी-शुदा ज़िंदगी को अल्लाह तआला की माअरिफ़त के हासिल होने में रुकावट समझना और औरत को नन्स (Nuns) यानी सारी ज़िंदगी कुँवारी रहने की तर्ग़ीब देना फ़ितरत के ख़िलाफ़ है। हिंदुओं में शौहर के मर जाने के बाद बीवी का जीते जागते आग की चिता में जलकर सती हो जाना इंसानी फ़ितरत के मुँह पर तमांचा है। यहूदियों का यह दावा करना कि नबुव्वत सिर्फ़ बनी इस्राईल की मीरास है और बाक़ी

इंसानियत उनके दर की भिखारी है, अक़्ल और समझ के ख़िलाफ़ है। बुद्धमत में इंसानी समाज से भागकर जंगलों में अकेले रहना और खाने-पीने और ओढ़ने की ज़रूरतों से परहेज़ करना इंसानी तबियत के ख़िलाफ़ है।

दलील न० 5

इस्लामी इबादतें सादी और अमल करने क़ाबिल हैं

इस्लामी इबादतें हैरान करने की हद तक सादी हैं। नमाज़ पढ़ने के लिए वुज़ू करते हैं। गोया बदन के उन हिस्सों को धोते हैं और पाक साफ़ करते हैं जो आमतौर पर काम-काज में नंगे किए जा सकते हैं। मिसाल के तौर पर बाज़ू कोहनियों तक, पूरा चेहरा, सर के बाल और पाँव टख़नों तक। यही वुज़ू के फ़राईज़ ठहरे। बाक़ी वुज़ू के आमाल सुन्नत हैं। करें तो यक़ीनी फ़ायदा है, रुकावट की वजह [illegible] कर सकें तो छूट है। अगर कहीं पानी भी न मिले तो तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली जाए। नमाज़ के वक़्तों को सूरज निकलने और डूबने के साथ जोड़ दिया गया। यह एक ऐसा आसान काम है कि दुनिया का हर अमीर व ग़रीब, सेहतमंद व बीमार, आलिम व जाहिल इसको समझ सकता है। हर मर्द व औरत, बच्चा और समझदार और बूढ़ा आसानी के साथ नमाज़ के वक़्तों का अंदाज़ा लगा सकता है। फ़ज्र सूरज निकले से पहले, ज़ोहर सूरज के ढलने के बाद, अस्र सूरज डूबने से पहले, मग़रिब सूरज डूबते ही और इशा जब सूरज डूब जाए, इतना वक़्त गुज़र जाए कि आसमान पर सितारे चमक जाएं। इन वक़्तों को मालूम करने के लिए किसी आले की ज़रूरत नहीं है। आदमी शहर में

हो, वीराने में, जंगल में, पहाड़ की चोटियों पर या समुंद्र के लहरों वाले हिस्सों में हो हर हाल में आसमान की तरफ़ निगाह उठाते ही नमाज़ के वक़्त का पता कर सकता है। नमाज़ पढ़ने के लिए पूरी ज़मीन जिस पर ज़ाहिरी नापाकी के निशान न हो, को मुसल्ला क़रार दिया गया है। क़िब्ले का रुख़ मालूम करने के लिए अपना अंदाज़ा लगाए फिर जिस तरफ़ गुमान ग़ालिब हो उस तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ ले। मान लो चार फ़र्ज़ों की नीयत बाँधी और पहली रक्अत पूरब की तरफ़ पढ़ी मगर दूसरी में ख़्याल ग़ालिब हुआ कि नहीं क़िबला तो मग़रिब (पश्चिम) की तरफ़ है तो चाहिए कि उधर रुख़ कर ले। अगर तीसरी रक्अत में शुमाल (उत्तर) की तरफ़ गुमान ज़्यादा हुआ तो चाहिए की उधर रुख़ कर ले। अगर चौथी रक्अत में जुनूब (दक्षिण) की तरफ़ क़िब्ले का रुख़ होने को गुमान ज़्यादा हुआ तो उधर रुख़ कर ले। हर रक्अत अगर अलग अलग रुख़ में पढ़ी होगी तो नमाज़ क़ुबूल कर ली जाएगी।

﴿فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ﴾

तुम जिधर रुख़ करो उधर ही अल्लाह होगा।

नमाज़ के लिए सतर औरत ढांपना ज़रूरी क़रार दिया गया कि इतना लिबास तो ग़रीब से ग़रीब आदमी के पास भी होता है। मान लो अगर ऐसी जगह हो कि इंसान बिल्कुल नंगा हो और क़रीब न ही पेड़ है और न ही घास है जिससे अपना सतर छिपा सके तो ऐसी सूरत में भी बैठकर नमाज़ पढ़ ले तो नमाज़ हो जाएगी। अगर सेहत ख़राब है कि खड़ा होकर नमाज़ अदा नहीं कर सकता तो बैठकर पढ़ ले अगर बैठकर भी नहीं पढ़ सकता तो

लेटकर पढ़ ले। अगर नमाज़ में ग़लती हो जाए तो सज्दा सहू की सहूलत मौजूद है। मान लो अगर सोया रहा, आँख नहीं खुली या ऐसा उज़्र हो गया कि जो इख़्तियार से बाहर है तो नमाज़ को कज़ा पढ़ लेने की सहूलत मौजूद है। गोया कि इबादत में इतनी आसानी और सादगी दुनिया का कोई भी इंसान इसे नाक़ाबिले अमल क़रार नहीं दे सकता।

अब ज़रा यहूदियत की इबादतों का जाएज़ा लें। यहूदी दीन में हफ़्ते के दिन आग जलाना जाएज़ नहीं। अब जिन लोगों के कारोबार में आग का इस्तेमाल है वह क्या करें? बीमार आदमी अगर अपने लिए खाना पकवाना चाहे तो क्या करे? जहाँ बिजली नहीं और वहाँ चिराग़ जलाया जाता है अगर बुझ जाए तो क्या बनेगा? हफ़्ते के दिन न कारख़ाने चल सकते हैं और न ही हर वह काम कर सकते हैं जिसमें आग का इस्तेमाल होता है। यह इबादत इंसान के लिए किस क़दर मुश्किलें पैदा कर सकती है। इसके अलावा यहूदियों के यहाँ सवारी पर सवार नहीं हो सकते। अगर किसी ज़रूरी काम के लिए दूर जाना चाहें या माज़ूर हो कि पैदल नहीं चल सकता हो तो वह क्या करे? अक़्ल कहेगी कि इस इबादत ने तो हमारा जीना हराम कर दिया। बख़ुशी बी बिल्ली चूहा लंडौरा ही भला।

ईसाई दीन में इबादत सिर्फ़ चर्च में हो सकती है। अगर कोई आदमी ज़रा आबादी से दूर हो तो वह संडे प्रेयर (Sunday Prayer) से महरूम हो गया। इसके अलावा अगर हफ़्ते के दिनों में जी चाहे कि हफ़्ते के दूसरे दिनों में इबादत करें तो इतवार के दिन का इंतिज़ार ज़रूरी है। अगर कोई आदमी कारोबारी मजबूरी

की वजह से चर्च में नहीं जा सकता तो वह अपने घर में इबादत नहीं कर सकता। समुंद्र में सफ़र करने वाले मल्लाह और मछियारे पूछेंगे कि हमारा क्या क़ुसूर है कि हम इबादत से महरूम हैं, पहाड़ों में बसने वाले कैसे इबादत कर सकेंगे। चलें एक दूसरे नुक्ते पर ग़ौर करें कि अगर कोई ईसाई अपने गुनाहों से तौबा करना चाहे तो पादरी के सामने जाकर अपने गुनाहों को क़ुबूल करना पड़ेगा, अगर कोई यहूदी गुनाहों से तौबा करना चाहे तो उसे 'दीवार गिरया' के पास जाकर रोना पड़ेगा जब कि कोई मुसलमान गुनाहों से तौबा करना चाहे तो न कहीं जाने की ज़रूरत न ही कोई माल पैसा ख़र्च करने की ज़रूरत, सिर्फ़ अपने दिल में नदामत महसूस करके आइंदा गुनाह न करने का इक़रार कर ले, तौबा क़ुबूल हो जाएगी। हदीस पाक में आता है ﴾الدين يسر﴿ दीन में आसानी हैं। क़ुरआने मजीद में है:

﴾يُرِيْدُاللّٰه بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ.﴿

अल्लाह तआला तुम्हारे साथ आसानी का इरादा करता है तंगी का नहीं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया ﴾يسروا ولا تعسروا﴿ आसानियाँ पैदा करो, मुश्किलें पैदा न करो।

बस साबित हुआ कि यहूदियत और ईसाईयत में इबादत का तसव्वुर इतना आसान नहीं है जितना कि इस्लाम में।

दलील न० 6

इस्लाम आलमी दीन है

इस्लाम सारे दुनिया के लिए मुहब्बत व सलामती का पैग़ाम

लाया है। पैग़म्बरे इस्लाम ने फ़रमाया :

﴿يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُوْلُ اللهِ إِلَيْكُمْ جَمِيْعًا.﴾

ऐ इन्सानो! मैं तुम सबकी तरफ़ रसूल बनाकर भेजा गया हूँ।

दूसरी जगह इर्शाद फ़रमाया गया :

﴿كَآفَّةً لِلنَّاسِ بَشِيْرًا وَنَذِيْرًا.﴾

तमाम इंसानों के लिए बशीर व/नज़ीर बनकर आए।

रहमतुल्लिल आलमीन की रहमत सब इंसानों के लिए है, ज़मीन के बसने वाले हों या चाँद पर या मरीख़ पर जाकर आबाद होने वाले हों। इसीलिए फ़रमाया गया :

﴿اُدْخُلُوْا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً.﴾

तुम सब के सब सलामती में दाख़िल हो जाओ।

दूसरी जगह इर्शाद फ़रमाया :

﴿وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللهِ جَمِيْعًا.﴾

तुम सब अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से पकड़ लो।

वहदत व क़ौमियत का नज़रिया अनोखा है। अलग अलग ज़बानों तबाईनुलवान की हदें टूट गयीं। यह यकजहती और सलामती का नज़रिया इस्लाम का पेश किया हुआ है। फ़ारस वालों का दावा है कि नबुव्वत का शर्फ़ सिर्फ़ ऐज़ज की औलाद को ही मिला है, बनी इस्राईल का दावा है कि नबुव्वत उनकी मीरास है, हिंदुओं का दावा है कि आकाशवाणी दर्शन सिर्फ़ गंगा जमना का स्नान करने वालों के लिए है, चीन वालों का दावा है कि आसमानी फ़रज़ंद सिर्फ़ वही हैं मगर इस्लाम ने ﴿كافة﴾ और ﴿جميعا﴾ का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया है।

दलील न० 7

इस्लाम कामिल दीन है

अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में फ़रमाया:

﴿اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ﴾

आज के दिन मैंने तुम्हारे दीन का मुकम्मल कर दिया।

बस इस्लाम मज़हब ज़िंदगी के हर शोबे में रहमनुमाई करता है। निजी ज़िंदगी हो, इज्तिमाई ज़िंदगी, शादी के बाद की ज़िंदगी, सियासी मसाइल, कारोबारी मसाइल, समाजिक मसाइल, इबादतें और अख़्लाक़, अमन व सलामती के अहकाम, बेचने व ख़रीदने की तफ़सील, गर्ज़ बच्चे के पैदा होने से लेकर मरने तक, फिर मरने से लेकर महशर के दिन खड़ा होने तक और हिसाब व किताब से लेकर जन्नत जहन्नम के दाख़िले तक की तमाम तफ़सीलें बता दी गयीं हैं। यहूदियत व ईसाइयत को सिर्फ़ इबादतों व अख़्लाक़ तक महदूद कर दिया गया है। ज़िंदगी के दूसरे शोबों में इंसान को हालात के रहम व करम पर छोड़ दिया गया है। इसलिए मग़रिब ने सियासत को दीन से अलग करने के लिए राहें पैदा कर लीं। बक़ौल एक शख़्स के–

जुदा हो दीं सियासत से तो रह जाती है चंगेज़ी

दलील न० 8

इस्लाम इल्म व बुरहान (दलील) का हामी है

इस्लाम ने इल्म हासिल करना बड़ा मक़सद बनाकर इंसानियत

के सामने पेश किया है। क़ुरआन की शुरूआत इल्म के बयान से हुई। फ़रमाया ﴿اِقْـــــرَأْ﴾ पढ़िए। नबी रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ﴿يُـعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ﴾ किताब की तालीम देने वाले का लक़ब अता किया गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

﴿اطلبوا العلم من المهد الى اللحد.﴾

इल्म हासिल करो पालने से लेकर क़ब्र में जाने तक।

गोया इंसानी ज़िंदगी में कोई ऐसा वक़्त नहीं आना चाहिए जब वह अपने आपको इल्म से फ़ारिग़ समझे।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, "उलमा के क़लम की स्याही शहीदों के ख़ून से ज़्यादा क़ीमती है।"

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, "इल्म तलब करना हर मुसलमान (मर्द व औरत) पर फ़र्ज़ है।"

क़ुरआन मजीद में महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ के बारे में इर्शाद ﴿قُلْ رَّبِّ زِدْنِىْ عِلْمًا﴾ ऐ मेरे परवरदिगार! मेरे इल्म को बढ़ा दे।

क़ुरआन पाक में उलमा की अज़मत व फ़ज़ीलत इन अल्फ़ाज़ में बयान की गईः

﴿يَرْفَعُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ آمَنُوْا مِنْكُمْ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ.﴾

अल्लाह तुम लोगों में से उन लोगों के रुत्बे बुलंद करता है जो ईमान लाए और जो इल्म दिए गए।

इस्लाम ने हर मुसलमान को शहद की मक्खी बनकर इल्म हासिल करने की ताकीद कीः

﴿هَلْ عِنْدَ كُمْ مِنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوْهُ لَنَا﴾

क्या तुम्हारे पास इल्म हैं जिसे निकालो तुम हमारे लिए।

इस्लाम ने झगड़े के वक़्त भी इल्मी दलाइल मांगे। फ़रमाया :

﴿هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صَادِقِيْنَ﴾

अपना बुरहान (सबूत) पेश करो अगर तुम सच्चे हो।

इस्लाम ने जाहिलियत के दौर में दुनिया की क़ौमों को इल्म सिखाया। सैबविया, बू अली, ज़जाज लुग़त और नहू के इमाम मगर अरबी नसल नहीं थे। इमामे लुग़त इस्माईल बिन मुहम्मद जौहरी, उस्ताद मुजद्दिददुदीन अबू ताहिर मुहम्मद बिन याक़ूब फ़ैज़ाबादी भी अरबी नस्ल नहीं थे। अबुल फ़रज (मसीही) की किताबें अरबी ज़बान में बहुत हैं जबकि वह मालटा का रहने वाला था। तारीख़दान अश्शहीर बुरहानुद्दीन मुसल में पैदा हुए। अल्लामा इब्ने ख़लदून त्युनस में पैदा हुए और फ़लसफ़ा तारीख़ को ईजाद करने वाले बने। मक़रीज़ी के वजूद पर बलबक को नाज़ है। इमाम आज़म रह० अहले फ़ारस से, इमाम बुख़ारी रह०, इमाम मुस्लिम रह०, इमाम तिर्मिज़ी रह० वस्त एशिया के थे। साइंसी उलूम में बू अली सिना ने 'अल् क़ानून फ़ित्तिब' लिखी जो आज भी मुस्तनद है। अलजेबरा का मख़रज अरबी का लफ़्ज़ 'अलजबरा' है। हिसाब का नया तसव्वुर 'अलगुवारज़िम' मुहम्मद बिन मूसा के 'अलख़्वारज़िम' से लिया है। इस किताब 'किताबुल मुख़्तसर फ़िल हिसाबुल जबर वल मुक़ाबला' के लातीनी तर्जुमे के ज़रिए अलजेबरा यूरोप में पहचाना गया। बसीरत के साइंस की शुरूआत अबुल हैसम ने 'किताबुल मनाज़िर' लिखकर रखी। अली बिन ईसा ने 'तज़किरातुल कहालीन' लिखी और सर्जरी में सुन्न करने वाली

दवाईयों के इस्तेमाल की तजवीज़ पेश करने वाले पहला शख़्स बना।

तौरेत व इन्जील में इल्म हासिल करने की अहमियत पर इस क़दर रोशनी नहीं डाली गई जितनी इस्लाम ने इल्म हासिल करने की तर्ग़ीब दी है। यह इस्लाम का इम्तियाज़ है।

दलील न० 9

इस्लाम, पूरा भाईचारे का दीन है

इर्शाद बारी तआला है :

﴿إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ﴾

बेशक मोमिन आपस में भाई भाई हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

﴿كونوا عباد الله اخوانا﴾

अल्लाह के बंदो! आपस में भाई भाई बन जाओ।

इस्लाम ने हमियत और जाहिलियत दिलों में रखने वाले लोगों को अख़्लाक़ का ऐसा सबक़ दिया कि दुश्मन दोस्त बन गए, रक़ीब, रफ़ीक़ बन गए, नफ़रत करने वाले महबूब बन गए। क़ुरआन पाक ने यूँ मंज़र खींचा कीः

وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللهِ عَلَيْكُمْ إِذْ كُنْتُمْ أَعْدَآءً

فَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا.

तुम याद करो जब तुम दुश्मन थे तो उसने तुम्हारे दिलों में उलफ़त डाल दी और तुम भाई भाई बन गए।

सहाबा किराम में भाई बंदी के ऐसे वाक़िआत पेश आए कि तारीख़ इंसानी उसकी मिसाल पेश नहीं कर सकती। हज़रत उमर

रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने जब हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु आए तो उन्होंने मुस्कराकर कि, "सैय्यदना बिलाल आ गए।" दूसरे मौक़े पर कहा, "सैय्यदना अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने सैय्यदना बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को आज़ाद कराया।"

दलील न० 10

इस्लाम लोगों में बराबरी की हिमायत करता है और दावत देता है

इंसान होने के नाते हम सब आदम अलैहिस्सलाम की औलाद हैं। लिहाज़ा किसी गोरे को काले पर और किसी अरबी को अजमी पर फ़ज़ीलत हासिल नहीं है। इर्शादे बारी तआला है :

﴿إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللهِ أَتْقٰكُمْ﴾

बेशक तुम में से अल्लाह के नज़दीक वह मुकर्रम है जो ज़्यादा मुत्तक़ी हो।

बस इकराम और फ़ज़ीलत की बुनियाद नेक काम करने और परहेज़गारी पर है। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज्जतुल-विदा के मौक़े पर इर्शाद फ़रमायाः

يا معشر قريش ان الله قد ذهب عنكم نخوة الجاهلية

وتعظيمها بالآباء. الناس من آدم وآدم من تراب.

ऐ क़ुरैश! बेशक अल्लाह तआला ने तुम से जाहिलियत की अकड़ और बाब दादा पर नाज़ करना मना कर दिया। इंसान आदम अलैहिस्सलाम की औलाद हैं और आदम मिट्टी से बनाए गए हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तख़्त की बजाए

सफ़ेद ज़मीन पर मजलिस इसलिए इख़्तियार की कि सब ख़ाक पर बैठने वाले हम फ़र्श हो जाएं। इसका बेहतरीन नमूना नमाज़ की सफ़ है कि जहाँ अमीर ग़रीब, छोटा बड़ा सब एक हो जाते हैं।

आ गया ऐन लड़ाई में अगर वक़्ते नमाज़
क़िबला रू होकर ज़मीन बोस हुई क़ौमे हिजाज़

एक ही सफ़ में खड़े हो गए महमूद ओ अयाज़
न कोई बंदा रहा न कोई बंदा नवाज़

बंदा ओ साहब ओ मोहताज ओ ग़नी एक हुए
तेरी सरकार में पहुँचे तो सभी एक हुए

दलील न० 11

इस्लामी शरिअत को इंसानी क़ानून पर बरतरी हासिल है

इंसानी अक़्ल अपने तजुरिबात व मुशाहिदात की बुनियाद पर जो क़ानून बनती हैं वह कमज़ोर होते हैं। हालात का ज़रा सा बदलाव कई ऐसे मामलात से पर्दे उठाती है कि क़ानूनों में तब्दीली करनी पड़ती है। इसलिए इंसानी क़ानूनों को वक़्त-वक़्त पर सुधारना और सिरे से ख़त्म करना पड़ता है। इस्लामी शरीअत के क़ानूनों को इंसानी क़ानूनों पर तीन वजहों से बरतरी हासिल है :

1. इस्लामी शरिअत को इंसानी क़ानूनों पर मौजूदा और आइंदा के लिहाज़ से बरतरी हासिल है। इस्लामी समाज के जो बुनियादी उसूल जो चौदह सौ साल पहले बताए गए अगर

वह हक़ व इंसाफ़ की नज़र से देखा जाएं तो सूरज की तरह चमकते हुए दिखाई देते हैं। यूरोप ने आज सांइसी दौर में भी इंसानी हुक़ूक़, अमन व सलामती, अदालत व इंसाफ़ के इस्लामी क़ानूनों को अपनाने में ही भलाई समझी है। अमरीका में वाशिंगटन में सुप्रीम कोर्ट की मरकज़ी इमारत बनाई तो उसमें लाउंज में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुछ फ़रमानों को आर्टस (कैलीग्राफ़ी) के अंदाज़ में लिखवाया जिसका मक़सद यह था कि मुसलमानों के पैग़म्बर ने इंसाफ़ का इस क़दर बोल-बाला किया कि आज का इंसान उनको ख़िराजे अक़ीदत पेश किए बग़ैर नहीं रह सकता।

2. इस्लामी शरिअत को इंसानी क़ानूनों पर मकान (पूरब व पश्चिम) के एतिबार से बरतरी हासिल है। इस्लामी क़ानून दुनिया के हर मुल्क के लिए क़ाबिले अमल हैं। ज़मीन के फ़ासले उन पर असर अंदाज़ नहीं हो सकते।
3. इस्लामी शरिअत को इंसानी क़ानूनों पर मैयारे ज़िंदगी (अमीर व ग़रीब) के लिहाज़ से बरतरी हासिल है।

दलील न० 12

बुनियादी हक़ों में इस्लामी शरिअत की ख़ूबी

इस्लामी शरिअत को बुनियादी हुक़ूक़ के मैदान में भी इम्तियाज़ हासिल है :

1. **मज़हब की आज़ादी**:—इस्लाम ने अक़ीदे के मामले में

इंसान पर ज़ोर जबरदस्ती के बजाए आज़ादी व इख़्तियार की राहें खोलीं। इर्शादे बारी तआला है :

﴾لا اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ﴿

दीन में कोई जब्र व इकराह (ज़बरदस्ती) नहीं।

2. फ़िक्र की आज़ादी:—इस्लामी शरिअत ने काएनात के बारे में इंसानी सोच को फ़िक्र व अमल की आज़ादी बख़्शी है। इर्शादे बारी तआला है:

﴾اِنَّ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيَاتٍ لِاُوْلِي الْاَلْبَابِ.﴿

बेशक आसमान व ज़मीन की पैदाईश में और दिन व रात के इख़्तिलाफ़ में अक़्लमंदों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं।

3. राय की आज़ादी:—इस्लामी समाज के हर फ़र्द को राय की आज़ादी अता की गई। इर्शादे बारी तआला है :

﴾وَشَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ﴿

और आप अपने उमूर (कामों) में इनसे मश्वरा किया कीजिए।

दलील न० 13

शादी-शुदा ज़िंदगी के उसूल और क़ादे

इस्लाम ने ज़िंदगी के हर मैदान में इंसान को रहनुमाई अता की है। ख़ासतौर पर शादी-शुदा ज़िंदगी के कामयाब होने के लिए सुनहरी उसूल व ज़ाब्ते बताए गए हैं। निकाह व तलाक़ के मसाइल, मियाँ-बीवी के हुक़ूक़, माँ-बाप के हुक़ूक़, औलाद की तालीम व तर्बियत और विरासत वग़ैरह के ऐसे शानदार ज़ाब्ते तय

किए हैं कि दुनिया का कोई मज़हब भी उसकी मिसाल पेश नहीं कर सकता। कितनी अजीब बात है कि चीज़ों की तरक़्क़ी और सहूलतों की बहुतात के बावजूद यूरोप में तलाक़ की दर 60% से ज़्यादा है जबकि इस्लामी मुल्कों में 6% भी नहीं है। इसके बावजूद इस्लामी मुल्कों को थर्ड वर्ल्ड (Third World) कहा जाता है।

नातक़ा सर ब गिरेबां है उसे क्या कहिए

दलील न० 14

इस्लाम और ग़ुलामी का मसूअला

जंगी क़ैदियों के बारे में तरक़्क़ी वाली क़ौमों का रवैय्या भी बड़ा सख़्त रहा है। अक्सर मुल्कों में जंगी क़ैदियों को क़ैद की मुसीबतों को बरदाश्त करने के अलावा तरह-तरह की तकलीफ़ों का सामना करना पड़ता है। कभी-कभी खाने में दवाएं मिलाकर उनको दिमाग़ी तौर पर निकम्मा कर दिया जाता है। जंगी क़ैदियों को किसी तरह की रिआयत देना गवारा नहीं किया जाता। पहली और दूसरी जंगे अज़ीम में यूरोप ने जंगी क़ैदियों का जो इबरतनाक अंजाम किया उसकी दास्ताने सुनकर कलेजा मुँह को आता है। पूरी दुनिया में इस्लाम ही वह मज़हब है कि जो जंगी क़ैदियों का बेहतरीन हल पेश करता है। अक्सर लोग मसूअले की तफ़सील मालूम न होने की वजह से यूँ समझते हैं कि इस्लाम इंसानों को ख़रीदन और बेचने की इजाज़त देता है जो कि बुनियादी हुक़ूक़ के ख़िलाफ़ है। हक़ीक़त यह है कि अगर कोई फ़ौज मुसलमानों पर हमला करे और मुसलमान जीत जाएं तो वे

जंगी क़ैदियों का क्या हल करें, इसकी चंद सूरतें हैं :

1. क़ैदियों को आज़ाद कर दिया जाए। यह अक़्ल और समझ के ख़िलाफ़ है कि दुश्मन को दोबारा हमला करने का मौक़ा देने की बराबर है। यह तो बुरे को बुराई का मौक़ा देना हुआ लिहाज़ा यह मस्अले का हल नहीं है।
2. क़ैदियों को क़त्ल कर दिया जाए। यह कभी-कभी तो इबरत सिखाने के लिए ठीक है मगर मस्अले का पाएदार हल नहीं है। इससे इस्लाम को तो कोई ज़्यादा फ़ायदा नहीं होता सिर्फ़ दुश्मन का नुक़सान होता है। लिहाज़ा यह भी हल न हुआ।
3. तीसरी सूरत यह है कि क़ैदियों के फ़ौजियों में बांट दिया जाए ताकि वे इस्लामी ज़िंदगी को क़रीब से देखें और मुमकिन है कि इस्लाम क़ुबूल कर लें।

यह जंगी क़ैदी अगर मर्द है तो ग़ुलाम कहलाएगा और अगर औरत है तो बाँदी कहलाएगी। उनका दर्जा आज़ाद मुसलमानों के बराबर हर्गिज़-हर्गिज़ नहीं हो सकता। लेकिन इस्लाम ने उनके खाने, पीने और लिबास वग़ैरह के बारे में तालीम दी है कि जो ख़ुद खाओ वही अपने ग़ुलाम को खिलाओ, जो ख़ुद पहनो वही उनको पहनाओ और उनके साथ हुस्ने सुलूक का मामला करो। अगर उन्हें आज़ाद करोगे तो यह अल्लाह तआला के यहाँ बड़े अज्र व सवाब का सबब है। ग़ुलाम क्योंकि अपने मालिक की मिल्कियत होता है इसलिए उससे काम-काज करवाने की इजाज़त होती है। अगर कोई मालिक महसूस करे कि उसे ग़ुलाम की ज़रूरत नहीं तो वह किसी दूसरे मुसलमान से रक़म या कोई चीज़ लेकर ग़ुलाम उसकी मिल्कियत में दे सकता है। इस्लामी शरिअत

का असल नज़रिया यह रहा कि ये जंगी क़ैदी मुसलमानों के अख़्लाक़ देखेंगे तो मुसलमान हो जाएंगे। और तारीख़ गवाह है कि इस्लामी दुनिया में ग़ुलामों ने बड़े-बड़े इल्मी और अमली कारनामें अंजाम दिए हैं। नमूने के तौर पर कुछ मिसालें देखिए :

सालिम रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के ग़ुलाम हैं मगर हिजरत की राह में मुसलमान होकर मुसलमान मुहाजिरीन के इमाम बने। हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ग़ुलाम हैं मग़र मौता की जंग में हज़रत जाफ़र तैयार रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे बड़े दर्जे के सहाबी के अमीर बने। सुहैब रूमी रज़ियल्लाहु अन्हु ग़ुलाम थे मगर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने मर्ज़ुल वफ़ात में उन्हें उस वक़्त तक मस्जिदे नबवी का इमाम बनाया जब तक ख़लीफ़ा का चुनाव न हो गया। इकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु के ग़ुलाम थे मगर तफ़सीर की किताबों में सैय्यदुल मुफ़स्सिरीन कहलाए। हज़रत हसन बसरी रह० कनीज़ के बेटे हैं मगर सूफ़िया किराम के इमाम बने। हज़रत नाफ़े रज़ियल्लाहु अन्हु ग़ुलाम थे मगर "अन मालिक अन नाफ़े बिन अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुम" में सिलसिला-ए-ज़हब कहलाए। बक़ौल इमाम बुख़ारी रह० यह रिवायत का सिलसिला आसमान के नीचे रिवायत का अस्हे (सही) तरीन सिलसिला है।

महमूद सुबक्तगीन ग़ुलाम इब्ने ग़ुलाम था मगर बादशाह बना और सोमनाथ को जीतने वाला कहलाया। अल्-यमीन ग़ुलाम था मगर मामून रशीद का जरनैल था। क़ाहिरा युनिर्वसिटी का बानी जौहरा ग़ुलाम था। तारिक़ बिन ज़ियाद जिब्रालटर को जीतने वाला ग़ुलाम था। हिंदुस्तान का पहला मुसलमान बादशाह ऐबक

ग़यासुद्दीन ग़ौरी का ग़ुलाम था।

इसकी असली वजह इस्लामी तालीम का हुस्न व कमाल है कि मुसलमानों को ग़ुलामों के साथ अच्छे सुलूक का हुक्म दिया। एक बार नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गोद में आपके नवासे हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु और ग़ुलाम ज़ादे हज़रत उसामा बिन ज़ैद थे। आपने फ़रमाया, "ऐ परवरदिगार! मैं इन दोनों से मुहब्बत करता हूँ जो कोई भी इनसे मुहब्बत करे तू भी उससे मुहब्बत फ़रमा।" सुब्हानअल्लाह अपने नवासे और ग़ुलाम ज़ादे के साथ बराबरी और मुहब्बत का यह सुलूक देखकर दुनिया दाँत तले उंगली न चबाए तो और क्या करे। हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम थे लेकिन आपने अपनी सगी फूफीज़ाद बहन से उनका निकाह किया।

इस्लामी शरिअत की इन तालीमात का असर यह हुआ कि अक्सर व बेश्तर जंगी क़ैदी इस्लाम क़ुबूल कर लेते और कभी कभी बड़े-बड़े इल्मी कमालात के उनमें पैदा हो जाते। ख़लीफ़ा हिशाम बिन अब्दुल मालिक ने हज़रत अता रह० ने से पूछा कि इस्लामी शहरों के फ़क़ीह जो ग़ुलाम हैं उनके बारे में बताएं। उन्होंने कहा कि मदीने में नाफ़े रह०, मक्का में अता बिन रबाह रह०, यमन में ताउस बिन कैसान रह०, यमामा में याह्या बिन कसीर रह०, शाम में मकहूल रह०, मूसल (अलजज़ाइर) में मैमून बिन मेहरान रह०, ख़ुरासान में ज़हाक बिन मज़ाहिम और बसरा में अताउल हसन बसरी रह० व इब्ने सीरीन रह० सब ग़ुलाम हैं जबकि सिर्फ़ कूफ़ा में इब्राहीम नख़ई रह० अरबी नसल थे।

दलील न० 15

क्या इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैला?

इस्लामी तालीमात में ऐसा हुस्न व जमाल है कि हर समझ-बूझ रखने वाला इंसान अपने आप उसकी तरफ़ खिंचा चला आता है। उसके रहमत के साए में उसे अमन व आश्ती का साँस नसीब होता है। यहूदी व ईसाईयों ने इल्ज़ाम तराशी की हद करते हुए कहा कि दीने इस्लाम तो तलवार के ज़ोर से फैला है यानी कुछ जंगजू इंसानों का गिरोह मुसलमानों के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मिल गया था। उन्होंने बाज़ुओं की क़ुव्वत से अरब व अजम में इस्लाम को फैला दिया। जब पूछा गया कि इन जंगजूओं को कौन सी तलवार ने मुसलमानों के पैग़म्बर के पास जमा कर दिया था तो बग़लें झांकने लगे। यह कहे बग़ैर नहीं रहा जाता कि वह पैग़म्बरे ख़ुदा के बेहतरीन अख़्लाक़ से मुतास्सिर होकर मुसलमान हुए थे। आइए कुछ मिसालें देखें :

* यहूद में से अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु, ईसाईयों में से अदी बिन हातिम रज़ियल्लाहु अन्हु, क़बीला नजम के पादरी तमीम दारी रज़ियल्लाहु, मजूस में से हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु, हब्श से बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु, रूम से सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु, एशिया कोचक से अदास रज़ियल्लाहु अन्हु, अफ़्रीक़ा से बाक़ूम रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे हज़रात का इस्लाम क़ुबूल करना गोया इस्लाम की हक़ होने का मुँह बोलता सबूत है।

- बादशाहों का नज़ारा देखिए। अकेदर शाह, दौमतुल जिंदल, जैफ़र शाह बहरीन, असहमा रज़ियल्लाहु अन्हु, शाह अबी सैना, ज़ुलकला रज़ियल्लाहु अन्हु, शाह हमीर जैसे हाकिम अब्दुल्लाह बिन ज़ुल मजादीन, अबू ज़र और मिक़दाद रज़ियल्लाहु अन्हुम जैसे फ़क़ीरों की ओट में बैठे नज़र आएंगे। मुल्के यमन का वाइसराय बाज़ान और मुल्के शाम का वाइसराय फ़रवा ख़ज़ाई दोनों दूर से ग़ुलामी का ख़त पेश कर रहे हैं।
- इब्ने ज़ही जैसा ख़ुश बयान, नाबग़ा जैसा ज़बान आवर, काब जैसा गाने वाले, हिस्सान रज़ियल्लाहु अन्हु जैसा हक़ीक़त पसंद, ये वे लोग थे जो एक क़सीदा पढ़कर क़ौम को लड़ाने वाले या मिलाने वाले थे। मगर यहाँ सब अंदाज़े बयान भूलकर चुपचाप बैठे हैं।
- अस्हाबे सुफ़्फ़ा रज़ियल्लाहु अन्हुम के दाएं बाएं देखें। आपको इराक़ को जीतने वाले ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु, शाम को जीतने वाले अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु, ईरान को जीतने वाले हज़रत साद बिन वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु और मिस्र को जीतने वाले हज़रत उम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु नज़र आएंगे।
- कोई बता सकता है कि उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु तलवार लेकर निकले थे मगर कुछ ही लम्हों के बाद सिर झुकाए हुए क्यों नज़र हैं?
- बताइए तो सही कि हज़रत अमीर हम्ज़ा रज़ियल्लाहु के दिल

व जिगर को चबाने वाली और उनके आज़ा को हार की शक्ल में पिरोकर गले में डालने वाली हिंदा बिन उत्बा बिन रबी ने कुफ़्र की बाज़ी कैसे हारी और इस्लाम को सीने से क्यों लगाया?

- कोई जवाब दे कि ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु, करज़ी बिन जाबिर अल् क़हरी, ऐनिया बिन हुसैन अल् फ़राज़ी, सुहैल बिन उम्र क़ुरैशी, समाना बिन असाल नजदी और अबू सुफ़ियान बिन हर्ब को किस तलवार ने घायल व मायल किया था?
- सोचिए कि हज़रमूत, जबीरा, बहरीन और हब्शा वग़ैरह के वे इलाक़े हैं कि जहाँ कोई एक मुसलमान सिपाही नहीं गया फिर वहाँ के बादशाह मुसलमान क्यों हुए?
- तुर्कों की तारीख़ क्यों नहीं देखते कि सातवीं सदी के शुरू में ख़िलाफ़ते अब्बासिया का निशान मिटा दिया था मगर आधी सदी में हारे हुए लोगों के दीन ने जीतने वालों के दिलों को जीत लिया। क्या इस क़ौम का इस्लाम में दाख़िल होना इंजेज़ाबी ताक़त व क़ुव्वत की दलील नहीं है?

बस इस्लाम ही है जो पूरब को पश्चिम से मिला सकता है और यही मेरा पसंदीदा दीन है।

رضيت بالله ربا وبمحمد رسولا وبالاسلام دينا

وآخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۝

وفی الارض قطع متجورت وجنت
من اعناب وزرع ونخیل صنوان
وغیر صنوان ان یسقی بمآء واحد
ونفضل بعضها علی بعض فی الاکل
ان فی ذلك لایت لقوم یعقلون۔

और ज़मीन में अलग अलग ख़ित्ते पाए जाते हैं जो एक दूसरे से मुत्तसिल वाक़े हैं। अंगूर के बाग़ात हैं, खेतियाँ हैं, खजूर के पेड़ हैं जिनमें कुछ इकहरे हैं और कुछ दोहरे हैं। इन सबको एक ही पानी सैराब करता है मगर मज़े में हम किसी को बेहतर बना देते हैं और किसी को कमतर। इन सब चीज़ों में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो अक़्ल रखते हैं।

साइंस और इस्लाम

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ وَکَفٰی وَسَلَامٌ علٰی عِبَادِہِ الَّذِینَ اصْطَفٰی اَما بعد.

فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ○

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ○

اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّیْلِ وَالنَّھَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُوْلِی الْاَلْبَابِ.○وَقَالَ اللّٰہ تَعَالٰی فِیْ مَقَامٍ آخر قُلْ انْظُرُوْا مَا ذَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ.وَقَالَ اللّٰہ تَعَالٰی فِیْ مَقَامٍ آخر اِنَّمَا یَخْشَی اللّٰہَ مِنْ عِبَادِہِ الْعُلَمٰا.

وقال النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم طلب العلم فریضۃ علی کل مسلمٍ ومسلمۃٍ.

जदीद साइंसी तहक़ीक़ की बुनियाद

एहतिराम के क़ाबिल प्रिन्सिपल साहब व मोहतरम प्रोफ़ेसर साहिबान, मेहमान गिरामी और अज़ीज़ तालिब इल्मो! आज हम ऐसे दौर में ज़िंदगी बसर कर रहे हैं जो साइंस और टैक्नालोजी का दौर कहलाता है। आज इंसान चाँद पर अपना क़दम टिका चुका है। यह काएनाती बुलन्दियाँ इसके सामने सिमटी हुई नज़र आती हैं और इंसान हर चीज़ की छोटी और बड़ी जुज़ियात मालूम करने की तमन्ना कर रहा है। यही चीज़ आज साइंसी तहक़ीक़ की धुरी बनी हुई है। इंसान के अंदर हक़ीक़तों जानने का जज़्बा इस वक़्त उरूज पर है। लिहाज़ा इस हिसाब से आज इस महफ़िल में इस्लाम और साइंस के उनवान पर कुछ बातें अर्ज़ की जाएंगी।

अक़्लमंद लोग क़ुरआन की नज़र में

जो आयते करीमा तिलावत की है उसमें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इर्शाद फ़रमाते हैं:

﴿إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ لِأُولِي الْأَلْبَابِ﴾

बेशक आसमान और ज़मीन की पैदाइश में और रात दिन के इख़्तिलाफ़ में अक़्लमंदों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं।

यह आयते करीमा हमें दावत दे रही है कि जो लोग आसमान और ज़मीन के बनने में और दिन-रात के हेर-फेर में ग़ौर करते हैं वही अक़्लमंद और समझदार हैं। गोया काएनात में ग़ौर करने वाले इंसान को एक मुमताज़ इंसान कहा है।

साइंस क्या है?

अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं:

﴿وعلم آدم الاسماء كلها﴾

और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को तमाम नाम बता दिए थे।

इस आयत की तफ़्सीर में अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि इससे मुराद दुनिया की चीज़ें और उनकी सिफ़ात थीं। अल्लामा ज़मख़्शरी रह० जिन्होंने तफ़्सीर 'कश्शाफ़' लिखी है जिसका तज़किरा अल्लामा इक़बाल रह० ने किया है—

गिरह कुशा है न राज़ी न साहिबे कश्शाफ़
तेरे वजूद पर जब तक न हो नुज़ूल किताब

वह फ़रमाते हैं कि इल्मे अस्मा से मुराद चीज़ें और उनके फ़ायदे हैं कि उनके क्या फ़ायदे हो सकते है? इमाम राज़ी रह० फ़रमाते हैं कि 'अस्मा' से मुराद चीज़ें हैं। आज के इस दौर में चीज़ों के इल्म का नाम साइंस है।

इस्लाम और फ़ारमाकालोजी (Pharmacology)

अगर आप ग़ौर करें तो पेड़-पौधों और जड़ी-बूटियों पर ग़ौर करना और उनके फ़ायदे और नुक़सान को जानना फ़ारमाकोलोजी कहलता है। एक दवा साज़ क्या करता है? पेड़-पौधों से कुछ चीज़ें लेकर उनको मिला लेता है और उनको मिलाने में मुनासिब मिक़्दार को ध्यान में रखता है क्योंकि ये दोनों चीज़ें बहुत अहम हैं यानी ख़ासियतें क्या हैं और मिक़्दार क्या होनी चाहिए? खुसूसियात (Properties) का जानना इसलिए ज़रूरी है कि हमें एक चीज़ के नफ़े और नुक़सान का पता होना चाहिए। उसके बग़ैर हम उसे इस्तेमाल नहीं कर सकते और मिक़्दार (Quantity) को जानना इसलिए ज़रूरी है कि अल्लाह तआला ने दुनिया में हर चीज़ का एक मैयार मुक़र्रर किया है। क़ुरआन पाक में इर्शाद फ़रमाया ﴿وان من شیء﴾ जो कोई चीज़ है ﴿الا عندنا خزائنه﴾ उसके ख़ज़ाने हैं हमारे पास ﴿وما ننزله الا بقدر معلوم﴾ हम उसे एक मिक़्दार के मुताबिक़ उतारते हैं। जो चीज़ें इस दुनिया में रखी गई हैं अल्लाह तआला के यहाँ उसका एक अंदाज़ा है। इसलिए फ़रमाया ﴿وكل شیء عنده بمقدار﴾ हर चीज़ की उसके यहाँ एक मिक़्दार है। एक चीज़ आप ज़्यादा मिक़्दार में लेंगे तो आपको नुक़सान देगी और वही चीज़ थोड़ी मिक्दार में लेंगे तो फ़ायदा पहुँचाएगी। कभी थोड़ी मिक्दार

में लेंगे तो फ़ायदा नहीं देगी और ज़्यादा मिक़्दार में लेंगे तो फ़ायदा देगी। हीरा और कोयला दोनों कार्बन हैं मगर एक ख़ूबसूरत और चमकदार, क़ीमती और सख़्त तरीन जबकि कोयला बदसूरत, काला, सस्ता और भुर-भुरा होता है। यह मिक़्दारों की कमी ज़्यादती का करिश्मा है।

कैमिस्ट्री और फिजिक्स क्या है?

दुनिया की सारी चीज़ें जिन अनासिर से मुरक्कब हैं उनकी ख़ासियतों और तासीरों का जाएज़ा लेने का नाम कैमिस्ट्री है। इसके अलावा इस काएनात के अंदर जो क़ुवत्तें काम कर रही हैं उनके बाक़ायदा मुताले का नाम फिजिक्स है। अल्लाह तआला ख़ुद इंसान को दावत दे रहे हैं ﴿اُنْظُرُوْا﴾ तुम देखो ﴿مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ.﴾ कि आसमान और ज़मीन में तुम्हारे लिए क्या रखा है। जब अल्लाह तआला ख़ुद दावत दे रहे हैं ग़ौर व फ़िक्र की तो एक इंसान इस दावत पर लब्बैक कहते हुए इनमें ग़ौर व फ़िक्र करेगा तो क्या वह इस्लाम के ख़िलाफ़ कोई काम कर रहा होगा? नहीं! हर्गिज़ नहीं।

इस्लाम और ज़ूलोजी

अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿اَفَلَا يَنْظُرُوْنَ اِلَى الْاِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ.﴾

ये क्यों नहीं देखते कि हमने ऊँट को कैसे पैदा किया।

आज ज़ूलोजी का तालिब इल्म यही तो पढ़ रहा होता है कि इस जानवर की पैदाइश में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की क्या

निशानियाँ हैं? यह चीज़ कैसे पैदा हुई? वह चीज़ कैसे पाई हुई? रही बात यह कि कोई आदमी सिर्फ़ इसी चीज़ को दीन समझने लग जाए तो वह ग़लती पर होगा क्योंकि यही दीन नहीं है बल्कि दीन का एक हिस्सा है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हमें एक आलमी और आसमानी दीन अता फ़रमाया है जिसमें ज़मीन व आसमान को आँख खोलकर देखने का हुक्म दिया गया है कि तुम क्यों नहीं देखते? सुब्हानल्लाह।

टैक्नालोजी (Technology) किसे कहते हैं

साइंस ने तो चीज़ों और उनकी सिफ़ात को तर्तीब दे दी। अब उन चीज़ों से और उनकी सिफ़ात से अमली तौर पर फ़ायदा उठाने का नाम टैक्नालोजी है। मसलन बिजली और उससे जुड़े फ़ायदों को हासिल करने के तरीक़े का इलैक्ट्रिकल टैक्नालोजी (Electrical Technology) कहलाता है। लोहा और उससे जुड़ी हुई दूसरी धातों से फ़ायदा उठाने को मकैनिकल टैक्नालोजी (Mechanical Technology) कह दिया गया। बिल्डिंग और उससे जुड़े शोबे को सिविल इंजीनियरिंग (Civil Engeneering) कहा गया।

टैक्नालोजी क़ुरआन मजीद की रोशनी में

क़ुरआन पाक में कई जगहों पर ऐसी साफ़ बातें की गई हैं जो फ़ि[illegible]त के क़ानून को खोलती हैं। मसलन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इर्शाद फ़रमाते हैं ﴿وانزلنا الحديد﴾ हमने लोहे को उतारा ﴿فيه بأس شديد﴾ इसमें बड़ी ताक़त है ﴿ومنافع للناس﴾ और इसमें इंसानों के लिए बड़े फ़ायदे हैं। देखिए यह बात उस वक़्त कही जा रही है जब कि इंसानों को लोहे के सही फ़ायदों का पता ही नहीं था।

जब लोहे को तलवार और दूसरे हथियारों के तौर पर इस्तेमाल किया जाता था। इसके फ़ायदों से इंसान वाक़िफ़ नहीं था। मगर आज स्टील टैक्नालोजी (Steel Technology) सबसे ज़्यादा अहम है। पूरी दुनिया में जितना लोहे से फ़ायदा उठाया जा रहा है किसी और चीज़ से उतना फ़ायदा नहीं उठाया जा रहा है बल्कि जो क़ौम स्टील टैक्नालोजी में में सबसे आगे है वही दुनिया में राज कर रही है।

मकैनिकल इंजीनियरिंग की मिसाल

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के लिए लोहे को नरम कर दिया था। क़ुरआन पाक में भी तज़किरा फ़रमाया ﴿وَاَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ﴾ और हमने लोहे को उसके लिए नरम कर दिया। दूसरी जगह इर्शाद फ़रमाया ﴿وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ﴾ और हमने उसे ज़िरहे (लोहे का सीनाबंद) बनाने का इल्म दिया था। बस अगर एक पैग़म्बरे ख़ुदा दुनिया में लोहे की सलाख़ों से ज़िरहें बना रहे हैं तो आज के दौर में अगर कोई इंजीनियर इसी स्टील को इंसानों के फ़ायदे के लिए इस्तेमाल कर रहा होगा तो क्या वह ग़ैर-इस्लामी काम कर रहा होगा? नहीं हर्गिज़ नहीं। बस मकैनिकल इंजीनियरिंग ग़ैर-इस्लामी चीज़ नहीं है।

वूड (लकड़ी) इंजीनियरिंग की मिसाल

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने क़ुरआन पाक में इर्शाद फ़रमाया ﴿وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا﴾ आप बनाइए कश्ती को हमारी आँखों के सामने। एक एक लफ़्ज़ हीरे मोती की तरह क़ीमती है। ﴿وَوَحْيِنَا﴾ और हमारी 'वही' के मुताबिक़ हो। मालूम

हुआ जैसे कोई कारीगर काम कर रहा हो और सुपरवाइज़र उसकी निगरानी कर रहा होता है। उसे देख रहा होता है कि भाई काम ठीक चल रहा है या नहीं। ठीक इसी तरह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त अपने पैग़म्बर को इर्शाद फ़रमाते हैं ﴿وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا﴾ आप कश्ती को बनाइए ﴿بِأَعْيُنِنَا﴾ हमारी निगरानी के अंदर ﴿وَوَحْيِنَا﴾ हमारी हिदायतों के मुताबिक़ हो। अब बताइए हिदायत देने वाले अल्लाह, निगरानी करने वाले अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त और एक पैग़म्बर अलैहिस्सलाम से कश्ती बना रहे हैं। अगर इसी तरह आज कोई इंसान लकड़ी से इंसानियत के फ़ायदे के लिए कुछ काम कर लेता है तो क्या वह ख़िलाफ़े इस्लाम काम कर रहा है। हर्गिज़ नहीं। इसी का नाम वूड इंजीनियरिंग है।

सिविल इंजिनियरिंग की मिसाल

बाज़ रिवायतों के मुताबिक़ हज़रत सिकंदर ज़ुलक़रनैन अलैहिस्सलाम अल्लाह के पैग़म्बर हैं। आपने दुनिया में एक दीवार बनाई। क़ुरआन मजीद में आया है कि दो पहाड़ों के बीच एक रास्ता था। जहाँ से डाकू आते थे और उनकी क़ौम को नुक़सान पहुँचाते थे। क़ौम ने कहा हज़रत इसका कुछ ईलाज कीजिए। आपने फ़रमाया हम दीवार बना देते हैं। यह वह दौर था कि जब दीवार बनाने के लिए ईंट या पत्थर इस्तेमाल होते थे। मगर उन्होंने इसमें स्टील को इस्तेमाल किया। क़ुरआन पाक में आता है कि आप ने अपनी क़ौम से फ़रमाया ﴿آتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ﴾ तुम मुझे ला दो लोहे के टुकड़े। गोया दीवार बना रहे हैं और इसमें लोहे के टुकड़े इस्तेमाल कर रहे हैं, सुब्हानअल्लाह।

आज का सिविल इंजीनियर क्या करता है? वह बैठकर कंकरीट के अंदर डालने के लिए लोहे को डिज़ाइन कर रहा होता है। इसको सिविल इंजीनियरिंग कहते हैं।

इस्लाम और सय्याहत (घूमने) का इल्म

क़ुरआन मजीद में इर्शाद फ़रमाया ﴿قل سيروا في الارض﴾ ऐ मेरे महबूब आप फ़रमा दीजिए कि तुम ज़मीन के अंदर सैर करो ﴿فانظروا﴾ तुम देखो इस बात को कि ﴿كيف كان عاقبة المكذبين﴾ झुठलाने वालों का क्या अंजाम हुआ। तो यह सफ़र का हुक्म, यह घूमने का हुक्म यह चीज़ों से और तारीख़ से इबरत हासिल करने का हुक्म अल्लाह का क़ुरआन हमें दे रहा है। अगर इंसान अल्लाह तआला के इस हुक्म पर इबरत हासिल करने के लिए दुनिया का सफ़र करता है तो ठीक इस्लामी काम कर रहा है।

इब्ने मौक़ल एक मुसलमान घुमक्कड़ था। जिसने अठ्ठाइस साल तक पूरी दुनिया के अंदर सैर व सफ़र किया और उसके बाद उसने एक किताब तर्तीब दी। इस्लामी दुनिया आज उन्हें "साहिबुल मसालिक वल मुमालिक वल मग़ादिर वल मुहालिक' कहती है। इसी तरह इब्ने बतूता ने भी पूरी दुनिया का सफ़र किया और सफ़र की यादगार 'सफ़रनामा' किताब की सूरत में छोड़ गया।

मख़्लूक़ में ग़ौर फ़िक्र इस्लामी हुक्म है

दुनिया की दूसरी चीज़ों को ले लीजिए। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿اولم ينظروا في ملكوت السموٰت والارض وما خلق الله من شيء .﴾

क्या ये नहीं देखते ﴿ملكوت السموٰت والارض﴾ में और जो चीज़ें अल्लाह तआला ने पैदा की हैं। फ़रमाया ﴿والى السماء كيف رفعت﴾ और आसमान में ग़ौर नहीं करते कि हमने उसको कैसे बुलन्दियाँ अता फ़रमायीं। ﴿والى الجبال كيف نصبت﴾ क्यों नहीं देखते कि अल्लाह तआला ने पहाड़ों को मेख़ों की तरह ज़मीन पर कैसे गाड़ दिया? ﴿والى الارض كيف سطحت﴾ और क्यों ग़ौर नहीं करते कि हमने ज़मीन को कैसे बिछा दिया। तो आज इंसान अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की बनाई हुई काएनात में ग़ौर कर रहा होता है तो गोया वह अपने परवरदिगार के हुक्म पर लब्बैक कर रहा होता है।

साइंस इस्लाम के तराज़ू पर

एक बात अच्छी तरह दिमाग़ में बिठाने की ज़रूरत है कि अगर कोई इंसान साइंस के पैमाने पर इस्लाम को तोलने में लग जाएगा तो नुक़सान उठाएगा। इसलिए कि साइंस की तहक़ीक़ तो बढ़ती चली जाएगी। इस्लाम को साइंस के तराज़ू पर तोलने की मिसाल तो ऐसी है जैसे कोई सुनार की तराज़ू पर ओहद पहाड़ तोलने लग जाए। क्या ऐसा हो सकता है कि सुनार की तराज़ू हो और कहा जाए कि इस पर हिमालय पहाड़ को तोल कर दिखा दे? कोई भी नहीं तोल सकेगा। इसी तरह साइंस की तराज़ू पर हम इस्लाम को नहीं तोल सकते। हाँ साइंस की हक़ीक़त को देखना हो तो कि यह अपनी आख़िरी मंज़िल तक पहुँच चुकी है या नहीं? तो उसे इस्लाम के तराज़ू पर तोलें क्योंकि हमें अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक में काएनात की सदाक़तें बता दीं हैं। आइए कुछ मिसालों पर ग़ौर कीजिए :

पानी ज़िंदगी का लाज़मी हिस्सा है

आज हमें क़ुरआन मजीद में से बड़े साइंसी राज़ मिलते हैं। इंसान हैरान होता है कि चौदह सौ साल पहले जबकि साइंसी समझ इतनी नहीं थी तो कैसे क़ुरआन पाक में यह हिकमतें बयान कर दी गयीं? इससे क़ुरआन पाक का हक़ होना हमारे सामने आता है। मसलन फ़रमाया गया ﴿وجعلنا من الماء كل شيء حي﴾ और हमने पानी से हर चीज़ को ज़िंदगी बख़्शी। आज साइंस भी यही कहती है कि वाक़ई अगर कहीं ज़िंदगी का तसव्वुर है तो पानी इसके लिए ज़रूरी चीज़ है और जहाँ पानी नहीं वहाँ ज़िंदगी का तसव्वुर भी मुमकिन नहीं, सुब्हानअल्लाह।

ऐटम और मालिक्योल का तसव्वुर क़ुरआन मजीद की रोशनी में

फिर एक जगह फ़रमाया ﴿عالم الغيب﴾ यानी वह रब्बुलइज़्ज़त ग़ैब का जानने वाला है,

﴿لا يعزب عنه مثقال ذرة في السموٰت ولا في الارض﴾

उससे छुप नहीं सकता कोई भी ज़र्रा जो आसमान व ज़मीन में है। ﴿ولا اصغر من ذلك ولا اكبر﴾ बल्कि इससे भी छोटा या इससे बड़ा। अच्छा आज के दौर में यह खुली हक़ीक़त है कि पूरी काएनात के माद्दे की बुनियादी इकाई ऐटम है। तो यह 'मिस्क़ाला ज़र्रा' क्या है? वही ऐटम मिस्क़ाला ज़र्रा कहलाएगा। और यह जो फ़रमाया कि ﴿ولا اصغر من ذلك﴾ तो फिर यहाँ असग़र का क्या मतलब? इलैक्ट्रान, प्रोटान और न्युट्रान ये सब के **सब**

ऐटम के ज़र्रात से छोटे हैं। इसलिए ये असग़र कहलाएंगे। अगर शुआओं (Rays) की मिसाल ली जाए तो अल्फ़ा, बेटा और गामा शुआऐं भी असग़र की मिसालें हैं और जो आगे फ़रमाया ﴿ولا اكبر﴾ अकबर से क्या मुराद लिया जा सकता है कि ऐटम मिलकर मालीक्योल बन जाते हैं या अकबर से शिहाब व साक़िब (Metroits) भी हो सकते हैं जो दुनिया पर बरसते हैं। तो फ़रमाया कि ज़र्रे से छोटी या ज़र्रे से बड़ी कोई चीज़ भी ऐसी नहीं जो अल्लाह के इल्म से छुपी हुई हो।

इंसान की हिफ़ाज़त का क़ुदरती इंतिज़ाम

यह शिहाबे इस दुनिया के ऊपर बारिश की तरह बरस रहे हैं। आप हैरान होंगे कि आज की साइंस कहती है कि ख़ला में हर वक़्त शिहाबों की गोला बारी हो रही है। यह शिहाबे आमतौर पर बहुत छोटे होते हैं। चंद मिलीमीटर भी हो सकते हैं। भला ये कितनी तेज़ी से सफ़र करते हैं? 150 किलोमीटर सेकेंड की रफ़्तार से मगर अल्लाह तआला ने ज़मीन से 80 किलोमीटर ऊपर फ़िज़ा का एक हिस्सा बना दिया कि यह आते हैं और वहाँ आकर बिखर जाते हैं। इंसान को पता ही नहीं कि कितनी ख़तरनाक चीज़ों से अल्लाह तआला उसकी हिफ़ाज़त फ़रमा रहे हैं। 'जिनियस बुक आफ़ वर्ल्ड रिकार्ड' में लिखा है कि हर दिन में चार सौ टन वज़न शिहाबों की शकल में बरसाया जा रहा है।

बंगला देश में मैटराइट्स (शिहाबों) की बारिश

एक दफ़ा बंगला देश में शिहाबों की बारिश हुई। इस आजिज़ ने उन पत्थरों को एक अजाइब घर में अपनी आँखों से देखा।

उनका साइज़ काफ़ी बड़ा था। मैं हैरान हुआ कि इतने बड़े शिहाबे भी आ सकते हैं। जी हाँ रशिया में एक शिहाब गिरा जिसने ज़मीन पर दो सौ मीटर की गहराई कर दी। यह कुछ बातें तो बीच में अर्ज़ कर दी गयी हैं।

इस्लाम और साइंस के हिसाब से काएनात का अंजाम

साइंस कहती है कि एक बड़ा धमाका हुआ था जिसकी वजह से काएनात बनी और अल्लाह तआला फ़रमाते कि यह ज़मीन व आसमान अपने बनने से पहले 'दुख़ान' यानी धुँआ थे। धुँआ आसानी से समझने के लिए लफ़्ज़ है वरना तो आज के दौर में इसी को गैस कहते हैं। यह आसमान और ज़मीन गैस की शक्ल में थे कि अल्लाह तआला के हुक्म से बड़ा धमाका (Big Bang) हुआ और काएनात बना दी गई।

यहाँ पर एक मज़े की बात और बताता चलूँ कि आजकल न्युयार्क के एक प्लानिटेरियम (Palntarium) में एक साइंसी फ़िल्म (Documentary) दिखाई जा रही है जिसमें सात बड़े दिलचस्प सवालों के जवाब समझाए गए हैं। उनमें से एक सवाल आज के उनवान के बारे में है कि इस काएनात का अंजाम क्या है? तो अमरीका के साइंसदान आज यह साबित कर रहे हैं कि काएनात फैलती चली जा रही है और एक वक़्त ऐसा आएगा कि यह फैलाव रुकेगा और वह दोबारा सिकुड़ेगी जिसके नतीजे में एक और धमाका होगा उसका नाम उन्होंने रखा है 'दूसरा बड़ा धमाका' (Another Big Bang)। जबकि हम क़यामत को दूसरा

बड़ा धमाका ही तो कहते हैं। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿ان زلزلت الساعة شی ء عظیم.﴾

यानी क़यामत का ज़लज़ला बहुत बड़ी बात है।

जैसे कोई गढरिया किसी भेड़ को हाँककर किसी मंज़िल तक पहुँचा देता है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त भी साइंसदानों को हाँककर किसी मंज़िल तक पहुँचा देंगे यहाँ तक कि उन पर हक़ खुल जाएगा। इसीलिए फ़रमाया :

﴿سنریهم ایاتنا فی الآفاق وفی انفسهم حتی یتبین لهم انه الحق.﴾

हम उनको आफ़ाक़ में और उनके नफ़्सों (जानों)में अपनी निशानियाँ दिखाएंगे यहाँ तक कि उन पर हक़ वाज़ेह हो जाएगा।

और अगर फिर भी नहीं मानेंगे तो इस काएनात का ﴿کطی السجل للکتب﴾ यानी जिस तरह कोई किताब को बंद कर देता है हम इसको भी लपेटकर रख देंगे।

इस्लामी तालीमात में ब्लैक होल (Blck Hole) का तसव्वुर

ब्लैक होल क्या है? यह आज के दौर में बड़ा दिलचस्प उनवान है। साइंस की दुनिया में इस पर बड़ी बहसें चल रही हैं, तहक़ीक़ात हो रही हैं। स्मिथसोनियन स्पेस म्युज़ियम (Smithsonian Space Musium) वाशिंगटन में एक म्युज़ियम है जिसके अंदर उन्होंने एक कमरा इसके लिए ख़ास किया हुआ है कि दुनिया में ब्लैक होल के बारे में जो भी ताज़ा तरीन तहक़ीक़

हो उसको आप यहाँ बयान करें ताकि लोगों को ब्लैक होल के बारे में पता चलता रहे।

कुछ अर्से पहले की बात है कि साइंस की एक किताब पढ़ते हुए यह आजिज़ ब्लैक होल का ज़िक्र पढ़ रहा था कि इस काएनात में कुछ जगहें ऐसी है कि जहाँ बिल्कुल तारीकी है। इतनी तारीकी है कि अगर लाइट फोटोन (Light Photon) भी उस तरफ़ फेंके जाते हैं तो उनको भी जज़्ब कर लेते हैं। जो चीज़ लाइट फोटोन (Light Photon) को भी जज़्ब कर ले उसकी कशिश सक़ल (Gravitational Force) कितनी ज़्यादा होगी। अगर पूरी ज़मीन सिकुड़कर एक अंडे के बराबर कर दें तो जितनी कशिश सक़ल (Gravitational Force) होगी उससे कहीं ज़्यादा ब्लैक होल की कशिश सक़ल (Gravitational Force) होती है तो ब्लैक होल इस काएनात में बहुत सी जगहों पर मौजूद हैं। अजीब बात है कि अगर कोई भी चीज़ ब्लैक होल में चली जाएगी तो (It will vanish into nothingness) वह फ़ना हो जाएगी। मैंने साइंस की किताबों में (Nothingness) का तसव्वुर पहली दफ़ा देखा। दिल ने कहा आज तक तो कहते थे :

(Matter can neither be created nor be destroyed, It can only change its state.)

कि माद्दे को न तो पैदा किया जा सकता है और न ही फ़ना किया जा सकता है। यह सिर्फ़ अपनी हालत बदल सकता है।

तो साइंस ने (Nothingness) का लफ़्ज़ कहना क्यों शुरू कर दिया? इसको तो हम फ़ना कहते हैं। आगे लिखा हुआ था :

(Laws of physics and chemistry become void here.)

व सुन्नत के अंदर कई दलीलें मिलती हैं। देखिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सारी ज़िंदगी कभी सफ़र नहीं किया न कभी समुंद्री जंग की बल्कि सिर्फ़ ग़ज़्वों में हिस्सा लिया जो कि ज़मीनी जंगें कहलती हैं। मगर आपको पता था कि इस्लाम की मज़बूती और सर-बुलंदी के लिए जैसे ज़मीनी जंगे ज़रूरी हैं ऐसे ही समुंद्री जंगे भी ज़रूरी हैं। लिहाज़ा आपने फ़रमाया मेरी उम्मत में जो सबसे पहले समुंद्री जंग करेंगे मैं उन लोगों को जन्नत में जाने खुशख़बरी देता हूँ। अगर खुश्की पर अल्लाह के नाम के लिए लड़ रहे हैं तो अल्लाह के दीन को पहुँचाने के लिए उनको तरी में भी जाना पड़ेगा।

दलीन न० 2

एक सहाबी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुसाफ़ा किया। उसके हाथ सख़्त थे। आपने पूछा यह क्या है? कहने लगा जी मैं पत्थर तोड़ता हूँ इसलिए मेरी हथेली का गोश्त सख़्त हो गया है। आप ने फ़रमाया ﴿الكاسب حبيب الله﴾ हाथ से मेहनत मज़दूरी करने वाला अल्लाह का दोस्त होता है। अगर आज के दौर में कोई आदमी हाथ से मेहनत मज़दूरी करेगा तो वह बिल्कुल इस्लामी चीज़ समझी जाएगी और अल्लाह तआला उसको सवाब अता फ़रमाएंगे।

दलील न० 3

एक सहाबी हाथ में चमकदार तलवार ले जा रहे थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा तो पूछा कि तेरे हाथ में क्या है? जी यह तलवार है। एक क़ाफ़िला फ़लाँ जगह की बनी हुई

लगे ऐ अल्लाह के नबी! वह जानवर कहाँ होते हैं? नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वे अल्लाह की चारागाहों में चर रहे हैं, सुब्हानअल्लाह।

देखिए कब यह बात बताई जा रही है और कब आज यह साइंस मालूम कर रही है कि इस ख़ला में कुछ जगहें ऐसी हैं जिन्होंने हमारे इन सारे सय्यारों को बराबर रखा हुआ है और अगर कोई भी सय्यारा अपने मदार से निकलेगा तो किसी न किसी ब्लैक होल के मुँह में चला जाएगा। ब्लैक होल इसको एक ही लुक़्मा बना लेगा। आज उम्मते मुस्लिमा के लिए ज़रूरी है कि हम क़ुरआनी आयात और हदीसों को सामने रखते हुए इल्मे अस्मा, इल्मे अशया को समझने और उससे फ़ायदा उठाने की कोशिश करें।

आज का दौर तेज़ तरीन दौर है

आज के दौर में ज़िंदगी बहुत तेज़ हो गई है। मसलन हर कंप्यूटर में मैथ प्रोसेसर (Math Processor) इस्तेमाल होता है। अगर आज न० 286 इस्तेमाल हो रहा है तो सुबह उठते ही पता चलता है कि 386 इस्तेमाल हो रहा है। अगला दिन होता है तो 486 इस्तेमाल होना शुरू हो जाता है और कुछ दिन के बाद 586 बाज़ार में आ जाता है। इतनी तेज़ी से तहक़ीक़ हो रही है कि दुनिया के अंदर दिनों में तब्दीलियाँ आ रही हैं और हमारे लिए इन तब्दीलियों का अंदाज़ा लगाना मुश्किल है।

इस्लाम और साइंस का चाँद देखने के बारे में बुनियाद

एक दफ़ा अमरीका में चाँद देखने का मौक़ा था। मैंने एक

दिन पहले स्पेस म्युज़ियम में फ़ोन किया कि हमने फ़लाँ दिन नया चाँद (Crest) देखना है। आप बताइए कि हमें अमरीका में किस किस जगह नज़र आ सकता है? मक़सद यह था कि हम उनकी जदीद तरीन साइंस से फ़ायदा क्यों न उठाएं कि हमें पहले ही पता चल जाए। उन्होंने कहा आप नवल आबज़रवेटरी (Naval Observatory) (बहरिया का तहक़ीक़ी इदारा) से राब्ता करें। उन्होंने मुझे फ़ोन नंबर दिया। मैंने नवल आबज़रवेटरी (Naval Observatory) को फ़ोन किया। उन्होंने कहा अच्छा हम आपको कंप्यूटर सैक्शन में मिला देते हैं। लिहाज़ा उन्होंने कंप्यूटर सैक्शन में मिला दिया। वहाँ एक औरत कंप्यटर पर काम कर रही थी। वह कहने लगी चाँद जब अपने मदार पर सफ़र कर रहा होता है तो हमें उसकी लकीर के एक एक इंच का पता होता है। मैंने कहा कि मैं कल की तारीख़ में यहाँ चाँद देखना चाहता हूँ, क्या मेरे लिए मुमकिन है? उसने कहा कि मैं आपको अंदाज़ा बता सकती हूँ कि फ़लाँ-फ़लाँ जगह पर मुमकिन है मगर यक़ीन से नहीं कह सकती। मैंने कहा कि इंसान तो चाँद पर क़दम रख चुका है, हमें यह भी पता नहीं चल सकता कि चाँद कहाँ से नज़र आएगा और कहाँ से नहीं? वह कहने लगी जी हाँ मैं बताती हूँ मगर उम्मीद है कि वहाँ से नज़र आएगा मगर सौ फ़ीसद यक़ीन से नहीं कह सकती। मैं ने कहा इसकी वजह क्या है? उसने कहा जी वजह यह है कि हमने चाँद की हरकत को समझने के लिए हिसाबी मसावतों (Mathematical Equation) का एक सैट बनाया हुआ है जिसे सिमुलेटर (Simulator) कहते हैं। उस सिमुलेटर में 6000 हज़ार वेरिएबल होते हैं। प्यारे बच्चो! आप

जानते हैं कि इक्वेशन में कुछ मुस्तक़िल मिक़्दारें (Constants) और कुछ बदलने वाली मिक़्दारें (Variables) होती हैं। वह कंप्यूटर इंजीनियर लड़की कहने लगी कि इन 6000 हज़ार वेरिएबल्स में से एक भी तब्दील हो जाए तो चाँद की पोज़ीशन बदल सकती है। इसलिए मैं कैसे कह सकती हूँ कि आपको ठीक फ़लाँ जगह चाँद नज़र आएगा। ऐसा मुमकिन है कि कोई फ़ैक्टर इसमें बदल जाए और उसमें कंपन पैदा हो जाए। लिहाज़ा मैं सौ फ़ीसद यक़ीन के साथ नहीं सकती कि आपको वह उस जगह नज़र आएगा या नहीं जब उसने यह बात की तो मुझे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस याद आ गई कि मेरी उम्मत ﴿صوموا لرؤيته﴾ चाँद देखना तो तुम रोज़ा रख लेना ﴿افطروا لرؤيته﴾ और अगर तुम चाँद को देख लेना तो रोज़ा इफ़्तार कर लेना। आज साइंसी तहक़ीक़ों के बाद भी साइंसदान इस बात को तसलीम करते हैं कि हम यक़ीन के साथ नहीं कह सकते कि चाँद नज़र आएगा या नहीं आएगा। बेहतर उसूल यही है कि चाँद देखो तो रोज़ा रखो और चाँद देखो तो इफ़्तार (ईद) करो।

इस्लाम में टैकनालोजी की तरक़्क़ी के लिए ठोस दलाइल

दलील न० 1

क्या इस्लाम में टैकनालोजी के बढ़ावे के लिए कुछ तालीमात मिलती हैं? जी हाँ इस टैकनालोजी के बढ़ावे के लिए हमें किताब

वहाँ जाकर फ़िज़िक्स कैमिस्ट्री के क़ानून ख़त्म हो जाते हैं। यह पढ़कर मेरे अंदर और दिलचस्पी पैदा हुई कि यह क्या चीज़ है? इसलिए इसके बारे में और मालूमात हासिल कीं। जब इस पर काफ़ी लिट्रेचर पढ़ा तो पता चला कि हमारी कहकशा (Galaxy) और सूरज का निज़ाम (Soliar System) का एक निज़ाम तवाज़ुन (Equilibrium) के अंदर काम कर रहा है। उसके पीछे बड़े बड़े फ़ैक्टर मौजूद हैं जिसमें एक फ़ैक्टर ब्लैक होलस का भी है। उसने हमारे उन तमाम सय्यारों को तवाज़ुन के अंदर रखा हुआ है अगर वह ब्लैक होल न होते तो तवाज़ुन (Equilibrium) ख़राब हो जाता। यही वजह है कि हर चीज़ अपने मदार पर काम कर रही है, सुब्हानअल्लाह।

इमाम नुव्वी रह० की एक किताब 'रियाज़ुस्सालीहीन' की एक हदीस याद आई जो कि इस आजिज़ ने कालेज के ज़माने में पढ़ी थी। एक बार एक सहाबी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और पूछा, ऐ अल्लाह के नबी! अगर यह सूरज चाँद और सितारे अल्लाह तआला का हुक्म मानना छोड़ दें तो क्या होगा? कितना प्यारा सवाल पूछा और कितने सादा अंदाज़ में पूछा। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसका जवाब उनकी ज़हनी सतह को सामने रखकर दिया। आप ने फ़रमाया कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त अपने जानवरों में से कोई जानवर उस पर मुसल्लत कर देंगे जो उन्हें एक ही लुक़्मा बना लेगा। इसका मतलब यह है कि इतना बड़ा होगा कि सब सय्यारों को, सूरज को और चाँद को एक ही लुक़्मा बना लेगा। जब आपने यह फ़रमाया तो वह सहाबी बड़े हैरान हुए और पूछने

तलवार लेकर आया तो मैंने उनसे ख़रीद ली। अल्लाह के महबूब ने फ़रमाया कि अगर तू अपने हाथ की बनी हुई तलवार से जिहाद करता तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त तुझे दोहरा अज्र अता फ़रमा देते। तो यह क्या चीज़ अपनी टैक्नालोजी के वसाईल को बढ़ावा देने के लिए कहा जा रहा है।

दलील न० 4

शुरू में सहाबाए किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को इबरानी ज़बान नहीं आती थी। दुनिया के बादशाहों को उसमें ख़त लिखे जाते थे। क्योंकि सहाबा सिर्फ़ अरबी जानते थे इसलिए वे ख़त यहूदियों से लिखवाते थे। एक बार एक सहाबी कहने लगे कि ऐ अल्लाह के नबी! हमें क्या पता कि वह क्या लिख देते हैं अगर इजाज़त हो तो मैं इबरानी ज़बान सीख कर आता हूँ। आपने इजाज़त दे दी। लिहाज़ा वह सहाबी वहाँ से गए और पंद्रह दिनों के अंदर वह ज़बान सीखकर वापस तशरीफ़ ले आए।

मुहम्मद बिन क़ासिम रह० का अज़ीम कारनामा

दीनी उलूम से इंसानी कमालात उजागर हो जाते हैं। इस्लामी दुनिया में सबसे कम उम्र सिपाहसालार उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा और हज़रत मुहम्मद बिन क़ासिम रह० हैं। सत्रह साल की उम्र में सिपाहसालारी के फ़राईज़ अंजाम दिए। आज सत्रह साल का बच्चा घर का निज़ाम नहीं चला सकता जबकि वह सत्रह साल का बच्चा फ़ौज का जरनैल बनकर आ रहा है। इस्लाम ने उठती जवानियों को ऐसी सिफ़ात अता कर दीं कि

उन्होंने पूरी की पूरी फ़ौज को कमांड करके दिखा दिया।

हज़रत इमाम शाफ़ई रह० के इल्मी कमालात

उलमाए किराम में कुछ ने बहुत ही कम उम्री में इल्म के जाम पिए। हज़रत इमाम शाफ़ई रह० के हालात ज़िंदगी में लिखा है कि इमाम शाफ़ई रह० तेरह साल की उम्र में इमाम शाफ़ई बन चुके थे। इस उम्र में उन्होंने क़ुरआन पाक का दर्स देना शुरू कर दिया था। यह वह वक़्त था कि जब सफ़ेद बाल वाले बड़े-बड़े मशाइख़ उनके दर्स में बैठा करते थे।

एक बार क़ुरआन पाक का दर्स दे रहे थे। उसी दौरान दो चिड़ियाँ उड़ती हुई उनके क़रीब आकर गिरीं। यह कम उम्र तो थे ही। इन्होंने अपना अमामा उतारा और उनके ऊपर रख दिया। अब दर्स के दौरान जो यह काम किया तो जो मशाइख़ बैठे थे उन्होंने महसूस किया कि यह अदब के ख़िलाफ़ है। लिहाज़ा उन्होंने अमामा अपने सर पर रखा और यह फ़रमाया ﴿الصبی صبی ولو کان ابن نبی﴾ कि बच्चा तो बच्चा ही होता है चाहे किसी नबी का ही क्यों न हो। फिर उन मशाइख़ की तसल्ली हुई कि हाँ कम उम्री की वजह से ऐसी बातें हो सकती हैं।

मुसलमान साइंसदानों की ख़िदमतें

इस्लाम को उरूज जो मिला तो उसमें जहाँ मुसल्ले पर बठने वालों का हिस्सा है, वहाँ उनका भी हिस्सा है कि जिन्होंने इस उम्मत को दुनियावी फ़ायदे पहुँचाने के लिए काम किया। साइंस और टैक्नालोजी के लिए अनथक कोशिशे कीं और बड़े-बड़े

कारनामें अंजाम दिए। हकीम बू अली सीना ने 'अल् क़ानून फ़िित्तिब' नाम की किताब लिखी। आप हैरान होंगे कि सैकड़ों साल गुज़रने के बाद भी आज के साइंसी दौर में यह एक ठोस किताब समझी जाती है। इब्ने रश्द ने सबसे पहले तहक़ीक़ की कि जिस आदमी को एक बार चेचक निकल आती है उसको दोबारा ज़िंदगी भर चेचक नहीं निकलती। हिंदसों के इल्म में नसीरुद्दीन तूसी ने उक़लिदस की मुबादात का खुलासा लिखा। आँखों के साइंस में अबुल हैसम ने 'किताबुल मनाज़िर' लिखी। अली बिन ऐसी ने 'तज़्किरातुल काहिलीन' लिखी और इल्मे जर्राही (सर्जरी) में सुन्न करने वाली दवाई के इस्तेमाल की तजवीज़ पेश करने वाला पहला शख़्स बना।

हकीम तिर्मिज़ी रह० की साइंसी ख़िदमतें

हकीम तिर्मिज़ी रह० एक ही वक़्त में एक आलिम और मुहद्दिस भी थे और बड़े माहिर हकीम भी थे। तिर्मिज़ में इस आजिज़ को हाज़िर होने का मौक़ा मिला। उनका बनाया हुआ हस्पताल देखा। यह एक अजीब तज्रिबा था। उस दौर में उन्होंने आप्रेशन करने के लिए ज़मीन के नीचे जगहें बनाई हुई थीं। आप हैरान होंगे कि उन्होंने नीचे ऐसी जगह बनाई हुई थी कि वह जरासीम से बिल्कुल पाक थी। ऐसा लगता था कि उस दौर में आप्रेशन करने के लिए जगहों को एयर कंडीशन बनाना, साफ़-सुथरा माहौल पैदा करना और इन तज्रिबागाहों (Laboratories) का क़ायम करना हमारे पिछले बुज़ुर्गों का कारनामा है।

मिर्ज़ा अलग़ बेग और ख़लाई (आंतरिक्ष के) सफ़र का तसव्वुर

इस आजिज़ को समरक़ंद जाने का मौक़ा मिला। वहाँ पर उन्होंने एक ख़लाई तज्रिबागाह (Space Laboratory) बनाई हुई है। जब रशिया ने सबसे पहला ख़लाई सय्यारा भेजा तो उसकी साइंसी फ़िल्म ने यह महसूस किया कि हमें ये तमाम मालूमात इस लैबोट्री से मिली थीं जो एक मुसलमान साइंसदान मिर्ज़ा अलग़ बेग ने क़ायम की थी। मिर्ज़ा अलग़ बेग महलों में रहने वाला शहज़ादा था। अल्लाह तआला ने उसके अंदर तहक़ीक़ का ऐसा माद्दा रख दिया था कि उसकी तहक़ीक़ को बुनियाद बनाकर रूस ने दुनिया में सबसे पहला सय्यारा भेजा।

मुहम्मद मूसा अल् ख़ुवारज़मी के साइंसी कारनामे

ख़ुवारज़म उज़बेकिस्तान का एक बड़ा शहर है। बुख़ारा से आप वहाँ पहुँचना चाहें तो तक़रीबन दस घंटे लगेंगे क्योंकि यह पहाड़ी सफ़र है। एक अलैहिदा सा शहर नज़र आता है। मगर इस ख़ुवारज़म ने बड़े-बड़े साइंसदान पैदा किए। यह बड़ा आदमी उपजाने वाला इलाक़ा बना है। मुहम्मद ख़ुवारज़मी इसी शहर के रहने वाले थे जिन्होंने अल्जेबरा की बुनियाद रखी। यह अल्जेबरा अरबी का लफ़्ज़ है। अलजेबरा में जो हम ऐलाग्रिथ्म (Alogrthm) पढ़ते हैं उसका तसव्वुर भी उन्होंने ही दिया था। जिस चीज़ का पता न हो उसके लिए अलजेबरा में एक्स (x) की अलामत डाल देते हैं यह एक्स की अलामत डालने की बुनियाद मुहम्मद बिन मूसा अल ख़ुवारज़मी ने ही रखी। अलजेबरा में हम माइनस का

निशान (-) लगा देते हैं। यह भी सबसे पहले मुहम्मद बिन मूसा अल् ख़ुवारज़मी ने इस्तेमाल की। उन्होंने अलजेबरा पर एक किताब लिखी जिसका नाम 'किताबुल मुख़्तसर फ़िल जब्र वल मुक़ाबला' था। इसका जब लातीनी ज़बान में तर्जुमा हुआ किया गया तो उस वक़्त यूरोप में पहली दफ़ा अलजेबरा की तालीम पहुँची।

मुसलमान साइंसदानों को दाद न मिलने की वजह

अज़ीज़ तालिब इल्मो! हमारी मिल्लत में जाबिर बिन हयान, मुहम्मद बिन मूसा अल् ख़ुवारज़मी, इब्ने हैसम, अल् बैरूनी, इब्ने सीना, इब्ने नफ़ीस और अबू हनीफ़ा दिन्नोरी इतने बड़े-बड़े साइंसदान गुज़रे हैं कि उनका मर्तबा गिलेलियो, न्युटन, जोहन वालटन, आइन्सटाइन से किसी तरह भी कम नहीं है। मगर मुसीबत यह है कि इन साइंसदानों की तहक़ीक़ात शख़्सी मेहनत का नतीजा थीं। वक़्त की हुकूमत ने अगर उनकी सरपरस्ती की होती तो ये बातें आज क़ानून बनकर उनके नामों से मशहूर होतीं।

दीनी इदारों की अहमियत तारीख़ के हवाले से

मुझे एक ख़त के बारे में बताया कि जो एक म्युज़ियम में महफ़ूज़ किया हुआ है। यह ख़त उस वक़्त का है जब क़ुर्तबा, स्पेन, उन्दलुस और बग़दाद में मुसलमानों की बड़ी-बड़ी युनिवर्सटियाँ हुआ करती थीं। उस दौर में बर्तानिया के बादशाह ने मुसलमान बादशाह को ख़त लिखा था कि आपके मुल्क में औरतों

की तालीम के बहुत अच्छे-अच्छे इदारे हैं मैं भी अपनी बहन को इस इदारे में दाख़िल करवाना चाहता हूँ। आप बराए मेहरबानी उसे दाख़िला दे दीजिए।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का वादा

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं—

﴿اِنِّیْ لَآ اُضِیْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى.﴾

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का वादा है कि मर्द हो या औरत मैं तुम्हारे किए हुए अमलों को कभी बेकार जाने नहीं दूँगा। आज मेहनत का मैदान हमारे लिए फैला दिया गया है। हमारे पहले लोगों ने मेहनतें कीं और उनकी मेहनतों से आज पूरी दुनिया फ़ायदा उठा रही है। अगर हमने आज मेहनत की तो उसको भी अल्लाह तआला क़ुबूल फ़रमा लेंगे। एक दूसरी जगह फ़रमाया—

﴿وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى.﴾

इंसान को वही कुछ मिलता है जिसके लिए वह मेहनत करता है। यहाँ पर यह नहीं फ़रमाया गया कि मुसलमान को वही कुछ मिलता है जिसके लिए वह मेहनत करता है बल्कि इंसान की बात की गई है। जिसमें मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम दोनों की बात की गई है। लिहाज़ा जब ग़ैर-मुस्लिमों ने मेहनत की तो उनकी मेहनत का बदला अल्लाह तआला ने इसी दुनिया में उनको दे दिया गया।

मुसलमान साइंसदानों का मुख़्तसर तार्रुफ़

कुछ मुसलमान साइंसदानों की तफ़सील सुनकर उनको रहनुमा बना लें।

1. बू अली सीना (सन् 980-1037 ई०) का लक़ब मुस्लिम दुनिया का अरस्तू, माहिर हकीम और अज़ीम मुफ़क्किर थे।
2. मुहम्मद बिन मूसा अल् ख़ुवारज़मी (सन् 750-780 ई०) मुस्लिम रियाज़ी (गणित) दान, गिनती को ईजाद करने वाले आपने रस्मुलख़त (लिपी) की खोज की और अलजेबरा में मन्फ़ी अलामतें शामिल कीं।
3. याक़ूब अल् कंदी (सन् 778-840 ई०) मुसलमान रियाज़ीदान और हैय्यतदान था।
4. अल् फ़राबी (सन् 832-903 ई०) मुसलमान रियाज़ीदान और हैय्यतदान था।
5. ज़करिया राज़ी (सन् 825-925 ई०) मुसलमान तबीब और मशहूर कीमियादान थे।
6. इब्ने मस्कोविया (सन् 950-1030 ई०) बहुत मशहूर कीमियादान थे।
7. उम्र ख़्याम (सन् 1039-1124 ई०) मशहूर शायर और रियाज़ीदान थे।
8. इब्ने तुफ़ैल (सन् 1100-1185 ई०) अज़ीम फ़लसफ़ी और तबीब थे।
9. इब्ने बेतार (सन् 1181-1248ई०) मशहूर पेड़-पौधों के माहिर थे।
10. औरतें भी इस मैदान में पीछे नहीं रहीं। मसलन उम्मुल हसन बिन्ते अबू जाफ़र माहिर तबीब थीं, तैय्यबा ज़ैनब आँखों के ईलाज में मशहूर थीं, अलिया बिन्ते मेहदी आएशा बिन्ते

अहमद और दिलावा बिन्ते ख़लीफ़ा मशहूर शायरा गुज़री हैं।

लम्हाए फ़िक्र

अज़ीज़ तालिब इल्मो! आज हम 'पिदरम सुल्तान बूद' का नारा लगाते हैं कि हमारे बा दादा बड़ी इज़्ज़तों वाले थे तो यह तो बुरी बात है कि उनकी औलाद कितनी निखट्टू है। हमें चाहिए कि जो सरमाया हमारे बड़ों ने हमें दिया था हम उसे लेकर आगे बढ़ें और दुनिया को इल्म के नूर से मुनव्वर करें।

क़ुव्वते इश्क़ से हर पस्त का बाला कर दे
दहर में इस्मे मुहम्मद से उजाला कर दे

﴿وَ آخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۝﴾

احبو اللّٰــه لـمـا يـقذوكم من نعمـه

अल्लाह से मुहब्बत करो इसलिए कि वह अपनी नेमतों से तुम्हारी परवरिश करता है।

हमारा परवरदिगार

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بعد.

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ○ سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ

وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ○

'रब' का लफ़्ज़ी मतलब

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का एक सिफ़ाती नाम 'रब' है। मसलन ﴿الحمد لله رب العالمين﴾ सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहाँनों का रब है। यह कितना मुख़्तसर लफ़्ज़ है मगर इसके मतलब में इतनी वुसअत है और गहराई है कि सारी दुनिया की ज़िंदगी का मुजाहिदा करने के बाद इस लफ़्ज़ का यक़ीन दिल में आता है। 'रब' के लफ़्ज़ी माने हैं परवरवरिश करने वाला, तर्बियत करने वाला, पालने, पोसने वाला। जिसने हमें पैदा किया वही इंसान सारी ज़रूरतें पूरी करता है। हमें जिस्मानी रोज़ी भी वही देता है और रूहानी रोज़ी भी वही देता है। सारी मख़्लूक़ात का ख़ालिक़ और राज़िक़ वही है। रब का लफ़्ज़ क़ुरआन पाक में बहुत ज़्यादा इस्तेमाल हुआ है। गोया हर थोड़ी सी आयतों के बाद रब का लफ़्ज़ आता है।

आलमे अरवाह में अल्लाह तआला की रबूबियत का इक़रार

जब हम आलमे अरवाह में थे तो अल्लाह तआला ने हमारी रूहों से एक वादा लिया। पूछा ﴿الست بربكم﴾ क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? ﴿قالوا بلى﴾ सबने कहा क्यों नहीं तू ही हमारा रब है। उस वक़्त अल्लाह तआला यह भी वादा ले सकते थे क्या मैं तुम्हारा ख़ालिक़ नहीं हूँ? क्या मैं तुम्हारा मालिक नहीं हूँ? ताहम अल्लाह तआला ने अपनी रबूबियत का इक़रार करवा दिया। ज़हन में एक तालिब इल्माना सवाल पैदा होता है कि इक़रार क्यों लिया? जवाब यह है कि वहाँ हम हर वक़्त अल्लाह को याद करते थे।

وَمَنْ عِنْدَهُ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَلَا
يَسْتَحْسِرُوْنَ ٥ يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ٥

आलमे अरवाह में ग़फ़लत न थी सिर्फ़ यादे इलाही थी। ताहम वादा लेने के बाद अल्लाह तआला ने हमें इम्तिहान के लिए दुनिया में भेज दिया। दुनिया में जाकर भी मुझे रब मानना है या किसी और को रब बना लेना है।

इंसान की पैदाईश और रब का लफ़्ज़

आलमे अरवाह में भी रब का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ जहाँ इंसान की पैदाईश का ज़िक्र है वहाँ भी रब का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ। ﴿يَاأَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ﴾ ऐ इंसानो !तुम डरो अपने रब से ﴿الَّذِي﴾ वह ज़ात ﴿خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ﴾ जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया ﴿وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا﴾ और उससे उसका जोड़ा बनाया ﴿وَبَثَّ﴾

﴿مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَاءً﴾ और उस जोड़े से अल्लाह तआला ने कई मर्दों और औरतों को फैला दिया। देखा! यहाँ भी रब का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया।

दहरियों (नास्तिकों) को लाजवाब कर देने वाली आयत

इस आयत में इंसान की पैदाईश के तीन तरीक़े बताए गए हैं। ﴿خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ﴾ तुम्हें एक जान से पैदा किया और उनसे सारी की सारी औलाद का सिलसिला शुरू हुआ। यह तख़्लीक़ का एक तरीक़ा और दूसरा तरीक़ा ﴿وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا﴾ और उससे बना दिया उसका जोड़ा यानी आदम अलैहिस्सलाम की पसली से अल्लाह तआला ने अम्मा हव्वा को पैदा फ़रमा दिया। फिर तीसरा तरीक़ा ﴿وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَاءً﴾ और फिर इस जोड़े से अल्लाह तआला ने कितने मर्द और कितनी औरतें पैदा फ़रमाईं। गोया तीन तरीक़ों से अल्लाह तआला ने इंसान को पैदा किया।

यह आयत मानी के ऐतबार से इतनी गहरी है कि हमने कई दहरियों के सामने इस आयत की तफ़सीर को पेश किया कि बताओ काएनात को पैदा करने वाला अल्लाह के सिवा कौन है? मगर उनके पास इसका कोई जवाब नहीं था।

हज़रत इमरान अलैहिस्सलाम की बीवी और उनकी बेटी का अल्लाह पर यक़ीन

इमरान अलैहिस्सलाम की बीवी हमल से थीं। क़ुरआन बताता है। उन्होंने दुआ मांगी ﴿وَاِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ﴾ और जब इमरान अलैहिस्सलाम की बीवी ने कहा,

﴿رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي﴾

ऐ मेरे परवरदिगार! जो कुछ मेरे पेट में है मैंने उसे तेरे लिए वक़्फ़ कर दिया। बस तू मुझसे क़ुबूल फ़रमा ले।

ग़ौर कीजिए कि एक नबी की बीवी दुआ मांग रही है 'रब' के लफ़्ज़ से ख़ालिक़ या मालिक के लफ़्ज़ से नहीं। अल्लाह तआला की क़ुदरत कि बेटी पैदा हो गई।

﴿فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنْثَى.﴾

जब उसने बेटी का जना तो कहने लगी ऐ मेरे परवरदिगार! मैंने तो बेटी का जना है ﴿وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْأُنْثَى﴾ और बेटा बेटी की तरह तो नहीं होता ﴿وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ﴾ और मैंने इस बच्ची का नाम मरियम रखा है।

﴿وَإِنِّي أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ.﴾

मैं इसके बारे में और इसकी औलाद के बारे में शैतान मरदूद से तेरी पनाह मांगती हूँ। इस दुआ के बाद जवाब में अल्लाह तआला भी 'रब' का लफ़्ज़ इस्तेमाल फ़रमाते हैं–

﴿فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنْبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا.﴾

फिर रब ने उसको क़ुबूल कर लिया बेहतर क़ुबल करना और ज़करिया अलैहिस्सलाम ने उसकी परवरिश की।

रब ने क़ुबूल कैसे किया? यह मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा एक दफ़ा अकेली थीं और हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम कहीं तबलीग़ में चले गए थे। वापस आने में देर हो गई। परेशान थे कि पीछे खाने की कोई चीज़ नहीं थी, शायद मरियम भूखी रही होगी। नींद

भी आई होगी या नहीं। जब आप हुजरे में दाख़िल हुए तो तो देखा कि मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा मेहराब के अंदर बैठी हुई बे-मौसम के फल खा रही है। ﴿كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ﴾ जब ज़क्रिया अलैहिस्सलाम दाख़िल हुए मेहराब के अंदर ﴿وَوَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا﴾ तो उसके पास रिज़्क़ पाया ﴿قَالَ يَا مَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا﴾ पूछा ऐ मरियम! यह कहाँ से आया? ﴿قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ﴾ कहा यह तो अल्लाह तआला की तरफ़ से है।

﴿اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ٥﴾

जिसे चाहता है बग़ैर हिसाब के अता कर देता है।

हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम की दुआ

यह सुनकर हज़रत ज़क्रिया ने भी अल्लाह तआला से दुआ मांगी ﴿هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ﴾ जब ज़क्रिया ने अपने रब को पुकारा—

﴿رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً﴾

ऐ परवरदिगार! मुझे बेटा अता फ़रमा और बेटा भी ऐसा जो पाकीज़ा हो तैय्यब हो। इस तरह क्यों मांगा? इसलिए कि औलाद का होना एक खुशी और उसका नेक होना इससे बढ़कर खुशी तो बेटा मांगा पाकीज़ा और तैय्यब, सुब्हानअल्लाह।

क्योंकि वह जानते थे कि ऐ अल्लाह! तू मरियम को बग़ैर मौसम के फल अता कर सकता है, मैं बूढ़ा हो चुका हूँ, मेरी हड्डियाँ बोसीदा हो गयीं और मेरे बाल सफ़ेद हो चुके हैं, ऐ अल्लाह इस बुढ़ापे में मुझे भी बे-मौसम फल अता कर सकता है। इस बुढ़ापे में मुझे भी बेटा दे सकता है।

हज़रत हाजरा रज़ियल्लाहु अन्हा का अल्लाह पर यक़ीन

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपनी बीवी और बच्चे को हरम शरीफ़ के पास ﴿بِوَادٍ غَيْرِ ذِىْ زَرْعٍ﴾ ऐसी वादी जिसमें कोई खेती न थी, में छोड़कर जा रहे हैं। हज़रत हाजरा ने पूछा क्यों छोड़कर जा रहे हैं? हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ख़ामोश रहे। फिर पूछा क्यों छोड़कर जा रहे हो? फिर ख़ामोश। इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सोहबत में रही हुई थीं, समझ गयीं। तीसरी दफ़ा पूछा क्या हमें आप अल्लाह के हुक्म से छोड़कर जा रहे हैं? फ़रमाया हाँ अल्लाह के हुक्म से छोड़कर जा रहा हूँ। अर्ज़ किया अगर आप अल्लाह के हुक्म से छोड़कर जा रहे हैं तो अल्लाह तआला हमें ज़ाए नहीं फ़रमाएंगे।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का अल्लाह पर यक़ीन

जब हज़रत इब्राहीम वहाँ से आ गए तो आगे जाकर बीवी-बच्चों के लिए दुआ मांगते हैं,

رَبَّنَا اِنِّیْ اَسْکَنْتُ مِنْ ذُرِّیَّتِیْ بِوَادٍ غَیْرِ ذِیْ زَرْعٍ
عِنْدَ بَیْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۝ رَبَّنَا لِیُقِیْمُوا الصَّلٰوةَ.

ऐ मेरे परवरदिगार! मैंने अपनी औलाद को तेरी हुरमत वाले घर के पास आबाद किया ताकि वे नमाज़ पढ़ें।

﴿فَاجْعَلْ اَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِیْ اِلَیْهِمْ﴾

ऐ अल्लाह! तू लोगों के दिलों को उनकी तरफ़ माइल फ़रमा,

﴿وَارْزُقْهُمْ مِنَ الثَّمَرَاتِ﴾

और ऐ अल्लाह! इनको खाने के लिए फल अता फ़रमा।

बच्चे की ज़रूरतें कौन पूरी करता है

छोटा बच्चा, बेचारा कच्चा, ख़ुद उठ नहीं सकता, अपना लिबास नहीं पहन सकता, दूध नहीं पी सकता, अपनी करवट नहीं बदल सकता। इतना ज़ईफ़ और इतना कमज़ोर, न मकान अपना, न लिबास अपना, न माल अपना, न पैसा अपना, न ताक़त जिस्म में, कुछ भी अपना नहीं लेकिन एक ज़ात उसकी परवरदिगार है। वह इस बच्चे कच्चे की मुहब्बत माँ-बाप के दिल में डाल देती है बस माँ-बाप क़ुर्बान होते जाते हैं। माँ अपना कलेजा काटकर पेश करने को तैयार है। बच्चे को नींद नहीं आ रही, माँ जाग रही है। कोई माँ है कि जो बच्चा रो रहा हो तो वह सोई हुई हो? नहीं कोई माँ ऐसी नहीं है। इसलिए कि माँ-बाप के दिल में अल्लाह तआला बच्चे की मुहब्बत डाल देते हैं फिर यह मुहब्बत बच्चे की परवरिश का सबब बनती है, सुब्हानअल्लाह।

अल्लाह तआला के सामने रोने की अहमियत

माद्दी ऐतिबार से बच्चे का अपना कुछ नहीं है मगर एक चीज़ अपनी है वह क्या? रोना। जब बच्चे को भूख लगी उसने रोना शुरू कर दिया तो उसके लिए दूध का इंतिज़ाम हो गया। बच्चे को प्यास लगी तो उसने रोना शुरू कर दिया तो उसके लिए पानी का इंतिज़ाम हो गया। बच्चे को नींद आई तो उसने रोना

शुरू कर दिया तो उसके लिए बिस्तर का इंतिज़ाम हो गया। बच्चे को कज़ाए हाजत की ज़रूरत महसूस हुई तो उसने रोना शुरू कर दिया तो उसके लिए कज़ाए हाजत का इंतिज़ाम हो गया। क़िस्सा मुख़्तसर बच्चे को कोई भी ज़रूरत पेश आए तो वह रो पड़ता है और अल्लाह तआला उसकी ज़रूरतों को पूरा फ़रमा देते हैं। इससे किसी आरिफ़ ने नुक्ता निकाला है कि ऐ इंसान! जब तू रोना जानता था अल्लाह तआला तेरी हर जरूरत को पूरा फ़रमाते थे। जब तूने रोने को भुला दिया, अल्लाह तआला ने तेरे कामों को अटकाना शुरू कर दिया।

माँ-बाप जिस्मानी मुरब्बी होते हैं

माँ-बाप बच्चे की परवरिश कर रहे होते हैं, क्यों? इसलिए कि वह भी मुरब्बी हैं। रब के मानी बड़े वसी हैं। यह लफ़्ज़ इंसानों के लिए भी इस्तेमाल होता है और अल्लाह तआला की ज़ात पर भी इस्तेमाल होता है लेकिन फ़र्क़ है माँ-बाप की रबूबियत में और अल्लाह तआला की रबूबियत में। इंसान की रबूबियत एक तयशुदा वक़्त के लिए होती है जबकि अल्लाह की रबूबियत हमेशा के लिए है। माँ-बाप सिर्फ़ अपनी औलाद के मुरब्बी होते हैं जबकि अल्लाह तआला सारी काएनात के मुरब्बी हैं। माँ-बाप सिर्फ़ जिस्मानी मुरब्बी होते हैं जबकि अल्लाह तआला जिस्मानी मुरब्बी भी हैं और रूहानी मुरब्बी भी। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रबूबियत वाली सिफ़त ज़ाती है। माँ-बाप की रबूबियत वाली सिफ़त अताई है। क़ुरआन पाक में माँ-बाप के लिए भी रब का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया है।

﴿رب ارحمهما كما ربيٰني صغيرا﴾

ऐ मेरे परवरदिगार! मेरे माँ-बाप पर रहम कर क्योंकि उन्होंने बचपन में मेरी परवरिश की है।

सबकी ज़रूरतें पूरी करने वाला अल्लाह तआला है

बच्चे की ज़रूरतें ज़ाहिरी तौर पर तो माँ-बाप पूरी करते हैं मगर हक़ीक़त में हर ज़रूरत अल्लाह तआला ही पूरी करते हैं। यह बच्चा खाता किसका है? अल्लाह का दिया हुआ। यह बच्चा पहनता किसका है? अल्लाह का दिया हुआ। और जब यही बड़ा हो जाता है तो कहने लग जाता है ﴿اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى﴾ मैं सबसे आला रब हूँ। ओ इंसान! तू क्यों नहीं सोचता, क्यों तेरी आँखें माथे पर लग जाती हैं। तू अपनी पैदाईश को क्यों भूल गया है। इतना तंग रास्ता था जिसको अल्लाह तआला ने तेरे लिए खुला कर दिया।

﴿فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖ﴾ देख ओ इंसान! ऐ नाशुक्रे तू क्यों नहीं देखता अपने खाने की तरफ़ ﴿اَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ صَبًّا﴾ हमने आसमान से पानी उतार दिया ﴿ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ شَقًّا﴾ फिर हमने ज़मीन को फाड़ दिया। देखिए जब औरत बच्चे को जन्म देती है तो कितनी तकलीफ़ उठाती है। इसी तरह एक कोंपल जब ज़मीन से निकलती है तो गोया ज़मीन से बच्चा पैदा हो रहा होता है। ज़मीन की औलाद जन्म ले रही होती है। अब सोचिए ज़मीन को कितनी तकलीफ़ उठानी पड़ती होगी।

सबसे मुश्किल इंसान का बच्चा पलता है। बकरी के बच्चे को देखो, पैदा होने के कुछ मिनट बाद ही भाग रहा होता है। भैंस के बच्चे को देखो पैदा होने के कुछ मिनट बाद दूध पी रहा होता है,

अपने आप चल फिर रहा होता है। इंसान के बच्चे की परवरिश सबसे मुश्किल है। कई साल तक माँ-बाप को परेशानी उठानी पड़ती है। अल्लाह तआला ने इंसान के लिए हवा का इंतिज़ाम किया, पानी का इंतिज़ाम किया, फल-फूल का इंतिज़ाम किया, रोटी का इंतिज़ाम किया, बोटी का इंतिज़ाम किया, माँ की छाती से दूध की नहरें जारी कर दीं। पैदाईश से पहले उसके लिए इंतिज़ाम शुरू कर दिए। पैदाईश होते ही दूध की नहरें जारी हो गयीं। ज़रा बड़ा हुआ तो दाँत नहीं थे, दाँत आने शुरू हो गए। जब उसको चलने फिरने की ज़रूरत हुई तो अल्लाह तआला ने उसको ताक़त अता फ़रमा दी। जो बच्चा शुरू में खुद उठकर खड़ा नहीं हो सकता था, जब जवान होता है तो कई-कई मन का वज़न सर पर रख दौड़ लगा रहा होता है। पहलवान बन जाता है। अरे! इसकी इब्तिदा तो देख तू कितना कमज़ोर था। अब देखो अल्लाह तआला ने कितना क़वी बना दिया।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की परवरिश का अजीब वाक़िआ

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की पैदाईश से पहले फ़िरऔन को नजूमियों ने बता दिया था कि तुम्हारे मुल्क में एक बच्चा पैदा होगा जो तुम्हारे तख़्त व ताज को छीन लेगा। उसने कहा अच्छा मैं इसका बंदोबस्त करता हूँ। आइंदा दो साल तक वह बनी इस्राईल के बच्चों को ज़िब्ह कराता रहा। जो बच्चा पैदा होता उसको मरवा देता। मर्दों के अलग बाग़ीचे बना दिए ताकि यह इधर ही खेलें, खाएं, पिएं सोएं। औरतों के अगल बाग़ीचे बना

दिए ताकि वे भी इधर ही खाएं, पिएं, सोएं। बनी इस्राईल के मर्द व औरतों का मिलना जुलना मना कर दिया। दो साल तक कोई शौहर बीवी से नहीं मिल सकता। मक़सद यह था कि न माँ-बाप मिलेंगे न बच्चा पैदा होगा। अगर इस दौरान कोई बच्चा पैदा हो भी गया तो उसको क़त्ल कर दूँगा। मगर होता वही है जो मंज़ूरे खुदा होता है। करना खुदा का क्या हुआ कि मर्दों का एक बड़ा अफ़सर और उन औरतों की एक बड़ी अफ़सर मियाँ-बीवी थे, जो फ़िरऔन को रिर्पोट पेश करने आते थे और वहीं रात गुज़ारते थे। उनको आपस में हमबिस्तरी का मौक़ा मिल जाता था। उनमें से एक हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाप और एक उनकी माँ थी।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम माँ के पेट में परवरिश पाते रहे। जब विलादत हुई तो आपकी माँ डरीं कि ऐसा न हो कि इस बच्चे को ज़िबह कर दिया जाए। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं,

﴿وَاَوْحَيْنَا اِلٰى اُمِّ مُوْسٰى اَنْ اَرْضِعِيْهِ﴾

और हमने 'वही' की हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की माँ की तरफ़ कि तू इसको दूध पिला। ﴿فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ﴾ और अगर तुझे डर लगे कि सिपाही उसको न ले जाएं तो फिर इसको एक ताबूत में बंदकर और ताबूत को दरिया मे डाल दे ﴿فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ﴾ दरिया से यह साहिल के पास जा लगेगा। पकड़ेगा कौन?

﴿يَاْخُذْهُ عَدُوٌّلِّيْ وَعَدُوٌّ لَّهٗ﴾

वह जो मेरा भी दुश्मन है और इसका भी दुश्मन।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की माँ की अक़्ल कहती है वाह

खुदाया! तेरे वादे भी अजीब, तू बच्चे को बचाना चाहता है तो मैं किसी कोने में रख दूँ ताकि यह पुलिस वालों को नज़र ही न आए या फिर कोई पुलिस वाला इस घर में आ ही न सके। बचाने का वादा भी किया तो कितना अजीब कि इसको ताबूत में डाल और ताबूत को दरिया में डाल। अब सोचिए अगर इसमें हवा दाख़िल होने का बंदोबस्त रखने पड़ेंगे अगर सुराख़ रखेंगे तो पानी दाख़िल हो जाएगा। गोया ज़िद्दैन जमा हो गयीं। बहरहाल माँ ने धड़कते दिल के साथ अपने बच्चे को ताबूत में डाल दिया अक़्ल की बात बिल्कुल नहीं सुनी। वह जानती थीं कि यह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का वादा है जो मेरा भी परवरदिगार है और बच्चे का भी परवरदिगार है। वही बच्चे की परवरिश भी फ़रमाएगा। तो क्या हुआ? उस बच्चे को फ़िरऔन और उसकी बीवी ने पकड़ा। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि ﴿وَاَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّيْ﴾ मैंने अपनी तरफ़ से तेरे चेहरे पर मुहब्बत डाल दी, मुहब्बत इलक़ा कर दी। लिहाज़ा फ़िरऔन की बीवी ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को देखा तो वह बहुत ख़ूबसूरत लग रहे थे। कहने लगी ﴿لَا تَقْتُلُوْهُ﴾ इसको क़त्ल नहीं करना ﴿عَسٰى اَنْ يَّنْفَعَنَا﴾ हो सकता है यह हमें नफ़ा पहुँचाए ﴿اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا﴾ या इसको हम अपना बेटा बना लेते हैं। देखा क़ुदरत का करिश्मा क़ौम के बच्चे मरवाने वाला खुद अपने दिल के हाथों मरा पड़ा है।

फ़रमाने शाही जारी हुआ तो बच्चे को दूध पिलाने वाली औरतें आयीं मगर बच्चा दूध ही नहीं पीता। फ़िरऔन परेशान है कि बच्चा दूध नहीं पीता। अक़्ल का अंधा उसकी मत मारी गई। सारी क़ौम के बेटों को मरवाता रहा यह समझ न आई कि

अल्लाह तआला उसी के हाथों से बच्चे की परवरिश करवा रहा है। दूसरी तरफ़ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की माँ का हाल अजीब था।

وَاَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ
لَوْ لَا اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ.

अगर अल्लाह तआला उसके दिल को तसल्ली न देते तो वह अपना राज़ फ़ाश कर बैठती। लेकिन अल्लाह तआला ने दिल को ताक़त दे दी, संभाला दे दिया।

बेटी को भेजती हैं कि देख फ़िरऔन के घर क्या हो रहा है? वह फ़िरऔन के घर जाकर देखती है कि बच्चा दूध नहीं पी रहा। फ़िरऔन से कहने लगी कि मैं ऐसे लोगों का पता न बता दूँ जो इस बच्चे की परवरिश भी करेंगे और इसके भला चाहने वाले भी होंगे। मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि फ़िरऔन के दिल में ख़्याल गुज़रा कि यह भला चाहने वालों का नाम लेने वाली कौन आई। लिहाज़ा फ़िरऔन ने बच्ची से पूछा कि कौन हैं इसके ख़ैर-ख़्वाह? बच्ची ऐसी होशियार थी कि फ़ौरन कहने लगी कि सारी क़ौम आपकी भलाई चाहने वाली है, जो भी दूध पिलाएगी इसकी ख़ैर-ख़्वाह होगी। फ़िरऔन बच्ची की बात से मुतमइन हो गया। बच्ची ने घर आकर माँ को हालत बताए तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की माँ भी बच्चे को दूध पिलाने के लिए तशरीफ़ ले गयीं। बच्चे को छाती से लगाया तो बच्चे ने दूध पीना शुरू कर दिया। फ़िरऔन ख़ुशियाँ मनाने लगा। उसे यह बात समझ में न आई कि हो सकता है कि यह इस बच्चे की माँ हो। कहता है, अच्छा हुआ, बच्चे ने तेरा दूध पीना शुरू कर दिया है तू इस बच्चे को घर ले जा, इसकी परवरिश ठीक तरह करना, इसकी हर चीज़

का ख़्याल रखना। मैं तुझे सरकारी फ़न्ड से इतना वज़ीफ़ा देता रहूँगा। अल्लाह तआला ने जो वादा फ़रमाया था वह सच कर दिखाया। लिहाज़ा अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:

﴿فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَیْ تَقَرَّ عَیْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ﴾

कि जब हमने लौटा दिया उसके माँ के पास ताकि माँ की आँखें ठंडी हों और उसके दिल में कोई ग़म न हो।

﴿وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ﴾

और वह जान ले कि अल्लाह तआला के वादे सच्चे हैं।

﴿وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ۝﴾

लेकिन अक्सर लोग इस बात को नहीं जानते।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की माँ अपने बेटे को दूध पिलाती थीं और सरकारी ख़ज़ाने से वज़ीफ़ा मिलता था। यूँ अल्लाह तआला अपनी ज़ात पर तवक्कुल करने वालों को दुगना नफ़ा अता फ़रमा देते हैं।

हमने किसको रब बना रखा है?

हमारा परवरदिगार कौन है? अल्लाह, वही हमारी ज़रूरतों को पूरा करने वाला है। मगर जब हम बड़े हो जाते हैं तो दफ़्तर को अपना रब बना लेते हैं, माल पैसे को अपना रब बना लेते हैं। भला जो आदमी रिश्वत लेता है वह किसको रब समझता है? अगर वह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को रब समझता तो कभी हराम का पैसा न लेता। जब हराम का पैसा ले लिया तो यह बात इस की दलील है कि वह पैसे को अपना ख़ुदा समझ रहा है। वह

समझता है कि मैं पैसे से पल रहा हूँ। जिसने दुकान में मिलावट की वह किसको अपना रब समझ रहा है? अल्लाह को रब समझ रहा है या दुकान को? जिसने दफ़्तर की ख़ातिर नमाज़ छोड़ी वह अल्लाह को रब समझ रहा है या दफ़्तर को? वह दफ़्तर की कुर्सी को रब समझता है। कहता है कि जब तक कुर्सी मेरे पास है मेरी जरूरत पूरी होंगी, कुर्सी नहीं होगी तो जरूरतें पूरी नहीं होंगी। अल्लाह माफ़ फ़रमाए हमने अल्लाह ही को रब समझना है, हम दफ़्तर को समझ बैठे हैं, दुकान को समझ बैठें हैं, माल पैसे को रब समझ बैठे हैं। ऐसा बड़ा धोका है जो आज अक्सर लोगों को लग जाता है। कहते हैं कि क्या करें मौलाना साहब हम अपने लिए तो रिश्वत लेते नहीं, बच्चों के लिए लते हैं। ओ अल्लाह के बंदे! जो तुझे खाने को दे सकता है वह तेरे बच्चों को नहीं दे सकता है।

﴿وَاِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَائِنُهٗ﴾

जो कुछ भी चीज़ है उसके ख़ज़ाने हमारे पास हैं।

﴿وَمَا نُنَزِّلُهٗ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ﴾

हम उसको एक मालूम अंदाज़े से उतारते हैं।

जो अल्लाह का हो गया अल्लाह उसका हो गया

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के दिलों में यह हक़ीक़त बिठा दी थी कि रब अल्लाह को समझना है। चुनाँचे उनकी तमाम उम्मीदें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त पर लगी होती थीं। एक सहाबी ने ज़मीन जोतनी थी। ज़मीन पर जाकर दो रक्आत नफ़्ल पढ़े और दुआ मांगी, या अल्लाह! यह मेरी ज़मीन का टुकड़ा है, इसके लिए पानी की ज़रूरत है, ज़मीन से पानी नहीं

मिल रहा है तो आसमान से पानी नाज़िल फ़रमा दे। अल्लाह तआला ने उसी वक़्त बादल भेजे और इधर बारिश आना शुरू हो गई। फ़रमाते हैं कि जब मैं नफ़्ल पढ़कर ज़मीन के इन हिस्सों से बाहर गया तो मैंने देखा कि मेरी ज़मीन के अलावा कहीं दूसरी जगह बारिश का नाम व निशान ही नहीं था। जी हाँ वह इसी तरह लेते थे। उनके लिए रिज़्क़ वग़ैरह के दरवाज़े ऊपर से खुल जाते थे।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु के रिज़्क़ में बरकत

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने मुझे रिज़्क़ भी दिया, औलाद भी दी। एक दफ़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ मांगी ऐ अल्लाह! तू अनस की औलाद में और इसके रिज़्क़ में बरकत अता फ़रमा। फ़रमाते हैं कि अपने बेटों, पोतों, नवासों में से सौ बेटे अपनी आँखों के सामने देखे, माशाअल्लाह। अल्लाह तआला ने औलाद को यूँ बढ़ाया। और फ़रमाते हैं कि मुझे अल्लाह ने इतना सोना दिया कि अपनी कुदाल से तोड़ा करता था जैसे किसी बड़े पत्थर को कुदाल के साथ तोड़ा जाता है।

हम आधे तीतर आधे बटेर बने फिरते हैं जिसकी वजह से अल्लाह की मदद नहीं उतरती। लिहाज़ा रोते फिरते हैं। जिससे पूछो रिज़्क़ की परेशानी, कारोबार की परेशानी, औलाद की परेशानी। ऐसा लगता है कि सब घरों में परेशानियाँ भरी हुई हैं। इसलिए कि जब हम ने अपने और अल्लाह के तअल्लुक़ को बिगाड़ा तो अल्लाह तआला ने हमारे और मख़्लूक़ के तअल्लुक़

को बिगाड़ दिया–

वह एक सज्दा जिसे तू गिरां समझता है
हज़ार सज्दों से देता है आदमी को निजात

हमने अल्लाह के दर पर झुकना छोड़ा, अल्लाह तआला ने दर-दर पर झुकने की मुसीबत में फँसा दिया। यानी अगर मेरे दर पर नहीं झुकते तो अच्छा फिर हर जगह झुकते फिरो। काश! एक दर पर झुकना सीख लें।

ख़ानदानी मंसूबाबंदी (फ़ैमली प्लानिंग) वालों के ग़लत अंदाज़े

हमें अल्लाह से मांगने का सलीक़ा आता तो मंसूबाबंदी वालों से मशूवरा न लेते। मंसूबाबंदी वाले कहते हैं कि 'बच्चे कम ही कही अच्छे।' अल्लाह माफ़ फ़रमाए, जैसे उन बच्चों के परवरदिगार खुद ही बन गए हैं। सन् 1965 ई० में आजिज़ स्कूल में पढ़ता था। उस वक़्त सुनता था कि सन् 1970 ई० तक मुल्क में मंसूबाबंदी न की गई तो मुल्क में क़हत आ जाएगा। जब सन् 1970 ई० का साल शुरू हुआ तो तो फिर कहने लगे सन् 1980 ई० तक ख़ानदानी मंसूबाबंदी न की गई तो एक दूसरे को काट खाएंगे। सन् 1980 ई० का साल भी आ गया। फिर कहने लगे सन् 1990 ई० तक ख़ांदानी मंसूबाबंदी न की गई तो अमीर लोग ग़रीबों को खा जाएंगे। सन् 1990 ई० भी आ गया।

यह तो सोचिए कि ख़ानदानी मंसूबाबंदी करनी है। यह क्यों नहीं सोचते कि जो बच्चे पैदा होंगे कि उनका खाने वाला एक मुँह होगा मगर दो हाथ भी होंगे। जो ज़रिए सन् 1960 ई० में थे वे

थोड़े थे और जो ज़रिए सन् 1990 ई० में थे वे ज़्यादा थे। जब लोग कम थे तो ज़मीन के वसाईल भी कम मिलते थे। जब लोग ज़्यादा हुए तो वसाईल भी ज़्यादा हो गए। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त फ़रमाते हैं–

﴿وَلَا تَقْتُلُوٓا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ﴾

तुम अपने बच्चों को क़त्ल न करना माल पैसे के डर से ﴿نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَاِيَّاكُمْ﴾ तुम्हें भी हम रिज़्क़ देते हैं और उन्हें भी रिज़्क़ हम देंगे।

﴿اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْاً كَبِيْرًا﴾

उनका क़त्ल करना तो बहुत ही कबीरा गुनाह है।

ख़ानदानी मंसूबाबंदी की असल वजह

हमारी नज़र किस पर गई? अपनी जेब पर गई। अल्लाह के ख़ज़ानों पर न गई। हमने कहा आबादी बढ़ जाएगी, हमारी जेब कट जाएगी। अल्लाह के बंदे! तू जेब पर नज़र डालता है अल्लाह के ख़ज़ानों पर क्यों नहीं डालता। आज पूरा यूरोप मुसलमानों से ख़ौफ़ खाता है, क्यों? कि इनकी आबादी इतनी बढ़ गई है कि यह मुसलमान कहीं हमारी तरफ़ रुख़ न कर लें। अल्लाह का शुक्र है आज दुनिया में इतने मुसलमान हैं कि इस्राईल की तरफ़ मुँह करके पेशाब कर दें तो तो इस्राईल में सैलाब आ जाए। वे तो हमारी आबादी को कम करने की फ़िक्र में हैं। मुसलमानों के अंदर साज़िशें कर रहे हैं, उनको आपस में लड़ा रहे हैं। इसलिए कि अगर ये इतने बढ़ गए और इनमें इत्तिफ़ाक़ हो गया तो ये बातिल को दुनिया से ख़त्म कर देंगे।

ख़ानदानी मंसूबाबंदी का तोड़

आज की दुनिया कहती है कि ख़ानदानी मंसूबा बंदी पर अमल करें लेकिन मेरे प्यारे महबूब ने फ़रमाया कि ऐसी औरतों से शादी करो जो ज़्यादा बच्चे जनने वाली हों। मैं क़यामत के दिन ज़्यादा उम्मत पर नाज़ करूँगा। एक सहाबी आकर अर्ज़ करते हैं, ऐ अल्लाह के नबी! मेरी एक बीवी है मगर रिज़्क़ की तंगी है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं, जा एक निकाह और कर ले। लिहाज़ा एक निकाह और करते हैं। फिर आते हैं। कहते हैं, ऐ अल्लाह के नबी! मेरी दो बीवियाँ हैं, ख़र्चे में ज़रा तंगी है। फ़रमाया, जा एक निकाह और कर ले। तीसरा निकाह कर लिया फिर ख़िदमत में आकर अर्ज़ करते हैं, ऐ अल्लाह के नबी तीन बीवियाँ हैं ख़र्चा थोड़ा है। फ़रमाया चौथा निकाह कर ले। उसने चौथा निकाह कर लिया। फिर आकर अर्ज़ की ऐ अल्लाह के नबी चार बीवियाँ हैं, ख़र्च थोड़ा है। फ़रमाया हज पर चला जा। ज़ाहिर में ख़र्चा ज़्यादा हो रहा है, हक़ीक़त में अल्लाह तआला हज की बरकत से रिज़्क़ बढ़ा रहे हैं। तो नज़र अपनी जेब पर रखने के बजाए अल्लाह की ज़ात पर रखनी चाहिए। यह अच्छी तरह दिमाग़ में बिठा लें कि हम मुल्की मंसूबाबंदी के पुर ज़ोर हिमायती हैं लेकिन ख़ानदानी मंसूबाबंदी के मुख़ालिफ़ हैं।

अल्लाह पर यक़ीन का मतलब

हम अल्लाह को रब समझकर अल्लाह के ख़ज़ानों पर नज़र रखें। मोहतरम सामेइन! घर में आटा न हो तो फिर सारे रो-रो कर दुआएं मांगते हैं। मज़ा तो तब है कि जब घर में आटा भी पड़ा

हो फिर रो-रो कर दुआएं मांगें कि ऐ अल्लाह! रिज़्क़ देने वाला तो तू ही है। इसको यक़ीन कहते हैं।

हमारी नज़रें जेब पर न हों, असबाब पर न हों बल्कि असबाब के पैदा करने वाले पर हों। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमारे लिए असबाब का इंतिज़ाम फ़रमा देंगे। कहाँ से देंगे? ﴿وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا﴾ जो तक़्वे को इख़्तियार कर लेता है, अल्लाह तआला उसके लिए सबील पैदा फ़रमा देते हैं, ﴿وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ﴾ और उसको ऐसी जगह से रिज़्क़ देता है कि जिसका उसको वहम व गुमान भी नहीं होता।

रिज़्क़ की बरकत का एक अजीब वाक़िआ

एक रिज़्क़ होता है और एक रिज़्क़ की बरकत है। ये दोनों अलग-अलग चीज़ें हैं। आमतौर पर लोग रिज़्क़ मांगते हैं। बरकत कम मांगते हैं। रिज़्क़ की बरकत भला क्या चीज़ है? एक वाक़िआ सुना देता हूँ।

एक नौजवान ने अपने माँ-बाप की बहुत ख़िदमत की। जब माँ-बाप फ़ौत हो गए तो ता कुछ दिनों के बाद ख़्वाब में एक आदमी को देखा, उसने कहा कि तुमने माँ-बाप की बड़ी ख़िदमत की है। तुझे ईनाम देते हैं। पत्थर के नीचे सौ दीनार हैं जाकर उठा लो। वह नौजवान समझदार था। उसने पूछा, उनमें बरकत होगी? जवाब मिला बरकत तो नहीं होगी। उसने कहा मैं नहीं लेता ऐसे दीनार जिनमें बरकत न हो। सुबह उठा, बीवी को बताया कि मैंने रात को ऐस ख़्वाब देखा है। बीवी ने कहा अच्छा तुम न लेना मगर देख तो आओ कि दीनार पड़े हुए भी हैं या नहीं। उसने

कहा जब लेने नहीं हैं तो मैं जाकर देखता भी नहीं। दूसरी रात फिर ख़्वाब आया कि अच्छा तू सौ दीनार नहीं लेता तो तुझे दस दीनार देंगे। उसने फिर वही पूछा कि उनमें बरकत होगी या नहीं होगी? उसने कहा बरकत नहीं होगी। उसने कहा फिर मैं लेता भी नहीं। इधर बीवी को बताया तो कहने लगी सौ दीनार तो छोड़ दिए थे अब दस तो ज़ाए न कर। ये तो जाकर ले ले। उसने कहा जब बरकत नहीं तो मैं लेता भी नहीं। तीसरी रात फिर ख़्वाब आया। बुज़ुर्ग ने कहा तूने माँ-बाप की ख़िदमत की है, तुझे एक दीनार देते हैं। पूछता है उसमें बरकत होगी? फ़रमाया हाँ बरकत होगी। वह नौजवान सुबह उठा तो उस पत्थर के नीचे से एक दीनार ले लिया। वापस आने लगा, दिल में ख़ुशी थी। सोचा कि चलो आज मछली लेकर चलूँ। मेरी बीवी मछली के कबाब बनाएगी। बाज़ार से मछली ख़रीदी, घर लाया। जब उसकी बीवी ने मछली को काटा तो मछली के अंदर से ऐसा क़ीमती हीरा निकला कि जब उसे बाज़ार में बेचा तो सारी ज़िंदगी का ख़र्चा पूरा हो गया। यह होता है बरकत वाला रिज़्क़, माशाअल्लाह।

यह बरकत का लफ़्ज़ अंग्रेज़ी की डिक्शनरी में कहीं नहीं मिलता। इसीलिए मग़रिबी (यूरोप) के लोगों की ज़िंदगी में बरकत नज़र नहीं आती। मगर अल्लाह का शुक्र है कि यह ईमान वालों की ज़िंदगी में होती है। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं–

﴿وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰىٓ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ﴾

अगर यह बस्ती वाले ईमान लाते और तक़्वा इख़्तियार करते तो हम आसमान से और ज़मीन से बरकतों के दरवाज़े खोल देते।

रोज़ी में बे-बरकती की बुनियादी वजह

सब घर वाले कमाते हैं फिर भी ख़र्चा पूरा नहीं होता। कहते हैं मौलवी साहब! घर के सारे आदमी कमाते हैं लेकिन ख़र्चा पूरा नहीं होता। पता नहीं क्या वजह है? इसकी वजह यह है कि रिज़्क़ में बरकत नहीं होती। रोज़ाना डाक्टर की तरफ़ बोतल चलती है। कभी कोई बीमार, कभी कोई बीमार।

मोहरतम सामेइन! मिंबरे रसूल पर बैठा हूँ। मैंने नौजवान जनरल मैनेजर देखा जो सत्तर हज़ार रुपए माहाना तंख़्वाह लेता था। वह अपना हाल सुनाते हुए रो पड़ा। कहने लगा कि जी क्या करूँ मेरे ख़र्चे पूरे नहीं होते। मैंने कहा आप रो नहीं रहे हैं बल्कि आपको रुलाया जा रहा है। आपके ख़र्चे इसलिए पूरे नहीं होते कि आपके माल में बरकत नहीं। आपकी आमदनी सत्तर हज़ार रुपए माहाना है मगर अल्लाह तआला ने आपकी ज़रूरतें सत्तर हज़ार रुपए से बढ़ा दीं हैं। अगर आप तक़्वा और परहेज़गारी की ज़िंदगी नहीं अपनाएंगे तो फिर आप ऐढ़ी-चोटी का ज़ोर लगा लें आपकी ज़रूरतें पूरी नहीं होंगी। याद रखें तक़्वा रिज़्क़ को इस तरह खींचता है जिस तरह चुम्बक लोहे को खींचता है। और जब अल्लाह तआला रिज़्क़ में बरकत अता फ़रमा देते हैं तो फिर ज़रूरतों को समेट देते हैं। फिर आमदनी बारह हज़ार भी होगी तो ज़रूरतें पूरी हो जाएंगी और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त सुकून भी अता फ़रमाएंगे।

नज़र और ख़बर के रास्ते में फ़र्क़

आज का इंसान अपने तजुरिबों और आँखों देखी पर अपनी

ज़िंदगी की बुनियाद रखता है। इसको नज़र का रास्ता कहते हैं। जबकि अल्लाह तआला के हुक्मों पर अपनी ज़िंदगी की बुनियाद रखने को ख़बर का रास्ता कहते हैं। नज़र का रास्ता है और ख़बर का रास्ता और है। जो नज़र के रास्ते पर चलेगा वह खड्डे में गिर जाएगा। जो ख़बर के रास्ते पर चलेगा वह अल्लाह की ज़ात से मिल जाएगा। आज हम नज़र के रास्ते पर चलते हैं और कहते हैं कि हमने करना वह है जो हमारी समझ में आएगा। मोहतरम सामेइन! अल्लाह तआला का हुक्म है समझ में आए या न आए हमने इस पर अमल करना है और अगर अल्लाह के हुक्म से हटकर हमें देखने में कामयाबी नज़र भी आती हो तब भी वह रास्ता नहीं अपनाना। ज़ाहिर में कामयाबी होगी लेकिन हक़ीक़त में नाकामी होगी। जिस तरह इंसान की अक़्ल ख़ुद नाक़िस है उसके तजूरिबें और मुशाहिदे भी नाक़िस हैं। इसी तरह उसके मुताबिक़ गुज़रने वाली ज़िंदगी भी नाक़िस होगी और जिस तरह अल्लाह तआला के अहकाम कामिल हैं। उसी तरह उसके मुताबिक़ गुज़रने वाली ज़िंदगी भी कामिल होगी। इसकी कुछ मिसालें दी जाती हैं ताकि बात समझ में आए।

जादूगरों का वाक़िआ

हज़रत मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम जादूगरों में घिरे खड़े हैं। जादूगरों ने अपनी रस्सियाँ डालीं जो साँप बन गयीं और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ लपकने लगीं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के हाथ में छड़ी है। अब ऐसे हाल में अक़्ल से पूछें कि एक आदमी के पास छड़ी है और वह साँपों में घिरा खड़ा है,

क्या करना चाहिए? अक़्ल कहेगी कि उस छड़ी को मज़बूती से अपने हाथ में पकड़ लेना चाहिए फिर जो साँप उसके क़रीब आए उसके सर पर मारना चाहिए। यही तरीक़ा है कामयाबी का और अगर अल्लाह तआला से पूछें कि क्या करना चाहिए? तो फ़रमाया कि ऐ मेरे प्यारे मूसा! आप अपनी छड़ी को ज़मीन पर डाल दें। इस मौक़े पर अक़्ल कहेगी कि क्या कर रहे हो? यह तो अपनी मौत को दावत देने जैसा है। यही उम्मीद की आख़िरी किरन थी और उसे भी छोड़ रहे हो लेकिन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की रबूबियत पर यक़ीन रखते हुए ख़बर के रास्ते पर क़दम उठाया। नज़र के रास्ते पर नहीं उठाया। अपनी छड़ी को ज़मीन पर डाल दिया। वही छड़ी एक बड़ा साँप बन गया और उन सब साँपों को खा गया। अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को कामयाबी अता फ़रमा दी।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम के लिए बारह रास्ते बनने का वाक़िआ

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपनी क़ौम को लेकर दरियाए नील के किनारे पहुँचे। पीछे से फ़िरऔन अपनी फ़ौजों लेकर आ गया। आगे दरिया बह रहा है और पीछे फ़िरऔन की फ़ौजें हैं।

﴿قَالَ اَصْحَابُ مُوْسٰى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ.﴾

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथियों ने कहा, अब पकड़े गए। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा ﴿كَلَّا﴾ हर्गिज़ नहीं ﴿اِنَّ مَعِىَ رَبِّىْ﴾ मेरा रब मेरी परवरिश करने वाला, मेरा परवरदिगार, मेरी ज़रूरतों को पूरा करने वाला मेरे साथ है। ﴿سَيَهْدِيْنِ﴾ वह मुझे

सीधा रास्ता दिखाएगा, वह ज़रूर मेरी मदद फ़रमाएगा। ऐसी सूरत में अक़्ल की तरफ़ रुजू करें, अक़्ल से पूछें कि क्या करना चाहिए? अक़्ल जवाब देगी कि अगर आदमी के सामने दरिया हो, किश्ती भी पास न हो और आदमी के पीछे दुश्मन की फ़ौज भी हो तो ऐसी सूरत में डंडे को मज़बूती पकड़ना चाहिए और जब फ़ौज क़रीब आए तो उसके सिपाहसालार के सर पर डंडा मारना चाहिए। हो सकता है उसके सर पर लग जाए और वह मर जाए और अगर ख़बर से पूछें कि क्या करना चाहिए ﴿اِضْرِبْ بِعَصَاكَ الْبَحْرَ﴾ ऐ मेरे नबी अलैहिस्सलाम! आप छड़ी को पानी पर मारिए। अक़्ल यह सुनती तो चिल्लाती है, चीख़ती है कि पानी में मारने से क्या बनेगा। मारना है तो फ़िरऔन के सर पर मारो लेकिन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने नज़र के रास्ते पर क़दम नहीं उठाया बल्कि ख़बर के रास्ते पर क़दम उठाया। जैसे ही पानी के ऊपर छड़ी को मारा तो उसमें बारह रास्ते बन गए। अब उनकी क़ौम उससे पार कर गई। सैकड़ों सालों के तजुरिबे वहाँ धरे के धरे रह गए। सारी दुनिया जानती है कि पानी सतह बराबर रखता है मगर जब अल्लाह तआला का हुक्म आया तो पानी ने बराबर रखने वाली सिफ़्त ही छोड़ दी।

पत्थर से चश्मे जारी होने का वाक़िआ

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम क़ौम को लेकर एक वादी में पहुँचते हैं। वहाँ पीने के लिए पानी नहीं था। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम ने कहा ऐ अल्लाह के नबी! हमारे पास तो पीने के लिए पानी नहीं हम क्या करें? ऐसी सूरते हाल में अक़्ल से पूछें क्या करना चाहिए? अक़्ल कहेगी कि डंडा है तो

चलो उसी का बेलचा बना लो और उससे ज़मीन खोदना शुरू कर दो। ज़मीन खोदते-खोदते कुँआ बन जाएगा और पानी मिल जाएगा। मगर ख़्याल रखना कि ज़ोर से बेलचा न मारना कि डंडा टूट ही जाए। इसलिए रेगिस्तान में कोई और चीज़ नहीं मिलेगी। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने जब ख़बर के रास्ते को मालूम किया तो हुक्म मिला ﴿اِضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ﴾ अपनी छड़ी से पत्थर पर चोट मारिए। अक़्ल से पूछें तो अक़्ल चीख़ेगी और चिल्लाएगी कि छड़ी को पत्थर पर मारने से क्या फ़ायदा? ज़मीन ही खोद लेते तो बेहतर था कि उससे पानी निकलने की उम्मीद थी मगर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी छड़ी को पत्थर पर मारा और अल्लाह तआला ने उससे चश्मे जारी फ़रमा दिए। अक़्ल खड़ी की खड़ी देखती रह गई।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का अल्लाह तआला पर यक़ीन

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जा रहे हैं। एक इस्राईली और फ़िरऔनी लड़ रहे हैं। फ़िरऔनी ना-हक़ इस्राईली पर ज़ुल्म कर रहा है। उन्होंने इस्राइली को छुड़ाने के लिए फ़िरऔनी को घूँसा मारा। नबी की ताक़त चालीस मर्दों के बराबर होती है, ﴿فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ﴾ मुक्का लगते ही फ़िरऔनी मर गया और दूसरा भाग गया। उनकी क़ौम का वही बंदा अगले दिन किसी और से लड़ रहा था। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि कल तू उससे लड़ता था आज इससे लड़ता है, लगता है तू ही शराती है। वह तो कल का मंज़र देख चुका था कि हज़रत मूसा

अलैहिस्सलाम के मुक्के ने हमेशा की नींद सुला दिया था। फ़िरऔन को भी ख़बर मिल गई कि उसको आदमी को मूसा अलैहिस्सलाम ने क़त्ल किया हैं। लिहाज़ा फ़िरऔन ने अपनी एसेम्बली की बैठक बुलाई और एसेम्बली के मिंबरों से मशवरा करने लगा कि अब क्या करना चाहिए। सबने कहा उसको क़त्ल कर दो। उनमें से एक बंदा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के हक़ में मुख़्लिस था। वह जल्दी के रास्ते से भागता हुआ आया और कहा अमीरों ने तय कर लिया है कि आपको क़त्ल कर दिया जाए। आप यहाँ से किसी और जगह तशरीफ़ ले जाएं। ﴿فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا يَتَرَقَّبُ.﴾ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम वहाँ से निकल खड़े हुए, दिल में ख़ौफ़ था। तबई ख़ौफ़ का होना नबी के शान के ख़िलाफ़ नहीं होता। पीछे मुड़कर देखते हैं कि कहीं फ़िरऔन की फ़ौज न आ जाए। दिल में कह रहे थे ﴿رَبِّ نَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ.﴾ ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे ज़ालिमों की क़ौम से निजात अता फ़रमा दे। इस ख़ौफ़ में किसको पुकारा? कि ऐ अल्लाह मेरी ज़रूरतों को पूरा करने वाले, मेरे ऊपर ख़ौफ़ है तू उसको अमन में बदल दे।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की शादी का वाक़िआ

इसके बाद मदयन की तरफ़ चले जाते हैं। वहाँ एक बड़ा कुँआ था। उस पर भारी पत्थर रखा जाता था। जब वहाँ पहुँचे तो देखा कि लोग बकरियों को पानी पिला रहे हैं। दो लड़कियाँ दूर खड़ी हैं। उनसे पूछा कि तुम अपनी बकरियों को पानी क्यों नहीं पिलातीं। कहने लगीं हम नहीं पिला सकती जब तक ये पिलाकर न चले जाएं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम समझ गए इधर भी ऊँच-नीच है, अद्ल व इंसाफ़ की ज़िन्दगी यहाँ भी नहीं है। जब वे

पत्थर रखकर चले गए तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम आए और इतने भारी पत्थर को एक तरफ़ उलट दिया। उनकी सारी बकरियों को पानी पिला दिया और उसके बाद दोनों लड़कियाँ अपने घर चली गयीं।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अकेल खड़े हैं। न घर न दर, पेड़ के नीचे आते हैं और कहते हैं,

﴿رَبِّ إِنِّي لِمَا أَنزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ.﴾

ऐ मेरे परवरदिगार! तू जो कुछ ख़ैर नाज़िल करे मैं उसका मोहताज हूँ।

किस लफ़्ज़ से दुआ मांगी? रब के लफ़्ज़ से। अल्लाह तआला ने दुआ क़ुबूल फ़रमा ली। अब घर का इंतिज़ाम भी हो रहा है, बीवी का इंतिज़ाम भी हो रहा है। जब ये घर गयीं तो हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम ने देखा कि बकरियाँ ख़ूब छककर आई हैं तो वजह पूछी। बच्चियों ने बताया कि हमने एक आदमी देखा ﴿قَوِيٌّ أَمِينٌ﴾ बड़ा ताक़त वाला है और बड़ा अमानत वाला है। फ़रमाया कि उसे मेरे पास ले आओ। लड़की वापस आई कि मेरे अब्बा जान आपको बुला रहे हैं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उस लड़की के साथ जाते हैं। तफ़्सीर में लिखा है कि मूसा अलैहिस्सलाम ने लड़की से कहा, मैं रास्ता नहीं जानता लेकिन तू अगर मेरे आगे चलेगी तो मुमकिन है कि तेरे क़दमों पर मेरी नज़र पड़ जाए। मैं यह भी पसन्द नहीं करता तू मेरे पीछे चल और मैं तेरे आगे चलूँगा अगर मैं ग़लत रास्ते पर जाने लगूँ तो तू मुझे पीछे से बता देना। अल्लाह के नबी का अमल देखें यह है नबी की असमत, सुब्हानअल्लाह। जब हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई

तो उन्होंने अपनी बेटी के साथ निकाह कर दिया। अल्लाह ने घर भी दे दिया और घर वाली भी दे दी।

अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम ने किस नाम से दुआएं मांगी

अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम ने दुआएं माँगी तो रब के लफ़्ज़ से ही मांगी।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम दुआ मांगते है :

رَبَّنَا ظَلَمْنَا اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْلَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ٥

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम दुआ मांगते हैं:

رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا٥

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम दुआ मांगते हैं :

رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ. وَيَسِّرْلِيْ اَمْرِيْ. وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِيْ يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ٥

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम दुआ मांगतें हैं :

رَبَّنَا اِنِّيْ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ.

हमारे सरदार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ मांगी तो रब के लफ़्ज़ से :

رَبَّنَا اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ٥

हमें किस तरह मांगना सिखाया गया?

हमें इसी लफ़्ज़ के साथ दुआ मांगनी सिखाई गई है कि:

﴿رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا اِنْ نَّسِيْنَا اَوْ اَخْطَاْنَا.﴾

ऐ हमारे परवरदिगार! हमारी पकड़ न करना अगर हम भूल जाएं या ख़ता कर बैठें।

﴿رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا﴾

ऐ हमारे परवरदिगार हमारे ऊपर इस तरह बोझ न डालना जिस तरह कि हमसे पहले लोगों पर डाला था।

﴿رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَتَ لَنَا بِهِ﴾

ऐ हमारे परवरदिगार! हम पर इतना बोझ न डालना कि हम उठा ही न सकें।

﴿وَاعْفُ عَنَّا﴾ हमें माफ़ फ़रमा देना ﴿وَاغْفِرْلَنَا وَارْحَمْنَا﴾ हमारी मग़फ़िरत भी कर देना रहमतें भी बरसा देना ﴿اَنْتَ مَوْلٰنَا﴾ क्योंकि तू ही हमारा मौला है।

﴿فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِيْنَ۝﴾

बातिल के ख़िलाफ़ हमारी मदद फ़रमा।

मैदाने जिहाद जहाँ जान की बाज़ी लगी होती है, मोमिन अपनी जान का नज़राना पेश कर रहा होता है। उस वक़्त भी दुआ मांगता है तो किस लफ़्ज़ के साथ,

﴿وَكَاَيِّنْ مِنْ نَبِيٍّ قَاتَلَ مَعَهُ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ﴾

किन लोगों ने क़िताल किया? रब वालों ने क़िताल किया। फिर दुआ मांगते हैं:

رَبَّنَا اغْفِرْلَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ
اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ۝

बीवी बच्चों के लिए दुआ मांगने का क्या तरीक़ा सिखाया?

फ़रमाया कि बच्चों के लिए दुआ मांगो,

﴿رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا.﴾

सुब्हानअल्लाह! हर-हर क़दम पर 'रब' का लफ़्ज़ काम आ रहा है।

क़ब्र, हश्र और जन्नत और दोज़ख़ में रब का लफ़्ज़

मौत का तज़्किरे पर रब का लफ़्ज़ इस्तेमाल किय जा रहा है। फ़रमाथाः

﴿وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ نِ الْمَسَاقُO﴾

जब बंदा क़ब्र में चला जाएगा तो सबसे पहला सवाल होगा ﴿مـــن ربك﴾ तेरा रब कौन है? तुझे पालने पासने वाला कौन है? तेरी ज़रूरतें पूरी करने वाला कौन है? इसी तरह क़यामत के दिन खड़े होने के वक़्त भी रब का लफ़्ज़ इस्तेमाल फ़रमाया।

﴿يَاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌO﴾

जन्नत में भी रब का लफ़्ज़, जन्नत में जा रहे हैं वहाँ भी रब का लफ़्ज़,

﴿وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا.﴾

जहन्नम में भी लोग पुकार कर कहेंगे :

رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّيْنَO رَبَّنَا
اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَO

अल्लाहु अकबर गोया आलमे अरवाह से लेकर आलमे बरज़ख़

और आलमे आख़िरत हर जगह रब का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया। इसी तरह क़ुरआन की इब्तिदा भी रब का लफ़्ज़ से मसलन ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ﴾ और क़ुरआन का ख़त्म भी रब के लफ़्ज़ से ﴿قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ﴾ बस रब का लफ़्ज़ हमारी ज़िंदगियों के हर पहलू पर छाया हुआ है। इस लफ़्ज़ की हक़ीक़त को पहचानना हमारे लिए ज़रूरी है।

तसव्वुफ़ और सुलूक का मक़सद

मेरे दोस्तो! जब यह हालत है कि हम आलमे अरवाह में अल्लाह के मोहताज थे, माँ के पेट में भी अल्लाह के मोहताज थे, दुनिया में भी हर क़िस्म की ख़ुशी और ग़मी में अल्लाह के मोहताज हैं, क़ब्र में भी अल्लाह के मोहताज होंगे, हश्र में भी अल्लाह के मोहताज होंगे, हत्ताकि जन्नत में भी अल्लाह की ज़ात के मोहताज होंगे और जहन्नम वाले भी अल्लाह ही को पुकार रहे होंगे तो हम आज ही उस ज़ात के मोहताज क्यों नहीं बन जाते। हम इस दर पर आज ही क्यों नहीं झुक जाते? अगर यह बात समझ में आ जाए तो फिर ज़िंदगी का रुख़ बदल जाएगा। तसव्वुफ़ व सुलूक का मक़सद यही है कि बंदे के दिल में यह यक़ीन पैदा हो जाए कि चीज़ों से मेरी ज़रूरतें पूरी नहीं हो सकतीं बल्कि अल्लाह पूरी करने वाला है।

तीन अहम बातें

मेरे दोस्तो! अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इर्शाद फ़रमाते हैं:

﴿وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا﴾

और जो भी जानदार ज़मीन के ऊपर है मगर उसका रिज़्क़ अल्लाह ही के ज़िम्मे है।

जो अल्लाह पर तवक्कुल करते हैं अल्लाह तआला उनको हमेशा का रिज़्क़ अता फ़रमा देते हैं–

पल्ले रिज़्क़ नहीं बंधे पखो ते दरवेश
जिन्हां तकिया रब दा इन्हां रिज़्क़ हमेश

अल्लाह तआला पर तवक्कुल करने वाले ऐसे ही खाते हैं जैसे परिन्दे बग़ैर मुशक़्क़त उठाए खाते हैं। इंसान की रूह जब माँ के पेट में डाली जाती है तो उस वक़्त तीन बातें लिख दी जाता हैं कि यह बंदा दुनिया में कितना अर्सा ज़िंदा रहेगा, दूसरा यह लिख दिया जाता है कि इसका रिज़्क़ कितना होगा और तीसरा यह लिख दिया जाता है कि यह नेकबख़्त होगा या बदबख़्त होगा।

एक चींटी का सालाना रिज़्क़

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम एक दफ़ा कहीं जा रहे थे एक चींटी ने दूसरी चींटी से कहा ﴿يَا أَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوا مَسَاكِنَكُمْ﴾ ऐ चींटियो! अपने बिलों में दाख़िल हो जाओ। सुलेमान अलैहिस्सलाम का लश्कर आ रहा है, कहीं तुम्हें पाँव न मसल दे। ﴿فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّن قَوْلِهَا﴾ हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम उसकी बात सुनकर मुस्कराए। उसको बुलाया और पूछा कि ऐ चींटी! तेरी ख़ुराक कितनी होती है? उसने कहा एक साल में पानी के कुछ क़तरे और गेहूँ के कुछ दाने। सुलेमान अलैहिस्सलाम ने कहा अच्छा मैं तेरा इम्तिहान लेता हूँ। लिहाज़ा आपने उसे एक जगह बंद कर दिया और गेहूँ के कुछ दाने और पानी के कुछ क़तरे रख दिए।

साल के बाद जब निकाला तो चींटी ने जितना कहा था उससे भी कम खाया था। सुलेमान अलैहिस्सलाम यह देखकर बहुत खुश हुए और फ़रमाया कि ऐ चींटी! तू मुझसे मांग जो कुछ मांग सकती है? उनकी सलतनत इंसानों पर थी, हैवानों पर थी, चरिन्दों पर थी, परिन्दों पर थी, जिन्नों पर थी, खुश्की की मख़्लूक़ पर थी, तरी की मख़्लूक़ पर थी। क्या अजीब सलतनत थी। चींटी ने जवाब दिया कि ऐ सुलेमान! अगर आप कुछ दे सकते हैं तो ﴿زدنی رزقاً وعمراً﴾ आप मेरा रिज़्क़ बढ़ा दें और मेरी उम्र बढ़ा दें। सुलेमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, यह तो मेरे बस में नहीं, यह तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाथ में है। वही चाहता है तो रिज़्क़ भी बढ़ा देता है और उम्र भी बढ़ देता है।

बंद पत्थर में रोज़ी

हमारे एक दोस्त सैर के लिए सवात तशरीफ़ ले गए। बीवी बच्चे भी साथ थे। एक पहाड़ पर उन्होंने एक ख़ूबसूरत और गोल शक्ल का चमकदार पत्थर देखा। उन्होंने उठाकर देखा तो बहुत ही साफ़ सुथरा और मुलायम था। रंग और भी ख़ूबसूरत था। बच्चों ने इसरार किया कि वह पत्थर घर ले चलें। वालिद ने भी सोचा चलो डेकोरेशन के काम आएगा। सफ़र की यादगार ही सही। ले ही चलते हैं। चुनाँचे उन्होंने वह पत्थर घर लाकर घर में सजा दिया। दो साल बाद वही साहब एक दिन उस पत्थर को अपने हाथ में लेकर कहने लगे या अल्लाह! तूने यह कैसा ख़ूबसूरत पत्थर बना दिया है। इस दौरान में वह पत्थर हाथ से छूट गया। नीचे फ़र्श पर गिरते ही टूट गया। एक लम्हे के लिए उन्हें अफ़सोस तो हुआ मगर साथ ही यह देखकर हैरानी हुई कि पत्थर

ठीक बीच में एक सुराख़ था जिसमें से एक कीड़ा निकला और चलने लगा। अब बताएं कि बंद पत्थर मे कीड़े को कौन रोज़ी देता है? यक़ीनन अल्लाह तआला देता है। बस सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का परवरदिगार है।

एक मुतवक्किल की सबक़ देने वाली दास्तान

अब मैं आपको एक ऐसा वाक़िआ सुनाता हूँ जिससे सारी बात आसानी से समझ में आ जाएगी। हमारे एक दोस्त वकालत का काम करते थे। वकालत का एक ऐसा पेशा है कि जिसमें आमतौर पर दुनिया भर के झूठ बोलने पड़ते हैं। एक शायर ने तो यहाँ तक कह दिया–

पैदा हुआ तो वकील तो शैतान ने कहा
लो आज हम भी साहिबे औलाद हो गए

मगर यक़ीन कीजिए कि उन्होंने वकालत का काम भी जारी रखा और अपनी ज़िंदगी का रुख़ भी बदल लिया। उनकी बीवी लेडी डाक्टर थी। जब वकील साहब का अल्लाह वालों से तअल्लुक़ हो गया तो अल्लाह तआला ने दिल की हालत बदल दी। कहने लगे मैंने आज के बाद झूठ नहीं बोलना। मेरा अल्लाह मुझे सच बोलने पर रोज़ी देगा। लोगों ने कहा आपका दिमाग़ ठीक तो है? सच बोलने से वकालत नहीं चलेगी, उन्होंने कहा चलेगी या नहीं चलेगी मगर सच ज़रूर चलेगा। अब तो मैंने दिल में फ़ैसला कर लिया है। लिहाज़ा वकील एक दिन दफ़्तर आए और कहने लगे कि मैंने आज सिर्फ़ वे मुक़द्दमे लेने हैं जो सच्चे होंगे। लोगों से कह दिया कि अगर आप झूठे हो तो मुझे अभी

बता दें वरना अगर सुनवाई के बीच मुझे पता चला तो मैं आपकी मुख़ालिफ़त करूंगा। अगर सच हो तो डटकर आपकी हिमायत करूंगा। लोगों ने कहा अल्लाह की पनाह। लिहाज़ा सबके सब दूसरे वकीलों के पास चले गए। वकील साहब का दफ़्तर ख़ाली। सारा दिन कोई काम नहीं आ रहा। इसी हालत में कई महीने गुज़र गए। लोगों में चर्चा होने लग गया। किसी ने मजनूँ कहा, किसी ने कहा पागल है, किसी ने कहा बेवक़ूफ़ है, किसी ने कहा मौलवियों ने इसकी मत मार दी है, अच्छा ख़ासा वकील था, उन्होंने बिगाड़ कर रख दिया है। वह अल्लाह बंदा पक्का सच्चा था। कहता था कि मुझे झूठ बोलकर रोज़ी नहीं लेनी है। अल्लाह की ज़ात मुझे सच बोलने पर ही रोज़ी देगी। एक साल गुज़र गया मगर कोई काम नहीं आया। क्योंकि बीवी लेडी डाक्टर थी, उसकी तंख्वाह से ख़र्च चलता रहा। बीवी बहुत समझदार थी। कहने लगी जब आप झूठ बोलना छोड़ चुके हैं तो आप वकालत के पेशे को छोड़ दें और तिजारत का पेशा अपना लें। आप सच ही बोलें, अल्लाह तआला उसी में बरकत देगा। वकील साहब बोले, नहीं बोलना भी सच है और करनी भी वकालत है। बीवी ने कहा अच्छी बात है। मेरी दुआएं और मेरी मदद आपके साथ है। अल्लाह तआला आपको कामयाब फ़रमाए। वकील साहब एक साल तक घर से दफ़्तर आते और सारा दिन पंखे के नीचे बैठकर अख़बार पढ़ते और घर वापस आ जाते। एक दफ़ा जजों के सामने तज़्किरा हो गया कि फ़लाँ वकील झूठे मुक़द्दमें नहीं लेता। ग़रीबी बरदाश्त कर रहा है और कहता है कि मर जाऊँगा मगर सच को नहीं छोड़ सकता। सब जज साहिबान इस बात से बहुत मुतास्सिर हुए।

वक़्त के साथ-साथ उनकी इज़्ज़त लोगों के दिलों में पैदा होनी शुरू हो गई। वह कहने लगे एक साल का इम्तिहान था। दूसरा साल शुरू हुआ तो तबलीग़ी जमाअत वाले, तसव्वुफ़ वाले, सुलूक वाले, मदरसे वाले लोगों ने सोचा कि फ़लाँ वकील सच्चे मुक़द्दमे लेता है। हमारे मुक़द्दमे सच्चे हैं, पैसे हमारे पल्ले हैं नहीं, थोड़ा बहुत दे देंगे। उनका भी गुज़ारा हो जाएगा। लिहाज़ा वे आना शुरू हो गए। जो भी आता सच्चा मुक़द्दमा लेकर आता। वकील साहब मुक़द्दमा लेकर में अदालत जाते और उनके हक़ में फ़ैसला हो जाता। दूसरा मुक़द्दमा आया, उनके हक़ में फ़ैसला हुआ। तीसरा मुक़द्दमा आया उनके हक़ में फ़ैसला हुआ। कुछ दिन हुए तो जज साहिबान आपस में मिले और कहने लगे यह वकील जो भी मुक़द्दमे लाते हैं वे सच्चे होते हैं इसलिए अब इससे ज़्यादा सवाल ही न किया करो। लिहाज़ा वकील साहब मुक़द्दमा लेकर जाते तो चंद मिनट के अंदर अंदर उनके हक़ में फ़ैसला हो जाता। बड़े-बड़े अमीरों ने सोचा कि हमारे मुक़द्दमे सच्चे ही हैं तो फिर क्यों न हम मुक़द्दमा इसी को दे दें। जब वह आना शुरू हुए तो पैसे ज़्यादा मिलने लगे। जब वकील साहब झूठ-सच बोलते थे एक महीने का बीस हज़ार रुपया कमाते थे और जब सच बोलना शुरू किया तो एक महीने में चालीस हज़ार कमाने लगे।

सच बोलने पर अल्लाह तआला ने दुगना रिज़्क़ दे दिया। अभी कुछ दिन पहले की बात है कि कुछ वकीलों का जज बनने के लिए इम्तिहान हुआ तो हमारे इस दोस्त वकील को कामयाबी हुई और वह जज बन गए। एक वक़्त था कि यही आदमी वकील की जगह खड़े होकर झूठ बोलता था। जब सच बोलना शुरू किया तो

अल्लाह तआला ने उसको अदालत की कुर्सी पर बिठा दिया। पहले वह वह खड़ा 'सर', 'सर' कह रहा होता था अब अल्लाह तआला ने आदलत की कुर्सी पर बिठा दिया। अब वहाँ पर बैठकर हुक्मनामे जारी करता है। मेरे दोस्तो यह बात साबित हो गई कि जो सच बोलेगा अल्लाह उसे फ़र्श से उठाकर अर्श पर बिठा देगा।

मेरे दोस्तो! यक़ीन बनाने की ज़रूरत है। अगर अल्लाह तआला पर तवक्कुल नसीब हो जाए तो न ज़मीनों के झगड़े बाक़ी रहेंगे, न दफ़्तरों में रिश्वत रहेगी न दुकानों में मिलावट रहेगी न झूठ बोलकर कमाना रहेगा न धोके से कमाना रहेगा। ये चीज़ें अपने आप ख़त्म हो जाएंगी। हमारी अदालतों में मुक़द्दमें ख़त्म हो जाएंगे। ये वीरान नज़र आएंगी।

दुनिया वालों के लिए चैलेंज

मेरे दोस्तो! सारी चीज़ों से अपनी निगाहों को हटाकर एक अल्लाह की ज़ात पर लगा लें। आज माँ से पूछें कि तुम्हारा बेटा क्या बनेगा? कहती है कि डाक्टर बनेगा, इंजीनियर बनेगा, पायलेट बनेगा। है कोई माँ जो कहे कि मेरा बेटा मुफ़स्सिर बनेगा, मुहद्दिस बनेगा, मेरा बेटा दीन का मुजाहिद बनेगा। मैं आपसे सवाल करता हूँ, कान खोलकर सुनना। फिर न कहना कि किसी ने कोई बात समझाई नहीं थी। मिंबरे रसूल पर बैठा हूँ, अल्लाह की किताब मेरे हाथ में है, अल्लाह के घर में बैठा हूँ। मुझे एक बात बताएं, आपने कभी देखा है कि कोई आलिम बा-अमल हो और वह भूखा-प्यासा ऐड़ियाँ रगड़-रगड़कर मर रहा हो? जबकि पीएचडी करने वाले, इंजीनियरिंग की डिग्री लेने वाले कई ऐसे हैं

जिनको भूखे-प्यासे ऐड़ियाँ रगड़-रगड़ कर मरते हुए देखा गया है। हमारा बेटा आलिम बनेगा तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त वहाँ से रिज़्क़ देंगे जहाँ से अंबिया अलैहिमुस्सलाम को रिज़्क़ दिया करते थे।

﴿وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ﴾

जो अल्लाह पर तवक्कुल करता है तो अल्लाह उसके लिए काफ़ी हो जाता है।

﴿وَ آخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ٥﴾

इश्क़-ए-रसूल

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اما بعد.

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

مَنْ يُطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ وَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى فِيْ مَقَامٍ آخَرَ وَمَنْ يُطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ○ وَقَالَ اللّٰهُ فِيْ مَقَامٍ اَطِيْعُوْا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُو الرَّسُوْلَ ○ وَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى فِيْ مَقَامٍ آخَرَ اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُوْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ○ وقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم لَا يُؤْمِنُ اَحَدُكُمْ حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ مِنْ وَالِدِهٖ وَوَلَدِهٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ. سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ○

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तज़्किरा

आज की इस महफ़िल में रबिउल अव्वल के महीने के हवाले से सैय्यदुल अव्वलीन वल् आख़रीन, रहमतुल-लिल आलमीन मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इश्क़ व मुहब्बत के बारे में कुछ बातें अर्ज़ करनी है। बुज़ुर्गों का मक़ूला है ﴿من احب شيئا اكثر ذكره﴾ जो जिससे मुहब्बत करता है अक्सर उसका तज़्किरा करता है। इसलिए ये कुछ बातें इसी सिलसिले की एक कड़ी हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक्रे मुबारक तो खुद अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने क़ुरआन पाक में बार-बार किया। जिस ज़ाते मुबारक पर अल्लाह तआला ने खुद क़स्में खायीं। उन की ज़ुल्फ़ों की ﴿وَالضُّحٰى وَالَّيْلِ﴾ उनकी उम्र की ﴿لَعَمْرُكَ﴾ और उन के शहर की ﴿لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ﴾ और इर्शाद फ़रमाया ﴿وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ﴾ हमने आपका ज़िक्र बुलंद कर दिया। मैं आजिज़ बंदा इस पर क्या अर्ज़ कर सकता हूँ। उनका तो वह मुक़ाम है कि अदब से ज़बान गूँगी हो जाती है। कहने वालों ने तो यहाँ तक कह दिया कि–

ہزار بار بشویم دہن بمشک و گلاب
ہنوز نام تو گفتن کمال بے ادبی است

फिर भी किसी ग़ुलाम के लिए अपने आक़ा का ज़िक्रे मुबारक एक सआदत होती है और इन सआदतमंदों की फ़हरिस्त में शामिल होने की हर मोमिन के दिल में तमन्ना होती है। इसी तमन्ना को दिल में लिए आज इस उनवान पर कुछ बातें करनी हैं।

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़्मत

दुनिया में बड़े-बड़े रहनुमा, जरनैल, फ़लॉसफ़र और ख़तीब गुज़रे हैं। उनकी ज़िंदगियों को देखा जाए तो सबकी ज़िंदगी में एक बात एक जैसी नज़र आती है कि उनकी वफ़ात के बाद लोगों ने कहा मरहूम ने बहुत कुछ किया मगर ज़िंदगी ने वफ़ा न की। अगर ज़िंदगी वफ़ा करती तो वह इस फ़न को और उरूज पर पहुँचाते। बड़े-बड़े शायर गुज़रे। उनकी वफ़ात के बाद भी लोगों ने लिखा कि बड़े अच्छे शे'र कहे अगर ज़िंदगी वफ़ा करती तो वह

और अच्छे शे'र कह लेता। बड़े-बड़े जरनैलों की ज़िंदगियों को पढ़ा तो उसमें भी नज़र आता है कि लोगों ने कहा कि अगर वह इतने साल और ज़िंदा रहता तो वह पूरी दुनिया का फ़ातेह बन जाता। गोया फ़लासफ़र, अदीबों, जरनैलो और ख़तीबों की ज़िंदगियों को देखा जाए तो यह तमाम ज़िंदगियाँ नामुकम्मिल नज़र आती है। लोग कहते हैं कि अगर ज़िंदगी वफ़ा करती तो अपने अंदर कमालात पैदा कर लेते। मोहतरम सामेइन! पूरी काएनात के अंदर सिर्फ़ एक हस्ती ऐसी है कि जिसने अपने होश व हवास में दिन के वक़्त में अपने तअल्लुक़ वालों की महफ़िल में खड़े होकर यह ऐलान किया कि ऐ लोगो! दुनिया में जिस मक़सद के लिए मुझे भेजा गया था मैं उस मक़सद को पूरा कर चुका हूँ। लोगों ने कहा आपने सच फ़रमाया। आपने उंगली का इशारा करते हुए फ़रमाया ऐ अल्लाह! तू गवाह रहना। यह रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ऐसा कमाल है कि आपके इस कमाल में कोई शरीक हो ही नहीं सकता। ऐसी कमाल वाली ज़िंदगी हुज़ूर को अल्लाह तआला ने अता फ़रमाई थी। हम ने यूरोप, अफ़्रीक़ा और अमरीका में लोगों के सामने यही प्वाइंट रखा कि लोगो! तुम अपनी ज़िंदगी में जिन को लीडर मानते हो, उनकी ज़िंदगियों में ऐसे-ऐसे नुक़्स हैं लेकिन जिनको हम अपनी ज़िंदगी में रहनुमा मानते हैं। तुम उनकी पूरी ज़िंदगी में किसी बात पर भी उंगली नहीं उठा सकते। यह एक ऐसा मज़बूत नुक्ता है कि बड़े से बड़े मुख़ालिफ़ को भी घुटने टेकने पड़ जाते हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी का हर पहलू एक उनवान है। किताबें भरती चली जाएंगी मगर किसी

एक उनवान का हक़ अदा न होगा। उम्मत चौदह सौ साल से अपने महबूब की सीरत पर किताबें लिख रही है मगर आज तक भी कोई यह न कह पाया कि हमने इस सीरत को लिखने का हक़ अदा कर दिया बल्कि यही कहा :

﴿لا يمكن الثناء كما كان حقهٗ﴾

﴿بعد از خدا بزرگ توئی قصہ مختصر﴾

क़िस्सा मुख़्तसिर कि ख़ुदा तआला के बाद तू ही बुज़ुर्ग है।

और यह भी लिखा है बाज़ लिखने वालों ने बहुत कुछ लिखने के बाद :

﴿ما ان مدحت محمدا بمقالتي ولكن مدحت مقالتي بمحمد.﴾

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मुहब्बत व इश्क़ रखने वाले हज़रात तो इस दुनिया में करोड़ों गुज़रे हैं। हर वह आदमी जिसने कलिमा पढ़ा है, उसके दिल में नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की सच्ची मुहब्बत का होना ज़रूरी है।

मुहम्मद की मुहब्बत दीन हक़ की शर्त अव्वल है
अगर इसमें रहे ख़ामी तो ईमान नामुकम्मल है

हज़रत मिर्ज़ा मज़हर जाने जाना रह० अल्लाह के एक बड़े वली गुज़रे हैं। उन्होंने फ़ारसी में नीचे लिखे शे'र लिखे :

तर्जुमा : अल्लाह तआला हमारी हम्द के इंतिज़ार में नहीं है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारी तारीफ़ के मुन्तज़िर नहीं हैं।

अल्लाह तआला हुज़ूर की मदह (तारीफ़) के लिए काफ़ी हैं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला की हम्द बयान करने के लिए काफ़ी हैं।

फ़रमाते हैं :

तुमने अपनी कोई दरख़्वास्त पेश भी करनी है तो एक शे'र के ज़रिए पेश कर दो कि ऐ अल्लाह! हम आपसे रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत मांगते हैं और ऐ अल्लाह के नबी हम आपसे अल्लाह तआला का तअल्लुक़ चाहते हैं। लिहाज़ा इश्क़े मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो ईमान वालों के लिए ज़िंदगी का सरमाया है।

ہر کہ عشق مصطفےٰ سامان اوست
بحر و بر گوشہ دامان اوست

इश्क़ की ये बातें सब ऐसी हैं कि मुस्तक़िल एक उनवान हैं। फिर भी कुछ बातें इश्क़ व मुहब्बत की जो हर सालिक के लिए ज़रूरी हैं ताकि जो सालिकीन ज़िक्र व सुलूक में क़दम आगे बढ़ाने वाले हैं वे इन बड़ों की बातों को सामने रखकर अपने आपको भी देखें कि क्या आज इस इश्क़ की कोई रमक़ हमारे अंदर भी मौजूद है। कितना हिस्सा इसका हमें हासिल है और कितना हमें और हासिल करने की ज़रूरत है।

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सरापा मुबारक

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सरापा मुबारक के बारे में किताबों में बहुत सी तफ़सीलें आई हैं। इब्ने मुस्लिमा रह० एक ताबई हैं, वह एक सहाबी के पास बैठे हैं। उसने पूछते हैं कि आप

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के बारे में कुछ हमें बताइए तो उन्होंने बड़ी मुहब्बत से आपका सरापा बयान फ़रमाया। कि आप का माथा मुबारक बड़ा दिलफ़रेब था। आपका चेहरा मुबारक इतना कुशादा था जिस पर सुर्ख़ी और सफ़ेदी थी। आपकी भवें मुबारक देखने के क़ाबिल थीं, आपका सीना मुबारक बड़ा कुशादा था, दोनों मोंढों के बीच मुहरे नबुव्वत थी, दोनों हथेलियाँ पुरगोश्त थी, आपका जिस्म मुबारक इतना नरम था कि हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि मैंने अपनी ज़िंदगी में रेशम को भी छुआ और अपने महबूब के पाक जिस्म को भी तो मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि मेरे महबूब का जिस्म मुबारक रेशम से भी ज़्यादा नरम था। तो वह फ़रमाते हैं कि जब नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम उठते तो यूँ महसूस होता कि जैसे चट्टान के पीछे से आप निकल आए हों। जब आप चलते तो यूँ महसूस होता जैसे ऊँचाई से नीचे की तरफ़ आ रहे हों।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इर्शाद फ़रमाया करते थे कि मेरे भाई यूसुफ़ अलैहिस्सलाम तो 'सबीह' थे और मैं 'मलीह' हूँ। सबाहत चेहरे पर अगर सफ़ेदी ग़ालिब हो तो उसको कहते हैं और मलाहत उसको कहते हैं कि जब सूरत को देखा जाए तो नक़्श ऐसे हों कि देखते ही दिल पर असर करें। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं मलीह हूँ। और आपके हुस्न व जमाल की क्या बातें करनी हैं। बक़ौल शैख़ सअदी रह०–

بلغ العلی بکمالہ   کشف الدجی بجمالہ
حسنت جمیع خصالہ   صلوا علیہ والہ

लुआबे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

आप के लुआबे (लार) मुबारक में इतना असर था कि ख़ैबर के दिन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की आँखें दुखः रही थीं। आपने अपना लुआब मुबारक उनकी आँखों पर लगाया, आँखें ठीक हो गयीं।

उत्बा बिन ख़रक़द रज़ियल्लाहु अन्हु जो मूसल के फ़ातेह कहे जाते हैं, उनके जिस्म पर दाने निकल आए। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लुआबे मुबारक लगा दिया। दानों को भी शिफ़ा हो गई और पूरी ज़िंदगी उनके जिस्म से ऐसी ख़ुश्बू आती रही कि दूसरे सहाबा किराम उनके जिस्म से ख़ुश्बू सूँघा करते थे।

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पसीना मुबारक

आपके पसीने मुबारक में इतनी ख़ुश्बू थी कि जब कभी सहाबा किराम आपको तलाश करने के लिए निकलते तो फ़रमाते हैं कि हम रास्ते की ख़ुश्बू सूँघ कर अंदाज़ा लगा लेते थे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस रास्ते से गुज़रे होंगे। एक सहाबिया अपने बच्चे को एक शीशी देकर भेजतीं कि दोपहर के वक़्त जब आप आराम करें तो वह आपके बदन मुबारक पर जो पसीना आए उसके क़तरों को इकठ्ठा करके उस शीशी में डाल ले। वह फ़रमाती हैं कि मैं जिस इतूर में यह पसीना शामिल कर देती उसकी ख़ुश्बू में इज़ाफ़ा हो जाया करता था।

एक ग़रीब सहाबी आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए और अपनी बेटी की शादी के लिए दुआ करवाई। नबी अकरम सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने दुआ फ़रमा दी और उसको कहा कि आपके पास दुल्हन के लिए ख़ुश्बू तो नहीं होगी। चुनाँचे आपने अपने पसीने मुबारक की कुछ बूँदे अता फ़रमा दीं। वह लेकर गए तो सब घरवालों ने उसे इस्तेमाल किया। उन सब घरवालों से इतनी ख़ुश्बू आती थी कि इस घरवालों का नाम 'ख़ुश्बू वालों का घर' मशहूर हो गया।

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का छूना

उबादा बिन सामत रज़ियल्लाहु अन्हु जो एक बड़े दर्जे के बदरी सहाबी हैं, फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु के यहाँ एक दावत पर हाज़िर हुआ। एक बाँदी मेरे लिए एक तौलिया लाई। तौलिया काफ़ी मैला था। हज़रत अनस ने कहा इसको साफ़ करके ले आओ। वह बाँदी भागी गई और जलते हुए तन्दूर में उस तौलिये को डाला और उठाकर वापस ले आई। मैंने देखा कि वह तौलिया बिल्कुल साफ़ सुथरा मेरे सामने था। मुझे हैरानी हुई। मैंने हज़रत अनस से पूछा कि इसमें क्या राज़ है? उन्होंने बताया कि एक बार नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए थे। मैंने आपके हाथ मुबारक धुलवाए और आपके हाथों को पोंछने के लिए यह तौलिया पेश किया, जिससे आपने अपने हाथ मुबारक ख़ुश्क किए। उस दिन से इस तौलिए को आग ने जलाना छोड़ दिया। जब यह मैला हो जाता है तो हम इसे आग में डालते हैं, आग इसके मैल को खा लेती है। साफ़ तौलिया हम आग से बाहर निकाल लेते हैं।

सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने रोटियाँ लगायीं। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने भी एक दो बना कर दीं। काफ़ी देर के बाद सब पक गयीं तो हैरान हुईं कि इसमें से एक दो पक ही नहीं रहीं। इस तरह आटे का आटा मौजूद है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा बेटा! क्या हुआ? अर्ज़ किया, हुज़ूर दो तीन रोटियाँ ऐसी हैं जो पक नहीं रहीं। फ़रमाया, यह वही रोटियाँ होंगी जिन पर तेरे वालिद के हाथ लग गए। अब आग इस आटे पर असर नहीं कर सकती। तो नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम जिस चीज़ को छू लेते थे उस पर यूँ असरात हो जाते थे।

लोग खजूरों के पेड़ लगाते थे। कई-कई सालों के बाद फल आया करता था लेकिन जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पेड़ लगाए तो उसी साल खजूर ने फल उठा लिया। आपके छूने के इस तरह असरात होते थे। एक सहाबी हज़रत ज़ैद बिन जाबिर बिन अब्दुल्लाह ग़ज़वा ज़ातुल अज़का के अंदर जा रहे थे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा कि उनका ऊँट बहुत सुस्त रफ़्तारी से चल रहा है। नबी अकरम ने अपनी छड़ी उस ऊँट को लगाई। छड़ी लगते ही ऊँट इतना सरपट दौड़ने लगा कि दूसरी सवारियों से आगे निकल जाया करता था।

उम्मे अम्मारा रज़ियल्लाहु अन्हा एक सहाबिया हैं। सुलह हुदैबिया के मौक़े पर जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने मुए मुबारक (बाल मुबारक) बांटे तो उम्मे अम्मारा को भी अता हुए। वह उनको पानी में डालकर निकालतीं और वह पानी बीमारों को पिलाती थीं तो अल्लाह तआला उनको शिफ़ा अता फ़रमा देते थे। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु

ने अपनी टोपी में कुछ बाल मुबारक लगा रखे थे और फ़रमाते थे कि मैं जिस तरफ़ यह टोपी पहनकर जाता था अल्लाह तआला मुझे हर मुक़ाम पर फ़तेह अता कर दिया करते थे, सुब्हानअल्लाह।

ताजदारे मदीना की नस्बी इफ़्फ़त व असमत

आपने फ़रमाया कि आदम अलैहिस्सलाम से लेकर मेरे बाप-दादा तक नुत्फ़ा हलाल तरीक़े से एक जगह से दूसरी जगह मुंतक़िल होता रहा। आप से लेकर आदम अलैहिस्सलाम तक एक रिश्ता भी ऐसा नहीं जो ग़लत तरीक़े से परवरिश पाया हो।

नबुव्वत की बेहतरीन दलील

अल्लाह तआला के रसूल को ऐसी ज़िंदगी मिली कि वह लोग जो आपकी जान के दुश्मन थे उनकी ज़बान से भी निकला कि हमने आप को झूठ बोलते हुए कभी नहीं देखा लेकिन वही लोग जो आपको सादिक़ और अमीन कहते थे (मक्का मुकर्रमा के हालात उस वक़्त बहुत ख़राब थे) आपने नबुव्वत का ऐलान फ़रमाया तो लोगों ने कहा आप अपनी नबुव्वत के बारे में कोई दलील दीजिए। लिहाज़ा आपने ऐलान फ़रमाया :

﴿لقد لبثت فيكم عمراً من قبله﴾

मैं इससे पहले भी तुम्हारे ही दर्मियान ज़िंदगी गुज़ार चुका हूँ।

अगर मेरी जवानी तुम्हें फूलों से ज़्यादा मासूम नज़र आती है तो मेरी नबुव्वत पर ईमान ले आओ। सुब्हानअल्लाह यह बहुत बड़ी बात होती है कि इंसान अपनी गुज़री ज़िंदगी और ख़ास तौर पर अपनी जवानी को नमूने के तौर पर पेश करे। किसी को भी

उंगली उठाने की हिम्मत नहीं हुई। दुश्मन आपके ख़िलाफ़ यूँ कहते रहे कि आप (माज़अल्लाह) जादूगर हैं। यह तो कहते रहे कि आपने (माज़अल्लाह) यह दावा झूठा किया मगर यह कोई भी न कह सका कि आपके किरदार में वह ख़राबी है।

मेरा क़ायद है वह ज़िंदगी पैग़ाम था जिसका
सदाक़त ज़ात थी जिसकी अमानत नाम था जिसका
वह रफ़्ता रफ़्ता जिसने क़ौम को मंज़िल अता कर दी
कली आग़ाज़ था जिसका चमन अंजाम था जिसका

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब नबुव्वत का दावा फ़रमाया तो लोग नहीं जानते थे कि यह दीन आइंदा जल्दी बड़ा बाग़ बनने वाला है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, मैं अपने बाप इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ, ईसा अलैहिस्सलाम की बशारत और अपनी माँ आमना का ख़्वाब हूँ। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दुआ मांगी थी, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने बशारत दी थी और बीबी आमना रज़ियल्लाहु अन्हा ने ख़्वाब देखा था कि मेरे बदन से एक नूर निकला जो पूरी दुनिया में फैल गया।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रहमत ही रहमत हैं

अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते है ﴿وَمَا أَرْسَلْنٰكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ﴾ प्यारे! हमने आपको रहमत बनाकर भेजा है। आप दुनिया की हर मख़्लूक़ के लिए रहमत साबित हुए।

इंसानों के लिए रहमत

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रहमत से इंसानों ने भरपूर फ़ायदा उठाया। आपने दुआ फ़रमाई ऐ अल्लाह! मेरे बाद मेरी उम्मत पर कोई ऐसा अज़ाब न आए कि इनको शक्लों को बदल दिया जाए। अल्लाह तआला ने दुआ क़ुबूल फ़रमा ली। आज जो हम अपनी शक्लों पर ज़िंदा हैं यह रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआओं का सदक़ा है वरना पहली उम्मतों की तरह पकड़ होती तो सैकड़ों में से कोई एक होता जो अपनी असली शक्ल पर बाक़ी रहता।

जानवरों के लिए रहमत

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रहमत से जानवरों ने भी रहमत पाई। एक बार एक बाग़ में तशरीफ़ ले गए तो एक ऊँट बिलबिलाता हुआ आपके क़दमों में आया। आपने उसके मालिक को बुलाकर फ़रमाया यह बे ज़बान जानवर है। तुम्हें चाहिए कि इसके साथ नरमी बरतो। यह शिकवा कर रहा है कि तुम इससे काम ज़्यादा लेते हो और इसे चारा थोड़ा देते हो। सुब्हानअल्लाह! जानवर भी आपकी ख़िदमत में आकर अपनी तकलीफ़ बयान करते थे।

हुज़ूर पाक अलैहिस्सलातु वस्सलाम एक दफ़ा मदीना तैय्यबा से बाहर तशरीफ़ ले जा रहे थे। एक यहूदी ने हिरनी पकड़ी हुई थी। आप जब क़रीब से गुज़रे तो उस हिरनी ने आपसे कहा, ऐ अल्लाह के नबी! मुझे इसने पकड़ लिया है। इस सामने वाले पहाड़ में मेरा बच्चा है और उसके दूध का वक़्त हो गया है। मुझे

देर हो रही है, मेरी ममता जोश मार रही है कि उसे दूध पिला लूँ। आप मुझे थोड़ी देर के लिए आज़ाद करा दीजिए। रसुलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसकी बात सुनी तो यहूदी से कहा थोड़ी देर के लिए इसे आज़ाद कर दो। यह दूध पिलाकर वापस आ जाएगी। उसने कहा बड़ी मुश्किल से इसे पकड़ा है, क्या आप इसकी ज़िम्मेदारी लेते हैं? आपने फ़रमाया कि मैं इसकी ज़िम्मेदारी कुबूल करता हूँ। लिहाज़ा हिरनी को छोड़ा गया। वह उसी वक़्त छलांगे मारती हुई पहाड़ की तरफ़ गई। आप वहीं थे कि वह दोबारा भागती हुई वापस आ गई। यहूदी हिरनी की इस इताअत को देखकर हैरान रह गया। चुनाँचे उसने कलिमा पढ़ा और मुसलमान हो गया।

औरतों के लिए रहमत

आपकी रहमत से औरतों ने भी फ़ायदा उठाया। आप सोचेंगी वह कैसे? देखें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तशरीफ़ लाने से पहले इस समाज में औरत की क्या क़ीमत थी। लोग अपने घर में बेटी की पैदाईश को बुरा समझते थे और उन्हें ज़िंदा क़ब्र में दफ़न कर देते थे। बाप बेटी को मुहब्बत और प्यार की नज़र से नहीं देखा करता था। मगर जनाबे रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया, जिसके यहाँ दो बेटियाँ हों और वह उनकी परवरिश करे यहाँ तक कि उनका निकाह कर दे तो वह आदमी जन्नत में मेरे साथ ऐसे होगा जैसे ये दो उंगलियाँ एक दूसरे के साथ हैं। इस हदीसे मुबारक के पढ़ने के बाद भला कोई मोमिन अपनी बेटी को गिरी हुई नज़र से देख सकता है? नहीं बल्कि समझेगा कि मेरे लिए तो जन्नत का दरवाज़ा खुल गया।

सैय्यदना रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने से पहले बीवियों के साथ बहुत ज़ुल्म की ज़िंदगी गुज़ारी जाती थी। आप तशरीफ़ लाए तो आयतें उतरीं ﴿وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ﴾ और तुम उनसे मारूफ़ (अच्छे) तरीक़े से ज़िंदगी गुज़ारो।

﴿لِبَاسٌ لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ﴾

वह तुम्हरा लिबास हैं और तुम उनका लिबास हो।

एक आदमी लिबास के बग़ैर नंगा होता है। इसी तरह अगर तुम शादी-शुदा ज़िंदगी नहीं गुज़ारोगे तो तुम्हारी ज़िंदगी भी हर वक़्त ख़तरे में होगी।

बूढ़ों के लिए रहमत

आपके तशरीफ़ लाने से बूढ़ों को इज़्ज़त मिली। उस वक़्त बूढ़ों की कोई इज़्ज़त नहीं करता था। जनाब रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जिसने किसी ऐसे आदमी की इज़्ज़त की जिसके बाल इस्लाम में सफ़ेद हो गए हों तो यह ऐसा ही है जैसे उसने अपने अल्लाह की इज़्ज़त की।

मज़दूरों के लिए रहमत

एक सहाबी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुसाफ़ा करते हैं। आपने देखा कि हाथ बहुत सख़्त है। वजह पूछी तो अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! मैं पहाड़ पर रहता हूँ। वहाँ पर पत्थर तोड़कर ज़िंदगी गुज़ारता हूँ। आपने उसकी तरफ़ देखा और फ़रमाया ﴿الْكَاسِبُ حَبِيْبُ اللّٰهِ﴾ हाथ से कमाने वाला अल्लाह का दोस्त होता है। मज़दूरों को भी इज़्ज़त मिली।

बच्चों के लिए रहमत

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सदक़े से छोटों को इज़्ज़त मिली। फ़रमाया जो हमारे छोटों पर रहम नहीं करता वह हम में से नहीं है। गोया छोटों ने भी हुज़ूर की रहमत से हिस्सा पाया।

फ़रिश्तों के लिए रहमत

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार जिब्रील अलैहिस्सलाम से पूछा, जिब्रील! क्या आपको भी मेरी रहमत से हिस्सा मिला? अर्ज़ किया जी हाँ आपके तशरीफ़ लाने से पहले मुझे अपने अंजाम के बारे में डर लगा रहता था। आप तशरीफ़ लाए तो आयतें उतरीं:

﴿اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍO ذِىْ قُوَّةٍ عِنْدَ ذِى الْعَرْشِ مَكِيْنٍO مُّطَاعٍ ثَمَّ اَمِيْنٍ.﴾

बस मुझे अपने अंजाम के बारे में तसल्ली नसीब हो गई।

दुश्मनों के लिए रहमत

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब मक्का फ़तेह किया तो आप क़ुरैशे मक्का से उनकी तकलीफ़ें देने का बदला चुका सकते थे लेकिन आपने इर्शाद फ़रमाया, मैं वही करूंगा जो मेरे भाई यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने भाईयों से कहा था ﴿لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ.﴾ बस आप दुश्मनों के लिए रहमत साबित हुए।

जो आसी को कमली में अपनी छिपा ले
जो दुश्मन को भी ज़ख़्म खा कर दुआ दे
उसे और क्या नाम देगा ज़माना
वह रहमत नहीं तो फिर और क्या

बस नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो सारे आलम के लिए रहमत हैं से मुहब्बत करना ईमान की अलामत है।

पत्थरों का आपकी नबुव्वत की गवाही देना

एक दफ़ा आपके पास अबू जहल आया। उसकी मुठ्ठी में कंकरियाँ थीं। कहने लगा अगर आप यह बता दें कि मेरे हाथ में क्या है तो मैं मुसलमान हो जाऊँगा। आपने उसके हाथ की तरफ़ इशारा किया तो कंकरियों ने कलिमा पढ़ना शुरू कर दिया। मगर अफ़सोस कि उसका दिल पत्थर से भी ज़्यादा सख़्त था। इसीलिए वादे से मुकर गया।

एक पत्थर ऐसा था कि जब आप उसके क़रीब से गुज़रते तो वह आप को देखकर सलाम किया करता था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं उस पत्थर को जानता हूँ जो मुझे नबुव्वत से पहले भी सलाम किया करता था और आज भी मुझे सलाम करता है।

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जानिसारों को आप से बहुत ज़्यादा मुहब्बत थी। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाया करती थीं ऐ ज़ुलेख़ा! तूने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखा तो उंगलियाँ काट डालीं अगर मेरे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखती तो दिल के टुकड़े कर देती।

हुस्ने रसूल के सामने चाँद की हैसियत

एक सहाबी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की

ज़ियारत के लिए हाज़िर हुए। चौदहवीं की रात थी। चाँद अपनी पूरी आब व ताब के साथ रोशन था। कुछ ऐसा रुख़ बनता था कि सामने ही रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ फ़रमा थे और ऊपर आसमान में चाँद नज़र आ रहा था। नज़र कभी आपके चेहराए अनवर पर पड़ती कभी चाँद पर पड़ती फिर आपके वज़्ज़ुहा वाले चेहरे पर पड़ती और फिर चाँद पर पड़ती। बहुत देर तक वह चाँद को भी देखते रहे और रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहराए अनवर को भी देखते रहे। आख़िरकार उन्होंने फ़ैसला किया कि ऐ चाँद! तेरे हुस्न व जमाल से मेरे प्यारे पैग़म्बर का हुस्न व जमाल ज़्यादा है।

चाँद से तश्बीह देना यह कहाँ इंसाफ़ है
चाँद पर हैं छाइयाँ मदनी का चेहरा साफ़ है

हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा का इश्के रसूल

उम्मुल मोमिनीन सैय्यदा उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा अपने घर में मौजूद थीं कि आपके वालिद जो उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे किसी काम के लिए मदीना तैय्यबा आए। सोचा कि चलो अपनी बेटी से मिलता हूँ। उनके घर आए। जब बैठने लगे तो चारपाई के ऊपर बिस्तर बिछा हुआ था। उम्मे हबीबा ने दौड़कर बिस्तर को जल्दी लपेट दिया। कहने लगीं आप मेरे वालिद हैं इसमें यक़ीनन कोई शक नहीं। आप जानते हैं कि यह बिस्तर अल्लाह के प्यारे पैग़म्बर का है इसलिए मैं किसी काफ़िर और मुशरिक का इस बिस्तर पर बैठना गवारा नहीं कर सकती।

हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का इश्क़े रसूल

सहाबा किराम नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आशिक़ थे और उनमें पहला नम्बर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का था। हाफ़िज़ इब्ने हजूर रह० नक़ल करते हैं कि एक महफ़िल में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, मुझे तीन चीज़ें बहुत महबूब हैं, खुशबू, नेक बीवी और मेरी आँखों की ठंडक नमाज़ में है। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़ौरन बोल उठे ऐ अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे भी तीन चीज़ें बहुत महबूब हैं, आपके चेहर-ए-अनवर को देखते रहना, दूसरा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अपना माल ख़र्च करना और तीसरा यह कि मेरी बेटी आपके निकाह में है। अब ज़रा तीनों बातों का अंदाज़ा लगाइए कि इनका मर्क़ज़ और जड़ कौन बनता है? वह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ाते अक़्दस।

जब हिजरत का हुक्म हुआ तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के घर तश्रीफ़ ले गए। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के दरवाज़े पर दस्तक दी तो फ़ौरन हाज़िर हुए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हैरान होकर पूछा, ऐ अबू बक्र! क्या आप जाग रहे थे? अर्ज़ किया जी हाँ। कुछ अरसे से मेरा दिल महसूस कर रहा था कि जल्दी ही आप सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम को हिजरत का हुक्म होगा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़रूर मुझे अपने साथ ले जाने

का शर्फ़ अता फ़रमाएंगे। बस मैंने उस दिन से रात को सोना छोड़ दिया कि कहीं ऐसा न हो कि आप तशरीफ़ लाएं और मुझे जागने में देर हो जाए।

जंगे तबूक के मौक़े पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हुक्म फ़रमाया कि जिहाद के लिए अपना माल पेश करो। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने घर का आधा माल ले आते हैं और सोचते रहे कि आज में हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से नेकी में बढ़ जाऊँगा। लेकिन जब सिद्दीक़े अकबर आए तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा ऐ अबूबक्र! आप अपने पीछे अपने बीवी-बच्चों के लिए क्या छोड़ आए? अर्ज़ किया अपनी बीवी बच्चों के लिए अल्लाह और उसके रसूल को छोड़ आया हूँ।

परवाने को चिराग़ है बुलबुल को फूल बस
सिद्दीक़ के लिए ख़ुदा का रसूल बस

जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विसाल मुबारक हुआ तो सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपना ग़म इन अल्फ़ाज़ में ज़ाहिर किया:

لما رأيت نبينا منجند لا ضاقت على بمرضهن الاول

فارتاع قلبى عند ذالك لهلاكه والعظم منى ما حيث كسير

ياليتنى من قبل لهلك صاحبى عيت فى حدث على صخور.

जब मैंने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वफ़ात की हालत में देखा तो मकानात अपनी वुसअत के बावजूद मुझ पर

तंग हो गए। उस वक़्त आपकी वफ़ात पर मेरा दिल लरज़ उठा और ज़िंदगी भर मेरी कमर टूटी रहेगी। काश! मैं अपने आक़ा के इन्तिक़ाल से पहले क़ब्र में दफ़न कर दिया गया होता और मुझ पर पत्थर होते।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का इश्क़े रसूल

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस दुनिया से पर्दा फ़रमाते हैं मगर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु यक़ीन नहीं करते कि मेरे महबूब जुदाई का दाग़ मेरे सीने में छोड़कर जा रहे हैं। चुनाँचे तलवार उठा ली और कहने लगे कि जिसकी ज़बान से निकलेगा कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़ौत हो गए, मैं उसका सर तन से जुदा कर दूँगा। इतनी मुहब्बत थी कि महबूब के बारे में ऐसी बात सुनना भी गवारा नहीं करते थे।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का इश्क़े रसूल

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का दिल इश्क़े रसूल में मस्त था। एक बार आपने हुज़ूर की ख़िदमत में अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! अपने दोस्तों समेत मेरे घर तश्रीफ़ लाएं। जब आप जाने लगे तो हज़रत उस्मान पीछे-पीछे चल रहे थे और आपके क़दम मुबारक गिनते जा रहे थे। आपने पूछा कि ऐ उस्मान! मेरे क़दम क्यों गिन रहे हो? अर्ज़ किया, मैं चाहता हूँ कि जितने क़दम आप मेरे घर तक चलें, मैं उतने ग़ुलाम आज़ाद कर दूँ।

सुलह हुदैबिया का वाक़िआ बड़ा मशहूर है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उस्मान को अपना सफ़ीर बनाकर भेजा। मुश्रिकीन ने हज़रत उस्माने ग़नी से कहा आप तो

मक्का मुकर्रमा आ चुके हैं अगर चाहें तो तवाफ़ कर लें मगर हम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दूसरे साथियों को इजाज़त नहीं देंगे। लेकिन आपके इश्क़ ने इसको गवारा न किया और फ़रमाया, ﴿ما كنت لا فعل حتى يطوف به رسول الله صلى الله عليه وسلم﴾ जब तक मेरे महबूब तवाफ़ न करें मैं हर्गिज़ तवाफ़ न करूंगा।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का इश्क़े रसूल

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हिजरत पर जाने लगे तो हज़रत अली को अपने बिस्तर पर सुला दिया। हज़रत अली बे ख़ौफ़ होकर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बिस्तर पर सो गए हालाँकि मालूम था कि दुश्मन बाहर इसी बिस्तर की ताक में खड़े हैं मगर इश्क़ ने इन ख़तरों की बिल्कुल कोई परवाह नहीं की।

एक बार नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को कोई ज़रूरत पेश आई। हज़रत अली को इसका पता चला तो आप किसी काम की तलाश में घर से निकले ताकि कुछ लाकर आपकी ख़िदमत में पेश कर सकें। लिहाज़ा एक यहूदी के बाग़ में पहुँचे और उसके कुँए से एक डोल पानी निकालने के बदले एक खजूर बतौर मज़दूरी तय की। हज़रत अली ने सत्रह डोल पानी निकाले और सत्रह खजूरें (अजवा) ले लीं। खजूरें लेकर ख़िदमत नबवी में पहुँचे। आपके पूछने पर पूरी बात बता दी कि ये खजूरें इस तरह मज़दूरी करके लाया हूँ। आपने फिर पूछा कि क्या तुझे इस काम के लिए अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत व इश्क़ ने अमादा किया या किसी और चीज़ ने? अर्ज़ किया जी हाँ अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत ने।

सुलह हुदैबिया के मौक़े पर हज़रत अली को आपने हुक्म दिया कि सुलहनामा लिखें। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुद सुलहनामा लिखवा रहे थे। जिस वक़्त फ़रमाते हैं कि लिखें :

﴿هذا ما قاضى عليه محمد رسول الله صلى الله عليه وسلم.﴾

यह वह मुआहिदा है जो मुहम्मदुर्रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने किया तो मुश्रिकीन बिगड़ गए और कहने लगे कि अगर हम आपको रसूल मान लेते तो झगड़ा किस बात का था इसलिए 'मुहम्मदुर्रसूलल्लाह' की बजाए 'मुहम्मद इब्ने अब्दुल्लाह' लिखो। मगर हज़रत अली आपका नाम मिटाने के लिए हर्गिज़ तैयार न हुए। वह कैसे इस नाम को मिटाते जिसकी बरकत से दुनिया में हिदायत का नूर फैला था।

हज़रत हिस्सान बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु का इश्क़े रसूल

हज़रत हिस्सान बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु को शायरे रसूल होने का ऐज़ाज़ हासिल है। वह आलमे इश्क़ व मस्ती में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखते तो आप की तारीफ़ में अश'आर लिखते थे। फ़रमाते हैं :

واحسن منك لم ترقط عيني   واجمل منك لم تلد النساء
خلقت مبرأ من كل عيب   فكانكا قد خلقت كما تشاء

ऐ रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप इतने हसीन व जमील हैं कि किसी आँख ने ऐसा देखा ही नहीं। ऐसा ख़ूबसूरत बेटा किसी माँ ने जना ही नहीं। आप तो ऐसे पैदा हुए हैं कि जैसे कि आपको आपकी मर्ज़ी के मुताबिक़ पैदा किया गया हो।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का इश्क़े रसूल

जंगे ख़न्दक़ के दौरान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़रूरत महसूस की कि किसी तरह दुश्मनों का प्रोग्राम मालूम किया जाए। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु क़रीब ही मौजूद थे मगर उनके पास कोई हथियार नहीं था और न ही सर्दी से बचने के लिए कोई चादर थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जाएं और दुश्मनों के ख़ेमे से उनकी ख़बर लाएं। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने आक़ा के हुक्म पर सर्दी की कोई परवाह न की और तैयार हो गए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ देकर रवाना फ़रमाया। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ से मेरा ख़ौफ़ और सर्दी बिल्कुल दूर हो गई। जी हाँ यह इश्क़ था जिसने दिल में रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ताबेदारी का ऐसा जज़्बा पैदा कर दिया।

एक सहाबिया का इश्क़े रसूल

जंगे ओहद के दौरान मदीना मुनव्वरा में ख़बर फैल गई कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शहीद हो गए। इस ख़बर के फैलते ही मदीने में कोहराम मच गया। औरतें रोती हुई घरों से बाहर निकल आयीं। एक अन्सारी औरत ने कहा जब तक इसकी ख़ुद तसदीक़ न कर लूँ मैं इसे तसलीम नहीं करूंगी। लिहाज़ा वह एक सवारी पर बैठी और अपनी सवारी को उस पहाड़ की तरफ़ भगाया। काफ़ी क़रीब आयीं तो एक सहाबी आते हुए मिले। उनसे पूछती हैं, ﴿ما بال محمد صلى الله عليه وسلم﴾ मुहम्मद सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? उसने कहा मुझे हुज़ूर का हाल मालूम नहीं मगर हाँ तेरे बेटे की लाश फ़लाँ जगह पड़ी है। उस औरत को उसके जवान उम्र बेटे की शहादत की ख़बर मिली मगर वह टस से मस नहीं हुई। उस माँ के दिल में इश्क़े रसूल ने इतना असर डाला हुआ था कि बेटे की शहादत की ख़बर सुनी मगर कोई परवाह न की। सवारी आगे बढ़ाती हैं। एक और सहाबी मिले पूछती हैं, ﴿ما بال محمد صلى الله عليه وسلم﴾ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? उन्होंने जवाब दिया मुझे मालूम नहीं लेकिन हाँ तेरे शौहर की लाश फ़लाँ जगह पड़ी है। यह औरत फिर भी टस से मस नहीं हुई और आगे बढ़ी, किसी और से पूछा, ﴿ما بال محمد صلى الله عليه وسلم﴾ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? जवाब मिला मुझे मालूम नहीं लेकिन हाँ तेरे वालिद की लाश फ़लाँ जगह पड़ी है। इसी तरह भाई की लाश के बारे में बताया गया कि फ़लाँ जगह पड़ी है मगर यह औरत टस से मस नहीं हुई। आगे एक और सहाबी मिले। पूछती हैं, ﴿ما بال محمد صلى الله عليه وسلم﴾ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? उन्होंने कहा फ़लाँ जगह मौजूद हैं। चुनाँचे सवारी को उधर बढ़ाती है। जब वहाँ पहुँची तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चादर का एक कोना पकड़कर कहा,

﴿كل مصيبة بعد محمد صلى الله عليه وسلم سهل.﴾

मेरे ऊपर तमाम मुसीबतें हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दीदार के बाद आसान हो गयीं।

महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कूचे में रात

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात के वक़्त जब अपने हुजूरे शरीफ़ में आराम फ़रमा रहे होते थे तो बाज़ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम अपने घरों से बाहर निकलते और हुज़ूर के हुजूरे के पास घंटों खड़े रहते और सोचते कि यह वह जगह है जहाँ हमारे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सोए हुए हैं।

अजब चीज़ है इश्क़ शाहे मदीना
यही तो है इश्क़े हक़ीक़ी का ज़ीना

है मामूर इस इश्क़ से जिसका सीना
उसी का है मरना उसी का है जीना

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक दफ़ा इर्शाद फ़रमाया कि जिहाद के लिए कौन-कौन तैयार है? हज़रत साअद बिन वक़ास रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी हमने अपने होश व हवास से कलिमा पढ़ा। अल्लाह की क़सम अगर आप हुक्म दें तो हम पहाड़ों से कूदकर अपनी जान दे दें, हम आपके कहने पर समुंद्र में छलांग लगा दें।

ज़िंदगी की आख़िरी हसरत

गज़वा-ए-ओहद के मैदान में एक सहाबी ज़ख़्मी हुए। ख़ून बहुत निकल जाने की वजह से मरने के क़रीब हो चुके थे। एक दूसरे सहाबी उनके क़रीब आए और पूछा आपको किसी चीज़ की तमन्ना है? अर्ज़ किया हाँ, उन्होंने कौन सी? जवाब मिला कि आख़िरी वक़्त में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का

दीदार करना चाहता हूँ। उन्होंने ज़ख़्मी मुजाहिद को अपने कंधे पर उठाया और उनको लेकर तेज़ी से उस तरफ़ भागे जहाँ रसूले अकरम तशरीफ़ फ़रमा थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने जाकर उतारा और कहा कि आपके महबूब आपके सामने हैं। जब नाम सुना तो मुजाहिद के दिल में बिजली की लहर दौड़ गई, फ़ौरन ताक़त बहाल हो गई। अपने चेहरे को हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने किया दीदार करते ही उनकी हालत ग़ैर हो गई और उन्होंने अपनी जान अल्लाह के सुपुर्द कर दी।

निकल जाए दम तेरे क़दमों के नीचे
यही दिल की हसरत यही आरज़ू है
तेरी मैराज कि तू लौह व क़लम तक पहुँचा
मेरी मैराज कि मैं तेरे क़दम तक पहुँचा

सबसे बड़ी ख़ुशख़बरी

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ करते हैं कि ऐ अल्लाह के नबी! मैं एक बात से बहुत परेशान हूँ। जिस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत हमारे दिलों में लहरे मारती हैं। हम हाज़िर होकर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत से अपनी आँखों को ठंडा कर लेते हैं। लेकिन जन्नत में तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बहुत आला दर्जों पर होंगे। वहाँ पर अगर आपकी ज़ियारत न हुई तो हमें जन्नत का क्या मज़ा आएगा। इसलिए उसी वक़्त हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम आए

और आकर ख़बर दी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस आदमी को बुलाया और खुशख़बरी सुनाई ﴿المرء مع من احب﴾ आदमी उसके साथ होगा जिससे उसको मुहब्बत होगी। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम फ़रमाते हैं कि पूरी ज़िन्दगी में ईमान के बाद जितनी खुशी इस हदीस से हुई किसी और हदीस से नहीं हुई क्योंकि यक़ीन हो गया कि आख़िरत में हमें हुज़ूर का साथ नसीब हो जाएगा। सहाबा किराम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस तरह मुहब्बत करते थे।

इश्क़े रसूल में खजूर के तने का रोना

खजूर के एक तने को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत थी। आपने जब मस्जिदे नबवी बनाई तो उसमें मिम्बर नहीं था। मस्जिद के अंदर खजूर का एक तना था। उसी के साथ टेक लगाकर आप खुत्बा दिया करते थे। अरसे के बाद तमीम दारी एक सहाबी ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! अगर इजाज़त दें तो एक मिम्बर बना लिया जाए। आपने इजाज़त दे दी। लिहाज़ा एक मिम्बर बना लिया गया। अगली दफ़ा जब खुत्बा देने का वक़्त आया तो मिंबर पर आप खड़े हो गए और खुत्बा देना शुरू कर दिया। थोड़ी देर के बाद खजूर के तने में से इस तरह रोने की आवाज़ आने लगी जैसे कोई बच्चा बिलख बिलख कर रोता है। सब लोगों ने हैरान होकर उस तने को देखा। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नीचे उतरे और खजूर के तने के क़रीब गए। उसके ऊपर प्यार से हाथ रखा और उसको दिलासा दिया। हदीस की किताबों में लिखा है कि हुज़ूर ने उसको गले से लगाया

तब वह तना इस तरह सिसकियाँ लेते हुए चुप हुआ जैसे कोई बच्चा अपनी माँ के सीने से लगकर चुप होता है। खजूर के तने को इतनी मुहब्बत थी। ऐ काश! हमें अपने प्यारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ खजूर के तने जैसी मुहब्बत नसीब हो जाती।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद का इश्क़े रसूल

कुछ सहाबा किराम सुबह होते ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत करने आ जाते थे। उन्होंने क़स्में खा ली थीं, हम सुबह उठते ही आपकी ज़ियारत करेंगे। आपकी ज़ियारत से पहले किसी का चेहरा नहीं देखेंगे। चुनाँचे हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के बाद नाबीना होने की दुआ करते थे।

हज़रत शिबली रह० और हुज़ूर से मुहब्बत

हज़रत शिबली रह० एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। उनकी वफ़ात का वक़्त जब क़रीब आया तो साथियों से फ़रमाया मुझे वुज़ू करवा दें। साथियों ने बड़ी मुश्किल से आपको वुज़ू कराया क्योंकि आप बीमारी की वजह से काफ़ी कमज़ोर हो चुके थे। वुज़ू के बाद ख़्याल आया कि मुझसे तो ख़िलाल रह गया वह है भी सुन्नत। बहुत परेशान हुए। फ़रमाया अब मुझे दोबारा वुज़ू कराएं तो साथियों ने कहा हज़रत! आप तो माज़ूर हैं, बीमार हैं, हरकत से तकलीफ़ होती है इसलिए रहने दीजिए। लेकिन हज़रत ने फ़रमाया मुझ पर मौत की तकलीफ़ तारी है, क़रीब ही मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिलूँगा तो मैं यह नहीं चाहता कि ऐसे वुज़ू से

चला जाऊँ जिसमें हुज़ूर की कोई सुन्नत छूटी हुई हो। यह होता है सच्चा इश्क़।

उलमाए देवबंद और इश्क़े रसूल

आप कहेंगे मियाँ साहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हु की बातें बतलाते हो, किसी बाद के ज़माने में की बातें बता देते। आइए मैं आपको अपने रूहानी बड़े बुज़ुर्गों की ज़िंदगियों के हालात सुनाता हूँ जो दारूल उलूम देवबंद के बानी और फ़रज़ंद थे ताकि आपको मालूम हो जाए कि इन हज़रात को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ कैसी मुहब्बत थी।

हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी रह० का इश्क़े रसूल

हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी रह० को कौन नहीं जानता। वह इल्म के आफ़ताब और माहताब थे। उनके पीछे अंग्रेज़ लगा हुआ है, चाहता है कि जान से मार डालूँ। आपको भी पता चल गया। रिश्तेदारों ने कहा हज़रत! आप कहीं छिप जाएं ताकि आप बच सकें। आपने बात मान ली, लिहाज़ा छिप गए। अभी तीन दिन ही गुज़रे थे कि फिर बाहर फिरते नज़र आए। फिर किसी ने कहा जान का मामला है, आपको चाहिए कि ज़रा ओझल रहें। फ़रमाया कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस पर नज़र डाली। पूरी ज़िंदगी में हुज़ूर तीन दिन ग़ारे में छिपे नज़र आते हैं। मैंने इस सुन्नत पर अमल कर लिया। अब बाहर आ गया हूँ चाहे मेरी जान ही क्यों न चली जाए।

हुज़ूर अकरम की हदीस है कि तुम बेवाओं का निकाह कर दिया करो। क़ुरआन पाक में भी है। हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी रह० की बहन नव्वे साल की उम्र में बेवा हो गयीं। आपको पता चला, उनके पास तशरीफ़ ले गए। कुछ दिन गुज़र गए तो दोबारा अपनी बहन के पास गए और कहने लगे बहन! मैं तुम्हारे पास एक बात करने आया हूँ। बहन ने कहा बताओ भाई क्या बात है? हज़रत फ़रमाने लगे कि मेरे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है कि तुम बेवाओं का निकाह कर दिया करो। आप मेरी इस बात को मान लीजिए और निकाह कर लीजिए। मैं जानता हूँ कि इस उम्र में इज़्दिवाजी ज़िन्दगी की ज़रूरत नहीं है मगर क़ासिम नानौतवी को एक सुन्नत की तौफ़ीक़ हो जाएगी। बहन रोने लग गयीं। आपने अपनी पगड़ी को उतारा और बहन के क़दमों पर रख दिया और कहा कि तुम्हारी वजह से मुझे हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर अमल की तौफ़ीक़ हो जाएगी। लिहाज़ा नव्वे साल की उम्र में अपनी बहन का निकाह कर दिया। कैसा इश्क़ था।

हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी रह० जब हज पर गए तो आपने रास्ते में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में कुछ अश्आर लिखे वह भी सुनाता चलूँ :

उम्मीदें लाखों हैं लेकिन बड़ी है उम्मीद यह
कि हो सुगाने मदीना में मेरा शुमार
जियूँ तो साथ सुगाने हरम के तेरे फिरूं
मरूं तो खाएं मुझको मदीने के मोर ओ मार

कि ऐ अल्लाह के नबी! निजात की उम्मीदें तो बहुत हैं मगर

सबसे बड़ी उम्मीद यह है कि मदीने के कुत्तों के साथ मेरा शुमार हो जाए। अगर जियूँ तो मदीने के कुत्तों के साथ फिरता रहूँ और अगर मर जाऊँ तो मदीने के कीड़े मकौड़े मुझे खा जाएं। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऐसी शदीद मुहब्बत थी दिल में।

एक आदमी आपकी ख़िदमत में आया। उसने सब्ज़ रंग का जूता पेश कर दिया। हज़रत ने वह जूता ले तो लिया मगर उसको घर में रख दिया। किसी ने बाद में पूछा हज़रत! फ़लाँ ने बहुत अच्छा जूता दिया था। इलाक़े में अक्सर लोग पहनते हैं। ख़ूबसूरत भी बना हुआ था। फ़रमाया मैंने जूता ले तो लिया था कि उसकी दिलजोई हो जाए मगर पहना इसलिए नहीं कि दिल में सोचा कि मेरे आक़ा के रौज़ा-ए-अक़्दस का रंग भी हरा है। अब मैं अपने पाँव इस रंग का जूता कैसे पहनूँ। आप हरम तशरीफ़ ले गए। आप बहुत नाज़ुक बदन थे। एक आदमी ने देखा कि आप नंगे पाँव मदीने की गलियों में चले जा रहे हैं और पाँव के अंदर से ख़ून रिसता चला जा रहा है। किसी ने पूछा हज़रत जूता पहन लेते। फ़रमाया, हाँ पहन तो लेता लेकिन जब मैंने सोचा कि इस दयार में मेरे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चला करते थे तो मेरे दिल ने गवारा न किया कि क़ासिम उस पर जूतों के साथ चला फिरे। कैसे दीवाने और परवाने थे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के।

उलमाए देवबंद का बेमिसाल अक़ीदा

उलमाए देवबंद ने अपना अक़ीदा लिखा है। ज़रा दिल के

कानों से सुनें ताकि पता चल सके कि उन पर बोहतान लगाने वाले कितनी ग़लत फ़हमी का शिकार हैं। उलमाए देवबंद का अक़ीदा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र मुबारक से जो मिट्टी लग रही है वह अल्लाह के अर्श से भी अफ़ज़ल है।

हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० का इश्क़े रसूल

हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० फ़क़ीह-ए-वक़्त थे। एक आदमी हज से वापस आया और वहाँ से कुछ कपड़ा लाया। उसने वह कपड़ा हज़रत रह० की ख़िदमत में पेश किया। हज़रत ने जब उसे लिया तो उसे चूमा और अपने सर के ऊपर रख लिया जैसे बड़ी इज़्ज़त वाली कोई चीज़ हो। तलबा बैठे हुए थे। उन्होंने अर्ज़ किया हज़रत! यह तो फ़लाँ मुल्क का कपड़ा है, मदीने के लोग ख़रीदकर आगे बेचते हैं। फ़रमाया तसलीम करता हूँ कि यह मदीने का बना हुआ नहीं है मगर मैं तो इसलिए इसकी इज़्ज़त करता हूँ कि उसे मदीने की हवा लगी हुई है।

एक आदमी हज से वापस आया और उसने तीन खजूरें हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रहमतुल्लाहि अलैहि की ख़िदमत में भेजीं। आपको जब मिलीं तो आपने हथेली पर वे खजूरें ऐसे रखीं जैस दुनिया की दौलत आपकी हथेली में सिमट आई हो। आपने एक शार्गिद को बुलाया और फ़रमाया कि हमारे जो क़रीबी मिलने जुलने वाले हैं ज़रा उनकी फ़हरिस्त तैयार कर देना। उसने फ़हरिस्त बनाई तो पचास से ज़्यादा नाम हुए। फ़रमाया इन तीनों खजूरों के इन नामों के बराबर हिस्से कर दो इसलिए उतने हिस्से

किए गए। छोटे-छोटे हिस्से बने। फ़रमाया कि एक-एक हिस्सा मेरे एक-एक दोस्त को दे दो। ऐसा मालूम होता था कि जैसे कि हीरे और मोती आपके हाथ लग गए हैं जो अपने दोस्तों को पेश कर रहे हैं। एक शार्गिद ने कहा हज़रत! इतने छोटे हिस्से से क्या बनेगा? उसकी यह बात सुनकर हज़रत का रंग सुर्ख़ हो गया और फ़रमाया, मदीने की खजूर हो और तू उसे हिस्से को छोटा कहे। लिहाज़ा कितने ही दिनों तक उससे बोलना छोड़ दिया।

हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह० का इश्क़े रसूल

हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह० दारुल उलूम देवबंद में पढ़ाते थे और तंख़्वाह इतनी थी कि मुश्किल से गुज़ारा होता था। जो कुछ मिलता था घर की ज़रूरियात पर लग जाता था। इसी वजह से हज भी न कर सके मगर दिल में तमन्ना बहुत थी। हत्ता कि किताबों में लिखा है कि जब हज के दिन शुरू होते थे तो आप को घर के अंदर चैन नहीं आता था। कभी इधर चले जाते और कभी उधर चले जाते। यहाँ तक कि दस्तरख़्वान पर खाना खाते हुए भी जब ख़्याल आ जाता तो कहते मालूम नहीं आशिक़ लोग क्या कर रहे होंगे। हज पर जाने वालों को आशिक़ कहते थे। यह ख़्याल आते ही खाना छोड़ देते और आंहे भरने लगते और कहते काश कोई दिन आए कि हुसैन अहमद को भी उस जगह की ज़ियारत नसीब हो जाए।

एक दफ़ा रात को सोए हुए थे और आँख खुल गई। उठ बैठे, परेशानी से नींद नहीं आई। इसी हालत में आसमान की तरफ़

निगाह उठाकर अर्ज़ किया ऐ अल्लाह! मालूम नहीं तेरे आशिक़ क्या कर रहे होंगे। काश हुसैन अहमद को भी उनमें शुमार फ़रमा लेते। ज़िलहिज्जा के दस दिन आपको यहाँ आराम नहीं आता था। दुआएं मांगते थे, कराहते रहते थे यहाँ तक कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने आपकी इस मुहब्बत को क़ुबूल फ़रमा लिया और आप के लिए हरम के दरवाज़े खोले और अठ्ठारह साल तक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैठकर हदीसे पाक का दर्स देते रहे। आशिक़ ही ऐसा कर सकता है कोई और तो नहीं कर सकता। आप हदीसे मुबारका का दर्स देते वक़्त इस अंदाज़ से बैठते थे कि मवाजा शरीफ़ बिल्कुल सामने होता था। हम तो कहते हैं ﴿قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم﴾ "क़ाला क़ाला रसूलल्लाह सल्लल्लाहु वसल्लम" मगर आप जब हदीस पढ़ाते तो फ़रमाते ﴿قال هذا رسول الله صلى الله عليه وسلم﴾ "क़ाला हाज़ा रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।" जब आप तालीम से फ़ारिग़ हो जाते तो अक्सर लोगों ने देखा कि रात के अंधेरे में इशा के बाद या तहज्जुद से पहले अपनी दाढ़ी मुबारक से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़ा-ए-अक़्दस के क़रीब की जगह को साफ़ कर रहे होते थे। सुब्हानअल्लाह! अल्लाह हमें भी ऐसा इश्क़ और ऐसा अदब नसीब फ़रमाए। किसी ने क्या ख़ूब बात कही है :

नाज़ा है हुसन जिस पर वह हुस्ने रसूल है
यह कहकशां तो आपके क़दमों की धूल है
ऐ कारवाने शौक़ यहाँ सर के बल चलो
तैय्यबा के रास्ते का काँटा भी फूल है

आशिक़ की पहचान

अरे आशिक़ की पहचान क्या है? आशिक़ वह होता है जो मुहब्बत का दावा करे और एक-एक अमल हुज़ूर के हुक्म के मुताबिक़ करे। अगर हुज़ूर की अदाएं पसंद नहीं हैं तो मालूम हुआ कि ज़बानी मुहब्बत है, हक़ीक़ी मुहब्बत नहीं। किसी आरिफ़ ने कहा है–

वही समझा जाएगा शैदाए जमाले मुस्तुफ़ा
जिसका हाल हाले मुस्तुफ़ा हो जिसका क़ाल क़ाले मुस्तुफ़ा

हुज़ूर का आशिक़ कौन समझा जाएगा? जिसकी बातें हुज़ूर के हुक्म के मुनाबिक़ हो और जिसका अमल हुज़ूर के अमल के मुताबिक़ हो, सुन्नत के मुताबिक़ हो, अल्लाह तआला करोड़ों रहमतें नाज़िल फ़रमाए उलमाए देवबंद की क़ब्रों पर कि जिन्होंने हुज़ूर की एक-एक सुन्नत पर डेरे डाले और हिफ़ाज़त फ़रमाई।

ख़्वाजा अब्दुल मालिक सिद्दीक़ी रह० का इश्क़े रसूल

अरे हुज़ूर की मुहब्बत की क्या बातें पूछते हो? ख़्वाजा अब्दुल मालिक सिद्दीक़ी रह० ने क्या ख़ूब कहा है। पंजाबी अश्आर हैं। ज़रा दिल के कानों से सुनिए–

मिले क़तरा इश्क़े मुहम्मद दा बइ तख़्ते शाही दी लोड़ नहीं
दिल मस्त रह विच मस्ती दे बई अक़्ल दानाई दी लोड़ नहीं

मैडे क़्लब स्याह गुनाहगार दे विच तैडी याद दा डेवा बलदा रहे
वल ऐं जग ओं जग क़ब्र हश्र किसे बई रोशंनाई दी लोड़ नहीं

कर अपने हबीब दा इश्क़ अता जग सारे तूं बे नियाज़ चाकर
सर झुकता रहे दर तेरे उत्ते दर दर दी गदाई लोड़ नहीं

ईं अब्द दा अर्ज़ कुबूल थेवे दरबारे इलाही दे अंदर
लों लों विच हुए इश्क़ नबी किसी बई आशनाई दी लोड़ नहीं

इश्के नबी के अलावा उन्हें और जान-पहचान की ज़रूरत ही नहीं होती थी।

इश्के रसूल का एक अजीब वाकिआ

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत का एक और वाक़िआ सुना देता हूँ। मेरे आक़ा के एक इर्शाद का मफ़हूम है कि मैं उस वक़्त तक जन्नत में नहीं जाऊँगा जब तक कि मेरी पूरी उम्मत का हिसाब-किताब नहीं हो जाएगा।

एक साहब अपने हाथ में पैसों की थैली लिए हुए जा रहे हैं। उसमें कुछ पैसे थे। एक चोर क़रीब से भागता हुआ उनके हाथ से थैली छीनकर भाग गया। थोडी दूर आगे गया तो उसकी आँखों की रोशनी ख़त्म हो गई। उसने वहीं रोना चिल्लाना शुरू कर दिया। कहने लगा ऐ लोगों मैंने फ़लाँ जगह पर एक आदमी की थैली छीनी है। मुझे उस जगह पर ले जाओ ताकि मैं उससे माफ़ी मांग लूँ और मेरी आँखों की रोशनी लौट आए। जब लोग उसे वहाँ लाए तो थैली के मालिक वहाँ से जा चुके थे। क़रीब ही एक नाई था। उससे पूछा कि फ़लाँ आदमी से मैंने थैली छीनी थी, तुम उसे जानते हो? उसने कहा पहचानता तो हूँ। नमाज़ों के लिए वह आते-जाते हैं, हो सकता है कि अगली नमाज़ के लिए यहाँ से

गुज़रें, अगर आएं तो मैं तुम्हें बता दूँगा। लिहाज़ा उसे बैठा लिया गया। थोड़ी देर बाद वही आदमी गुज़रने लगा। नाई ने कहा यह वही साहब गुज़र रहे हैं। चोर उसके क़दमों में गिरकर माफ़ी मांगने लगा। उसने कहा कि भाई मैंने तो उसी वक़्त तुझे माफ़ कर दिया था। वह बड़ा हैरान हुआ। फिर पूछने लगा, उसी वक़्त मुझे माफ़ कर दिया था? उन्होंने कहा हाँ, इसलिए कि मेरे दिल में ख़्याल आया कि तुम मेरी थैली ले गए हो और तुमने यह ज़ुल्म किया है। आख़िर क़यामत के दिन मुक़द्दमा पेश होगा। अगर पेश होगा तो फिर हिसाब-किताब होगा। इस तरह मेरे महबूब को जन्नत में जाने में इतनी देर हो जाएगी। इसलिए उसी वक़्त मैंने तुझे माफ़ कर दिया था ताकि न मुक़द्दमा पेश हो और न हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जन्नत में जाने में देर लगे।

आशिक़ फ़क़ीर का वाक़िआ

जामा मस्जिद देहली के दरवाज़े पर एक माज़ूर आदमी बैठा भीख मांग रहा था। एक अंग्रेज़ वहाँ मस्जिद को देखने के लिए आया। हमने भी देखा कि जामा मस्जिद को अंग्रेज़ देखने के लिए आते जाते हैं। वह अंग्रेज़ बड़ा ओहदा रखता था। जब वह इस फ़क़ीर के पास से गुज़रा तो उसने सैल्यूट मारा ताकि कुछ दे जाए। उस अंग्रेज़ ने उसे कुछ पैसे दे दिए। अंग्रेज़ बाहर खड़े हो जाते हैं जूतों की जगह पर, अन्दर दाख़िल नहीं होते। मस्जिद के नक़्श व निगार और अज़्मत ऐसी होती है कि अल्लाह के घर के सामने ही उन्हें सुकून मिल जाता है। वह अंग्रेज़ मस्जिद को देखकर चला गया। घर जाकर मालूम हुआ कि जिस बटवे से पैसे

निकाल कर दिए थे वह बटवा जेब में नहीं है। पैसे भी काफ़ी थे और पता भी नहीं कि कहाँ गिरे होंगे। ख़ैर बात आई गई हो गई।

एक हफ़्ता बाद फिर उसे छुट्टी हुई। उसकी बीवी ने कहा तुम मस्जिद देख आए थे। मुझे भी दिखाओ। लिहाज़ा छुट्टी वाले दिन वह अपनी बावी को लेकर फिर मस्जिद देखने के लिए आया। जब वह अंग्रेज़ इस माज़ूर फ़क़ीर के पास से गुज़रने लगा तो वह फ़क़ीर फ़ौरन खड़ा हो गया और उससे कहा कि आप पिछली दफ़ा आए थे, मुझे पैसे दिए थे। उसके बाद आप बटवा जेब में डालने लगे। थोड़ी दूर आगे जाकर बटवा गिर गया और मैंने उठाया। यह बटवा मेरे पास आपकी अमानत है। यह मैं आपके हवाले करता हूँ। अंग्रेज़ ने बटवे को खोलकर देखा तो पैसे बिल्कुल पूरे थे। हैरान होकर वह सोचने लगा कि बटवा तो दे देता मगर इसके अंदर की कुछ रक़म निकाल सकता था। मुझे उम्मीद तो यही थी। यह क्या हुआ कि सारे के सारे पैसे ज्यों के त्यों वापस कर दिए। उसने उस फ़क़ीर से पूछा कि आख़िर क्या बात है कि तुमने कुछ अपने पास नहीं रखे? वह माज़ूर फ़क़ीर कहने लगा कि बात यह है कि क़यामत के दिन हर आदमी अपने नबी के पीछे होगा। जमआतों की सूरत में अंबिया अलैहिमुस्सलाम के पीछे चल रहे होंगे। जब मैंने बटवा उठया तो मेरा जी चाहता था कि मैं इसमें से कुछ ले लूँ मगर फिर मुझे ख़्याल आया कि हर काम अल्लाह के सामने पेश होना है। अगर मैं यह पैसे रख लूँगा तो क़यामत के दिन मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे खड़ा हूँगा और आप हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पीछे खड़े होंगे। उस वक़्त ऐसा न हो कि आपके नबी मेरे नबी को गिला दें कि आपके

उम्मती ने मेरे उम्मती के पैसे ले लिए थे। यह सोचकर मैंने इसमें से कोई ख़्यानत नहीं की और आपके पैसे मैंने आपको लौटा दिए। काश! हमें देहली के इस माज़ूर फ़क़ीर जैसी मुहब्बत भी हुज़ूर से होती।

क़ुव्वते इश्क़ से हर पस्त को बाला कर दे
दहर में इस्मे मुहम्मद से उजाला कर दे

﴿وَ آخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ٥﴾

सोज़-ए-इश्क़ और कैफ़-ए-इल्म

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَما بعد.

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِo

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِo

وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِيْ آدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَاَشْهَدَهُمْ عَلٰى اَنْفُسِهِمْ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوْا بَلٰى شَهِدْنَا. سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَo

दिल सोज़ से ख़ाली है निगाह पाक नहीं है
फिर इसमें अजब क्या कि तू बेबाक नहीं है

क़ल्ब में सोज़ नहीं रूह में एहसास नहीं
कुछ भी पैग़ामे मुहम्मद का तुम्हें पास नहीं

आदम अलैहिस्सलाम की औलाद के दो गिरोह

हदीस पाक में आया है कि जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा फ़रमाया तो उनकी पीठ पर हाथ मारा। इस हाथ को हम अपने हाथ पर अंदाज़ा नहीं कर सकते। वह दस्ते क़ुदरत था। जब अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपना दायाँ हाथ उनकी पीठ पर मारा तो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की

औलाद निकल पड़ी जिनके जिस्म बिल्कुल इंसान जैसे थे। आँखें थीं, ज़बान थी, बनावट पूरी थी मगर जिस्म बिल्कुल छोटे थे। उनके चेहरे नूरानी थे। फिर अल्लाह तआला ने अपना बाँया दस्ते क़ुदरत मारा तो और औलाद निकल पड़ी जो जसामत और शक्ल व सूरत में तो वैसे ही थी मगर उनके चेहरे स्याह थे। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने जब उनकी तरफ़ देखा तो पूछा ऐ परवरदिगार! यह कौन हैं? फ़रमाया गया कि ये तेरी औलाद है। जब औलाद का लफ़्ज़ सुना तो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम उनकी तरफ़ मुतवज्जेह हुए। पहली निगाह अजनबियत की थी दूसरी निगाह अपनाइयत की थी। जब नज़र डाली तो देखा कि कुछ नूरानी चेहरों वाले और कुछ स्याह चेहरों वाले हैं। क्योंकि बाप की यह तमन्ना होती है कि सब औलाद कमाल वाली हो। इसलिए जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने कुछ चेहरों को नूरानी देखा और कुछ स्याह देखा ﴿لو لا سولت یا ربی﴾ ऐ मेरे परवरदिगार तूने इन सबको एक जैसा क्यों न बना दिया? तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इर्शाद फ़रमाया ﴿احببت ان اعرف﴾ मैंने इस बात को पसंद किया कि मैं पहचाना जाऊँ। गोया ﴿فَرِيقٌ فِى الْجَنَّةِ وَفَرِيقٌ فِى السَّعِيرِ﴾ सफ़ेद चेहरों वाले जन्नत में और स्याह चेहरों वाले जहन्नम में जाएंगे।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की औलाद से इम्तिहान लेना था। जो इसमें पास होने थे वह सईद और नूरानी चेहरों वाले थे और जो इम्तिहान में फ़ेल होने थे वह शक़ी और स्याह चेहरों वाले थे। यह दो तरह की औलादे आदम थी।

आदम अलैहिस्सलाम की औलाद की अल्लाह तआला से पहली बातचीत

इसके बाद अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने औलादे आदम को मुख़ातिब करके फ़रमाया। हदीस पाक में आया है कि ﴿كلمه عيانا﴾ यानी अल्लाह तआला ने औलादे आदम पर बग़ैर पर्दों के तजल्ली फ़रमाई और बातचीत की इज़्ज़त बख़्शी। इस बातचीत में पूछा ﴿اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ﴾ क्या मैं तुम्हारा परवरदिगार नहीं हूँ? सब ख़ामोश हो गए क्योंकि कभी सवाल नहीं पूछा गया था इसलिए हैरान थे कि हम से यह कैसा कलाम हुआ? उस वक़्त मुअल्लिमे इंसानियत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसका जवाब दिया ﴿بلى يا رب﴾ ऐ मेरे परवरदिगार! क्यों नहीं, आप ही तो हैं। जब आपने यह जवाब दिया तो औलादे आदम ने यह जवाब सुनकर उसे दोहराया। इसीलिए नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम मुअल्लिमे इंसानियत कहलाते हैं। उस वक़्त आपको नबुव्वत मिल चुकी थी। हदीस पाक में आया है कि मैं तो उस वक़्त भी नबी था जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम अभी पानी और मिट्टी में थे।

इंसानियत के लिए दो क़ीमती तोहफ़े

इस हम कलामी के मौक़े पर इंसानों को दो तोहफ़े अता किए गए। एक तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपना जमाल दिखाकर 'सोज़े इश्क़' अता किया, दूसरा सवाल करके 'कैफ़े इल्म' अता किया। ये बड़ी नेमतें हैं। इसका यह मतलब नहीं कि कोई और नेमते नहीं दीं। नेमतें तो इतनी है कि इंसान शुमार नहीं कर सकता। कोई समुंद्र के पानी की बूँदों को गिन सकता है? नहीं

गिन सकता। कोई इंसान आसमान के सारे सितारों को गिन सकता है? नहीं गिन सकता। कोई इंसान पूरी दुनिया के रेत के ज़र्रों को गिन सकता है? नहीं गिन सकता। कोई इंसान सारी दुनिया के पेड़ों के पत्तों को गिन सकता है? नहीं गिन सकता। सुनो और दिल के कानों से सुनो! फ़कीर फिर भी यह कहता है कि बारिश के क़तरों को गिनना मुमकिन है, समुंद्र के क़तरों को गिनना मुमकिन है, सारी दुनिया के रेत के ज़र्रों को गिनना मुमकिन है, पेड़ों के पत्तों को गिनना मुमकिन, आसमान के सितारों को गिनना मुमकिन है मगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की नेमतों को गिनना मुमकिन नहीं है। फ़रमाया :

﴿وَاِنْ تَعُدُّ نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا﴾

अगर तुम अल्लाह की नेमतों को शुमार करना चाहो तो तुम उनको गिन नहीं सकते।

नेमतें बेशुमार हैं लेकिन इनमें दो बड़ी नुमायां नेमतें हैं एक सोज़े इश्क़ वाली और दूसरी कैफ़े इल्म वाली।

दिल व दिमाग़ की ग़िज़ा

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने सोज़े इश्क़ के लिए धड़कता हुआ दिल दिया और कैफ़े इल्म के लिए फड़कता हुआ दिमाग़ दिया। इंसान के जिस्म में यह दो बर्तन बना दिए। दिल की ग़िज़ा इश्क़ है और दिमाग़ की ग़िज़ा इल्म है। बर्तन बना दिए जाते हैं मगर ग़िज़ा न दी जाती तो यह ना-इंसाफ़ी होती। इसीलिए फ़रमाया :

﴿لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ﴾

अल्लाह तआला बंदों पर ज़ालिम नहीं है।

जैसे अल्लाह तआला ने पेट लगा दिया तो उसकी ज़रूरतों के लिए ज़मीन पर भेजने से पहले उसमें फल, मेवे और गिज़ाएं रख दीं और उसे बिछौना बना दिया। लिहाज़ा पेट भरने के सारे इंतिज़ाम पूरे कर दिए। इसलिए कि ज़रूरत थी जिसे आख़िर पूरा होना था। दिल व दिमाग़ भी भूखे थे, उनको भी गिज़ा की ज़रूरत थी। अल्लाह तआला ने अपना जमाल दिखाकर सोज़े इश्क़ अता फ़रमा दिया, दिल की गिज़ा बनी और सवाल पूछकर कैफ़े इल्म अता फ़रमाया जो दिमाग़ की गिज़ा बनी। इश्क़ का मुक़ाम दिल है। गोया इश्क़ की आतिश दिल में होती है और इसका धुँवा ज़बान पर तज़्किरे की सूरत में बाहर निकलता है। इसलिए दिल की गिज़ा ज़िक्रे इलाही है और दिमाग़ की गिज़ा इल्मे इलाही है।

सोज़े इश्क़ और कैफ़े इल्म की हक़ीक़त

इंसान की ज़िंदगी तभी कामयाब गुज़र सकती है। जब सोज़े इश्क़ और कैफ़े इल्म वाले दोनों पहलू ठीक होंगे। दुनिया के मुफ़क्किरीन ने कई निज़ाम बनाए मगर वह अपने बनाने वालों की तरह फ़ानी निकले। वह अपनी मौत इसलिए मर गए कि उनमें कैफ़े इल्म तो था मगर सोज़े इश्क़ नहीं था। डंके की चोट पर कहा जा सकता है कि कोई भी निज़ामे ज़िंदगी उस वक़्त तक कामयाब नहीं हो सकता। जब तक कि इन दोनों रंगों से रंगा हुआ न हो।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने जो ज़िंदगी का निज़ाम हमें इनायत फ़रमाया उसमें सोज़े इश्क़ भी है और कैफ़े इल्म भी। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम तशरीफ़ लाए तो आपने अपने भेजे जाने

के दो मक़सद इर्शाद फ़रमाए। एक मक़सद तो यह बताया कि ﴿انما بعثت معلما﴾ मैं मुअल्लिम बनकर आया हूँ। यह न कहा कि मैं आलिम बनाकर भेजा गया हूँ। इसलिए कि आलिम से मुअल्लिम का रुत्बा बुलंद होता है। गोया हदीस में कैफ़े इल्म की वज़ाहत है कि मैं इंसानियत को इल्म के ज़ेवर से सजाने के लिए भेजा गया हूँ। दूसरी हदीस मुबारका में फ़रमाया :

﴿انما بعث لا تمم مكارم الاخلاق.﴾

मैं मकारिम अख़्लाक़ की तालीम के लिए भेजा गया हूँ।

यह मकारिम अख़्लाक़ क्या हैं? इन्हीं का नाम सोज़े इश्क़ है

देखना यह है कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम अपने इन मक़सद में किस हद तक कामयाब हुए? इस सवाल के जवाब के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अलूविदाई ख़ुत्बा का वह नक़्शा सामने आ जाता है कि जब आपने सब के सामने कह दिया, लोगो! क्या जिस मक़सद के लिए मुझे भेजा गया था मैंने उस मक़सद को पूरा कर दिया है? लोग इस बात की शहादत देते हैं और तसदीक़ करते हैं कि यक़ीनन आपने अपने भेजे जाने का मक़सद पूरा कर दिया है। आपने फ़रमाया ऐ अल्लाह! आप गवाह रहना कि जिस मक़सद के लिए आपने मुझे भेजा था वह मैंने पूरा कर दिया है। किस मक़सद की तकमील की गवाही देते हैं? सोज़े इश्क़ की और कैफ़े इल्म वाले मक़सद की शहादत देते हैं।

दुनिया के मुफ़क्किरीन ने बहुत कोशिशें कीं। बहुत मेहनतें कीं लेकिन इन दोनों पहलुओं को एक वक़्त में जमा न कर सके।

दावत फ़िक्र व अमल रोज़ नई मिलती है
फिर भी दुनिया तेरे पैग़ाम से आगे न बढ़ी

बहरहाल आज चौदह सौ साल गुज़रने के बावजूद मदनी आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निज़ामे ज़िंदगी ही कामयाब है जिसमें कैफ़े इल्म भी है और सोज़े इश्क़ भी है।

दिल की अहमियत अक़्ल पर

अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम जब दुनिया में तशरीफ़ लाए तो उन्होंने अपनी मेहनत का मैदान दिल को बनाया। इसमें ख़ास नुक्ता है कि इल्म का तअल्लुक़ ज़ाहिर के साथ होता है और इश्क़ का तअल्लुक़ बातिन के साथ होता है। क्योंकि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत आलमे ग़ैब का मामला था। इसलिए दिल को अक़्ल पर मुक़द्दम किया गया। क़ुरआन ने कह दिया ﴿لَهُمْ قُلُوْبٌ يَعْقِلُوْنَ بِهَا﴾ ऐ काश! उनके दिल होते जो उन्हें अक़्ल सिखाते। क्योंकि ख़ुद अक़्ल भी दिल के ताबे है। यही वजह है कि अंबिया किराम तशरीफ़ लाए तो उन्होंने भी मेहनत का मैदान इंसान के दिलों को बनाया। यह कहीं नहीं फ़रमाया कि हमने अक़्ल को बदलकर रख दिया क्योंकि इस मैदान में अक़्ल के पाँव लंग हैं। मुशाहिदा तो दिल का काम है। ईमान का तअल्लुक़ दिल के साथ है। हम अल्लाह पर बग़ैर देखे ईमान लाते हैं और उसका तअल्लुक़ इश्क़ से है, उसका ग़ैब से तअल्लुक़ है। इल्म क्योंकि ज़ाहिर से तअल्लुक़ रखने वाली चीज़ है। इसलिए दीने इस्लाम में दिल को अक़्ल पर मुक़द्दम किया गया है।

इश्क़ और इल्म का आपसी तअल्लुक़

जहाँ सोज़े इश्क़ ज़रूरी है वहाँ कैफ़े इल्म भी ज़रूरी है। ये दोनों एक दूसरे के साथ चोली दामन का ताल्लुक़ रखते हैं। अगर सिर्फ़ इश्क़ हो तो बिदआत करने लगता और अगर सिर्फ़ इल्म हो तो इंसान घमंड में मुब्तिला हो जाता है। इल्म इश्क़ को क़ाबू में रखता है जबकि इश्क़ इल्म में तवाज़ो पैदा करता है। दोनों ज़रूरी हैं। एक चीज़ होगी तो बंदा मार खा जाएगा।

सिर्फ़ इश्क़, बिदअत में पड़ने का ज़रिया है

सिर्फ़ इश्क़ होगा तो इंसान को बिदअत में मुब्तिला कर देगा। इसीलिए आपने देखा होगा कि जो ज़्यादा इश्क़ का दावा करते हैं वे कहते हैं कि 'अल्लिमो बस करें ओ यारा' इसलिए इल्म से उनको कोई वास्ता नहीं होता। बेचारे कह बैठते हैं, 'तिहाड़ूडी पंच वेले साड्डी हर वेले' अल्लाह माफ़ फ़रमाए। यह अँधा इश्क़ है जो क़ब्रों को सज्दे करवाता है। पीरों की इतनी बड़ी-बड़ी तस्वीरें घरों में लगवाता है और सुबह को कहलवाता है, 'बाबा जी तिहाड्डा ई दित्ता खांदे आं' ऐसा क्यों? इसलिए कि इश्क़ का कुछ हिस्सा उनको मिला होता है मगर इल्म से ख़ाली होते हैं। इसी वजह से ऐसी बातें करते हैं। जबकि कामिल सूफ़ी वह होता है जिसमें इश्क़ भी हो और इल्म भी हो।

सिर्फ़ इल्म तकब्बुर पैदा करता है

अगर सिर्फ़ इल्म हो तो इंसान को घमंडी बना देता है यहाँ तक कि अपने नफ़्स का पुजारी बन जाता है। इसीलिए अल्लाह

रब्बुलइज़्ज़त ने क़ुरआन में फ़रमाया :

﴿أَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلٰهَهُ هَوَاهُ﴾

क्या देखा आपने उसे जिसने अपनी ख़्वाहिशात को अपना माबूद बना लिया है।

और आगे फ़रमाया :

﴿وَأَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ﴾

और इल्म के बावजूद अल्लाह ने उसे गुमराह कर दिया।

यहाँ इल्म का तज़्किरा इसलिए किया कि सिर्फ़ इल्म हो तो इंसान को ख़्वाहिशात का पुजारी बना देता है। फिर वह बंदा अपनी मर्ज़ी के इज्तिहाद करता फिरता है। आप देखिए शैतान बड़ा इल्म वाला था। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने जब हुक्म फ़रमाया कि आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा करो तो फ़रिश्तों ने सज्दा किया मगर शैतान ने सज्दा न किया। ﴿أَبٰى وَاسْتَكْبَرَ﴾ नाफ़रमानी की और तकब्बुर किया ﴿وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِيْنَ﴾ और काफ़िरों में से हुआ। तो अल्लाह तआला ने शैतान से पूछा कि सज्दा क्यों न किया? क्योंकि इल्म था लिहाज़ा उसने दलीलें देना शुरू कर दीं। कहने लगा ﴿أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ﴾ मैं इससे बेहतर हूँ। क्यों? इसलिए कि ﴿خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ﴾ मुझे आग से पैदा किया और आग बुलंदी की तरफ़ जाने वाली है ﴿وَخَلَقْتَهُ مِنْ طِيْنٍ﴾ और इसे आपने मिट्टी से पैदा किया जबकि मिट्टी में तवाज़ो है। लिहाज़ा मैं इससे बेहतर हूँ। एक तरफ़ उसने यह दलील पेश की और दूसरी तरफ़ अल्लाह तआला ने उसे रांदा दरगाह बना दिया।

मेरे दोस्तो! यह बात अपने सीनों पर लिख लीजिए कि शैतान

आलिम तो था, आमिल तो था, आबिद तो था मगर आशिक़ न था जिसकी वजह से वह धोखा खा गया। काश! कि आशिक़ भी होता तो फिर उसे सज्दा करने में कोई चीज़ भी पीछे नहीं हटा सकती थी।

अहले इल्म हज़रात के लए मुफ़ीद मश्वरा

इसीलिए अहले इल्म हज़रात से कहते हैं कि आइए ज़रा अपने आपको मिटाकर तो देखिए। किसी कहने वाले ने क्या ख़ूब कहा—

قال را بگزر مرد حال شو
پیش مرد کامل پامال شو

कि तू अपने क़ाल को किसी मर्दे हाल के क़दमों पर डाल दे और किसी के सामने अपने आपको पामाल कर दे फिर देखना कि खुशबख़्ती किस तरह क़दम चूमती है। मगर यह बहुत मुश्किल काम है क्योंकि नफ़्स बहाने ढूँढता है, नफ़्स हुज्जतें बनाता है। वह अपने ऊपर पाबन्दियाँ बरदाश्त नहीं कर सकता हालाँकि इस नफ़्स को मिटाने में ही इंसान की आफ़ियत है। इसी तवाज़ो में तो इंसान की बुलंदी है। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

﴿من تواضع لله ورفعهُ اللّٰہُ﴾

जो अपने आपको अल्लाह के लिए मुतावज़ो (छोटा) बना लेता है अल्लाह उसको बुलंदी अता फ़रमाता है।

जो अहले वस्फ़ होते हैं हमेशा झुक के रहते हैं
सुराही सर निगूं होकर भरा करती है पैमाने

सुराही अगर सर न झुकाए तो क्या पैमाने को भर सकेगी?

नहीं पैमाने को भरने के लिए उसे सर झुकाना पड़ेगा। इसीलिए कहने वाले ने कहा है—

तवाज़ो का तरीक़ा सीख लो लोगो सुराही से
के जारी फ़ैज़ भी है और झुकी जाती है गर्दन भी

जो गर्दन झुकाता है अल्लाह तआला उसके फ़ैज़ को बढ़ा दिया करता है। आप भी ज़रा अल्लाह तआला के सामने झुककर देखिए, किसी आरिफ़ के सामने अपने को पामाल करके देखिए फिर देखना अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त कैसे क़दरदानी फ़रमाते हैं। लिहाज़ा आगे फ़रमाया—

सद किताब व सद वर्क़ दर नार कुन
जान ओ दिल रा जानिब दिलदार कुन

सौ किताबों और सौ वर्क़ों को तो आग में डाल दे और जान व दिल को अपने महबूब के हवाले कर दे। फिर तुम्हें महबूबे हक़ीक़ी के वस्ल का जाम नसीब होगा।

मिटा दे अपनी हस्ती को अगर कुछ मर्तबा चाहे
कि दाना ख़ाक में मिलकर गुल ओ गुलज़ार बनता है

ख़ाकिउन्नसल (मिट्टी की नसल) बनकर रहने की फ़ज़ीलत

इंसान मिट्टी से बना है लिहाज़ा उसे ख़ाकिउन्नसल बनकर रहना चाहिए। देखें मिट्टी को अल्लाह तआला ने यह इज़्ज़त दी है कि उससे फल-फूल निकलते हैं, मेवे, ग़िज़ाएं निकलती हैं। कभी आग से भी कोई मेवा निकला? नहीं कभी नहीं, वह तो उल्टा मेवे को जला देती है मगर याद रखें कि मिट्टी की क़दर भी उस वक़्त

तक है जब तक यह पाँव के नीचे है, जब वह पाँव के नीचे से निकलकर और कपड़ों पर पड़ी तो हर आदमी उसे झटक देगा। कोई भी कपड़ों पर मिट्टी बरदाश्त नहीं करता। आँखों में पड़ी तो हर आदमी मसलकर निकाल देगा। अगर किसी चीज़ पर पड़ी तो कहेंगे कि इसको यहाँ से झाड़ दो। पाँव के नीचे से ऊपर गई तो इसकी बेक़दरी हुई। जिस तरह मिट्टी उड़कर अपनी हैसियत से बढ़ने की कोशिश करती है तो हर बंदा उससे नफ़रत करने लग जाता है। इसी तरह अगर इंसान अपनी अवक़ात से बढ़ने की कोशिश करेगा तो उसे भी समाज में इज़्ज़त की निगाह से नहीं देखा जाएगा। हमें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने ख़ाकिउन्नसल बनाया है और तवाज़ो हमारी घुट्टी में रख दी। इसलिए हम छोटे बनकर रहें। किसी ने क्या ख़ूब कहा है–

ज़मीं की तरह जिसने आजिज़ी ओ इन्किसारी की
खुदा की रहमतों ने उसको ढांपा आसमां होकर

आतिशुन्नसल (आग की नसल) बनकर रहने की बुराई

इसके ख़िलाफ़ आग को देखिए कहीं भी ज़रा आग लगे तो हर आदमी यह कहेगा भागो, भागो, इस कमबख़्त को बुझाओ। गोया आग को ऊपर उठना कोई भी पसंद नहीं करता। मगर कुछ लोग ऐसे होते हैं जो आतिशुन्नसल बनकर रहते हैं।

एक साहब किसी आदमी के पास गए कहने लगे हज़रत थोड़ी सी आग चाहिए। उसने कहा मेरे पास नहीं है। फिर कहने लगे हज़रत थोड़ी सी आग लेने आया हूँ। वह गुस्से में कहने लगे अरे

तू सुनता क्यों नहीं। कहने लगा हज़रत! मैं धुँवा तो सुलगता देख रहा हूँ। वह कहने लगे मेरे कहने पर तुझे यक़ीन नहीं है? कहने लगा हज़रत! थोड़ी आग भी जलती देख रहा हूँ। कहने लगे तू बेवक़ूफ़ है? तुझे मेरी बात समझ में नहीं आती। कहने हज़रत! अब तो अंगारे भी बनना शुरू हो गए हैं। वह कहने लगे निकल यहाँ से, दफ़ा हो जा। कहने लगे हज़रत! यही तो आग थी जिसकी मैं आपको ख़बर देने के लिए आया था तो यह ग़ुस्सा एक आग होती है। जब थोड़ा होता है तो आग सुलग रही होती है। जब ज़्यादा होता है तो आग लग जाती है और जब पूरा ग़ुस्से में आ गया तो ग़ुस्से की आग में भड़क उठा। जिस बंदे को ग़ुस्सा ज़्यादा आए वह आग की नसल होता है जबकि यह सिलसिला तो शैतान तक जाकर मिलता है। अल्लाह से तौबा कर लो ऐसा न हो कि तुम्हारा उसके साथ हश्र कर दिया जाए। अल्लाह बचाए।

सहाबा किराम में सोज़े इश्क़ और कैफ़े इल्म

इंसान को सोज़े इश्क भी हासिल करना चाहिए और कैफ़े इल्म भी। अगर सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की ज़िन्दगियों को देखा जाए तो उनमें ये दोनों पहलू बहुत नुमायां नज़र आते हैं। सहाबा किराम की ज़िन्दगियाँ ﴿مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ﴾ का नमूना थीं। उनमें एक तरफ़ इश्क़े इलाही का जज़्बा था तो दूसरी तरफ़ इल्मे इलाही का जज़्बा था। उनके सीने एक तरफ़ अल्लाह की माअरिफ़त से भरे हुए थे दूसरी तरफ़ इश्क़े इलाही से तो गोया उनके सीनों में दो दरियाओं का संगम था। ये दोनों नेमतें उनको नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वास्ते से नसीब हुई थीं और

अल्लाह तआला को भी इंसान से वही ज़िंदगी मतलूब है जिसमें सोज़े इश्क़ भी हो और कैफ़े इल्म भी।

सोज़े इश्क़ में सरमस्त हस्ती सैय्यदना हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु

सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का दिल इश्क़े रसूल का गहवारा था। सहाबा किराम में अल्लाह तआला ने उनको बहुत नुमाया मुक़ाम अता फ़रमाया। देखिए जब सूरज निकलता है तो उसकी किरनें उस इमारत पर पड़ती हैं जो सबसे ऊँची होती है। इसी तरह जब नबुव्वत का सूरज उगा तो उसकी किरने सबसे पहले उस हस्ती पर पड़ीं जो इस उम्मत में सबसे बुलंद व बाला थी। यह हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की हस्ती थी। आप ही हमारे सिलसिलाए नक़्शबंदिया के असल इमाम हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह निस्बत हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को मिली। हदीस पाक में आता है :

﴿من صب الله فی صدری الا وقد صببته فی صدری ابی بکر.﴾

अल्लाह तआला ने मेरे सीने में जो कुछ डाला वह मैंने अबू बक्र के सीने में डाल दिया।

मेरे दोस्तो! वह इल्मे बातिन था, वह इल्मे मअरिफ़त था, वह एक नूर था जो नबुव्वत के सीने से हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के सीने में मुन्तक़िल हुआ था। इसलिए नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि अगर मेरी उम्मत के ईमान को अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के ईमान से तोला जाए तो अबू बक्र रज़ियल्लाहु

अन्हु का ईमान बढ़ जाए। क्यों? इसलिए कि बेहद सोज़े इश्क़ था। आपके सोज़े इश्क़ की कुछ मिसालें अर्ज़ की जाती हैं ताकि पता चले कि इश्क़े रसूल में वह वाक़ई मदहोश थे।

मिसाल न० 1

एक दफ़ा नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम तशरीफ़ फ़रमा थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, तुम्हारी दुनिया से सिर्फ़ तीन चीज़ें मुझे महबूब हैं, ख़ुश्बू दूसरी नेक बीवी और तीसरी मेरी आँखों की ठंडक नमाज़ में है। यह अल्फ़ाज़ हुज़ूर की ज़बान से निकले तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु तड़प उठे। उनको भी अपने दिल का दर्द बयान करने का मौक़ा मिल गया, उन्हें भी अपना फ़साना ज़बान पर लाने का मौक़ा मिल गया। लिहाज़ा तड़पकर बोले ऐ अल्लाह के महबूब मुझे भी तीन चीज़ें पसंद हैं। एक आप के चेहराए अनवर को देखते रहना, दूसरा आप पर माल ख़र्च करना, तीसरा यह कि मेरी बेटी आपके निकाह में है। देखें इन तीनों चीज़ों का मरकज़ और बुनियाद ज़ाते मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है। यह है सच्चा इश्क़।

मिसाल न० 2

एक दफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अपने घर में बैठ रो रहे थे और दुआएं मांग रहे थे। दुआ के दौरान यह बात दिल में आई कि या अल्लाह मुझे आपने माल अता किया है, अब मैं चाहता हूँ कि अपना माल नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में पेश करूँ। मगर देने वाला हाथ ऊपर होता है और लेने वाला हाथ नीचे होता है। जब मैं माल दूँगा तो अपने आक़ा

की बे-अदबी तो बरदाश्त नहीं कर सकता। इसलिए आप नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिल में ख़ुद ही डाल दीजिए कि वह मेरे माल को अपने माल की तरह इस्तेमाल करने लग जाएं। चुनाँचे हदीस पाक में आया है कि उसके बाद आप अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के माल को अपने माल की तरह इस्तेमाल फ़रमाया करते थे।

मिसाल न० 3

हिजरत के वक़्त नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम अपने घर से बाहर तशरीफ़ लाए और अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के दरवाज़े पर पहुँचे। हलकी से आवाज़ में सलाम किया। अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़ौरन बाहर तशरीफ़ लाए जैसे पहले ही से जग रहे हों। उस वक़्त रात का काफ़ी हिस्सा गुज़र चुका था। आपने फ़रमाया कि लोग सो रहे हैं, क्या आप जाग रहे थे? जवाब में अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अर्ज़ करते हैं कि ऐ अल्लाह के रसूल मुझे कुछ दिनों से अंदाज़ा हो रहा था कि आपको हिजरत का हुक्म मिलेगा और यह भी दिल मानता था कि जब आप हिजरत के लिए रवाना होंगे तो इस ग़ुलाम को अपनी ग़ुलामी के लिए अपने साथ लेकर जाएंगे। फिर दिल में ख़्याल आया कि अगर यह हुक्म रात में मिला और आप तशरीफ़ लाए तो आपको जगाने में तकलीफ़ उठानी पड़ेगी। लिहाज़ा जिस दिन से ख़्याल आया उस दिन से अबू बक्र ने रात का सोना छोड़ दिया कि कहीं ऐसा न हो कि मेरे महबूब को अबू बक्र के दरवाज़े पर आकर खड़ा होना पड़े।

मिसाल न० 4

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु एक ख़्वाब देखते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर बारिश हो रही है। जहाँ आपके क़दम मुबारक हैं वहाँ पर अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का सर है और बारिश का पानी आप पर से होता हुआ अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु पर पड़ रहा है। हज़रत उमर ने अपने आपको उनको क़रीब खड़े देखा कि अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से पानी की छींटे उड़कर मेरे ऊपर पड़ रही हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए कि ऐ अल्लाह के नबी मैंने ऐसा ख़्वाब देखा है। आपने फ़रमाया इल्मे नबुव्वत जो वारिद हो रहे हैं, मेरी कामिल इत्तिबा की वजह से अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु सबसे ज़्यादा हिस्सा ले रहे हैं और अबू बक्र सिद्दीक़ से तअल्लुक़ की वजह से तुम्हें भी हिस्सा मिल रहा है।

नक़्शबंदी सिलसिले में उलूमे नबुव्वत

यह वे उलूमे नबुव्वत हैं जो नक्शबंदी सिलसिले में आज भी जारी व सारी हैं। हमारे सिलसिले के अंदर करामतें ज़्यादा नज़र नहीं आएंगी, हमारे सिलसिले में आपको भूखा रहने के मुजाहिदे ज़्यादा नज़र नहीं आएंगे, चिल्लाकशी ज़्यादा नज़र नहीं आएंगी। दूसरे सिलसिलों के हज़रात सब कामिलीन हैं। हमें उनसे मुहब्बत और अक़ीदत है। वह फ़रमाते हैं कि हम रियाज़त के ज़रिए सुलूक तय कराते हैं जबकि हमारे मशाइख़ इत्तिबाए सुन्नत के ज़रिए सुलूक तय कराते हैं। देखा यह अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु

का फ़ैज़ान है जो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इस सिलसिले में जारी फ़रमा दिया।

बेतलबी की बुराई

अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को यह मुक़ाम सोज़े इश्क़ और कैफ़े इल्म की वजह से नसीब हुआ। आज हमें ये दोनों नेमतें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से मांगनी चाहिएं। ये उसे मिलती हैं जिसके अंदर तलब होती है। मेरे दोस्तो बे तलब इंसान को नबवी दौर में भी कुछ न मिला अब तो नबुव्वत को चौदह सौ साल गुज़र गए। एक आदमी को बे-तलब बनकर भला आज क्या मिल सकता है। तलब पक्की सच्ची होनी चाहिए। आज लोग बैअत तो हो जाते हैं लेकिन शैख़ से राब्ता नसीब नहीं होता।

राब्ताए शैख़ क्या है?

पूछते हैं कि राब्ताए शैख़ क्या है? कोई नेमत होती है जो अल्लाह तआला पीर और मुरीद के दिल में पैदा फ़रमा देता है। ऐसी मुहब्बत होती है कि इंसान उसकी गर्मी को बे-इख़्तियार महसूस करता है। इसके अपने बस में नहीं होता। वह बे-इख़्तियार उनके दिलों को एक दूसरे से नत्थी कर दिया करती है। अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दिली तअल्लुक़ सबसे ज़्यादा था। उनके दिल और आँख का मरकज़ हुज़ूर की ज़ाते मुबारक बन गई थी। वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इश्क़ में डूबे रहते थे। यही वजह है कि फ़ैज़ाने नबुव्वत में से सबसे ज़्यादा उन्हीं को हिस्सा मिला। यही राब्ताए शैख़ होता है जो मुरीद अपने शैख़ से इस तरह

तअल्लुक़ रखता है तो शैख़ पर आने वाले फ़ैज़ों से वह भी नवाज़ा जाता है। ऐसी तलब हो तो फिर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त अता भी फ़रमा देते हैं।

हज़रत अब्दुल क़ुद्दूस रह० के पोते की सच्ची तौबा

हज़रत अब्दुल क़ुद्दूस रह० के पोते जैसी तलब होनी चाहिए। ख़्वाजा अब्दुल क़ुद्दूस गंगोही रह० के कई ख़लीफ़ा थे। उनका एक पोता जवान हुआ तो दादी अम्मा हयात थीं। उन्होंने कहा बेटा! एक नेमत तेरे दादे के पास थी अगर तू चाहता है कि वह नेमत तुझे मिले तो उनके सोहबयाफ़्ता ख़लीफ़ाओं की ख़िदमत में जा। सच्ची तलब लेकर जा, तुझे वह नेमत मिलेगी। वह नौजवान अमादा हो गया। चुनाँचे दादी अम्मा ने एक ख़लीफ़ा की ख़िदमत में रवाना कर दिया। जब ख़लीफ़ा को पता चला कि मेरे शैख़ के पोते आ रहे हैं तो वह एक जमाअत लेकर शहर के बाहर इस्तिक़बाल के लिए आए, बड़ी धूमधाम के साथ इस्तिक़बाल किया। तीन दिन मेहमान नवाज़ी फ़रमाई। उसके बाद पूछा कि जी! कैसे तशरीफ़ लाए हैं? अर्ज़ किया कि आपके पास एक नेमत है उसको हासिल करने के लिए हाज़िर हुआ हूँ। फ़रमाया फिर तो तक़ाज़ा कुछ और हैं, पीर बनकर तो वह नेमत नहीं मिलेगी वह तो मुरीद बनकर मिलेगी। लिहाज़ा वह गद्दियाँ भी गयीं, वह बिस्तर भी गए। फ़रमाया कि चटाई पर रहना पड़ेगा और यह काम करने पड़ेंगे। अर्ज़ किया बहुत अच्छा। हज़रत ने उनके ज़िम्मे कई काम लगा दिए, उनको मुजाहिदों और रियाज़त की लाइन पर

लगा दिया। वह नौजवान लगा रहा। एक ऐसा वक़्त आया कि जब शैख़ ने देखा कि कुछ बेहतर हो रहा है तो सोचा कि चलो आज़माते हैं कि तलब कितनी पकी है। कुछ लोग शिकार के लिए जाने लगे तो शैख़ ने ख़ुद भी प्रोग्राम बना लिया कि हम भी शिकार के लिए ज़ाएंगे। उस दौर में शिकार कुत्तों के ज़रिए पकड़ा जाता था। सधाए हुए कुत्तों का शिकार शरिअत ने हलाल किया है।

हज़रत ने पले हुए बड़े-बड़े कुत्ते साथ लिए और नौजवान से फ़रमाया कि आपको कुत्तों को संभालना है। उसने कहा बहुत अच्छा। यह मुजाहिदे की वजह से सूखकर ढांचा बन चुका था। जब आज़माइश के लिए कुत्ते पकड़ने की ड्युटी लगा दी गई। बाज़ दफ़ा शैख़ आज़माते हैं, तकलीफ़ देकर भी आज़माते हैं। शैख़ को पता चल जाता है कि हक़ीक़त क्या है? लेकिन मुरीद को पता नहीं चलता। चुनाँचे नौजवान ने रस्सी को अपने कमर से बाँध लिया और अपने हाथों से भी मज़बूती से पकड़ लिया। जब शिकार सामने आया और कुत्तों ने शिकार को देखा तो वह भागे चूँकि पले हुए कुत्ते थे और यह अकेले और कमज़ोर थे। इसलिए रस्सी को अपनी हिम्मत से पकड़ा तो सही मगर साथ खिंचते चले गए, कितने तेज़ भागे और खिंचते खिंचते गिर गए। अब साथ घिसटते चले जा रहे हैं जिस्म ज़ख़्मों से चूर चूर हो रहा है मगर रस्सी को न छोड़ा क्योंकि शैख़ ने वह रस्सी पकड़ाई थी। अब जान तो जा सकती है मगर हाथों से नहीं छूट सकती। यह है सच्ची तलब, जब उनके जिस्म पर ज़ख़्म लगे तो शैख़ भी साथ थे। शैख़ को उस वक़्त कश्फ़ में हज़रत ख़्वाजा अब्दुल क़ुद्दूस रह० की ज़ियारत हुई और ख़्वाजा साहब ने फ़रमाया, ख़लीफ़ा

साहब हमने तो आपसे इतनी मेहनत नहीं करवाई थी। चुनाँचे उसी वक़्त शैख़ ने नौजवान को सीने से लगाया और वह नेमत उनके सीने में डाल दी।

इश्क़ के तैशे से दरिया का रुख़ बदल दिया

हज़रत मुर्शिदे आलम रह० साईं फ़तेह अली का एक वाक़िआ सुनाया करते थे कि हज़रत ख़्वाजा सिराजुद्दीन रह० की ख़ानक़ाह मे एक आदमी था जिसका नाम 'पित्थू' था। अनपढ़ जाहिल था। क़ुरआन पाक पढ़ना भी नहीं आता था मगर हज़रत के साथ जब बैअत हुआ तो गोया बिक गया। अपने आपको शैख़ के सुपुर्द कर दिया। यह सबसे मुश्किल काम है। हज़रत की ख़िदमत में रहने लग गया। हज़रत को वहाँ कई एकड़ ज़मीन मिली हुई थी। पहाड़ी पानी पूरी ज़मीन पर फैल जाता था। जिससे वह ज़मीन खेती के क़ाबिल नहीं बन सकती थी। पित्थू कहने लगा हज़रत अगर पहाड़ को फ़लाँ जगह से काट दिया जाए तो यह पानी रुख़ बदल लेगा और आपकी ज़मीन काम की बन जाएगी। हज़रत ने फ़रमाया कि है तो मुश्किल काम। कहने लगा हज़रत बस इजाज़त दे दीजिए। हज़रत रह० ने जब पित्थू की तलब सच्ची देखी तो इजाज़त दे दी। लिहाज़ा पित्थू ने कुदाल हाथ में लिया और वहाँ जाकर चट्टानों को तोड़ना शुरू कर दिया। लोग आकर पूछते पित्थू क्या कर रहे हो? वह कहता पहाड़ काटकर दरिया का रुख़ मोड़ना चाहता हूँ। लोग हँसकर चल देते और कहते, लोग ऐसे ही कहते हैं कि बेवक़ूफ़ मर गए हैं, देखो वह सामने मौजूद है। पित्थू किसी बात पर कान न धरता। बस अपने काम में लगा रहता।

मेरे दोस्तो पहाड़ों का तोड़ना आसान नहीं होता, दरियाओं का रुख़ मोड़ना आसान नहीं होता मगर जब इश्क़ का जज़्बा शामिल होता है तो फिर पहाड़ भी मोम बन जाया करते हैं। फिर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त रास्ते निकाल दिया करते हैं।

तर्जुमा : तैशे (कुदाल) की हर ज़र्ब ऐसी होती है जैसा कि वह दोस्त के विसाल का जाम पी रहा हो।

वह तैशे मार रहा था और मुहब्बत की लज़्ज़तें उठा रहा था। एक वक़्त आया कि पहाड़ का हिस्सा कट गया, दरिया का रुख़ बदला और हज़रत की ज़मीन खेती के लायक़ हो गई। हज़रत मुर्शिदे आलम रह० इस आजिज़ को उस जगह ले गए और इशारा करके फ़रमाया कि यह वह जगह है जिस जगह को पित्थू ने इश्क़ के तैशे से काट कर रख दिया था। फ़क़ीर ने वहाँ इश्क़ को बाज़ी जीतते देखा, इश्क़ को वहाँ कामयाब होते देखा। फ़क़ीर ने कहा पित्थू मैं तेरे इश्क़ को सलाम करता हूँ, मैं तेरी अज़्मतों को सलाम करता हूँ, मैं तेरे दिल की उस कैफ़ियत को सलाम करता हूँ जिसमें मस्त होकर तूने तारीख़ में अनमिट छाप छोड़ी।

पित्थू की सच्ची तलब का फल

इस वाक़िए के कुछ दिन बाद हज़रत ने मकानात बनवाने थे। क्योंकि ख़ानक़ाह पर मेहमानों की आना-जाना बहुत ज़्यादा था और रिहाईश का इंतिज़ाम कम था। इसलिए मिस्तरी काम पर लगा दिए गए। मिस्तरी तो दोपहर के वक़्त आराम करते मगर पित्थू सोचता कि मिस्तरी उठेंगे और मैं उस वक़्त गारा बनाऊँ तो इससे वक़्त बर्बाद होगा। मिस्तरी तो बैठे रहेंगे इंतिज़ार में और

काम भी मेरे हज़रत का है। जब मिस्तरी सो जाते तो उस वक़्त पित्थू गारा बनाया करता था और किसी को पता नहीं होता था। जी हाँ मुहब्बत तो इज़्हार नहीं चाहती। मुहब्बत तो पर्दा चाहती है।

वह जिनका इश्क़ सादिक़ हो वह कब फ़रियाद करते हैं
लबों पर मोहरे ख़ामोशी, दिलों में याद करते हैं

चुनाँचे पित्थू इस तरह रोज़ाना गारा बनाता रहा। हज़रत ख़्वाजा साहब एक दिन दोपहर के वक़्त उठे तो देखा धूप की वजह से लोग सोए हुए हैं और अकेला आशिक़ गारा बना रहा है। पसीने में तर मगर इश्क़ व मुहब्बत के साथ वह अपनी कस्सी चला रहा है। हज़रत ने जब देखा तो आपको तलबे सादिक़ नज़र आई। लिहाज़ा एक आदमी को भेजा कि पित्थू को बुलाकर लाओ। उस आदमी ने जब जाकर कहा तो पित्थू डर गया कि शायद मुझसे कोई ख़ता हो गई। कहने लगा अच्छा मैं अभी ज़रा बदन धो लूँ और कपड़े पहन लूँ फिर हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर होता हूँ। हज़रत को पता चला तो फ़रमाया नहीं उसे कहो इसी हालत में मेरे पास आए। लिहाज़ा पित्थू उसी हालत में आपके पास आया। आपने उसी वक़्त सीने से लगाया और निस्बत को इल्क़ा फ़रमा दिया।

अब पित्थू रोने बैठ गया। कहने लगा हज़रत मैं तो बिल्कुल जाहिल हूँ बिल्कुल नहीं आता। क़ुरआन पढ़ा हुआ नहीं हूँ और आप फ़रमाते हैं कि मैंने तुझे ख़िलाफ़त दे दी मगर मैं तो इसका हक़दार नहीं हूँ। हज़रत ख़्वाजा साहब ने फ़रमाया कि नेमत देना अल्लाह का काम है। उसने दिल में डाला इसलिए हम अब उसे

रोक नहीं सकते थे। हमने देखा कि बर्तन साफ़ है तो हमने नेमत बर्तन में डाल दी। अब अल्लाह तआला ख़ुद मेहरबानी फ़रमाएगा।

ख़ैर पित्थू को निस्बत मिली तो निस्बत ने अपने फल-फूल निकालने शुरू कर दिए। उसने क़ुरआन पढ़ना शुरू कर दिया। कुछ और वक़्त गुज़रा तो साईं फ़तेह अली बन गया यहाँ तक कि बड़े बड़े उलमा उससे बैअत होने लग गए। हज़रत मुर्शिदे आलम फ़रमाते थे कि एक बार मैंने हज किया। उसी दौरान साईं फ़तेह अली भी मक्का मुकर्रमा में था। एक जगह उलमा का मजमा था। मैंने देखा कि उलमा तो ज़मीन पर चटाईयाँ बिछाकर सोए हुए हैं जबकि उनके बीच साईं फ़तेह अली के लिए चारपाई बिछाई गई है। ये नेमत ऐसी चीज़ है कि पित्थू को साईं फ़तेह अली बना दिया करती है।

सोज़े इश्क़ और कैफ़े इल्म हासिल करने के ज़रिए

मेरे दोस्तो! सोज़े इश्क़ और कैफ़े इल्म हासिल करने के लिए इस तरह की तलब पैदा करनी चाहिए। सोज़े इश्क़ के लिए अंबिया अलैहिमुस्सलाम भेजे गए और कैफ़े इल्म के लिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने किताब अता फ़रमाई। जिसको किताबुल्लाह कहते हैं। गोया रिजालुल्लाह और किताबुल्लाह अता फ़रमाए। रिजालुल्लाह के ज़रिए सोज़े इश्क़ की ख़्वाहिश का पूरा होना था और किताबुल्लाह के ज़रिए कैफ़े इल्म का पूरा होना होता है। या यूँ समझिए कि सोज़े इश्क़ के लिए सुन्नत रसूल हो और कैफ़े इल्म के लिए क़ुरआन मिला। गोया जिस इंसान के एक हाथ में

किताबुल्लाह और दूसरे हाथ में सुन्नत रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हो तो उसके पास सोज़े इश्क़ भी है और कैफ़े इल्म भी है। यह है ज़िंदगी जिसे कामयाब ज़िंदगी कहते हैं।

तर्जुमाः हर हवसनाक जाम व सुराही से खेलना नहीं जानता। यह अल्लाह की रहमत होती है कि कुछ हस्तियों को सोज़े इश्क़ भी अता फ़रमा देता है और कैफ़े इल्म भी अता फ़रमा देता है।

एक ग़लत फ़हमी का इज़ाला

याद रखें कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इस निस्बत को हर ज़माने में जारी रखना है। लोग कहते हैं कि आज जुनैद रह० और शिबली रह० नज़र नहीं आते। हम निस्बत किससे हासिल करें? जी हाँ अगर जुनैद रह० व शिबली रह० को ढूंढोगे तो वह न तो दिन में नज़र आएंगे और न रात में नज़र आएंगे और नतीजा यह निकलेगा जैसे ख़ाली आए थे वैसे ही ख़ाली चले जाएंगे। अलबत्ता अगर सच्ची तलब से निस्बत को तलाश करोगे तो निस्बत आपको आज भी मिल जाएगी। निस्बत आज भी आपको अपने अनवारात दिखाएगी। देखें कि अगर किसी आदमी की आँखों पर पट्टी हो और वह कहे कि मुझे तो नज़र ही नहीं आता तो भला इसमें किसका क़ुसूर होगा? हाँ अपनी आँखों से तकब्बुर और मनमानी के पर्दे को हटाकर ख़ालिस अल्लाह के लिए साहिबे निस्बत को ढूँढिए, आपको निस्बत वाले आज भी मिल जाएंगे क्योंकि अल्लाह तआला ने इसकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मा लिया है।

दिल की हसरत

मेरे दोस्तो! जिनके पास यह निस्बत होती है, यह निस्बत

उनके घर की बाँदी नहीं होती, यह निस्बत उनकी जागीर नहीं होती, यह निस्बत उनकी मिल्कियत नहीं होती। यह ऊपर से मिलती है आगे पहुँचाने के लिए। हाँ बर्तन नज़र नहीं आते अगर बर्तन नज़र आए जाएंगे तो इस नेमत को डालने के लिए हर वक़्त तैयार होते हैं। हम क्यों इधर-उधर घूमते फिरते हैं? क्यों दुनिया के चक्कर काटते फिरते हैं? इसलिए कि कहीं सोज़े इश्क़ और कैफ़े इल्म का तालिब नज़र आए मगर अफ़सोस नफ़्स के तालिब नज़र आते हैं और ख़्वाहिशात के बंदे नज़र आते हैं।

हाल दिल जिससे मैं कहता कोई ऐसा न मिला
बुत के बंदे तो मिले अल्लाह का बंदा न मिला

मेरे दोस्तो! कोई अल्लाह का बंदा नज़र आ जाए तो यह अपने बस की बात नहीं होती कि फिर वह परवरदिगार इस निस्बत को इल्क़ा करने के लिए रास्ते हमवार कर दिया करता है और अगर कोई शैख़ उस वक़्त निस्बत को मुन्तक़िल नहीं करेगा तो अल्लाह तआला के सामने मुजरिम बनाकर खड़ा कर दिया जाएगा क्योंकि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का फ़रमान है :

﴿إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا﴾

बेशक अल्लाह तआला तुम्हें इस बात का हुक्म देता है कि तुम अमानतों को उनके अहल के सुपुर्द कर दो।

अल्लाह तआला हमें नूरे निस्बत से मुस्तफ़ीज़ फ़रमाए और रोज़े महूशर बख़्शिश किए हुए गुनाहगारों की क़तार में शामिल फ़रमाए।

﴿وَآخِرُ دَعْوَانَا أَنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ٥﴾

❋ ❋ ❋

मुसबत और मन्फ़ी सोच

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اما بعد.

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى○ سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ

وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ○

ज़िंदगी गुज़ारने के दो अंदाज़

काएनात में मौजूद हर चीज़ को देखने और उसके बारे में सोचने के दो अंदाज़ होते हैं। एक मुसबत (पोज़िटिव, सीधी) अंदाज़ और एक मन्फ़ी (निगेटिव, उल्टी) अंदाज़। इसी बुनियाद पर ज़िंदगी गुज़ारने के भी दो अंदाज़ हैं, मुसबत अंदाज़े ज़िंदगी और मन्फ़ी अंदाज़े ज़िंदगी। हर इंसान के अंदर मुसबत सोच भी मौजूद होती है और मन्फ़ी सोच भी। ज़िंदगी के मामलात में कोई इंसान अपनी मुसबत सोच के ज़रिए मामलात के मुसबत पहलू पर नज़र रखता है और कोई अपनी मन्फ़ी सोच की वजह से मन्फ़ी पहलू पर नज़र रखता है। फ़र्क़ यह है कि जो इंसान मुसबत सोच रखने वाला होता है वह मुसबत फ़ैसला करके अच्छे और बेहतर नतीजे हासिल कर लेता है और मन्फ़ी रुख़ से देखने वाला मन्फ़ी फ़ैसला करके

नुक़सान उठाता है। एक इंगलिश रायटर का मक़ूला है :

The life is ten percent how to make it,

and ninty percent how to take it.

यानी दस फ़ीसद आपकी वह ज़िंदगी है जिसे आप अपनी मेहनत और हाथ से बनाते है और नव्वे फ़ीसद ज़िंदगी वह है जिसे आप अपने माहौल और समाज से क़ुबूल करते हैं। अब इंसान माहौल से नव्वे फ़ीसद ज़िंदगी किस अंदाज़ से क़ुबूल करता है? यह इस की अपनी सोच पर है चाहे तो मुसबत सोच के ज़रिए ज़िंदगी में पेश आने वाले मामलात के मुसबत पहलू पर निगाह रखे और फ़ायदा हासिल कर ले चाहे मन्फ़ी पहलू पर निगाह रखकर ग़लत नतीजे निकाल ले।

एक ऐतिराज़ का जवाब

अगर कोई आदमी यह ऐतिराज़ करे कि मुसबत सोच का पैदा करने वाला भी अल्लाह तआला है और मन्फ़ी सोच का पैदा करने वाला भी अल्लाह तआला है तो फिर इंसान की क्या ग़लती है? तो इसका जवाब यह है कि यह आदमी अपनी कम इल्मी की वजह से काएनात के निज़ाम के क़ुदरती उसूल और क़ायदे से नावाक़िफ़ है। ऐसा आदमी गोया यह ऐतिराज़ कर रहा है कि अल्लाह तआला ने दिन को पैदा किया, दिन का फ़ायदा है कि इसमें काम-काज होते हैं रात को बनाने की क्या ज़रूरत थी कि सोने में आधी ज़िंदगी बर्बाद हो जाती है? न रात बनाई जाती और न ही इंसान की ज़िंदगी बर्बाद होती। ऐसा आदमी गोया यह ऐतिराज़ कर रहा है कि अल्लाह तआला ने छुरी के अंदर फल काटने की सलाहियत रखी है। इसका तो फ़ायदा है लेकिन इंसानों

की गर्दन काटने की सलाहियत क्यों रखी गई न ही यह सलाहियत रखी जाती और न ही क़त्ल का जुर्म होता।

इस बारे में अरबी का एक मक़ूला ज़हन में रखना चाहिए :

تعرف الاشياء باضدادها.

हर चीज़ अपनी ज़िद्द (मुख़ालिफ़ चीज़) से पहचानी जाती है।

मसलन दिन की पहचान रात की वजह से है अगर रात न होती और दिन ही दिन होता तो कौन कहता कि दिन हो गया है। मुहब्बत की पहचान नफ़रत की वजह से है। इसी तरह ईमान की पहचान कुफ़्र की वजह से है अगर कुफ़्र का वजूद ही न होता तो सब ही ईमान वाले नेक और सालेह होते तो फिर अंबिया अलैहिमुस्सलाम को भेजने की ज़रूरत ही न होती। अंबिया अलैहिमुस्सलाम का भेजा जाना शैतान की ज़िद्द है। गोया ईमान और इस्लाम को ग़लबे की तरफ़ दावत देने वाले और हिफ़ाज़त करने वाले अंबिया किराम हैं और कुफ़्र की दावत और हिफ़ाज़त करने वाला शैतान है। अल्लाह रब्बुइज़्ज़त ख़ुद फ़रमाते हैं कि मैंने हर चीज़ को जोड़ा-जोड़ा पैदा किया है। और हक़ीक़त भी यही है हर चीज़ का जोड़ा-जोड़ा होना काएनात के निज़ाम का बुनियादी उसूल है।

जदीद साइंस की बुनियाद

आज साइंस की दुनिया इसी उसूल पर तहक़ीक़ कर रही है। यह उसूल गोया जदीद साइंस की बुनियाद नज़र आता है। कंप्युटर जो मौजूदा दौर की जदीद तरीन और मुफ़ीद तरीन ईजाद है। उसका सारा अमल दो बिट्स पर है। 'ज़ीरो' और 'एक' पर। यह 'ज़ीरो'

और 'एक' यह भी एक जोड़ा है बल्कि आज के साइंसदान सदियों की तहक़ीक़ों के बाद और हज़ारों तजूरिबों के बाद इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि माद्दा एक चीज़ है तो इसका भी कोई जोड़ा होना चाहिए और उस जोड़े को उन्होंने ऐंटी-मैटर का नाम दिया है। अब वह इस एंटी-मैटर को खोजने के लिए मेहनत कर रहे हैं।

रूह की बरतरी माद्दे पर

अब देखते हैं कि रूह के मुक़ाबले में माद्दे (जिस्म) की क्या हैसियत है? माद्दे का ख़मीर ख़ाक से है और रूह का ख़मीर आसमान से भी ऊपर आलमे अरवाह है। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي﴾ मैंने उसमें अपनी रूह फूँक दी। माद्दे का कोई न कोई मुक़ाम होता है मगर रूह ला-मकानी चीज़ है। माद्दा किसी चीज़ से टकराकर रुक जाता है मगर रूह आसमान से भी आगे निकल जाती है। माद्दे को बुलंदी की तरफ़ फेकें तो कशिश सक़ल (ग्रेवटी) की वजह से निचाई की तरफ़ लौटता है मगर रूह अर्शे इलाही की तरफ़ परवाज़ कर जाती है तो कई हज़ार साल की बुलन्दियों को तय कर जाती है। माद्दियत के शहसवारों की हद यह है कि सदियों की कोशिशों और मेहनतों के बाद चाँद, मुश्तरी और सुरैया तक मुश्किल से पहुँच सके हैं लेकिन रूहानियत के शहसवारे आज़म सैय्यदुल बशर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मैराज यह है कि आप रब्बे ज़ुल-जलाल के इतने क़रीब पहुँचे जैसे तीर कमान के नज़दीक होता है और कहकशा और सुरैया तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दम शरीफ़ के रास्ते के धूल हैं–

नाज़ां जिस पे हुस्न है वह हुस्ने रसूल है
यह कहकशां तो आपके क़दमों की धूल है

माद्दियत तो यह है कि इंसान ख़रबों डॉलर लगाकर चाँद पर पहुँचा और रूहानियत यह है कि महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उंगली मुबारक के इशारे से चाँद दो टुकड़े हो जाता है। माद्दी दुनिया के पोप कहते हैं कि पानी अपनी सतह पर बरक़रार रहता है लेकिन मैदान रूहानियत में मूसा अलैहिस्सलाम के आसा की एक चोट से उफ़नती हुई तूफ़ानी मौजे सिमटकर बारह रास्ते बना देती हैं।

सोचने के दो अंदाज़े

बात हो रही थी कि सोच के दो अंदाज़ हैं। मुसबत सोच दिल में फ़रहत और ख़ुशी पैदा करती है और मन्फ़ी सोच तकलीफ़ का ज़रिया बनती है। मिसाल के तौर पर दो शायर बाग़ में गए। उनमें से एक ख़ुश था और दूसरा ग़मगीन। दोंनों की निगाह खिले हुए फूल पर पड़ी। शायर लोगों की तबियत बहुत महसूस करने वाली होती है। और फ़ितरत को पढ़ते रहते हैं। दोनों ने फूल के बारे में अपने-अपने तास्सुरात बयान किए। जो ग़मगीन था उसने खिला हुआ फूल देखकर कहा कि इस मज़लूम फूल को भी किसी ने ज़ख़्मी कर दिया है, देखिए इसका भी मेरी तरह सीना चाक है।

दूसरा शायर कहने लगा कि यह फूल भी मेरी तरफ़ ख़ुश है और हँस रहा है, देखिए कैसा खिला हुआ है।

ग़ौर कीजिए एक ही फूल है लेकिन दोनों की सोच का अंदाज़ अलग-अलग होने की वजह से तास्सुरात अलग-अलग हैं।

एक जेल से दो क़ैदियों ने खिड़की से बाहर देखा। एक की नज़र कीचड़ पर पड़ी और दूसरे की नज़र फूल पर। जिसकी

निगाह के सामने कीचड़ था उसने कहा बाहर तो हर तरफ़ कीचड़ ही कीचड़ है और जिसकी निगाह के सामने फूल थे उसने कहा बाहर तो हर तरफ़ फूल ही फूल हैं। अरे लोग शिकायत करते हैं कि फूलों के साथ काँटे होते हैं और मैं शुक्र करता हूँ कि काँटों के साथ फूल भी होते हैं।

मेज़ पर आधा पानी गिलास पड़ा था। दो आदमियों ने उसे देखा। एक ने कहा कि गिलास आधा ख़ाली है। दूसरे ने कहा अल्लाह का शुक्र है आधा भरा हुआ। साबित हुआ कि सोचने के अंदाज दो ही हैं मुसबत अंदाज़ परेशानियों को आसान कर देता है और मन्फ़ी अंदाज़ परेशानियों को और मुश्किल बना देता है। इस वजह से लोग दो हिस्सों में तक़्सीम हो जाते हैं। मुसबत सोच रखने वाले लोग हालात को लेकर चलते हैं और मन्फ़ी सोच वाले हज़रात को हालात लेकर चलते हैं। वह कठपुतली बनकर ज़िंदगी गुज़ारते हैं।

Some people drive the situation and some driven by situation.

कुछ लोग हालात को लेकर चलते हैं और कुछ लोगों को हालात लेकर चलते हैं।

इख़्तिलाफ़ राय

इंसानों में कई बार राय में इख़्तिलाफ़ भी हो जाता है। हम लोग इख़्तिलाफ़ में कई दफ़ा इख़्तिलाफ़ राय को दुश्मनी बना लेते हैं। हालाँकि क़ुदरत ने हर आदमी में अलग-अलग दिमाग़ रखा है। हर एक की सोच का अंदाज़ जुदा होता है। वह अपने अंदाज़ से ही सोचता है और बात करता है। इसलिए इख़्तिलाफ़ राय एक

क़ुदरती चीज़ है न सिर्फ़ यही बल्कि इख़्तिलाफ़ राय एक नेमत भी है। जब इख़्तिलाफ़ राय होगा तो मामले के कई पहलू सामने आएंगे और उनमें से बेहतरीन हल का चुनाव आसानी से कर लिया जाएगा। मश्वरा करना एक मुस्तक़िल सुन्नते नबवी है और इसकी रूह है ही इख़्तिलाफ़ राय। मश्वरा करने में ज़्यादा ज़हन जमा हो जाते हैं। हर ज़हन एक अलग रुख़ से मामला समझकर मश्वरा देता है। इस तरह मामले के छुपे हुए पहलू भी सबके सामने आ जाते हैं। प्लानिंग में इसको मुताबिदल सूरतों के नाम से जाना जाता है। इंजीनियर और मैनेजर जब किसी मसूअले के हल के लिए मश्वरा करने के लिए बैठते हैं तो वह मसूअले की नौइयत और मुताल्लिक हालात को ध्यान में रखकर मश्वरा करते हैं। अब जितने ज़्यादा ज़हन जमा होंगे उतने ज़्यादा हल और मुताबिदल सूरतें ग़ौर करने में आती हैं। मिसाल के तौर पर दस आदमी मश्वरा करते हैं। उन सबकी राय अलग-अलग होती है। उनमें तीन-चार बेहतर सूरतों का चुनाव कर लिया जाता है। बाद में इन तीन-चार सूरतों का हालात को ध्यान में रखते हुए मवाज़ना किया जाता है और उसके बाद उनमें से बेहतरी सूरत का चुनाव कर लिया जाता है। जिसके अच्छे नतीजे बरामद होते हैं। बहरहाल इख़्तिलाफ़े राय फ़ायदे की चीज़ है।

इख़्तिलाफ़े राय की मिसालें

एक भाई कहता है कि मकान अभी बनाना है। दूसरा कहता है कि दो महीने ठहरकर बनाएंगे। यह इख़्तिलाफ़ राय है लेकिन इसको दुश्मनी बना लेना बेवक़ूफ़ी है क्योंकि सोच में फ़र्क़ होने की वजह दोनों ने अपनी-अपनी राय का इज़्हार किया है। एक ने

अपनी सोच के हिसाब से देखा तो उसे मकान का बनाना आसान नज़र आया और दूसरे ने अपनी सोच के हिसाब से देखा तो उसको मुश्किल लगा।

बीवी एक जगह बेटी का रिश्ता करना चाहती है। शौहर दूसरी जगह अपने रिश्तेदारों में करना चाहता है तो इस वजह से आम तौर पर मियाँ-बीवी में बात बढ़ जाती है जो कि घर में झगड़े का सबब बनती है। हालाँकि यह सिर्फ़ इख़्तिलाफ़ राय है। अगर वे मुसबत सोच के साथ समझने-समझाने से काम लेते तो मस्अला बड़ी आसानी से हल हो सकता है और दोनों में जिसकी राय बेहतर हो उसके मुताबिक़ फ़ैसला कर लिया जाए।

बेहतरीन उसूले ज़िंदगी

मियाँ-बीवी में कुछ मामलों में इख़्तिलाफ़ राय होकर बहस व तकरार की नौबत तो आ ही जाती है। अगर इस दौरान फ़रीक़ैन हक़ीक़त पसंदी से काम लें और ईमानदारी से ज़रा ग़ौर कर लें कि उनमें से हक़ पर कौन है। ज़ाहिर है दोनों में से हक़ पर तो एक ही है, दोनों तो नहीं हो सकते। जो हक़ पर नहीं है वह हिम्मत करके ख़ामोशी इख़्तियार कर ले और दूसरे फ़रीक़ की कड़वी कसैली सुनता रहे। सब्र व ज़ब्त से काम ले और जवाब हर्गिज़ न दे। इस तरह वह दूसरी तरफ़ सब्र व तहम्मुल देखकर जल्दी ही ठंडा हो जाएगा बल्कि मुसबत असर लेगा और बहस व तकरार बढ़ने की नौबत नहीं आएगा और थोड़े वक़्त के बाद फिर दोनों शीर व शक्कर हो जाएंगे। मियाँ-बीवी को शुरू से ही ज़हन बना लेना चाहिए कि जब कभी ऐसी नौबत आए तो दोनों ग़ौर कर लिया करें कि हक़ पर कौन है।

सास बहू के झगड़ों का बेहतरीन हल

मियाँ-बीवी के दर्मियान झगड़े अमूमन सास बहू से ही जन्म लेते हैं और ऐसे झगड़ों का एक बेहतरीन हल है। अगर वह तरीक़ा इख़्तियार कर लिया जाए तो सवाल ही पैदा नहीं होता कि सास बहू की बुनियाद पर झगड़े खड़े हों। वह तरीक़ा यह है कि मियाँ-बीवी शुरू ही से यह समझौता कर लें कि मियाँ अपनी बीवी के माँ-बाप की ख़िदमत करे और ज़रूरतों का ख़्याल रखे और बीवी अपने शौहर के माँ-बाप की ख़िदमत करे और ज़रूरतें पूरी करने को तेया रहें यानी दोनों अपने-अपने ससुराल की ख़िदमत और मदद के लिए अमली तौर तैयार रहें। वैसे भी हदीस पाक का मफ़हूम है कि शादी से पहले एक वालिद और एक वालिदा और शादी के बाद दो वालिद और दो वालिदा होती हैं यानी सास-ससुर के हक़ूक अपने ही माँ-बाप की तरह हैं।

ज़ाती वाक़िआ

मेरे पास एक औरत आई जो काफ़ी पढ़ी-लिखी लगती थी। शायद एम०ए० किया हुआ था। उसने पर्दे के पीछे बैठकर बात की। अपनी सास के बड़े गिले-शिकवे किए कि नाक मे दम कर रखा है। बात-बात पर नोक-झोक करती है। ग़र्ज़ उसने सास का ख़ूब रोना रोया। तक़रीबन आधा घंटा सास के शिकवे करती रही और उस दौरान वह रो पड़ी। लेकिन साथ ही बताया कि मेरा शौहर मेरे साथ बहुत अच्छा है, बहुत प्यार का सुलूक रखने वाला है। उसके शौहर की एक फ़ैक्टरी है, बड़ा खाता पीता घराना है, कार कोठी उसके पास है लेकिन सास की वजह से बहुत परेशान

थी। जब उसने बताया कि शौहर उसके साथ बहुत अच्छा है। उससे उसे कोई शिकवा नहीं तो मैंने उससे एक सवाल किया, क्या आपको ख़ाविंद और घर अच्छा लगा? कहने लगी जी हाँ। मैंने कहा आप उसके घर में कैसे आईं? कहने लगी वह तो मेरी सास मेरे घर आई, मुझे देखा और पसंद किया और मुझे ब्याह कर ले आई। इस पर मैंने कहा कि उसने तो आप पर एहसान किया कि अच्छे घर में आपको ले आई जिसमें आपको ख़ाविंद अच्छा मिला। इस बड़े एहसान पर तो आपको उम्र भर अपनी सास का शुक्र गुज़ार रहना चाहिए था। लेकिन यह शिकवे कैसे? मैंने कहा अब बताइए कि इतने बड़े एहसान के मुक़ाबले में तुम्हारी ये बातें कैसी हैं? कहने लगी आपने तो मेरा मस्अला हल कर दिया। इस एहसान के मुक़ाबले में तो यह बाक़ी बातें वाक़ई कोई हैसियत नहीं रखतीं।

एक इंजीनियर और उसके बेटे की सोच

सोच का अंदाज़ हर एक का अपना-अपना होता है। एक इंजीनियर साहब हैं। उनका ही बेटा था। एक दिन वह घर में ड्राईंग बना रहे थे। एक छोटा सा बेटा साथ था और चीज़ों को आगे पीछे कर रहा था। जिससे उनके काम में रुकावट आ रही थी। उन्होंने बेटे को अलग करने की कोशिश की मगर वह ज़िद्द कर गया। इंजीनियर साहब रहम दिल आदमी थे। वह मार कर सख़्ती से दूर भी नहीं करना चाहते थे। बेटे को मसरूफ़ करने की एक तर्कीब उनके ज़हन में आई। उनके पास अख़बार का एक सफ़्हा पड़ा था जिस पर दुनिया का नक़्शा बना हुआ था। उन्होंने अख़बार के कई टुकड़े कर दिए और टुकड़े बच्चे को दिए कि

तो औसत दर्जे के तीन थप्पड़ लगाए जा सकते हैं, तीन से ज़्यादा नहीं और वह भी चेहरे के अलावा किसी और जगह पर क्योंकि चेहरे पर मारने को मना किया गया है लेकिन हमारे यहाँ तो बच्चा थोड़ा सा भूल जाए तो डंडा दे मारेंगे। नहीं देखते कि सर पर लग रहा है, नाक पर लग रहा है, कहाँ लग रहा है। अरे अल्लाह के बंदे! वह बच्चा है, तुम नहीं भूलते? अगर इसी क़ारी साहब से वही पारा सुना जाए तो दस दफ़ा भूलेंगे और बच्चे ने भूलना ही होता है। उसने कौन सी चोरी कर ली है या कोई और जुर्म कर लिया है जो इस क़दर सज़ा दी जाती है। इस तरह तो बच्चे संवरने की बजाए उलटा बिगड़ जाते हैं और दीन और मदरसों से बाग़ी हो जाते हैं। क़ारी साहब तो समझते हैं कि वह अच्छा कर रहे हैं और सवाब का काम है लेकिन यह गुनाह है जिसका जवाब आख़िरत में देना पड़ेगा। दरअसल जो लोग बच्चों को मारते हैं अमूमन अपने नफ़्स की वजह से मारते हैं और गोया अपनी हार तसलीम करते हुए मारते हैं कि हम इस बच्चे को समझाने से आजिज़ हैं, इसको अच्छे तरीक़े से समझाने से क़ासिर हैं मगर उन्हें याद रखना चाहिए कि शरिअत इस बात की क़तई इजाज़त नहीं देती कि बच्चे की हड्डियाँ पसलियाँ तोड़ दी जाएं।

मेरे दोस्तो! बच्चों को तालीम में चलाने का बेहतरीन तरीक़ा यह है कि उनको मौक़े-मौक़े तर्ग़ीब देकर मेहनत का शौक़ दिलाया जाए। बच्चे मासूम दिल होते हैं। अच्छी-अच्छी बातों का असर बहुत जल्द क़ुबूल कर लेते हैं और ज़ौक़-शौक़ से मेहनत करने लगते हैं। यह ज़ेहन साज़ी है और बच्चों की ज़ेहन साज़ी करना मुस्तक़िल एक काम है। इससे बच्चों की शुरू से ही ज़ेहनी नशो नुमा होने लगती है और बड़े अच्छे असरात निकलते हैं लेकिन

बात बात बच्चों को डांट-डपट और हर मामूली ग़लती पर सज़ा देना मन्फ़ी रवैय्या है। इस तरह बच्चा डांट-डपट और मार सहने का आहिस्ता-आहिस्ता आदी हो जाता है और पढ़ाई से दिल चुराने लगता है कि क्योंकि वह यही समझता है कि उस्ताद की डांट और मार कुटाई एक लाज़मी चीज़ है।

इस मन्फ़ी रवैय्या का एक और बड़ा नुक़सान यह होता है कि बच्चों के दिल में उस्ताद की अक़ीदत और अदब नहीं रहता है बल्कि उस्ताद से बुग्ज़, नफ़रत और वहशत जन्म लेती है। और यही चीज़ आहिस्ता-आहिस्ता पुख़्ता होकर उसको मुस्तक़िल बाग़ी बना देती है और वह जवान होकर भी मस्जिद, मदरसा और मौलवी से नफ़रत में रहता हैं और आमाले सालेहा से ख़ाली ही दुनिया से चला जाता है। अब देखिए कितनी ख़राबी पैदा हुई और उन ख़राबियों के ज़िम्मेदार मस्जिद के क़ारी साहब और मदरसे के उस्ताद हैं। जहाँ तक भूलने का ताल्लुक़ है तो यह एक फ़ितरी चीज़ है। क्या अंबिया अलैहिमुस्सलाम से भूल नहीं हुई हालाँकि नबियों पर जाकर तो इंसानियत की तकमील हो जाती है। यह इसलिए कि भूल और ख़ता तो आदम के ख़मीर में रख दी गई जो एक फ़ायदेमंद चीज़ है बशर्ते कि सुधार सही तरीक़े से कर दिया जाए।

भूल और चूक पर यही सही सोच है और भूल पर लाल-पीला होकर सज़ा देना ग़लत सोच है। अगर सज़ा देना ज़रूरी हो तो दर्द और चोट वाली सज़ा देने के बजाए ऐसी सज़ा दी जाए जो कि थका देने वाली हो मिसाल के तौर पर देर तक खड़ा रखना, दोनों हाथ ऊपर करवा देना, एक पाँव ऊपर करवा देना, दोनों हाथों में मामूली वज़न पकड़ाकर दोनों बाज़ुओं को सीधे कर देना वग़ैरह।

और एक तरीक़ा यह भी है कि ग़लती पर सज़ा देने के बजाए अच्छा सबक़ सुनाने वालों को ईनाम दिया जाए ताकि दूसरे बच्चे शौक़ और लगन के साथ सबक़ याद करें।

एक और बात साथ में अर्ज़ कर दूँ कि कुछ मदरसों में उस्ताद अपने शार्गिदों से बात करते वक़्त बड़ी बे-एहतियाती से काम लेते हैं। कुछ बच्चों को बिला वजह ही शैतान, ख़बीस, ख़िन्ज़ीर, बदमाश जैसे नामों से पुकारते हैं बल्कि उससे भी ज़्यादा बुरे नामों से बुलातें हैं और कुछ को उनके असल नामों से बिगाड़कर पुकारते हैं। हालाँकि उनके मंसब और मर्तबा के एतिबार से यह बात बिल्कुल मुनासिब नहीं है। वैसे भी अल्लाह रब्बुइज़्ज़त का इर्शाद है ﴿وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ﴾ एक दूसरे को बुरे नाम मत दो। लिहाज़ा उनको यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि जिन बच्चों को आज हम इस तरह की तर्बियत दे रहे हैं आख़िर आगे जाकर यही बच्चे उस्ताद बनेंगे और फिर शार्गिदों से बात करते वक़्त यही ग़लत रवैय्या अपनाएंगे तो उसका गुनाह किसको होगा? खुदा के वास्ते! अल्लाह के मेहमानों से यह सुलूक करके अपनी आख़िरत ख़राब न कीजिए।

सोच का असर अमली ज़िंदगी पर

दुनिया की यूनिर्वसिटियों यह जानने के लिए सर्वे किया गया कि इम्तिहानों में अव्वल आने तालिब इल्म किस ज़ेहन के मालिक होते हैं। कई तरह से जाएज़ा लिया गया और बहुत सी वजूहात पर ग़ौर किया गया तो एक बात सब में एक जैसी निकली कि अव्वल वाले तालिब इल्म सीधी सोच रखने वाले होते हैं जिसकी वजह से उनमें इत्मीनान भी ज़्यादा था।

हक़ीक़त यही है कि अगर सोच सीधी होगी तो इंसान के अंदर का सिस्टम भी ठीक काम करता है क्योंकि इंसान की सोच अंदरूनी निज़ाम को कंट्रोल करती है। अगर इंसान की सोच उलटी हो जाए तो अंदर का सिस्टम भी ग़लत चलता है क्योंकि इंसान का दिमाग़ बदन में हैड कंट्रोलर की हैसियत रखता है। इंसानी दिमाग़ बड़ी पेचीदा मांसपेशियों के निज़ाम के ज़रिए जिस्म के तमाम निज़ामों को कंट्रोल करता है और वह सारा निज़ाम बहुत महसूस करने और असर लेने वाला होता है। जिसकी वजह से सोच का साधा या उल्टा रुख़ बहुत आसानी से अंदरूनी निज़ाम पर असर डालता है। सिर्फ़ सोच के बदलने से इंसान के अंदर का सिस्टम बदल जाता है। मिसाल के तौर पर अगर कमरे से बिल्ली को भगाना हो और दरवाज़ा खुला हो तो वह आसानी से भाग जाएगी और अगर दरवाज़ा बंद करके उसे मारने की कोशिश की करें तो वह गले पड़ जाएगी। क्यों? इसलिए कि उसकी सोच हालात के मुताबिक़ बदल गई। नई सूरते हाल से निबटने के लिए उसने अपने आपको तैयार कर लिया है और लड़ने के लिए डट गई है। वही बिल्ली जो मामूली हरकत या आवाज़ के डर से भाग जाती है, सोच बदल जाने की वजह से अपने से सैकड़ों गुना क़वी इंसान से मुक़ाबला करने के लिए तैयार हो गई।

आज पढ़ने वाले बच्चे इम्तिहान के लिए क्यों तैयार नहीं होते? हालाँकि वक़्त होता है, सेहत है, दिमाग़ है लेकिन पढ़ने को जी नहीं चाहता। इसलिए कि सोच मन्फ़ी हो गई है। जिसकी वजह से ज़हनी तौर पर तैयार नहीं हो सकते। इस तरह अंदर का सिस्टम डाउन होने से इंसान के अंदर क़ुव्वते इरादी नहीं रहती। यह चीज़ अल्लाह को नापसंद है। हदीस शरीफ़ का खुलासा है कि अल्लाह

तआला बुलंद हिम्मती को पसंद फ़रमाते हैं और बुलंद हिम्मत लोग ही दुनिया में कामयाब होते हैं क्योंकि उनके साथ अल्लाह की मदद शामिल होती है।

तर्जुमाः ख़ुदा उनकी मदद करता है जो अपनी मदद आप करते हैं।

इससे साबित हुआ कि अमली ज़िंदगी में कामयाबी हासिल करने के लिए और अपने अच्छे मक़सद को हासिल करने के लिए इंसान को अपने अंदर ख़ुद ऐतिमादी (आत्म विश्वास) और मज़बूत क़ुव्वते इरादी का मौजूद होना ज़रूरी है। इन आली सिफ़ात को हासिल करने के लिए आदमी की सोच का मुसबत होना ज़रूरी है क्यों मन्फ़ी सोच के साथ इस सिफ़ात का पैदा करना ना मुमकिन है।

एक बाक्सर की मिसाल

माइक टाइसन दुनिया का बड़ा बाक्सर था। किसी मुक़द्दमें में फँस जाने की वजह से जेल में बंद रहा। जेल में उसे बाक़ायदा वरज़िश करने का मौक़ा न मिला फिर भी किसी न किसी दर्जे में वह प्रैक्टिस करता रहा और अपने आपको फ़िट रखा। इसी दौरान उसने इस्लाम क़ुबूल कर लिया तो उसका नया नाम अब्दुल अज़ीज़ रखा गया। जब वह जेल से बाहर आया तो उसने चैम्पियन बाक्सर को चैलेंज किया। उसने क़ुबूल कर लिया। मुक़ाबले से पहले दोनों का इंटरव्यू अख़बार में छपा। इस आजिज़ ने बाहर मुल्क में उसका इंटरव्यू खुद पढ़ा है। मुख़ालिफ़ बाक्सर ने लम्बा चौड़ा इंटरव्यू दिया कि मैं उसकी नाक तोड़ दूँगा, बाज़ू तोड़ दूँगा और इतना मारूँगा कि उसे छठी का दूध याद आ जाएगा और जब उन्होंने माइक टाइसन (अब्दुल अज़ीज़) से से इंटरव्यू

लिया तो उसने एक ही बात कही कि "यह तो पप्पू है।" बस उसने एक ही जवाब दिया और अपने ज़हन को तनाव से फ़ारिग़ रखा और ऐसा ही हुआ कि टाइसन ने अपने दुश्मन को दो तीन मिनट में ही हरा दिया।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का एक दिलचस्प वाक़िआ

बाइबल में एक वाक़िआ लिखा है। क़ुरआन पाक में भी इसका थोड़ा सा ज़िक्र है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम और तालूत अलैहिस्सलाम वक़्त के बादशाह जालूत के मुक़ाबले के लिए गए। जालूत बड़ा लहीम शहीम ताक़तवर था। उसकी शक्ल व सूरत भी ऐसी थी कि देखने से हैबत तारी हो जाती थी। तालूत बूढ़े थे और हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम जवान उम्र थे और माशाअल्लाह उठती जवानी थी। जब दोनों हज़रात ने जालूत को देखा तो तालूत अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया—

तर्जुमाः इसे मारना तो वहुत मुश्किल है क्योंकि यह तो बहुत बड़ा है।

इधर हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाने लगे—

तर्जुमाः इसे मारना तो बहुत आसान है क्योंकि यह तो बहुत बड़ा है। मेरा निशाना कभी नहीं चूकेगा।

और ऐसा ही हुआ कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने पत्थर जालूत की माथे पर मारा और ख़त्म कर दिया। जो भी आदमी मज़बूत क़ुव्वते इरादी से काम करता है अल्लाह तआला भी उसकी मदद करते हैं।

ख़ैर-ख़्वाही और मुसबत (सीधी) सोच में है

आदमी की सोच मुसबत होनी चाहिए। मुसबत सोच से अपना भी फ़ायदा होता है और दूसरों का भी क्योंकि ख़ैर-ख़्वाही मुसबत सोच में छुपी हुई है। ﴿اَلدِّیْنُ النَّصِیْحَۃ﴾ दीन सरासर ख़ैर-ख़्वाही है। मोमिन अपना भी ख़ैर-ख़्वाह होता है और दूसरों का भी ख़ैर ख़्वाह होता है। ईमान की यह लाज़मी शर्त है कि ईमान वाला दूसरों का ख़ैर-ख़्वाह होता है। बदख़्वाही (बुरा चाहना) ईमान के कमज़ोर होने की अलामत है। बद-ख़्वाह अपने ईमान की धज्जियाँ उड़ा देता है। एक आदमी ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को गाली दी लेकिन अपने उसे जवाब में दुआ दी। आपने फ़रमाया–

﴿کل اناءٍ یترشح بما فیہ.﴾

हर बर्तन से वही कुछ निकलता है जो कुछ कि उसमें होता है।

जो कुछ उसमें था उसने बाहर निकाला और जो कुछ मुझमें था मैंने वही बाहर निकाला। क़ुरआन पाक में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त फ़रमाते हैं कि अच्छाई और बुराई बराबर नहीं हो सकती और फ़रमान है कि बुराई को अच्छाई से दूर कर दो। बुराई का बदला अगर अच्छाई से दिया जाए तो दुश्मन भी यार बन जाता है।

मक़सद के तय करने में मुसबत सोच का किरदार

मुसबत सोच रखने वाला आदमी दुनिया में कुछ करके जाता है। ज़िक्र करने वाला हमेशा मुसबत सोच रखने वाला होता है। आप भी दिल में पक्का इरादा कर लें कि दुनिया में कुछ करके मरना है। ठोस इरादा करने के लिए मक़सद तय करें कि मैंने इस

ख़ैर-ख़्वाही और मुसबत (सीधी) सोच में है

आदमी की सोच मुसबत होनी चाहिए। मुसबत सोच से अपना भी फ़ायदा होता है और दूसरों का भी क्योंकि ख़ैर-ख़्वाही मुसबत सोच में छुपी हुई है। ﴿الدِّيْنُ النَّصِيْحَة﴾ दीन सरासर ख़ैर-ख़्वाही है। मोमिन अपना भी ख़ैर-ख़्वाह होता है और दूसरों का भी ख़ैर ख़्वाह होता है। ईमान की यह लाज़मी शर्त है कि ईमान वाला दूसरों का ख़ैर-ख़्वाह होता है। बदख़्वाही (बुरा चाहना) ईमान के कमज़ोर होने की अलामत है। बद-ख़्वाह अपने ईमान की धज्जियाँ उड़ा देता है। एक आदमी ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को गाली दी लेकिन अपने उसे जवाब में दुआ दी। आपने फ़रमाया–

﴿كل اناء يترشح بما فيه.﴾

हर बर्तन से वही कुछ निकलता है जो कुछ कि उसमें होता है।

जो कुछ उसमें था उसने बाहर निकाला और जो कुछ मुझमें था मैंने वही बाहर निकाला। क़ुरआन पाक में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त फ़रमाते हैं कि अच्छाई और बुराई बराबर नहीं हो सकती और फ़रमान है कि बुराई को अच्छाई से दूर कर दो। बुराई का बदला अगर अच्छाई से दिया जाए तो दुश्मन भी यार बन जाता है।

मक़सद के तय करने में मुसबत सोच का किरदार

मुसबत सोच रखने वाला आदमी दुनिया में कुछ करके जाता है। ज़िक्र करने वाला हमेशा मुसबत सोच रखने वाला होता है। आप भी दिल में पक्का इरादा कर लें कि दुनिया में कुछ करके मरना है। ठोस इरादा करने के लिए मक़सद तय करें कि मैंने इस

मुक़ाम तक पहुँचना है। मक़सद तय कर लेने से आदमी को काम करने का मैदान मिल जाता है। जब तक इंसान के सामने कोई मक़सद न हो तो ज़िंदगी में कामयाबी मुश्किल है। इस तरह तो जैसे दुनिया में आए थे वैसे ही गुज़र जाएंगे। लेकिन याद रखें कि मक़सद को तय करने के लिए सोच मुसबत होना और मज़बूत क़ुव्वते इरादी बुनियादी शर्त है। अगर मन्फ़ी सोच के ज़रिए मक़सद को तय किया जाएगा तो बजाए फ़ायदे के उल्टा नुक़सान होगा। मुसबत सोच और क़ुव्वते इरादे के ज़रिए नामुमकिन काम भी मुमकिन बन जाया करता हैं।

एक यूरोपी मुसन्निफ़ की दिलचस्प मिसाल

इटली का एक डाक्टर बड़ा मेहनती आदमी था। वह अरबी जानता था। उसने अरब हुकमा की अरबी किताबों का तर्जुमा अतलावी ज़बान में किया। उसे इस काम में दो साल लगे। उसके बाद वह बीमार हो गया। डाक्टरों ने बताया कि कैंसर का मर्ज़ है और यह भी बताया कि ज़्यादा से ज़्यादा दो साल तक ज़िंदा रहेगा। दो साल के बाद उसकी मरने की उम्मीद थी। अब बिस्तर पर वह आराम की हालत में था। उसके दिल में यह आरज़ू पैदा हुई कि काश! मैं अरब हुकमा की किताबों का तर्जुमा भी अपनी अतलावी ज़बान में कर दूँ ताकि मख़्लूक़ का फ़ायदा हो। लिहाज़ा उसने तय कर लिया कि तर्जुमा करना है। उसने लायब्रेरी में से अरब हुकमा की बहुत सी किताबें मंगवा लीं जो कि तिब्ब व हिकमत से मुताल्लिक़ थीं। जब उनकी छानबीन की कि कौन सी किताबें अहम हैं जिनका तर्जुमा होना चाहिए तो वे किताबें उसने अलग कर लीं और गिना तो वह अस्सी किताबें थीं। अब वह

तर्जुमा करने के लिए ज़हनी तौर पर तैयार हो गया हालाँकि वह बीमार था। कैंसर का शदीद मरीज़ था, इससे बढ़कर यह कि उसे मौत सर पर मंडलाती नज़र आ रही थी लेकिन इस सब के बावजूद इस अज़ीम मुहिम के लिए तैयार हो गया। उसने तर्जुमा करना शुरू कर दिया। उसे हर दिन वक़्त कम होने का एहसास भी दामनगीर था लेकिन वह अपने काम में लगा रहा। आप हैरान होंगे कि उसने पूरे दो सालों के अंदर अस्सी किताबों का तर्जुमा अतलावी ज़बान में मुकम्मल कर लिया।

आज उस डाक्टर को दुनिया का सबसे बड़ा तर्जुमान माना जाता है और जीनियस बुक आफ़ वर्ल्ड रिकार्ड में आज भी उस शख़्स का नाम लिखा हुआ है। उसे यह इज़्ज़त इसलिए मिली है कि उसके पीछे 'मुसबत सोच' की क़ुव्वत मौजूद थी। उसने सोचा चले तो जाना ही है तो यह दो साल क्यों ज़ाए हों, फ़ारिग़ रहने से मसरूफ़ रहना ही बेहतर है और फिर उसके सामने मक़सद यह भी था कि अगर अरब हुकमा की उनकी अहम तरीन किताबों का तर्जुमा हो गया तो इल्म का एक बेश बहा ख़ज़ाना अतलावी ज़बान में आ जाएगा। लिहाज़ा उसकी जवान हिम्मती ने नामुमकिन काम को भी मुमकिन बना दिया।

मौत की अलामतें पाने पर डाक्टर की ज़िम्मेदारी

यूरोपी मुल्कों में डाक्टर लोग मरने के क़रीब लोगों में यूँ एहसास करा देते लेकिन हमारे यहाँ तीसरी दुनिया में मरने के क़रीब मरीज़ों को बताते ही नहीं कि इतने दिनों में उसकी मौत हो जाएगी बल्कि उससे यह बात छुपाई जाती है। यह बात ठीक नहीं हों यूरोप में तो बिल्कुल खुले लफ़्ज़ों में बता देते हैं ताकि मरीज़

ज़हनी तौर पर उस के लिए तैयार हो सके और जिनसे लेन-देन वग़ैरह करना हो वह कर ले और घरवालों को नसीहत व वसीयत कर सके। इसी तरह यहाँ भी डाक्टरों को चाहिए कि बता दिया करें ताकि हो सकता है कि वह अल्लाह से तौबा कर ले और उसकी बरकत से ईमान की हालत में चला जाए। इसलिए कि मोमिन का अक़ीदा है कि यहाँ का मुक़ाम वक़्ती है और एक दिन तो मरना ही है। इसलिए अगर बता दिया जाए कि इतने वक़्त तक मौत हो जाएगी तो वह नसीहत व वसीयत कर सकेगा, लेन-देन निबटा लेगा और कुछ अल्लाह से तौबा करके राज़ी-ब-रज़ा होकर तैयार हो जाएगा। इसमें ज़्यादा फ़ायदा है। इसीलिए हदीस पाक का मफ़हूम है कि मरते वक़्त कोई नेक आदमी पास होना चाहिए ताकि वह उसे ज़िक्र व अज़कार की तर्ग़ीब दे। वैसे भी उम्र जितनी भी कम हो हिसाब कम देना पड़ेगा। हदीस पाक में कहीं नहीं आया कि रसूले पाक ने उम्र की दराज़ी के लिए दुआ फ़रमाई हो। ये दुआएं तो फ़रमायी हैं कि इल्म में इज़ाफ़ा फ़रमा, सेहत व आफ़ियत के लिए दुआ मांगी लेकिन यह दुआ नहीं मांगी होगी कि उम्र तवील हो, शायद एक आध मर्तबा उम्र में बकरत की दुआ फ़रमाई।

हज़रत ख़्वाजा बायज़ीद बुस्तामी रह० को जब किसी की मौत की ख़बर मिलती तो फ़रमाते अच्छा हुआ छूट गया यानी अच्छा हुआ जो आज़ाद हो गया क्योंकि दुनिया में तो मोमिन के लिए क़ैदख़ाना है और क़ैदख़ाने से रिहाई होते हुए ग़म नहीं होता बल्कि ख़ुशी होती है। जो दुनिया की इस जेल से आज़ाद होकर अपने असली घर आख़िरत में पहुँच गया वह रिहाई पा गया।

बुलंद हिम्मती अल्लाह की मदद की बुनियाद

लेकिन इस क़ैदख़ाने से रिहाई पाने के लिए इंसान को बुलंद हिम्मती से रहना पड़ेगा। अल्लाह तआला बुलंद हिम्मती को पसंद करते हैं। बुलंद हिम्मत इंसान के साथ अल्लाह की मदद होती है बल्कि अल्लाह तआला बुलंद हिम्मत मर्दे मोमिन के साथ होते हैं–

God helps those who helps themselves.

तर्जुमाः ख़ुदा उनकी मदद करता है जो अपनी मदद आप करते हैं।

जब इंसान बुलंद हिम्मती दिखाता है तो फिर बदर में मुठ्ठी भर जमाअत हथियारों से लैस बड़े लश्कर को मिट्टी चटा दिया करती है। सैकड़ों मन वज़नी दरवाज़ा एक नेज़े की नोक से उखड़ जाया करता है। नारे तकबीर की गूँज से क़ैसर व किसरा के बुलंद व बाला क़िले ज़मीन चाटते हैं। जब मर्दे मुजाहिद अल्लाह की मदद के साथ उठता है तो दरियाओं और तूफ़ानी मौजों को रास्ता देना पड़ता है। मेरे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिपाहियों के लिए दरिन्दों को भी जंगल ख़ाली करना पड़ा। हज़रत शिरजील रज़ियल्लाहु अन्हु एक दुबले पतले सहाबी हैं। एक जंग के मौक़े पर एक क़िला कई दिन से फ़तेह नहीं हो रहा था। एक दिन इस मर्द क़लंदर का ईमानी जज़्बा ईमानी जोश में आता है अपना घोड़ा दौड़ाकर अकेले उस क़िले के पास जाते हैं और तीन दफ़ा बुलंद आवाज़ से नारा-ए-तकबीर करते हैं, अल्लाहु अकबर! अल्लाहु अकबर! अल्लाहु अकबर! पूरे का पूरा क़िला ज़मीन बोस हो जाता है। यह क़ल्बी जमियत थी, तअल्लुक़ बिल्लाह, क़ुव्वते ईमानी थी कि क़वी हैकल और नाक़ाबिले तस्ख़ीर क़िला भी

मुजाहिद के नारा-ए-तकबीर के सामने न ठहर सका। जी हाँ ऐसा होता है मगर शर्त यह है कि बंदे की तरफ़ से क़ुव्वते ईमानी के साथ साथ हिम्मत और इरादा भी हो।

ज़िंदगी की मोहलत और सालिकीन की ज़िम्मेदारी

सालिक को चाहिए कि वह पुख़्ता इरादे के साथ कमर कस ले। उसका मक़सदे हक़ीक़ी और महबूबे हक़ीक़ी सामने है अगर महबूब सामने हो तो फिर जान की बाज़ी लगाकर भी उसके क़दमों तक पहुँच जाया करते हैं। महबूब के सामने सुस्ती और देर का क्या मतलब? यह मुनासिब नहीं। दुनिया के महबूबों के साथ यह मामला होता है कि आशिक़ अपनी जान फ़ना होने वाले महबूब के क़दमों पर निछावर कर देता है तो महबूबे हक़ीक़ी जो तमाम हुस्न व जमाल का ख़ालिक़ व मालिक है। उसके साथ इश्क़ व मुहब्बत का अंदाज़ क्या होना चाहिए। ज़िंदगी की थोड़ी सी मोहलत की क़दर कर लें। जिस तरह कोई दरिया को तैरकर पार कर रहा हो तो किनारे के क़रीब आकर वह हाथ पाँव तेज़ी से मारता है चाहे वह थका हुआ हो फिर भी सोचता है कि किनारा तो सामने ही है। इसी तरह सालिक को चाहिए कि वह दरियाए ज़िंदगी के किनारे यानी मौत को सामने समझकर जल्दी-जल्दी हाथ पाँव मार ले। ज़िक्र व इबादत कर ले और अपने महबूब को राज़ी कर ले ताकि मौत के वक़्त निदा आ रही हो–

يَآ اَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُo اَرْجِعِى اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةًo فَادْخُلِى فِى عِبَادِى
وَادْخُلِى جَنَّتِىْo وَ آخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَo

❋ ❋ ❋

اِنَّ اللّٰہَ یُحِبُّ الَّذِیْنَ یُقَاتِلُوْنَ فِیْ
سَبِیْلِہٖ صَفًّا کَاَنَّھُمْ مَرْصُوْصٌ ٥

बेशक अल्लाह तआला मुहब्बत करते हैं उन लोगों से जो लड़ते हैं उसके रास्ते में सफ़ बाँधकर गोया वह सीसा पिलाई हुई दीवार हैं।

सूफ़ियाए किराम और जिहाद

الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بعد.

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ○ سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ

وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ○

सुलूक किसे कहते हैं

सूलक कहते हैं कहते हैं रास्ते को और सालिक कहते हैं इस रास्ते पर चलने वाले को। गोया सालिक वह बंदा है जो अल्लाह तआला के रास्ते पर चल रहा हो जिसकी मंज़िल अल्लाह तआला की रज़ा और अल्लाह की मुलाक़ात हो। सालिकीन अपनी तमन्नाओं का मर्कज़ और धुरी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की ज़ात को बना लेते हैं। उनको इस रास्ते में चलते हुए कुछ रुकावटें आती हैं। सबसे बड़ी रुकावट इंसान की अपनी सुस्ती है। हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद मासूम रह० फ़रमाते हैं कि इसमें मंज़िल तक पहुँचने के लिए सालिक की अपनी सुस्ती के अलावा कोई चीज़ रुकावट नहीं वन सकती।

ज़िंदगी का इंक़लाबी नज़रिया

जिस सालिक के दिल में यह जज़्बा जम जाए कि मैं ने अपने आपको बदलना है, अल्लाह तआला के रंग में अपनी ज़िंदगी को रंगना है, मुहब्बते इलाही से अपने दिल को भरना है तो उसके लिए औराद और वज़ाइफ़ का ऐसा रास्ता तय कर दिया गया है कि जिस पर चलकर वह अपनी मंज़िल पर पहुँच जाएगा। हज़रत ख़्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबंदी बुख़ारी रह० फ़रमाया करते थे कि मैंने अल्लाह रब्बुइज़्ज़त से एक ऐसा तरीक़ा मांगा जो (अल्लाह तआला) से मिलाने वाला है। इस रास्ते पर लाखों इंसान चले, उनके दिल बदले, रातें बदलीं, सुबहें बदलीं, शामें बदलीं, मानों उनकी ज़िंदगी के अंदर एक इंक़लाब आ गया।

आज का कोई सालिक यह समझे कि मुझे बैअत हुए इतना अरसा हो चुका है मगर मुझे अपने अंदर कोई कैफ़ियत और तब्दीली महसूस नहीं हुई तो इसका मतलब यह है कि वह दवा ही इस्तेमाल नहीं कर रहा है या दवा इस्तेमाल कर रहा है तो साथ ही बद परहेज़ी भी कर रहा है। अगर दुनिया के सबसे बड़े डाक्टर से नुस्ख़ा लिखवाकर उसे जेब में डाल लिया जाए तो कभी शिफ़ा नसीब नहीं होगी। अगर वह डाक्टर से शिकायत करे कि फ़ायदा नहीं हुआ तो वह कहेगा कि इसे जेब में डालने की ज़रूरत नहीं बल्कि इसे पेट में डालने की ज़रूरत है। यह कोई ऐसा नुस्ख़ा नहीं जिसे हम और आप पहली दफ़ा इस्तेमाल कर रहे हैं। बल्कि इसे उम्मत के करोड़ों इंसान इस्तेमाल कर चुके हैं और उनकी ज़िंदगियों में इंक़लाबी तब्दीलियाँ ज़ाहिर हो चुकी हैं। लिहाज़ा हमें

चाहिए कि हम इन अवराद व वज़ाइफ़ को पाबंदी से करें ताकि हमारे दिलों में मुहब्बते इलाही की आग रोशन हो। फिर देखना अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इस दुनिया में हमें कैसे माअरिफ़त नसीब फ़रमा देते हैं। ठीक है कि हमारी हिम्मत कम हैं, आज हमारे अंदर जज़्बे की कमी है मगर दिल में तमन्ना तो हो–

सीने में दिले आगाह जो हो कुछ ग़म न करो नाशाद सही
बेदार तो है, मशग़ूल तो है नग़मा न सही फ़रियाद सही

दिल की गिरह कैसे खुलती है?

इमाम रब्बानी मुजद्दिद अलफ़ेसानी फ़रमाते हैं कि तसव्वुफ़ इज़्तिराब (बेक़रारी) का दूसरा नाम है। इज़्तिराब न रहा तो तसव्वुफ़ ख़त्म हो गया। जो आदमी अपने दिल में अल्लाह तआला की मुहब्बत की गर्मी महसूस नहीं करता वह समझ ले कि मुझे अभी तरीक़त से कुछ हासिल नहीं हुआ। यह मुमकिन नहीं है कि अल्लाह वालों के साथ निस्बत भी हो फिर भी उसके दिल मुहब्बत की चिंगारी न भड़के, यह कैसे मुमकिन है? अल्लाह वालों ने ऐसे अवराद व वज़ाइफ़ तय कर दिए हैं कि जैसे ही इंसान सिलसिलाए आलिया में दाख़िल होता है और मुराक़्बा शुरू कर देता है तो अल्लाह तआला उसके दिल की गांठ को खोल देते है।

अल्लाह से मिलने का शार्टकट रास्ता

मशाइख़े उज़्ज़ाम ने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से मिलने के लिए शार्टकट रास्ता इख़्तियार किया है और वह है दिल में मुहब्बते इलाही का भर देना। दिल में जब मुहब्बते इलाही भर जाती है तो फिर इंसान के लिए रास्ते को हमवार कर देती है।

अक़्ल अय्यार है सौ भेस बना लेती है
इश्क़ बेचारा न मुल्ला है न ज़ाहिद न हकीम

अक़्ल को तन्क़ीद से फ़ुर्सत नहीं
इश्क़ पर आमाल की बुनियाद रख

मशाइख़े उज़्ज़ाम इश्क़ के परों से ऐसे उड़ाते हैं, मुहब्बत इलाही का जज़्बा दिल में ऐसा भर देते हैं कि आदमी सारी दुनिया की चीज़ों से कटकर एक अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के साथ वासिल हो जाता है। यह माल और दुनिया की चीज़ों की मुहब्बत बहुत मामूली बातें हैं। अल्लाह वालों के रास्ते में यह मकड़ी के जाले की तरह कमज़ोर बन जाया करती हैं क्योंकि जब दिल के अंदर जज़्बा होता है और इंसान इस जज़्बे से क़दम उठाता है तो फिर इस क़िस्म की रुकावटें दूर हो जाया करती हैं। उसूल की बात भी यही है कि जिस आदमी के दिल में मंज़िल पर पहुँचने की तमन्ना हो तो वह रास्ते में चट्टान देखकर पीछे नहीं हटा करता बल्कि चट्टान पर क़दम रखकर इस रास्ते को पार कर जाया करता है।

अल्लाह वालों का ज़ोहद

अल्लाह वालों की अल्लाह की मुहब्बत की वजह से दुनिया की सब चीज़ें मामूली नज़र आती हैं। वह हर एक से बेनियाज़ होकर एक अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जेह रहते हैं। यक़ीन कीजिए कि दुनिया में मालदार आदमी जब एक दूसरे पर बड़ाई दिखाते हैं तो अल्लाह वालों के नज़दीक यूँही होता है जैसे भंगी अपने पास गंदगी के टोकरे ज़्यादा होने पर नाज़ कर रहे हों। मिसाल के तौर पर अगर कोई भंगी दूसरे भंगी पर फ़ख़्र करे कि मेरे पास गंदगी

के तीन टोकरे हैं और दूसरा कहे नहीं मेरे पास चार टोकरे हैं तो हमें कितना अजीब लगेगा कि यह कौन सी फ़ख्र करने वाली बात है। इसी तरह जिन लोगों के दिलों में मुहब्बते इलाही समा चुकी होती है उनकी नज़र में माल व दौलत पर फ़ख्र करने वालों की हैसियत भंगी से ज़्यादा नहीं होती।

हज़रत मिर्ज़ा अज़हर जाने जानाँ शहीद रह० हमारे सिलसिलाए आलिया नक़्शबंदिया के एक बुज़ुर्ग हैं। एक दफ़ा बादशाहे वक़्त ने उनसे कहा कि मैं बहुत खुश हूँ कि आपने इतने लोगों की इस्लाह फ़रमाई है, मैं चाहता हूँ कि अपनी सलतनत में से एक इलाक़े की गर्वनरी आपके सुपुर्द कर दूँ मगर हज़रत अज़हर जाने जानाँ रह० ने अजीब जवाब दिया। फ़रमाया क़ुरआन पाक में इस पूरी दुनिया को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने क़लील कहा है ﴿قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ﴾ बता दीजिए कि दुनिया की यह मताअ थोड़ी सी है। जब अल्लाह ने इस पूरी दुनिया को थोड़ा कहा है तो इस थोड़ी सी दुनिया में से तुम्हें थोड़ा सा हिस्सा मिला है और इसमें से अगर तुम मुझे थोड़ा सा हिस्सा दोगे तो इतना थोड़ा लेते हुए मुझे शर्म आती है। लिहाज़ा मैं माज़ूर हूँ और मैं आपकी यह पेशकश क़ुबूल नहीं कर सकता।

अल्लाह की मुहब्बत में फ़ना होने का मुक़ाम

दोस्तो! अगर हमें पता चल जाए कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की माअरिफ़त में क्या मज़ा है तो फिर हमें अपने आप पर अफ़सोस होने लगे कि हम उसके मुक़ाबले में दुनिया की चीज़ों को तरजीह देते फिरते हैं। जिसको ज़िक्र में फ़नाइयत नसीब हो जाती है तो फिर मुहब्बते इलाही उसके दिल में ऐसी रच-बस जाती है कि

दुनिया की चीज़ें उसकी नज़र में हेच हो जाया करती हैं। यक़ीन कीजिए कि अल्लाह वालों की नज़र आज़माइश में डालने वाली ज़ुल्फ़ भी गधे की दुम बन जाया करती है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त जिस सालिक को फ़नाइयत का मुक़ाम अता फ़रमाते हैं वह दुनिया की हसीनों की तरफ़ थूकना भी पसंद नहीं करते। जी हाँ! मुहब्बते इलाही दिल में समा चुकी होती है, सीना रोशन हो चुका होता है और दिल में ऐसी आग लग चुकी होती है जो दुनिया से इंसान को बेज़ार कर देती है।

मशाइख़ किराम ने फ़रमाया कि ﴿الفانی لا یرد﴾ जो फ़ानी हो जाता है वह वापस नहीं आता। मतलब यह है कि जिसको एक दफ़ा फ़िना फ़िल्लाह का मुक़ाम नसीब हो जाता है फिर वह उस रास्ते से वापस नहीं हटता। इसकी तश्रीह मशाइख़ किराम ने इस तरह की है कि अगर कोई आदमी बालिग़ हो जाए तो क्या वह दोबारा नाबालिग़ बन सकता है? या अगर फल पक जाए तो क्या वह दोबारा कच्चा हो सकता है? जिस तरह यह नहीं हो सकता उसी तरह फ़ना फ़िल्लाह का मुक़ाम नसीब हो जाने के बाद वह इंसान दुनिया की मुहब्बत की तरफ़ नहीं भाग सकता क्योंकि उसके दिल में मुहब्बते इलाही ऐसी ग़ालिब आ चुकी होती है कि वह अल्लाह के नाम पर अपना माल, अपनी जान बल्कि सब कुछ क़ुर्बान कर दिया करता है।

सैय्यदना अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का अंदाज़े मुहब्बत

सैय्यदना रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा

किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के दिलों में मुहब्बते इलाही का ऐसा जज़्बा भर दिया था कि जब उनको अल्लाह के नाम पर ख़र्च करने का हुक्म दिया जाता तो वह सब कुछ लाकर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दमों में ढेर कर देते थे। ग़ज़वाए तबूक के मौक़े पर जब माली क़ुर्बानी देने का वक़्त आया तो सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने सब कुछ समेट कर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दमों में लाकर रख दिया। यहाँ तक कि दीवारों पर हाथ फेरकर देखा कि कहीं कोई सूई तो नहीं रह गई। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल ने पूछा कि पीछे क्या छोड़ आए हो? बताया कि मैं पीछे अल्लाह और उसके रसूल को छोड़ आया हूँ। अपना लिबास भी दे दिया। उसकी जगह टाट का लिबास पहन लिया। हज़रत शैख़ुल हदीस रह० कहते हैं कि जिस महफ़िल में उन्होंने सब माल की क़ुर्बानी दी उसी महफ़िल में टाट का लिबास पहनकर बैठे थे कि इतने में जिब्राईल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ ले आए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा तो फ़रमाया जिब्राईल! आज तुम किस लिबास में आए हो? तुमने टाट का लिबास क्यों पहना हुआ है। जिब्राईल अलैहिस्सलाम अर्ज़ करने लगे ऐ अल्लाह के नबी! आज अबू बक्र के इस अमल पर अल्लाह तआला इस क़द्र ख़ुश हुए हैं कि आसमान के सब फ़रिश्तों को हुक्म दे दिया है कि तुम भी अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह टाट का लिबास पहन लो। मज़ीद यह कि अल्लाह तआला ने अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ सलाम भेजा है, सुब्हानअल्लाह। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त कितने क़दरदान हैं। हम वाक़ई बेक़दरे हैं। इसीलिए तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया–

﴿وَمَا قَدَرُوْا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ﴾

और उन्होंने अल्लाह की क़दर नहीं कि जैसी करनी चाहिए थी।

मुहब्बत वालों की रातें

पिछले बुज़ुर्गों के हालाते ज़िंदगी में लिखा हुआ है कि वह रात के अंधेरे का इस तरह इंतिज़ार करते थे जिस तरह कोई दुल्हा दुल्हन से मिलने के लिए रात के अंधेरे का मुंतज़िर हुआ करता है। यह इंतिज़ार किस लिए होता था? इसलिए कि हम अल्लाह के साथ बैठकर राज़ व नियाज़ की बातें करेंगे। वह अल्लाह की मुहब्बत में सिसकियाँ ले लेकर रोते थे। आज ऐसे चेहरे बहुत कम नज़र आते हैं जो रात के आख़िरी पहर में उठें और अल्लाह की मुहब्बत में सिसकियाँ ले लेकर रो रहे हों। उनके दिल में मुहब्बते इलाही इतनी रच-बस चुकी हो कि उन्हें यादे इलाही के सिवा और किसी चीज़ के अंदर मज़ा और सुकून ही न आता हो।

आज सालिकीने तरीक़त का यह हाल है कि रात को उठना तो दूर की बात, उनसे अगर पूछा जाता है कि मुराक़बा करते हैं? जवाब मिलता है कि टाइम नहीं मिलता। क्या तहज्जुद पढ़ते हैं? जवाब होता है सुस्ती हो जाती है। याद रखें कि अल्लाह की मुहब्बत हासिल करने के लिए ज़रूरी है कि तहज्जुद में उठने का मामूल बनाया जाए और नफ़्ल पढ़कर मुराक़बा किया जाए। मुराक़बे में बैठते हुए कभी-कभी यह शे'र पढ़ा करें। इस शे'र से ख़ुद ज़ातीतौर पर मुझ बहुत फ़ायदा होता है। मुराक़बे में बैठते वक़्त अगर आदमी एक दो दफ़ा इसे पढ़ ले तो बहुत मज़ा आता है। कहने वाले ने अजीब बात कही–

मुझे अपनी पस्ती की शर्म है तेरी रफ़अतों का ख़्याल है
मगर अपने दिल को मैं क्या करूँ उसे फिर भी शौक़े विसाल है

मुहब्बते इलाही की बरकतें

मेरे दोस्तो! रात के आख़िरी पहर में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर में अपनी जबीन नियाज़ झुकाने की बहुत ज़्यादा बरकतें हैं। रिवायात में आता है कि रोज़े महशर अभी हिसाब-किताब क़ायम नहीं हुआ होगा कि एक गिरोह जन्नत के दरवाज़े पर पहुँचा हुआ होगा। वे रिज़वान से जो कि जन्नत का दारोग़ा है, कहेंगे ऐ रिज़वान! जन्नत के दरवाज़े खोल दे, हमें जन्नत में जाने दे। रिज़वान हैरान होंगे और कहेंगे या अल्लाह! अभी तो हिसाब किताब भी नहीं हुआ और यह लोग जन्नत में जाने का मुतालबा कर रहे हैं। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त फ़रमाएंगे, रिज़वान! ये मेरे वे बंदे हैं जो दुनिया में मेरी मुहब्बत में मस्त रहते थे, ये मेरे लिए उदास रहते थे, रात को मेरे साथ राज़ व नियाज़ की बातें करते थे, इनके पहलू इनके बिस्तरों से जुदा रहे थे, इनको दुनिया की रंगीनियाँ मुझसे ग़ाफ़िल नहीं कर सकती थी। यह हर चीज़ से हट-कटकर मेरे चाहने वाले थे, ये मुझे चाहते थे और मैं इन्हें चाहता था। आज ये यहाँ आए हैं, जन्नत के दरवाज़े खोल दे और इनको बग़ैर हिसाब-किताब के इसमें दाख़िल कर दे।

तसव्वुफ़ पर ऐतिराज़ का जवाब

आजकल लोग तसव्वुफ़ पर ऐतिराज़ करते हैं कि ये लोग मुसल्ले पर बैठे रहते हैं, तस्बीह फेरनी सिखाते हैं, अल्लाह की मुहब्बत का दम तो भरते हैं मगर अल्लाह की राह में जिहाद नहीं

करते। फ़क़ीर ने तसव्वुफ़ की तारीख़ का पिछले दिनों इसलिए मुताला किया कि पता चले कि क्या जिहाद में सूफ़ियाए किराम का कुछ किरदार रहा है या नहीं? यक़ीन कीजिए कि ऐसी ऐसी बातें सामने आयीं कि हैरान हो गया और इस नतीजे पर पहुँचा कि जो क़ोई यह कहता है कि अल्लाह वाले जिहाद नहीं करते वह शख़्स जाहिल है या मुताजाहिल है, गोया उसे इस्लाम की तारीख़ का पता ही नहीं। लिहाज़ा अगर कोई शख़्स यह कहे कि सुफ़िया जिहाद नहीं करते हैं तो आप जवाब दीजिए कि हाँ, अमन की हालत में अपने नफ़्स से जिहाद करते हैं और जब दीने इस्लाम के लिए जानी क़ुर्बानी देने का वक़्त आता है तो फिर उनके हाथ में तस्बीह नहीं होती बल्कि तलवारें होती हैं। फिर वह मुसल्ले पर नहीं बैठते बल्कि घोड़ों की पीठ पर बैठा करते हैं। वह रातों को जागने और भूखा प्यासा रहने के आदी तो होते ही हैं। लिहाज़ा उन अल्लाह वालों के लिए अल्लाह के रास्ते में जान या माल क़ुर्बान करना कोई बड़ी बात नहीं होती। अल्लाह की क़सम! अल्लाह के नाम पर अगर कोई उन्हें सूली पर लटकाए तो यह सूली को बोसा देकर सूली पर चढ़ जाया करते हैं और ज़बाने हाल से कहते हैं—

जान दी दी हुई उसी की थी
हक़ तो यह है कि हक़ अदा न हुआ

तातारी फ़ितने को किसने तोड़ा?

सातवीं सदी हिजरी में जब इल्मे कलाम की ठंडी हवाओं ने मुसलमानों के सीनों को बिल्कुल ठंडा कर दिया था तो उस वक़्त तातारी फ़ितना उठा और हलाकू ख़ान ने इस्लामी सलतनत

मुसलमानों के हाथों से छीन ली। हर जगह उन्होंने मुसलमानों को अपना महकूम बना लिया। ये बे-दीन लोग थे जो तक़रीबन सारे आलमे इस्लाम पर ग़ालिब आ गए। उस वक़्त तमाम मुसलमान गुलाम बन गएं तख़्त व ताज कुफ़्र के हाथों में चला गया। हकूमत उनकी थी, क़ानून उनका था और मुसलमान रिआया बनकर ज़िंदगी गुज़ार रहे थे। उस वक़्त मुसलमान तलवार के साथ मुक़ाबला करने हिम्मत नहीं रखते थे। दिलों में इतनी बुज़दिली आ चुकी थी कि तातारियों ने ज़ब जलालुद्दीन ख़ुवारज़्म शाह की वाहिद इस्लामी हुकूमत का चिराग़ बुझा दिया तो कहावत बन गई :

﴿اذا قيل لك ان التاتار انهزموا فلا تصدق.﴾

अगर कोई कहे कि तातारियों ने मात खाई तो यक़ीन न करना।

उस वक़्त कौन लोग थे जिन्होंने इस डूबती कश्ती को सहारा दिया? यह मशाइख़ सूफ़िया ही थी। कहीं मौलाना रोम रह० ने इस दौर में मसनवी शरीफ़ लिखी और लागों के दिलों को गर्माया और कहीं हज़रत मुहम्मद दरबंदी रह० ने इन्हीं तातारी शहज़ादों के सीनों में तवज्जेहात डालीं। उनके सीनों पर निगाहें गाढ़कर उनके दिल की दुनिया को बदला हत्ताकि तीस साल के बाद उन्हीं शहज़ादों में से एक शहज़ादा कलिमा पढ़कर मुसलमान हुआ। उसके बाद बारी बारी सब शहज़ादे मुसलमान होते चले गए। आख़िरकार वह तख़्त व ताज जो आलम इस्लाम के हाथों से निकल चुका था दोबारा इस्लाम को नसीब हुआ।

यह किसकी बरकत थी? कौन सी तलवार चली? ज़ाहिर की तलवार नहीं चली थी बल्कि क़ल्ब व नज़र की तलवार ने वार

किया था। जिसने उनके सीनों से पार होकर उनके दिलों को बदल दिया था। चुनाँचे वह वक़्त भी आया कि यह तातार ख़ुद इस्लाम का झंडा लेकर पूरी दुनिया में खड़े हुए और सलतनत दोबारा इस्लाम के हाथों में आई। यह उन्हीं मशाइख़ सूफ़िया का फ़ैज़ान था। अल्लामा इक़बाल रह० ने लिखा है :

है अयां आज भी यूरिश तातार के अफ़साने से
पासबां मिल गए काबे को सनम ख़ाने से

यह मशाइख़ सूफ़िया ही थे जिन्होंने सनम ख़ानों से बुतपरस्तों को और ज़ुलमत कदों से इन फ़ितना अंगेज़ लोगों को निकालकर उनके दिलों को गर्माकर उन्हें तौहीद वाला बनाया और इस्लाम का झंडा उनके हाथों में थमाया।

शैख़ अहमद शरीफ़ रह० और उनके मुरीदीन का जिहाद

सहराए आज़म अफ़्रीक़ा में एक ख़ानकाह सुनोसिया थी। इस ख़ानक़ाह में एक बुज़ुर्ग शैख़ अहमद शरीफ़ रह० गुज़रे हैं। जब अफ़्रीक़ा पर इतालवियों ने हमला किया तो उन्होंने अपने मुरीदीन को इकठ्ठा करके फ़रमाया, आज इस्लाम के लिए जान देने का वक़्त है। लिहाज़ा दुश्मन के ख़िलाफ़ सीसा पिलाई हुई दीवार बन जाओ। चुनाँचे उनके मुरीदीन इतालवियों के ख़िलाफ़ जंग लड़ने गए। ज़ाहिरी तौर पर तो वह बे सरो व समान थे मगर उनके दिलों में तवक्कुल और मुहब्बत इलाही का बेश बहा ख़ज़ाना था जिसकी वजह से पंद्रह साल तक उन्होंने अतलावी फ़ौजों को नाकों चने चबवाए। आज लोग उनको ताना देते हैं कि तराबस की जंग

में ख़ानक़ाह सिनोसिया के सर व सामान लोगों ने पंद्रह साल तक तुम्हारा क्या हश्र किया।

अमीर अब्दुल क़ादिर का जिहाद

अल् जज़ाइर में एक शैख़ तरीक़त अब्दुल क़ादिर रह० क़याम पज़ीर थे। सन् 1832 ई० में फ़्राँस ने अल् जज़ाइर पर हमला कर दिया तो वह अपने मुरीदीन को लेकर दुश्मन के सामने सफ़ आरा हो गए। सन् 1847 ई० तक उन्होंने फ़्रांसीसी फ़ौज़ों के साथ जंग की और उनको आराम से न बैठने दिया।

रूस में मशाइख़ सूफ़िया का जिहाद

इमाम मंसूर रह० नक़्शबंदी पहले सूफ़ी शैख़ थे जिन्होंने रूसियों के ख़िलाफ़ जिहाद की शुरूआत की। सन् 1785 ई० में उनके मुरीदों ने दरियाए सूनेज़ा के पुल पर एक रूसीं फ़ौजी दस्ते को घेरकर तबाह कर दिया। रूसी मलिका कैथरीन दोम की फ़ौज को इससे बदतरीन हार का सामना उससे पहले कभी न करना पड़ा था। छः साल की मुसलसल जंग और मुजाहिदीन की बे सर-ओ-सामानी की वजह से इमाम मंसूर रह० क़ैदी बना लिए गए और दो साल बाद व वफ़ात पा गए। उसके बाद तीस बरस तक नक़्शबंदियों की मुजाहिदाना सरगर्मियाँ रुकी रहीं।

शैख़ मुहम्मद आफ़ंदी दूसरे नक़्शबंदी शैख़ थे जिन्होंने रूसियों के ख़िलाफ़ जिहाद का दोबारा आग़ाज़ किया। यह इमाम शामिल रह० के मुर्शिद थे। इस मर्तबा जंग छिड़ी तो पैंतीस साल जारी रही। अगरचे इमाम शामिल रह० को नाकामी का मुँह देखना पड़ा मगर जांबाज़ी की इस मिसाल की मुद्दतों लोगों के दिलों में

महफ़ूज़ रही। इमाम शामिल रह० की हार के बाद सिलसिलाए क़ादरिया के एक शैख़ ने शुमाली क़फ़क़ाज़ में रूसियों के ख़िलाफ़ जिहाद शुरू किया। सन् 1860 ई० की पहली दहाई में रूसी फ़ौज ने उनके ख़िलाफ़ बड़ा आप्रेशन किया। फिर भी सन् 1877 ई० में नक़्शबंदी सूफ़िया और क़ादरी हज़रात ने मिलकर दाग़िस्तान में रूसियों के ख़िलाफ़ जिहाद का झंडा बुलंद किया।

कम्युनिस्ट इंक़लाब और क़फ़क़ाज़ की ख़ानाजंगी को रूसी हुकूमत से निजात पाने का मौक़ा समझते हुए इमाम नज्मुद्दीन रह० ओर शैख़ अज़ून जाजी रह० ने पहले रूस की सफ़ेद फ़ौज और बाद में सुर्ख़ फ़ौज की मुज़ाहमत की शुरूआत की। यह बग़ावत बालशेवकों के लिए सबसे पड़ा ख़तरा साबित हुई। इमाम नज्मुद्दीन रह० ने सन् 1925 ई० तक जिहाद जारी रखा। आख़िरकार गिरफ़्तार हुए और फाँसी के तख़्ते पर लटकाए गए। उनकी नाकामी के बाद शुमाली (उत्तरी) क़फ़क़ाज़ के मुसलमान तवील मुद्दत तक सरकारी सतह पर क़त्ल व ग़ारत गिरी का शिकार रहे मगर सन् 1928 ई० में नक़्शबंदी और क़ादरी हज़रात दोबारा रूसी हुकूमत के ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए और सन् 1940 ई० तक अपनी कार्यवाहियाँ जारी रखीं।

इससे पहले उज़्बेकिस्तान की रियासत फ़रग़ाना में नक़्शबंदी सूफ़ियाए किराम ने रूसी हुकूमत के ख़िलाफ़ जिहाद का ऐलान किया मगर नाकाम रहे। उनके क़ायद ऐशिया मलाली रह० नक़्शबंदी थे। इंक़लाब रूस के एक साल बाद सन् 1918 ई० में फ़रग़ाना की सरज़मीन से एक और तहरीके जिहाद उठी जिसे समाजी तहरीक के नाम से याद किया जाता है। जुनैद ख़ान

नक़्शबंदी रह० उसके क़ायदीन में शामिल थे। सन् 1928 ई० में सुर्ख़ फ़ौज ने तवील कार्यवाहियों के बाद उस पर क़ाबू पा लिया।

क़िस्सा मुख़्तसर बारहवीं और तेहरवीं सदी ईसवी में मशाइख़ सूफ़िया ने फ़राख़ताई और मंगोल काफ़िरों की असरदार रोकथाम की। अठ्ठारहवीं और उन्नीसवीं सदी में वह ज़ारे शाही से लड़ते रहे और सन् 1920 ई० में उन्होंने सोवियत हुकूमत के ख़िलाफ़ जद्दोजहद की। इस सब कुछ के बावजूद अगर कोई कहे कि सूफ़िया जिहाद नहीं करते तो उसे जाहिल मुतजाहिल न कहा जाए तो क्या कहें?

नातक़ा सर ब गिरेबां है उसे क्या कहिए

सैय्यद जमालुद्दीन अफ़ग़ानी का जिहाद

जब अफ़ग़ानिस्तान में जिहाद का मस्अला पेश आया तो सैय्यद जमालुद्दीन अफ़ग़ानी रह० ने दुश्मनों के ख़िलाफ़ हर अव्वल दस्ते के तौर पर काम किया, वे शैख़े तरीक़त ही तो थे।

हिंद व पाक के सूफ़िया का जिहाद में किरदार

हिंदुस्तान में जब अकबरी दीने इलाही की आँधी उठी तो उसके रोकने के लिए सिलसिला आलिया नक़्शबंदिया के इमाम हज़रत मुजद्दिद अलफ़े सानी रह० खड़े हुए जिन्होंने बड़े-बड़े फ़ौजी जरनैलों मसलन शैख़ फ़रीद और ख़ाने ख़ानां के दिलों पर तवज्जोह डालीं और इस आँधी को दुनिया से इस तरह ख़त्म किया कि बिदअत और रस्मों का जनाज़ा निकल गया। गोया रहमत की बारिश बरसी और ﴿يُحْيِي الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا﴾ के मिसदाक़ इस्लाम के अहकाम फिर लागू कर दिए गए।

इस वक़्त मुझे शामली के मैदान का नज़ारा तसव्वुर की आँख से नज़र आ रहा है। हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह०, सैय्यदना ज़ामिन शहीद रह० वग़ैरह हज़रात ने अंग्रेज़ के ख़िलाफ़ जिहाद किया। ये सूफ़िया ही थे। उनके अलावा कहीं शैख़ महमूदुल हसन रह० असीर, माल्टा की जेल में ज़ंजीरें पहने हुए नज़र आते हैं तो कहीं हमें बालाकोट की दीवारों नें सैय्यद अहमद शहीद और सैय्यद इस्माईल शहीद रह० अपने ख़ून से संगरेज़ों को सुर्ख़ करते हुए दिखाई देते हैं। इन हज़रात ने जिहाद में अपनी जान का नज़राना पेश किया। हुस्नुल बिना जिन्होंने अल् इख़्वान की बुनियाद रखी। वह सिलसिलाए शाज़लिया के साहब निस्बत बुज़ुर्ग थे।

सिलसिला आलिया नक़्शबंदिया के शैख़ तरीक़त हज़रत मिर्ज़ा मज़हर जाने जानाँ शहीद रह० ने अपने मुरीदों में ऐसा जज़्बाए जिहाद भर दिया कि एक ख़ातून अपने दो बेटों को मुख़ातिब होकर कहने लगी—

बोली अम्मा मुहम्मद अली की
जान बेटा ख़िलाफ़त पे दे दो

अब बताइए! हज़रत मौलाना अली जौहर रह० और मौलाना शौकत अली रह० के दिलों में जिहाद का जज़्बा किसने भरा था? उन्ही शैख़े तरीक़त ने जिन्होंने ख़ुद भी एक ज़ालिम के हाथों जामे शहादत नोश किया। उनकी क़ब्र मुबारक पर यह शे'र भी लिखा हुआ है—

तर्जुमाः मेरी क़ब्र पर ग़ैब से यह तहरीर पाई गई कि इस मक़्तूल का बेगुनाही के सिवा कोई जुर्म नहीं।

हज़रत मौलाना मुहम्मद अली जौहर रह० मुसलमानों को अंग्रेज़ के पंजे से निजात दिलाने के लिए लंदन तशरीफ़ ले गए ताकि वहाँ अख़बारों के ज़रिए मुसलमानों के जज़्बात अंग्रेज़ों तक पहुँचा सकें। इस दौरान में उन्हें जेल में डाला गया, तरह तरह की तकलीफ़ें दी गयीं। यहाँ तक कि जब अंग्रेज़ ने आपको जान से मार देने की धमकी दी तो आपने ﴾افضل الجهاد من قال كلمة حق عند سلطان جائر.﴿ के मिस्दाक़ कुफ़्र की आँख में आँख डालकर कहा—

तू यूँ ही समझना कि फ़ना मेरे लिए है
पर ग़ैब में सामाने बक़ा मेरे लिए है

पैग़ाम मिला था जो हुसैन इब्ने अली को
ख़ुश हूँ कि वह पैग़ामे क़ज़ा मेरे लिए है

अल्लाह के रस्ते की जो मौत आए मसीहा
इक्सीर यही एक दवा मेरे लिए है

तौहीद तो यह है कि ख़ुदा हश्र में कह दे
यह बंदा दो आलम से ख़फ़ा मेरे लिए है

अल्लाह वाले यूँ शहादत के जज़्बे में मस्त होकर अल्लाह के नाम पर जान की बाज़ी लगा देने को सआदत समझते हैं।

मुहब्बते इलाही कैसे पैदा होती है

मेरे प्यारे दोस्तो! इन मशाइख़े सूफ़िया ने ज़िक्र और राब्ताए शैख़ के ज़रिए ही अपने दिलों में मुहब्बते इलाही पैदा की थी। आज भी इन अवराद व वज़ाईफ़ और राब्ताए शैख़ को क़ीमती सरमाया समझिए। कुछ दिन इसके मुताबिक़ गुज़ारकर देखें कि इंसान के दिल में अल्लाह की मुहब्बत कैसे पैदा होती है।

दो आलम से करती है बेगाना दिल को
अजब चीज़ है लज़्ज़ते आशनाई

यह अक़्ल की बात नहीं बल्कि इश्क़ की बातें हैं। अल्लामा इक़बाल रह० फ़रमाते हैं—

नाला है बुलबुल शोरीदा तेरा ख़ाम अभी
अपने सीने में ज़रा और उसे थाम अभी

पुख़्ता होती है अगर मसलेहत अंदेश हो अक़्ल
इश्क़ हो मसलेहत अंदेश तो है ख़ाम अभी

इश्क़ फ़रमूदा क़ासिद से सुबक गाम अमल
अक़्ल समझी ही नहीं माइनी पैग़ाम अभी

बे ख़तर कूद पड़ा आतिशे नमरूद में इश्क़
अक़्ल है महू तमाशाए लब बाम अभी

अक़्ल बेचारी देखती रह जाती है और इश्क़ क़दम आगे बढ़ा चुका होता है।

इश्क़ की दीवानगी तय कर गई कितने मुक़ाम
अक़्ल जिस मंज़िल पे थी अब तक उसी मंज़िल पे है

कितनी अजीब बात है कि आज मामूली मामूली बातें रास्ते की रुकावटें बनी हुई हैं। कोई अपनी बदनज़री की वजह से पीछे हटा हुआ है। कोई अपने दफ़्तर के ग़लत काम की वजह से पीछे हटा हुआ है। कोई अपने घर के किसी मामले की वजह से पीछे हटा हुआ है। कोई अपनी तबई सुस्ती की वजह से पीछे हटा हुआ है। कितनी मामूली बातें रास्ते की रुकावटें बनी हुई हैं। ऐसे चेहरे बहुत कम हैं जो हर ग़ैर से हट कटकर अल्लाह के चाहने वाले

बन चुके हों। मेरे पीर व मुर्शिद अजीब शे'र पढ़ा करते थे–

हाल दिल जिससे मैं कहता कोई ऐसा न मिला
बुत के बंदे तो मिले अल्लाह का बंदा न मिला

यक़ीनन आज बहुत थोड़े लोग हैं जो अपने पाँव के नीचे नफ़्स को देकर अल्लाह के रास्ते पर क़दम उठा लें और दिल में अहद कर लें कि हम अल्लाह की ख़ातिर हर चीज़ की क़ुर्बानी देने के लिए तैयार हैं।

अल्लाह तआला के दीदार की कैफ़ियत

जन्नत में जन्नती आदमियों को ऐसी हसीन हूरें मिलेंगी कि अगर उनमें से कोई एक हूर अपने दामन को आसमाने दुनिया से नीचे डाल दे तो सूरज की रोशनी मांद पड़ जाए, अगर किसी खारे पानी में थूक डाल दे तो वह मीठा हो जाए अगर किसी मुर्दे से बात करे तो वह मुर्दा ज़िंदा हो जाए। वह ऐसा लिबास पहनेगी जिसमें सत्तर हज़ार रंग झलकते होंगे। जन्नती को उसके दिल उठते हुए जज़्बात नज़र आएंगे। जन्नती जन्नत में दाख़िल होकर हूरों के हुस्न व जमाल को देखेंगे तो वह इतना ज़्यादा होगा कि पाँच सौ साल तक हैरान होकर उनकी तरफ़ मुतावातिर देखते रह जाएंगे और वक़्त गुज़रने का पता भी नहीं चलेगा।

फिर एक वक़्त ऐसा आएगा कि अल्लाह तआला जन्नतियों से फ़रमाएंगे, ऐ अहले जन्नत! मैंने तुम्हारे साथ एक अहद किया था अब वह वादा पूरा करने का वक़्त आ गया। जन्नती हैरान होंगे कि जन्नत मिल गई, हर काम हमारी मर्ज़ी से होता है। आख़िर

वह कौन सी चीज़ है जो नहीं मिली। फिर बताया जाएगा कि मैंने अपने दीदार का वादा किया था। लिहाज़ा जन्नते अदन के अंदर इसके लिए इंतिज़ाम किया जाएगा। जन्नतियों के लिए बाज़ार लगाए जाएंगे। इस बाज़ार के अंदर जन्नती जो शक्ल पसंद करेंगे वही शक्ल बन जाएगी। रेशम के बने हुए अजीब व ग़रीब लिबास होंगे। यह अपने आप को सजाकर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के दीदार के लिए जाएंगे। वहाँ सब से पहले हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला की किताब (क़ुरआन) सुनाएंगे। फिर अल्लाह तआला खुद अपना क़ुरआन पाक सुनाएंगे। इसके बाद अल्लाह अपना दीदार करवाएंगे। कैसा दीदार होगा? अल्लाह का दीदार बे-शुब्हा होगा, बे-मिसाल होगा, बे-कैफ़ होगा, बे-जहत होगा। अल्लाह तआला ही जानते हैं कि उस दीदार की क्या कैफ़ियत होगी। यही कह सकते हैं कि ऐ हुस्न के पैदा करने वाले! तेरे अपने हुस्न का क्या आलम होगा। जब अल्लाह तआला दीदार करवाएंगे तो अनवारात की बारिश होगी और जन्नतियों के चेहरों पर पड़ेगी। जन्नतियों के चेहरों पर इतना हुस्न आ जाएगा कि जब वह लौटकर अपने घरों में आएंगे तो उनकी हुरें उनके हुस्न को देखकर इतनी फ़रेफ़्ता होंगी कि पाँच सौ साल तक उनके हुस्न को देखती रह जाएंगी। जी हाँ ख़ादिम तो ख़ादिम ही होता है मालिक मालिक होता है। यह कहाँ का इंसाफ़ है कि हूरों की ख़ूबसूरती अगर इतनी ज़्यादा है तो अहले जन्नत की ख़ूबसूरती क्या कम होगी? हर्गिज़ नहीं। जब दीदारे इलाही होगा तो जन्नत वालों का हुस्न बढ़ा दिया जाएगा।

अल्लाह तआला को अपनी आरज़ू बना लें

अल्लाह तआला इस नक़्शबंदी इज्तिमा की बरकत से इस बड़े मुक़ाम की बरकत से हज़रत मुर्शिद आलम रह० की बरकत से और ख़ुलफ़ाए किराम के फ़ैज़ान की बरकत से हमें अपनी सच्ची पक्की मुहब्बत अता फ़रमाए, आमीन सुम्मा आमीन।

अल्लाह वह दिल दे कि तेरे इश्क़ का घर हो
दाइमी रहमत की तेरी उस पे नज़र हो
दिल दे कि तेरे इश्क़ में यह हाल हो इसका
महशर का अगर शोर हो तो भी न ख़बर हो

❋ ❋ ❋

हर कोई मस्त मए ज़ौक़ तने आसानी है
तुम मुसलमान हो? यह अंदाज़े मुसलमानी है
हैदरी फ़क्र है न दौलते उस्मानी है
तुम को असलाफ़ से क्या निस्बत रूहानी है

सल्फ़ सालिहीन के सबक़ आमोज़ वाक़िआत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَما بعد.

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا، وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ٥ سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ٥

दो अज़ीम नेमतें

उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने दो नेमतें अता कीं, एक कलामुल्लाह और दूसरे सुन्नते रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, एक इल्मे कामिल दूसरे अमले कामिल। आप ऊँचे अख़्लाक़ वाले थे। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा गया कि नबी अकरम के अख़्लाक़ के बारे में बताएं? फ़रमाया ﴿كان خلقه القرآن﴾ नबी के अख़्लाक़ क़ुरआन हैं। गोया जो क़ुरआन को जिस्मानी शक्ल में देखना चाहे तो वह मेरे महबूब को देख ले। शैख़ुल इस्लाम हज़रत क़ारी मुहम्मद तैय्यब साहब रह० फ़रमाया करते थे क़ुरआन पाक की

अमली तफ़्सीर हयाते नबवी, ज़ात व सिफ़ात की आयतें अक़ाइद नबवी, अहकाम की आयतें आमाले नबवी, मेहर व रहमत की आयतें जमाल नबवी, क़हर व ग़ज़ब की आयतें जलाले नबवी, तवज्जोह इलल्लाह की आयतें फ़नाइयत नबवी, दावत इलल्लाह की आयतें बक़ाइयत नबवी, नफ़ी ग़ैर की आयतें ख़िलवत नबवी और इस्बाते हक़ की आयतें जलवते नबवी। गोया जिस तरह क़ुरआन की इल्मी अजाएबात की कोई इन्तिहा नहीं उसी तरह सुन्नते नबवी के अमली अजाएबात की इन्तिहा नहीं, अल्लाहु अकबर कबीरा।

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की अज़मत

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम नबी कमालात का नमूना हैं क्योंकि उस्ताद के कमालात हमेशा शार्गिदों के ज़रिए ही मालूम होते हैं। हर सहाबी नबुव्वत की दलील बना। इस दुनिया से जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ले गए तो कम व बेश एक लाख चौबीस हज़ार सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम मौजूद थे और इतने ही अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम दुनिया में गुज़रे हैं। उन सहाबा में तीन सौ तेरह (313) बदरी सहाबा और अंबिया अलैहिमुस्सलाम में से जो रसूल गुज़रे वह भी तीन सौ तेरह (313) थे। उन सहाबा में से चार खुलफ़ाए राशिदीन बने जबकि अंबिया किराम में से साहिबे किताब अंबिया भी चार थे तो मालूम हुआ कि जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया से तशरीफ़ ले जाने लगे तो आपने सवा लाख अंबिया किराम के कमालात को सहाबा किराम में मुन्तक़िल कर दिया। इसलिए हर सहाबी किसी न किसी नबी के कमालात का वारिस बना। नबी अकरम

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

﴿اصحابی کالنجوم بایهم اقتدیتم اهتدیتم.﴾

मेरे सहाबा सितारों की मानिन्द हैं तुम उनमें से जिसकी भी पैरवी करोगे हिदायत पा जाओगे।

फ़रमाया :

﴿الصحابة كلهم عدولٌ.﴾

सब के सब सहाबा अदल करने वाले थे।

ये वही हज़रात थे जिनके सरापा के बारे में तौरेत और इन्जील में भी अलामतें आयीं हैं। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने दुनिया ही में उन हज़रात को जन्नत की बशारतें अता फ़रमा दीं। यह ऐसे ही नहीं हुआ बल्कि उनका अल्लाह तआला बाक़ायदा इम्तिहान लिया जिसके बाद उन्हें अपनी रज़ामंदी का परवाना सर्टिफ़िकिट अता फ़रमाया। इर्शादे बारी तआला है :

﴿أُولَٰئِكَ الَّذِينَ امْتَحَنَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ لِلتَّقْوَىٰ﴾

ये वे लोगे हैं जिनका अल्लाह ने इम्तिहान ले लिया। पेपर कौन सा था? फ़रमाया तक़्वे का। फिर परवरदिगार ने ख़ुद नतीजा निकाला :

﴿أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا.﴾

वे पक्के सच्चे मोमिन हैं।

सहाबा किराम का फ़िक़्ही इख़्तिलाफ़ हमारे लिए रहमत है

अब सवाल यह पैदा होता है कि एक ही उस्ताद अपने

शार्गिदों को ट्रेनिंग देता है तो उनके आमाल एक जैसे होने चाहिएं। सहाबा किराम के भी एक ही उस्ताद थे। उनके आमाल में क्यों फ़र्क़ है? हिकमत इसमें यह है कि आमाल के फ़र्क़ का अल्लाह तआला ने हमें फ़ायदा दिया है कि हम अपने सूरते हाल के मुताबिक़ उनमें से किसी एक की पैरवी करें। मिसाल के तौर पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने का हुक्म दिया। अब अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने की चार सूरतें मुमकिन हैं। पहली सूरत यह कि आदमी इश्क़े इलाही में इतना मस्त हो कि जो कुछ हो सब का सब अल्लाह के रास्ते में ख़र्च कर दे। अगर यह सूरत है तो वह हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के नक़्शे क़दम पर है। और अगर कभी यह सूरते हाल होती है कि उसकी ज़िंदगी में तवाज़ुन है यानी दीन व दुनिया दोनों में उसने तवाज़ुन रखा हुआ है तो वह आधा माल अल्लाह की राह में ख़र्च करे और बक़िया आधी अपने घरवालों की ज़रूरियात के लिए रखे। ऐसे शख़्स के लिए हज़रत उमर बिन ख़त्ताब के रास्ते के क़दम मौजूद हैं। तीसरी सूरते यह है कि बाज़ अवक़ात इंसान को अल्लाह तआला इतना ग़नी बना देते हैं कि वह जितना भी ख़र्च करे उसके माल में कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ता। हज़रत उस्माने ग़नी की ज़िंदगी में उन लोगों के लिए निशानियाँ मौजूद हैं। चौथी सूरत यह कि कभी इंसान पर फ़क़्र व फ़ाक़ा का ऐसा मामला होता है कि उसके पास देने के लिए कुछ भी नहीं होता तो सैय्यदना अली रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़िंदगी उसके लिए नूर का मीनारा है क्योंकि उन पर ज़िंदगी कभी ज़कात फ़र्ज़ नहीं हुई, कभी कुछ जमा ही नहीं किया।

अब इन चारों सूरतों में से इंसान जिस हाल में भी हो उसके

लिए सहाबा किराम की ज़िंदगियों में नमूने मौजूद हैं। बस सहाबा किराम के हालात में अल्लाह तआला ने उम्मत के लिए वुसअत पैदा कर दी।

ख़ुलफ़ाए राशिदीन की बुलंदियों की तर्तीब

जो हज़रात ख़ुलफ़ाए राशिदीन बने वे अपने मुक़ाम की बुलन्दियों की तर्तीब से बने। सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर सबसे पहले ख़लीफ़ा हैं और इस्लाम भी सबसे पहले उन्होंने क़ुबूल किया। याद रखिए जब सूरज निकलता है तो उसकी रोशनी सबसे पहले उस इमारत पर पड़ती है जो सबसे बुलंद व बाला होती है। इसी तरह जब नुबव्वत का सूरत उगा तो उसकी रोशनी सबसे पहले उस शख़्सियत पर पड़ी जो उम्मत में सबसे बुलंद व बाला थी।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़राबत और रिश्तेदारी का मैयार सामने रखा जाए तो भी ख़ुलफ़ाए राशिदीन की तर्तीब आसानी से समझ में आ सकती है। शरअन व उरफ़न ससुर का रुत्बा दामाद के मर्तबे से ज़्यादा होता है क्योंकि ससुर बाप की मानिन्द और दामाद बेटे की मानिन्द होता है। सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लाम में पहले दाख़िल हुए और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ससुर भी बने लिहाज़ा पहले ख़लीफ़ा बने। सैय्यदना उस्माने ग़नी और सैय्यदना अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा दोनों दामाद थे मगर उस्मान ग़नी के नसीब में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दो बेटियाँ आयीं। इसलिए ज़िन्नूरैन कहलाए। बस वह तीसरे ख़लीफ़ा बने जबकि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु चौथे ख़लीफ़ा बने।

खुलफ़ाए राशिदीन का तकिया कलाम

सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर का तकिया कलाम *"ला इलाहा इलल्लाह"* था यानी ज़बान पर अक्सर अवक़ात यह अलफ़ाज़ रहते थे। इसकी वजह यह थी मुशाहिदा हक़ में इस क़दर इस्तिग़राक़ नसीब था कि उनकी निगाह अल्लाह के ग़ैर की तरफ़ उठती ही न थी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का तकिया कलाम *"अल्लाहु अकबर"* था गोया नज़र ग़ैर की तरफ़ उठती तो थी मगर तहक़ीक़ की नज़र थी। नज़र पहचानती थी कि यह सब हेच हैं, अज़मतों वाली ज़ात तो सिर्फ़ अल्लाह की है। हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु का तकिया कलाम था *"अलहम्दुलिल्लाह"*। उनको मुक़ामे तहमीद हासिल था गोया अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ तवज्जोह कामिल थी मगर जब कभी ग़ैर की तरफ़ नज़र उठती तो ग़ैर की कमियों पर ही पड़ती थी। सोचते थे कि मख़्लूक़ में तो ऐब हैं और ऐबों से पाक सिर्फ़ एक ही ज़ात है इसलिए बेइख़्तियार ज़बान पर "अलहम्दुलिल्लाह" आ जाता था। और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का तकिया कलाम "सुब्हानल्लाह" था। क्यों? इसलिए उनको मुशाहिदाए हक़ में कमाल तो हासिल था लेकिन अगर मख़्लूक़ की तरफ़ नज़र उठती भी थी तो मख़्लूक़ के कमालात पर पड़ती थी तो वह बेइख़्तियार "सुब्हानअल्लाह" कहते थे कि ऐ कमाल वाले! तू ख़ुद कितनी अज़मतों वाला है कि तूने मख़्लूक़ में भी ऐसी सिफ़ात पैदा कर दी हैं।

सहाबा किराम के दो बेहतरीन अवसाफ़

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम में दो बातें बहुत ख़ास थीं।

एक तो इश्क़े नबवी में उनको कमाल हासिल था और रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इत्तिबा में उनको इन्तिहा का मुक़ाम नसीब था।

सैय्यदना अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का इश्क़े रसूल

जब हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ हिजरत के लिए रवाना हुए तो अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का सारा घराना नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत करने में लग गया। ग़ौर कीजिए कि अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ुद साथ तशरीफ़ ले जा रहे हैं। बीवी से कह दिया कि हमारे लिए खान: बना देना। बेटे से कह दिया कि सरदाराने क़ुरैश की सब बातें रात को हमें पहुँचा देना और ग़ुलाम से कह दिया कि रेवड़ चराने के बहाने दूध पहुँचा देना और बेटी असमा से कह दिया कि तुम्हारी अम्मी खाना बनाएगी तो तुम वह खाना हमें पहुँचा देना। चुनाँचे असमा बिन्ते अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा ग़ारे सौर में खाना पहुँचाती रहीं। हज़रत असमा एक दफ़ा खाना लेकर हाज़िर हुईं तो अल्लाह के महबूब ने देखा कि माथे पर ज़ख़्म का निशान पड़ा हुआ है, मुरझाई हुई सी तबियत है। पूछा असमा क्या हुआ? असमा रज़ियल्लाहु अन्हा कहने लगीं ऐ अल्लाह के महबूब! कल जब मैं खाना देकर वापस जा रही थी तो रास्ते में अबू जहल मिल गया। वह कहने लगा, अबू बक्र की बेटी! तुझे पता होगा कि तेरा बेटा किधर है और जहाँ तेरा बाप होगा वहीं मुसलमानों के पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

होंगे। बता कि क्या तुझे पता है? मैंने कहाँ मुझे पता है। फिर पूछा यह भी पता है कि तुम्हारे पैग़म्बार कहाँ हैं? मैंने कहा हाँ यह भी पता है। जब सच कह दिया तो अबू जहल ने पकड़ लिया और कहने लगा बता कि वे दोनों कहाँ हैं? नहीं बताएगी तो मारूंगा। मैंने कहा नहीं बताती। चुनाँचे मैं डटी रही। उसने अचानक एक ज़ोरदार थप्पड़ मेरे चेहरे पर लगाया। जिसकी वजह से मेरे दाँतों से ख़ून निकल आया। आक़ा! मैं नीचे गिरी, पत्थर पर मेरा माथा लगा और ख़ून निकल आया। उसने मुझे बहुत मारा कि बता दे मगर मैंने उसकी मार बर्दाश्त की। आख़िर मैंने कहा अबू जहल! तेरा जितना जी चाहे तू मुझे मार ले। मेरी जान तो तेरे हवाले मगर मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तेरे हवाले नहीं करूंगी। सैय्यदा असमा की यह बात सुनकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखों में आँसू आ गए और उस वक़्त आपने ये तारीख़ी जुमले इर्शाद फ़रमाए, "अबू बक्र! मैंने दुनिया में सब के एहसानात का बदला दे दिया है लेकिन तेरे एहसान का बदला अल्लाह देगा।"

ग़ारे सौर से आगे चले। रास्ते में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भूख लगती है। खाने की कोई चीज़ नहीं क्योंकि ग़ारे सौर तक तो पीछे से खाना आता था लेकिन आगे कुछ नहीं था। एक जगह एक औरत के पास बकरी थी जो दूध नहीं देती थी। अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु उसके पास पहुँचे और पूछा, क्या मैं इसका दूध निकाल सकता हूँ? उसने कहा कि यह तो दूध नही देती। कहने लगे इजाज़त दे दें। उसने इजाज़त दे दी। यह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मौजिज़ा था कि उसके थनों में दूध आ गया। अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु

दूध लेकर ख़िदमत में हाज़िर हुए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दूध पिया। अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने तारीख़ी जुमला कहा, ﴿فشـــرب حتـــى رضـيـــت﴾ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इतना पिया, इतना पिया यहाँ तक कि मेरा दिल खुश हो गया। सुब्हानअल्लाह! यूँ कहा कि नबी अकरम ने इतना पिया कि मेरा दिल ख़ुश हो गया। यह नहीं कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इतना पिया कि उनका दिल ख़ुश हो गया। यह इश्क़ व मस्ती की बात है।

एक बार अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। अर्ज़ की ऐ अल्लाह के नबी! मुझे अपने वालिद अबू क़हाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के ईमान लाने की इतनी ख़ुशी नहीं हुई जितनी हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के ईमान लाने से हुई। पूछा, वह क्यों? अर्ज़ किया अूब क़हाफ़ा अगरचे मेरे बाप हैं और उनके ईमान लाने से मुझे ख़ुशी हुई मगर हज़रत अब्बास आपके चचा हैं और उनके ईमान लाने से आपको ख़ुशी हुई। मुझे अपनी ख़ुशी से आपकी ख़ुशी ज़्यादा महबूब है।

यह इसलिए था कि अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ निस्बते इत्तिहादी नसीब थी। इसीलिए नबी फ़रमाया,

﴿ما صبّ الله فی صدری الا وقد صببتهٗ فی صدر ابی بکر رضی الله عنه.﴾

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने मेरे सीने में जो डाला मैंने उसे अबू बक्र के सीने में डाल दिया। यह इत्तिबाए कामिल की वजह से था। उसकी दो दलीलें हैं।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु और इत्तिबाए रसूल

अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को इत्तिबाए सुन्नत में कमाल हासिल था यहाँ तक कि उनका सरापा, उनका लिबास, उनकी बातचीत, किरदार हर चीज़ को नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुशाबिहत हासिल थी। यही वजह है कि जब हिजरत के मौक़े पर अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हमराह मदीना तैय्यबा पहुँचे और वहाँ के लोगों ने देखा तो उन्हें दोनों में से यह पहचान करनी मुश्किल हो गई कि अल्लाह के रसूल कौन हैं? सुब्हानअल्लाह इत्तिबा में कैसा कमाल हासिल किया कि लोगों के लिए ताबे और मतबूउ में पहचान करना मुश्किल हो गया।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जब पहली दफ़ा 'वही' नाज़िल हुई तो आप घर तश्रीफ़ लाए और सैय्यदा ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया कि मुझे डर है कि कहीं हलाक न हो जाऊँ। उन्होंने तसल्ली दी और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तीन सिफ़ात गिनवायीं।

﴿انك لتصل الرحم و تكسب المعدوم وتعين على نوائب الحق.﴾

फिर कहा कि अल्लाह आपको हर्गिज़ ज़ाए न करेगा। जब अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात हुई तो किसी ने उनके ग़ुलाम से पूछा कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में अपने तास्सुरात बयान करो। उसने वही तीन सिफ़ात गिनवायीं जो ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने नबी अकरम

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गिनवाई थी। यह निस्बत इत्तिहादी की ठोस दलीलें हैं।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब का इश्क़े रसूल

सैय्यदना हज़रत उमर का दौरे ख़िलाफ़त है। आपने उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा वज़ीफ़ा का ज़्यादा तय किया और अपने बेटे अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का वज़ीफ़ा थोड़ा मुक़र्रर किया हालाँकि वह इल्म व फ़ज़ल में बढ़े हुए थे। एक दिन बेटे ने पूछ लिया अब्बा जान! इसकी वजह क्या है? फ़रमाया ज़ैद और उनके बेटे उसामा को अल्लाह के नबी के साथ तुझसे और तेरे बाप से ज़्यादा क़ुर्ब की निस्बत नसीब थी। इसलिए मैंने उसका वज़ीफ़ा ज़्यादा मुक़र्रर किया है।

सहाबा किराम और इज्तिहाद

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम मिन हैसुल जमाअत तक़्वे व तहारत और ईमान व यक़ीन की बुलन्दियों पर फ़ाएज़ थे फिर भी जो हज़रात इल्म व दानिश और तजूरिबे में मुमताज़ थे, फ़िक़्ही अहकाम के इस्तिंबात का बोझ उन्हीं के कंधों पर था। बस चारों ख़लीफ़ाओं, हज़रत आएशा, हज़रत उम्मे सलमा, हज़रत तल्हा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत साअद बिन अबी वक़्क़ास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रत ज़ैद बिन साबित, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, हज़रत अनस बिन मालिक, हज़रत अबूसईद ख़ुदरी, हज़रत अबू हुरैरह, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस, हज़रत सलमान फ़ारसी, हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़, हज़रत इमरान बिन

हुसैन, हज़रत उबादा बिन सामत, हज़रत माविया बिन अबी सुफ़ियान, हज़रत मुआज़ बिन जबल, हज़रत उबई बिन काब, हज़रत अबू मूसा अशअरी और हज़रत अबू बक्रा सक़फ़ी रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन ये सब मुजतहिद हज़रात थे। इस जमाअत के फ़ैसले पर फ़त्वे दिए जाते थे। मुसन्निफ़ इब्ने अबी शैबा में इस क़िस्म के फ़त्वे मन्क़ूल हैं।

ताबईन रह० का दौर

ताबईन का दौर भी ख़ैर का ज़माना था क्योंकि अल्लाह के महबूब ने ताकीद फ़रमाई थी :

﴿خير القرون قرنی ثم الذین یلونهم ثم الذین یلونهم.﴾

सबसे बेहतर मेरा ज़माना है फिर उन लोगों का जो साथ मिले हुए हैं फिर उनका जो उनके साथ मिले हुए हैं।

ताबईन ने अगरचे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तो न देखा मगर उन हस्तियों को ज़रूर देखा जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देख चुकी थीं। उन्होंने उनसे दीन सीखा। उनसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बातें सुनीं। सहाबा किराम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बातों का ऐसा नक़्शा खींचते थे कि ताबईन यूँ महसूस करते थे। जैसे वह खुद अपनी आँखों से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देख रहे हैं। हदीस पाक में आया है :

﴿طوبیٰ لمن رآنی ومن رای لمن رانی.﴾

मुबारक हो उसको जो जिसने मुझे देखा फिर उसको जिसने

उसको जिसने उन्हें देखा।

मदीना के सात फ़क़ीह

ताबईन मुजतहीदीन में ज़्यादा मशहूर मदीना के सात फ़ुक़्हा थे:

1. अूब बक्र बिन हारिस रह०, 2. सुलेमान बिन यसार रह०,
3. ख़ारजा बिन ज़ैद रह०, 4. क़ासिम बिन मुहम्मद रह०
5. सईद बिन मुसैय्यब रह०, 6. अब्दुल्लाह बिन उत्बा रह०
7. सालिम बिन अब्दुल्लाह रह०।

चारों इमामों का एहसान

फिर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने और बंदे पैदा फ़रमाए जो क़ुरआन और हदीस के हामिल बन गए। इमाम अबू हनीफ़ा रह० सन् 80 हिज्री में पैदा हुए। हज़रत इमाम मालिक रह० सन् 95 हिज्री में पैदा हुए, इमाम शाफ़ई रह० सन् 150 हिजरी में पैदा हुए और इमाम अहमद बिन हंबल रह० 166 हिजरी में पैदा हुए। यह चारों हज़रात इल्म के आफ़ताब व माहताब थे। उन्हीं से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने काम लिया कि उन्होंने क़ुरआन व हदीस को पढ़कर लाखों से ज़्यादा मसाइल निकाले और उम्मत के लिए उसको पकी पकाई खीर बना दिया ताकि आने वाले लोग आसानी से उन पर अमल कर सकें। इन हज़रात का उम्मत पर बड़ा एहसान है।

इमाम अबू हनीफ़ा रह० की तक़लीद सहाबा के ज़माने में

इमाम अबू हनीफ़ा रह० ने सन् 115 हि० से फ़त्वा देना शुरू किया। सन् 120 हि० में अपने उस्ताद के जानशीन बने। उस वक़्त से उनके तक़लीद और इत्तिबा करने वालों में इज़ाफ़ा हो चला गया। साहब इर्शाद सारी ने लिखा है कि हज़रत तारिक़ बिन शहाब बिजली रज़ियल्लाहु अन्हु ने सन् 123 हि० में वफ़ात पाई। इस क़ौल के मुताबिक़ यह कहा जा सकता है कि इमाम अबू हनीफ़ा रह० की तक़लीद सहाबा किराम के दौर से ही शुरू हो गई थी।

मुहद्दिसीन और फ़ुक़्हा के फ़राईज़े मंसबी

फिर एक जमाअत मुहद्दिसीन की बनी जिसने हदीसों को इकठ्ठा किया। उनकी मिसाल मैडिकल स्टोर वालों की मानिन्द थी जिनके पास सारी दवाईयाँ पड़ी होती हैं। मुहद्दिसीन के पास इसी तरह हदीसों का ज़ख़ीरा होता था। फ़ुक़्हा की मिसाल तबीबों की मानिन्द थी। जिस तरह तबीब ही दवाई दे सकते हैं उसी तरह फ़ुक़्हा ही मस्अला बता सकते थे। इमाम तिर्मिज़ी रह० ने 'किताबुल जनाइज़' में लिखा है :

﴿الفقهاء اعلم بمعانی الاحادیث.﴾

कि फ़ुक़्हा ही अहादीस के मानी को बेहतर समझने वाले हैं।

सुलेमान बिन महरान जो रिजाल बुख़ारी में से हैं उन्होंने एक बार इमाम अबू यूसुफ़ रह० से मस्अला पूछा जो उन्होंने बता दिया। सुलेमान बिन महरान बहुत हैरान हुए कि आपने कहाँ से

सीखा। इमाम अबू यूसुफ़ रह० ने कहा, हज़रत आप ही से तो मैंने यह हदीस सुनी है। कहने लगे तेरे माँ और बाप अभी एक बिस्तर पर जमा भी नहीं हुए थे कि उस वक़्त से मुझे यह हदीस याद थी मगर आपके बताने से मैंने यह इस हदीस के मफ़हूम को सही तौर पर समझा। फ़रमाया ﴿نحن الصياد وانتم الاطباء﴾ कि हम तो मेडिकल स्टोर वालों की तरह हैं और इलाज करने वालों की तरह हो। हम ने ये सब हदीसे परख कर अपने पास इकठ्ठी कर रखी हैं मगर किस में से कौन सा फ़ायदा लेना है तो यह काम तुम लोग बेहतर जानते हो।

इमाम आज़म रह० और शजूराए मुहद्दिसीन

यह अजीब बात है कि मुहद्दिसीन का सिलसिला इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रह० पर आख़िर होता है। कुछ मिसालें दे देता हूँ :

1. इमाम अबू हनीफ़ा रह०—इमाम अूब यूसुफ़ रह०—शैख़ याह्याह बिन मुईन मुहद्दिस—इमाम बुख़ारी रह०
2. इमाम अबू हनीफ़ा रह०—इमाम अबू यूसफ़ रह०—शैख़ याह्या बिन मुईन मुहद्दिस रह०—इमाम मुस्लिम रह०।
3. इमाम अबू हनीफ़ा रह०—इमाम अबू यूसफ़ रह०—शैख़ याह्या बिन मुईन मुहद्दिस रह०—इमाम अबू दाऊद रह०—इमाम निसाई रह०।
4. इमाम अबू हनीफ़ा रह०—इमाम अबू यूसफ़ रह०—शैख़ याह्या बिन मुईन मुहद्दिस रह०—अबू याअला मूसली रह० (साहिब मुसनद)
5. इमाम अबू हनीफ़ा रह०—मुहद्दिस अब्दुल्लाह बिन मुबारक

रह०–मुहद्दिस याह्या बिन अक्सम रह०–इमाम तिर्मिज़ी रह०–इमाम इब्ने माजा रह०।

6. इमाम अबू हनीफ़ा रह०–इमाम मुहम्मद रह०–इमाम शाफ़ई रह०–इमाम अहमद बिन हंबल रह०।
7. इमाम अबू हनीफ़ा रह०–शैख़ माद बिन कदाम मुहद्दिस रह०–इमाम बुख़ारी रह०–इमाम इब्ने ख़ुज़ैमा रह०–दार क़ुतनी।
8. इमाम अबू हनीफ़ा रह०–शैख़ माद बिन कदाम मुहद्दिस रह०–इमाम बुख़ारी रह०–इमाम इब्ने ख़ुज़ैमा रह०–हाकिम रह०–इमाम बैहिक़ी रह०।
9. इमाम अबू हनीफ़ा रह०–शैख़ मक्की बिन इब्राहीम मुहद्दिस–शैख़ अूब अवाना रह०–तिबरानी रह०।
10. इमाम अबू हनीफ़ा रह०–शैख़ मक्की बिन इब्राहीम मुहद्दिस–शैख़ अूब अवाना रह०–इब्ने अदी रह०।
11. इमाम अबू हनीफ़ा रह०–शैख़ फ़ज़ल बिन रकीन मुहद्दिस रह०–इमाम दारमी रह०।
12. इमाम अबू हनीफ़ा रह०–शैख़ फ़ज़ल बिन रकीन मुहद्दिस रह०–इमाम ज़हबी रह०।
13. इमाम अबू हनीफ़ा रह०–शैख़ फ़ज़ल बिन रकीन मुहद्दिस रह०–शैख़ इस्हाक़ रह०।

इमाम अबू हनीफ़ा रह० का ख़लीफ़ा मंसूर को लाजवाब करना

इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रह० को अल्लाह तआला ने बड़ा

कमाल अता किया था। उम्मत में ऐसे कमाल दिखाने वाले शायद बहुत ही कम हज़रात गुज़रे होंगे।

एक बार बादशाहे वक़्त ने इमाम अबू हनीफ़ा रह०, इमाम शाबी रह०, इमाम सूरी रह० और एक और फ़क़ीह की गिरफ़्तारी का हुक्म दे दिया। वह चाहता था कि इन चारों में से किसी एक को चीफ़ जस्टिस बनाए लेकिन चारों नहीं बनना चाहते थे। चुनाँचे पुलिस वालों ने उनको गिरफ़्तार कर लिया। रास्ते में जब एक जगह पहुँचे तो जो चौथे फ़क़ीह थे वह बैठे-बैठे इस तरीक़े से उठे जैसे क़ज़ाए हाजत की ज़रूरत हो। पुलिस वाले इंतिज़ार में रहे और वह तो गए तो चले ही गए। यह हीला था। अब बाक़ी तीन रह गए। इमाम अबू हनीफ़ा रह० फ़रमाने लगे मैं क़ाफ़िया लगाऊँ कि होगा क्या? दूसरों ने कहा हाँ लगाएं। कहने लगे मैं वहाँ जाकर ऐसी बात कहूँगा कि ख़लीफ़ा मंसूर के पास उसका जवाब ही नहीं होगा। लिहाज़ा मैं छूट जाऊँगा। इमाम शाबी रह० भी कोई हीला कर लेंगे अलबत्ता सुफ़ियान सूरी फँस जाएंगे। जब तीनों हज़रात को दरबार में पहुँचाया गया तो इमाम शाबी रह० ज़रा आगे बढ़े और जाकर ख़लीफ़ा मंसूर से कहने लगे, ख़लीफ़ा साहब! आपका क्या हाल है? आपके बीवी-बच्चों का क्या हाल है? आपके महल का क्या हाल है? आपके अस्तबल का क्या हाल है? आपके घोड़ों का क्या हाल है? आपके गधों का क्या हाल है? ख़लीफ़ा मंसूर को अजीब लगा कि जिस आदमी को मैं चीफ़ जस्टिस बनाना चाहता हूँ वह सब के सामने मेरे घोड़ों और गधों का हाल पूछ रहा है। दिल में सोचा कि यह शख़्स इस अहम ओहदे के क़ाबिल नहीं है। चुनाँचे इमाम शाबी रह० से कहने लगा

में आपको चीफ़ जस्टिस नहीं बना सकता। इमाम शाबी रह० इस तरह बच गए। फिर ख़लीफ़ा इमाम अबू हनीफ़ा रह० की तरफ़ मुतवज्जेह हुआ और कहने लगा, अबू हनीफ़ा! मैंने आज के बाद आपको चीफ़ जस्टिस बना दिया। इमाम अबू हनीफ़ा रह० आगे बढ़े और फ़रमाया, मैं चीफ़ जस्टिस बनने के क़ाबिल नहीं हूँ। ख़लीफ़ा मंसूर ने कहा, नहीं! नहीं! आप इसके क़ाबिल हैं। इमाम अबू हनीफ़ा रह० ने कहा, ख़लीफ़ा साहब! अब दो बातें हैं। मैंने जो कुछ कहा या तो वह ठीक है या वह ग़लत है। अगर ग़लत है तो झूठ बोलने वाला शख़्स चीफ़ जस्टिस नहीं बन सकता और अगर सच है तो मैं तो कह ही रहा हूँ कि मैं चीफ़ जस्टिस बनने के क़ाबिल नहीं हूँ। अब ख़लीफ़ा हैरान, अगर कहे कि अबू हनीफ़ा! तूने ठीक कहा तो भी इमाम अबू हनीफ़ा रह० छूटते हैं अगर कहे कि तूने ग़लत का तो भी इमाम अबू हनीफ़ा रह० छूटते हैं। इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रह० ने वक़्त के ख़लीफ़ा को भरे दरबार में लाजवाब कर दिया।

इमाम अबू हनीफ़ा रह० का मामला फ़हमी का वाक़िआ

एक दफ़ा दो मियाँ-बीवी आपस में तन्हाई के लम्हात में थे। ख़ाविन्द बात करना चाहता था मगर बीवी कुछ नाराज़-नाराज़ सी थी। यहाँ तक कि ख़ाविन्द ने ग़ुस्से में कह दिया, अल्लाह की क़सम! जब तक तू नहीं बोलेगी तो मैं तेरे साथ नहीं बोलूँगा। जब ख़ाविन्द ने क़सम उठाई तो बीवी ने भी क़सम उठा ली कि अल्लाह की क़सम! जब तक तू पहले नहीं बोलेगा मैं भी नहीं

बोलूँगी। अब वह भी चुप है यह भी चुप है। रात गुज़र गई। सुबह को दिमाग़ ज़रा ठंडे हुए तो सोचने लगे कि कोई तो हल होना चाहिए। चुनाँचे वे सुफ़ियान सूरी रह० के पास गए। उन्हें सारा वाक़िआ सुनाया और पूछा कि अब इसका क्या हल है? फ़रमाया दोनों में जो पहल करेगा वह हानिस बन जाएगा। उस दौर में जो हानिस बन जाता था उसकी गवाही क़ुबूल नहीं की जाती थी क्योंकि वह समाज में ऐतबार के क़ाबिल नहीं रहता था। लिहाज़ा दोनों की ख़्वाहिश थी कि क़सम हमारी न टूटे। अब दोनों परेशान। मियाँ को ख़्याल आया कि इमाम अबू हनीफ़ा रह० से पूछना चाहिए। चुनाँचे उनके पास पहुँचा तो हज़रत ने पूछा कि क्या हुआ? कहने लगा हज़रत! मैं बीवी को बुला रहा था मगर वह बोलती नहीं थी, मानती नहीं थी। मैंने ग़ुस्से में कह दिया कि अल्लाह की क़सम! जब तक तू मुझ से नहीं बोलेगी मैं भी तुझ से नहीं बोलूँगा। वह तो लड़ने के लिए पहले ही तैयार थी, उसने भी क़सम उठा ली कि जब तक तू नहीं बोलेगा मैं भी नहीं बोलूँगी, अब हम फँसे हुए हैं। हज़रत रह० ने फ़रमाया, जाओ तुम उसके साथ बात करो तुम्हारी बीवी है, मियाँ-बीवी बनकर रहो। ख़ाविन्द हँसता मुस्कराता हुआ घर आया और कहने लगा मैडम! क्या हाल है? हैलो, आपकी तबियत ठीक है? बीवी ने कहा बस तू हानिस बन गया। कहने लगा मैं तो हानिस नहीं बना। उसने कहा वह क्यों? कहने लगा मैं इमाम अबू हनीफ़ा रह० से पूछकर आया हूँ। उस दौर में इल्मी लगाव बहुत ज़्यादा था। बीवी कहने लगी, अच्छा मैं जाकर मसूअला पूछती हूँ। मियाँ-बीवी पहले सुफ़ियान सूरी रह० के पास पहुँचे। उनको जाकर बताया तो वह कहने लगे

कि अबू हनीफ़ा तो हराम को हलाल करता फिर रहा है, चलो मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ, उन्होंने कैसे यह मस्अला बता दिया।

जब यह सब इमाम अबू हनीफ़ा रह० के पास पहुँचे तो सुफ़ियान सूरी रह० ने कहा, अबू हनीफ़ा! तुमने हराम को हलाल कैसे कर दिया? इमाम अबू हनीफ़ा रह० मुस्कराकर कहने लगे, हज़रत! मैंने हराम को हलाल नहीं किया, हलाल को हलाल कहा है। आप इनसे सुनें तो सही कि यह क्या कह रहे हैं? हज़रत सुफ़ियान सूरी रह० ने उनसे पूछा कि क्या कह रहे है? इमाम अबू हनीफ़ा रह० ने कहा, हज़रत! पहले ख़ाविन्द ने कहा जब तक नहीं बोलेगी मैं तुझसे नहीं बोलूँगा। इसके जवाब में बीवी ने भी क़सम उठा ली। आप देखें तो सही वे किससे बात करते हुए क़सम उठा रही हैं। ख़ाविन्द ही से तो बात कर रही है। लिहाज़ा ख़ाविन्द की क़सम पूरी हो गई। अब बीवी की क़सम बाक़ी है। इसलिए मैंने ख़ाविन्द से कहा कि जाओ तुम उससे बोलोगे तो उसकी भी क़सम पूरी हो जाएगी। तुम दोनों मियाँ-बीवी बनकर ज़िंदगी गुज़ार दो। सुफ़ियान सूरी रह० इस नुक्ता सुख़्नी और मामला फ़हमी को देखकर हैरान रह गए।

इमाम अबू हनीफ़ा रह० के इल्मी कमालात

एक आदमी इमाम अबू हनीफ़ा रह० के पास आया और आकर एक अजीब ग़रीब सवाल किया। कई आदमी उल्टे-सीधे सवाल करने वाले भी होते हैं। ऐतिराज़ करने वाले तो हर जगह होते ही हैं। अगर अहले इल्म हज़रात ऐतिराज़ करें तो कोई हर्ज नहीं होता जैसे इब्ने शैबा रह० ने एक सौ पच्चीस (125) ऐसे मसाइल लिखे और कहा कि अबू हनीफ़ा रह० ने इन मसाइल में

हदीस के ख़िलाफ़ काम किया है। मगर हमारे उलमा ने मुस्तक़िल किताबें लिख दीं कि जनाब आप समझ ही नहीं पाए कि इमाम अबू हनीफ़ा रह० ने क़ुरआन व हदीस सब को सामने रखकर यह निचोड़ निकाला था? क़ुसूर आपकी अक़्ल का है जो समझने से क़ासिर है।

बहरहाल एक आदमी आकर कहने लगा आप उस आदमी के बारे में क्या कहते हैं जो :

1. बिन देखे गवाही देता हो,
2. यहूद व ईसाईयों की क़ौल की तसदीक़ करता हो
3. अल्लाह तआला की रहमत से दूर भागता हो,
4. मुर्दार खा लेता हो,
5. जिसकी तरफ़ अल्लाह ने बुलाया हो उसकी परवाह न करता हो,
6. जिससे अल्लाह ने डराया हो उसका ख़ौफ़ न करता हो,
7. फ़ितने को महबूब रखता हो।

इमाम अबू हनीफ़ा रह० ने फ़रमाया कि वह आदमी मोमिन है। सवाल करने वाला बड़ा हैरान हुआ। कहने लगा वह कैसे? फ़रमाया, देखो तुमने पहली बात कही कि बिन देखे गवाही देता हो तो मोमिन अपने परवरदिगार की बिन देखे गवाही देता है। दूसरी बात तुमने यह कही कि यहूद व नसारा के क़ौल की तसदीक़ करता हो तो क़ुरआन पाक में आया है कि :

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصَارٰى عَلٰى شَيْءٍ وَقَالَتِ
النَّصَارٰى لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى شَيْءٍ

तो मोमिन उन दोनों के इस क़ौल की तसदीक़ करता है। कहने लगा यह भी ठीक है। फ़रमाया तीसरी बात यह थी कि अल्लाह की रहमत दूर भागता है। देखो बारिश अल्लाह की रहमत है और बारिश तो हर बंदा भागता है कि कहीं कपड़े न भीग जाएं। वह कहने लगा यह भी ठीक है। चौथी बात यह थी कि मुर्दार खाता है तो मछली मुर्दा होती है, उसको तो हर बंदा मज़े ले लेकर खाता है। उसने कहा ठीक है। पाँचवी बात यह कि जिसकी तरफ़ अल्लाह तआला ने बुलाया है उसकी तरफ़ रग़बत नहीं करता। बस वह जन्नत है कि अल्लाह तआला ने उसकी तरफ़ बुलाया है ﴿وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلَامِ﴾ मगर उसको हक़ का मुशाहिदा इतना मतलूब है, अल्लाह की रज़ा इतनी मतलूब है कि महबूबे हक़ीक़ी की तरफ़ से नज़र हटाकर वह जन्नत की तरफ़ नज़र डालना कभी पसंद ही नहीं करता। छठी बात यह है कि जिससे अल्लाह ने डराया है, उससे वह डरता नहीं तो वह दोज़ख़ है। उसको अपने महबूब की नाराज़गी की इतनी फ़िक्र होती है कि अब उसे जहन्नम में जलने की वजह की परवाह नहीं होती। सातवीं बात यह है कि उसे फ़ित्ना महबूब है। बस औलाद को क़ुरआन में फ़रमाया ﴿اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ﴾ और औलाद से हर आदमी को तबई मुहब्बत होती है। बस वह शख़्स मोमिन है। सवाल पूछने वाला शख़्स हैरान रह गया ﴿فَبُهِتَ الَّذِىْ كَفَرَ﴾।

अजीब सवाल का हैरान करने वाला जवाब

इसी तरह एक और आदमी हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रह० के पास आया और कहने लगा कि मैंने सुना है कि आप हर सवाल

का जवाब देते हैं। फ़रमाया कि तुम भी पूछो। कहने लगा कि आप यह बताएं कि पाख़ाना मीठा होता है या नमकीन? आपने फ़रमाया मीठा होता है। कहने लगा आपके पास इसकी दलील क्या है? फ़रमाया कि मक्खियाँ नमकीन चीज़ पर नहीं बैठतीं, हमेशा मीठी चीज़ पर बैठती हैं।

इमाम मालिक रह० का इश्क़ नबवी

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इमाम मालिक रह० को इश्क़े नबवी में कमाल अता फ़रमाया था। मदीना तैय्यबा में चलते थे तो जूता नहीं पहनते थे। यहाँ तक कि घोड़े पर सवार नहीं होते थे और फ़रमाते थे कि मालिक को यह बात नहीं सजती कि वह उस जगह को अपने घोड़ों के सुमों से पामाल करे जिस जगह पर मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चलते रहो हों। जब रास्ता चलते थे तो रास्ते के किनारे पर चलते थे कि कहीं मेरे महबूब के क़दम शरीफ़ पर मेरे क़दम न पड़ जाएं और मालिक से कहीं बे अदबी न हो जाए। पूरी ज़िंदगी मदीना तैय्यबा में गुज़ारी लेकिन सिर्फ़ एक दफ़ा हज किया। क्यों? इसलिए कि कहीं महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दयार से बाहर मौत न हो जाए।

इमाम शाफ़ई रह० का मुक़ाम

इमाम शाफ़ई रह० को अल्लाह तआला ने कितना बुलंद मुक़ाम अता फ़रमाया था। एक बार मामूली से कपड़े पहने हुए थे। उसी हालत में नाई के पास बाल कटवाने पहुँच गए। चुनाँचे उसने दूर ही से कह दिया कि मेरे पास वक़्त नहीं है। हज़रत समझ गए। गुलाम से पूछा कि तुम्हारे पास कुछ दीनार हैं? उसने

कहा जी हाँ थैली भरी हुई है। फ़रमाया कि यह सारी थैली उसको दे दो। थैली भी दे दी और उससे कहा कि मैं तुझ से बाल भी नहीं कटवाता। बाहर निकलकर तारीख़ी शे'र इर्शाद फ़रमाया।

तर्जुमा : कि मेरे ऊपर ऐसे कपड़े हैं कि अगर उन तमाम कपड़ों को पैसों के बदले बेच दिया जाए तो एक दिरहम भी उन कपड़ों की क़ीमत से ज़्यादा हो जाए मगर इन कपड़ों में एक ऐसी जान है कि अगर तुम सारी दुनिया में ढूँढकर देखो तो तुम्हें इस वक़्त ऐसी जान नज़र नहीं आएगी।

इमाम अहमद बिन हंबल रह० की इस्तिक़ामत

इमाम अहमद बिन हंबल रह० इस्तिक़ामत के पहाड़ थे। मस्अला ख़ल्क़ क़ुरआन में उन पर इतने कोड़े लगाए गए कि अगर हाथी पर लगाए जाते तो वह भी बिलबिला उठता। मगर जब इमाम अहमद बिन हंबल रह० पर लग रहे हैं तो ज़बान से सिर्फ़ अल्लाह का ज़िक्र जारी था। तकलीफ़ की वजह से कराहने की आवाज़ भी नहीं आ रही थी।

रिज़्क़े हलाल के अनवारात

इमाम अहमद बिन हंबल रह० एक दफ़ा इमाम शाफ़ई रह० के घर पहुँचे। इमाम शाफ़ई रह० ने अपनी बेटियों को बताया कि एक बड़े आलिम आ रहे हैं, उनके लिए अच्छा खाना तैयार करो। चुनाँचे बेटों ने अच्छा खाना बनाकर कमरे में रख दिया। रात को तहज्जुद के लिए मुसल्ला भी रख दिया और वुज़ू के लिए लोटा भी रख दिया। इमाम अहमद बिन हंबल रह० तशरीफ़ लाए, खाना खाया और लेट गए। सुबह उठे तो नमाज़े फ़ज्र के लिए मस्जिद में

तश्रीफ़ ले गए। बच्चियाँ कमरे में सफ़ाई के लिए आयीं तो देखा कि बर्तन में जो दो तीन आदमियों का खाना रखा था वह सारा ही ख़त्म हो चुका था, मुसल्ला जैसा रखा था वैसा ही पड़ा है, पानी जैसा भरा था वैसे ही मौजूद है। यह देखकर बड़ी हैरान हुईं कि इनकी तारीफ़ तो बहुत सुनी थी मगर यह तो बड़े खाने वाले निकले। तहज्जुद भी नहीं पड़ी और सुबह भी बे-वुज़ू ही चले गए।

जब इमाम शाफ़ई रह० घर आए तो बेटी ने सारी बात कह सुनाई। सच्चे लोग थे। इमाम शाफ़ई रह० ने इमाम अहमद बिन हंबल रह० को सूरते हाल बताई कि मेरी बेटी तो यह पूछ रही है। कहने लगे, हज़रत! जब मैंने पहला लुक़्मा खाया तो मुझे अपने सीने मे नूर नज़र आया। हर लुक़्में में मेरे सीने का नूर बढ़ रहा था। मैंने कहा मालूम नहीं ज़िंदगी में इतना हलाल और पाक रिज़्क़ फिर मुझें नसीब होगा या नहीं क्यों न इस खाने को अपने जिस्म का हिस्सा बना लिया जाए। मैंने इसलिए ख़ूब पेट भरकर खाना खाया। फिर मैं बिस्तर पर सोने के लिए लेटा तो मेरे सीने में नूर इतना था कि मैं क़ुरआन की आयतों और नबी की हदीसों में ग़ौर व फ़िक्र और तदब्बुर करता रहा हत्ताकि कि इसी तरह सुबह का वक़्त हो गया। दर्मियान में ख़्याल तो आया कि तहज्जुद पढ़ लूँ मगर मैंने कहा कि इल्म का एक बात सीखना हज़ार रक्अत नफ़्ल पढ़ने से ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता है। लिहाज़ा मैं इसी इल्मी सोच विचार में मशग़ूल रहा। सुबह जब आए तो मैं फ़ज्र पढ़ने चला गया। न मेरा वुज़ू टूटा और न ही मुझे वुज़ू करने की ज़रूरत पेश आई। इसलिए मैंने इशा के वुज़ू से जाकर सुबह की नमाज़ पढ़ ली।

फ़िक़ह हनफ़ी का ऐजाज़

उम्मते मुस्लिमा को अल्लाह तआला ने चार फ़िक़्हें अता फ़रमायीं। उनमें से फ़िक़ह हनफ़ी वह फ़िक़ह है जिसको मुसलमान मुमालिक के अंदर क़ानून की हैसियत से लागू होने का शर्फ़ हासिल रहा है। जब ख़िलाफ़ते उस्मानिया का दौर था तो मुल्क का क़ानून फ़िक़ह हनफ़ी के मुताबिक़ इस्लामी शरियत था। और जब पाकिस्तान व हिंदुस्तान में मुग़ल बादशाहों का दौर था उस वक़्त भी बर्रे सग़ीर (हिंद व पाक) में भी हुकूमत की तरफ़ से फ़िक़ह हनफ़िया लागू थी। यह ऐज़ाज़ सिर्फ़ फ़िक़ह हनफ़ी को हासिल रहा। और अल्लाह का शुक्र है, आज आप देखिए कि पाकिस्तान, हिंदुस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, बंगलादेश, तुर्की, उज़्बेकिस्तान, तुर्कमानिस्तान, आज़रबाई जान, क़ज़ाकिस्तान, शैकरिस्तान, ततारिस्तान, रशिया, यूकराईन, ईराक़, शाम और तुर्की में फ़िक़ह हनफ़ी पर अमल करने वालों की अक्सरियत है। ग़ौर कीजिए कि यह आधी दुनिया से ज़्यादा इलाक़ा बनता है।

उम्मते मुस्लिमा की कमज़ोरी की बुनियादी वजह

इन चारों फ़िक़्हों के इमामों ने इल्म पर इतना काम किया कि अल्लाह की मख़्लूक़ ख़ुदा के इल्म से फ़ैज़याब होती रही। एक-एक आलिम के दर्स में हज़ारों तादाद में लोग होते थे। मगर हुआ यह कि जब दुनिया वालों ने देखा कि इन उलमा की बहुत इज़्ज़त की जाती है और वक़्त के बादशाह अदब से इनके सामने खड़े होते हैं तो वे दुनियादार लोग भी किताबें पढ़ने लग गए और किताबें पढ़ने के बाद दरबारी मुल्ला बन गए। उन दरबारी

मुल्लाओं ने आपस में मुनाज़रे करने शुरू कर दिए। दलीलें चलती रहीं। वक़्त के साथ-साथ उलमाए किराम का ज़्यादतर वक़्त आपस के बहस मुबाहिसे और मुनाज़रों की भेंट चढ़ने लगा। चुनाँचे एक वक़्त वह भी आया जब आम लोग उनकी बातों को सुनते थे मगर उनके दिल मुतवज्जेह नहीं होते थे। इस तरह उम्मते मुस्लिमा के जोड़ में दरारें पड़नी शुरू हो गयीं।

तातारी फ़ित्ने में मुसलमानों का नुक़सान

अब ऐसे फ़ित्ने व इन्तिशार के वक़्त में काफ़िरों ने मुसलमानों पर शबे ख़ून मारा। सातवीं सदी हिज्री में तातारी फ़ित्ना उठा और उसने मुसलमानों के हाथ से हुकूमत छीन ली। बग़दाद में एक दिन में ढाई लाख मुसलमानों को ज़िब्ह किया गया। गंदे की नालियों में मुसलमानों का ख़ून बह रहा था।

इमाम औज़ाई रह० अपनी किताब में लिखते हैं कि जब तातारियों ने बग़दाद पर क़ब्ज़ा कर लिया तो उन्होंने मुसलमानों की किताबों से दरियाए दजला के ऊपर पुल बाँधा था। अंग्रेज़ों ने भी जब उन्दलुस को जीतीं तो उन्होंने मुसलमानों की किताबों को ज़ाए करना शुरू किया। आप हैरान होंगे कि किताबों के इतने ज़ख़ीरे थे कि उनको ज़ाए करने में चालीस साल लगे। यह दीने इस्लाम को शर्फ़ हासिल है कि जितनी किताबें इस दीन पर लिखी गयीं उतनी किताबें किसी और दीन पर नहीं लिखी गयीं। तसनीफ़ व तालीफ़ को अल्लाह तआला ने इस दीन की ख़ुसूसियत बना दिया है।

- शम्सुल अइम्मा इमाम सरख़्सी रह० कुँए में नज़र बंद रहे।

शार्गिद ऊपर मुंडेर पर बैठे हुए हैं और यह इमाम मुहम्मद रह० की किताब की 'मबसूत' की शरह लिखवा रहे हैं। 'मबसूत' की शरह तीस जिल्दों में लिखी गई। वह शरह आज भी उलमा किराम पढ़ रहे हैं।

- इमाम हसन बिन मंदा रह० ने मरते वक़्त हदीस की किताबों के चालीस संदूक़ छोड़े जो उनके अपने हाथों से लिखी हुई किताबें थीं।
- हाफ़िज़ अबुल क़ासिम सुलेमान बिन अहमद तिबरानी रह० साहब मुआजिम सलासा हदीस की तलब में तैंतीस साल घूमते फिरते रहे और एक हज़ार मशाइख़ से इल्म हासिल किया।
- अबू हातिम राज़ी रह० ने खुद बयान किया कि इल्मे हदीस को हासिल करने नौ हज़ार मील पैदल चले।
- इब्ने मुक़री रह० ने एक नुस्ख़ा 'इब्ने फ़ुज़ाला' की ख़ातिर 840 मील का सफ़र किया।
- हाफ़िज़ अबू अब्दुल्लाह असफ़हानी रह० ने हदीस की तलब के लिए 120 मुक़ामात का सफ़र किया।
- शैख़ इब्ने जौज़ी रह० ने मिंबर पर कहा कि मैंने अपनी उंगलियों से दो हज़ार जिल्दें लिखीं। उनकी वसीयत के मुताबिक़ उनकी क़लमों के तराशों से गुस्ल का पानी गर्म किया गया।
- इमाम अदब सालब रह० नक़ल करते हैं कि बराबर पचास बरस से इब्राहीम हर्बी की हर महफ़िले अदब में मौजूद पाता हूँ।

- इमाम राज़ी रह० ने फ़रमाया, "अल्लाह की क़सम मुझे खाने के वक़्त इल्मी मशाग़िल के छूट जाने का अफ़सोस होता है क्योंकि वक़्त मुझे बहुत है।"
- इमाम ग़ज़ाली रह० की तालीक़ात जो उन्होंने अबू नसर इस्माईल से लिखी थीं लुट गयीं। आप ने डाकुओं के सरदार से वापस मांगी। वह हँसा कि तुमने ख़ाक समझा। एक काग़ज़ न रहा तो तुम कोरे हो गए। तालीक़ात तो उसने आपको दे दें मगर आप मुतावातिर तीन बरस तक मसाइल याद करते रहे और हाफ़िज़ बन गए।
- क़रतबी से मंक़ूल है कि इमाम शातबी रह० ने जब क़सीदा शातबिया लिखा तो उसे साथ लेकर बैतुल्लाह शरीफ़ के बारह हज़ार तवाफ़ किए। जब दुआ के मुक़ामात पर पहुँचते तो कहते :

  तर्जुमाः ऐ आसमान व ज़मीन के बनाने वाले, हाज़िर और ग़ैब के जानने वाले, इस घर के परवरदिगार जो इस किताब को पढ़े उसे फ़ायदा अता फ़रमा।

- औरतें भी इल्मी कारनामों में पीछे नहीं रहीं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने औरतों की मजलिस के लिए दिन मुक़र्रर फ़रमाया था। शिफ़ा अदविया को तय फ़रमाया कि उम्मुल मोमिनीन हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा को लिखाई सिखाई। पुराने बुज़ुर्गों में क़ाज़ी ईसा अपनी बेटियों को रोज़ाना अस्र के बाद किताबें पढ़ाते थे। चुनाँचे बाज़ औरतें मुहद्दिसा बनीं। करीमा मरूज़िया और सैय्यदा नफ़ीसा बिन्ते मुहम्मद बहुत मशहूर हैं। हाफ़िज़ इब्ने असाकर ने अस्सी

औरतों से बचपन में हदीस पढ़ी। सैय्यदा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा के इल्मी कमालात किसी से छिपे हुए नहीं।

- मशाइख़ उज़्ज़ाम ने भी दीन के ज़िंदा करने के लिए ख़ूब क़ुर्बानियाँ दीं।

तातारी फ़ितने का तोड़

तातारियों के इस फ़ित्ने के दौर में जब तख़्त व ताज मुसलमानों के हाथ से छिन गया तो ख़ानक़ाहों में बैठकर अल्लाह अल्लाह सिखाने वाले मशाइख़ ने देखा कि अब उलमा को मदद की ज़रूरत है चुनाँचे मशाइख़ उज़्ज़ाम काफ़िरों के मुक़ाबले में निकल आए। उस वक़्त इमामों में से इमाम ज़ैली रह०, इमाम तैमिया रह० और उनके शार्गिद इब्ने क़य्यिम रह० और तक़िउद्दीन सबकी रह० ज़िंदा थे मगर फिर भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने मशाइख़ से काम लिया। उस नाज़ुक दौर में ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन अत्तार रह० ने अपनी किताब 'तज़्किरातुल औलिया' से मुसलमानों के दिलों को मुनव्वर किया। मौलाना रोम रह० ने मसनवी शरीफ़ लिखकर ग़ाफ़िल दिलों को जगाया और मुहब्बते इलाही से गरमाया। कुछ मशाइख़ ने तातारी शहज़ादों के दिलों पर मेहनत करना शुरू कर दी। जिनमें हज़रत ख़्वाजा अहमद दरबंदी रह० ख़ासतौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं।

जब तातारी शहज़ादे दरबंद शरीफ़ पहुँचे तो सारे मुसलमान शहर को ख़ाली करके चले गए। शहज़ादे ने पूछा, शहर में कोई मुसलमान तो नहीं बचा? सिपाहियों ने बताया कि एक मस्जिद में दो आदमी बैठे हुए हैं। कहने लगा गिरफ़्तार करके पेश करो।

लिहाज़ा ख़्वाजा अहमद दरबंदी रह० और उनके शार्गिद को हथकड़ियाँ लगाकर पेश किया गया। शहज़ादे ने कहा कि आपको पता नहीं चला कि मैं यहाँ दाख़िल हो रहा हूँ, सब चले गए तुम क्यों नहीं गए? वह कहने लगे हम अल्लाह के घर में बैठे थे क्यों निकलते? कहने लगा तुम्हें पता नहीं आज तुम मेरी हिरासत में हो। उन्होंने कहा अल्लाह तआला चाहे तो हमें आज़ाद करवा सकता है। शहज़ादे ने पूछा कैसे? उन्होंने ज़ोर से कहा, 'अल्लाह'। अल्लाह का लफ़्ज़ कहना था कि ज़ंजीरें टूटकर गिर पड़ीं। तातारी शहज़ादे के दिल पर ख़ौफ़ तारी हो गया। कहने लगा अच्छा मैं आप को माफ़ करता हूँ। हज़रत रह० को आज़ाद कर दिया। बाद में भी मौक़े-मौक़े से शहज़ादा हज़रत से मिलता रहा। हज़रत उसके दिल पर तवज्जेह डालते रहे। यहाँ तक कि तीस साल के बाद एक वक़्त वह भी आया कि वह शहज़ादा वक़्त का बादशाह बना और हज़रत के फ़ैज़ाने सोहबत से मुसलमान हो गया और अल्लाह तआला ने सलतनत फिर मुसलमानों के हाथों में दे दी। अल्लामा इक़बाल रह० ने कहा—

है अयां आज भी यूरिश तातार के अफ़साने से
पासबां मिल गए काबे को सनम ख़ाने से

हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० के कारनामे

अकबरी दौर में अबुल फ़ज़ल और फ़ैज़ी जैसे दरबारी मुल्लाओं ने ताज़ीमी सज्दे के जाएज़ होने के फ़तवे दिए। दीने इलाही के नाम पर बादशाहे वक़्त की ख़्वाहिश की पैरवी होने लगी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नूरानी सुन्नतों की जगह बिदअतों

की ज़ुलमत आम होने लग गई तो मुजद्दिद अलफ़े सानी रह० शिर्क व बिदअत के सफ़ाए के लिए मैदान में उतरे। आपने दो साल ग्वालियर के क़िले में ज़जीरों में क़ैद रहकर क़ैद व बंद की परेशानियाँ बर्दाश्त कीं। मगर दीन के ज़िंदा करने के लिए आपकी रगे फ़ारूक़ी फड़कती रही यहाँ तक कि आपकी सोहबत के फ़ैज़ पाने वाले सयादत पनाह शैख़ फ़रीद और ख़ान ख़ानां जैसे जरनैल दीनी रंग में रंगे गए। इन हज़रात की कोशिशों से अकबर बादशाह का दिमाग़ ठिकाने लगा। चुनाँचे अकबर बादशाह इस बात पर मजबूर हो गया कि शरियत के ख़िलाफ़ कामों को बंद करावाए। अल्लाह का शुक्र कि दीने इलाही की तारपोर बिखर गई और अल्लाह तआला ने हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी बिखर गई और अल्लाह तआला ने हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० के ज़रिए शिर्क व बिदअत का सफ़ाया करवाया और छुटी हुई सुन्नतों का नए सिरे से ज़िंदा करवाया। इसीलिए जहाँगीर की ज़िंदगी में दीनी रंग पैदा हुआ और आख़िरकार औरंगज़ेब आलमगीर रह० जैसा मुत्तक़ी और परहेज़गार बादशाह तख़्त व ताज का वारिस बना।

शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० की ख़िदमात

हिंद व पाक में दीन की इशाअत कें लिए बहुत काम किया गया। क़ुरआन के तर्जुमे किए गए, तफ़्सीरें लिखी गयीं। हज़रत शाह वलिउल्लाह ने उसूल तफ़्सीर की किताब 'अल् फ़ौज़ुल कबीर' तसनीफ़ फ़रमाई। उनके बेटे शाह अब्दुल क़ादिर रह० ने क़ुरआन पाक का उर्दू ज़बान में इल्हामी तर्जुमा किया। मिसाल के तौर पर

एक आयत है ﴿لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ﴾ दूसरे मुफ़स्सिरीन हज़रात ने लिखा, "हिफ़ाज़त करते हैं अपनी शर्मगाहों की।" और शाह अब्दुल क़ादिर रह० ने इसका तर्जुमा लिखा है, "जो थामते हैं अपनी शर्मगाहों को।" अब दोनों में फ़र्क़ देखिए शर्मगाह की हिफ़ाज़त करना और चीज़ है और शर्मगाह को थामना और चीज़ है यानी जब जज़्बात उभरते हैं तो हिफ़ाज़त का लफ़्ज़ सही मफ़हूम अदा नहीं करता बल्कि वहाँ अपने जज़्बात को थामने का लफ़्ज़ काम देता है। और एक आयत में फ़रमाया गया ﴿أَوْ لَمَسْتُمُ النِّسَاءَ﴾ दूसरे मुफ़स्सिरीन ने इसका तर्जुमा किया कि "या तुम मस करो औरतों को।" मस करना किसी क़दर मुश्किल लफ़्ज़ है और शाह अब्दुल क़ादिर रह० ने तर्जुमा किया, "या तुम लगो औरतों को।" इतने आसान लफ़्ज़ों में तर्जुमा किया कि मस्अला अपने आप समझ में आ गया।

शाह वलिउल्लाह रह० के ख़ानदान में इल्म का शौक़

हज़रत शाह वलिउल्लाह रह० के बेटे शाह अब्दुल अज़ीज़ रह० ने उर्दू ज़बान क़ुरआन पाक की तफ़्सीर लिखी। एक बार पढ़ते हुए शाह अब्दुल अज़ीज़ रह० ने पानी मांगा। शाह वलिउल्लाह रह० को पता चला तो फ़रमाने लग कि अफ़सोस! आज इल्म हमारे ख़ानदान से रुख़्सत हो गया कि मेरे बेटे ने पढ़ते के वक़्त पानी मांगा। बीवी ने कहा हज़रत सब्र तो करें। उसने पानी भेजने के बजाए सिरका मिलाकर भेज दिया। शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब रह० इतने मशग़ूल थे और प्यास कि ज़्यादती की वजह से बेताबी

इतनी थी कि सिरका पी लिया और पता ही न चला कि मैं सिरका पी रहा हूँ या पानी पी रहा हूँ। जब बीवी ने बताया कि उसका तो यह हाल है तो फ़रमाया अल्लाह का शुक्र है कि हमारे ख़ानदान में अभी इल्म बाक़ी है। इसी वजह से अल्लाह तआला ने इन हज़रात को बातिनी नेमतें अता फ़रमा दी थीं। खुद शाह वलिउल्लाह रह० को इल्म व अदब की वजह से इतना रौब हासिल था कि मुग़लिया ख़ानदान के शहज़ादों को मिंबर पर खड़े होकर "मुग़लिया ख़ानदाना वालो! वलिउल्लाह के सीने में अल्लाह ने एक मोती रखा है अगर तुम्हारे ख़ज़ाने में इतना क़ीमती मोती है तो मुझे लाकर दिखाओ। तुम सारी दुनिया के ख़ज़ानों को भी इकठ्ठा कर लो तो मुझे वह मोती लाकर नहीं दिखा सकते।"

शाह अब्दुल अज़ीज़ रह० ने भी कमाल वाले शार्गिद तैयार किए, जैसे शाह इस्माईल शहीद रह० और सैय्यद अहमद शहीद रह०। आज बालाकोट उनकी अज़मत की गवाहियाँ दे रहा है।

हिंद व पाक में अंग्रेज़ का ज़ुल्म व सितम

सन् 1857 ई० में जब अंग्रेज़ ने हिंदुस्तान पर क़ब्ज़ा किया तो उसने मुसलमानों से तख़्त व ताज छीनकर अपने पंजे मज़बूत करने के लिए शिकंजा कस दिया। अमीरों से ज़मीनें छीन लीं, मुसलमानों को इज़्ज़त व माल से महरूम कर दिया, माद्दी ज़रियों पर क़ब्ज़ा कर लिया ताकि उन्हें कमज़ोर किया जा सके। ज़ुल्म के हदें तोड़ दीं यहाँ तक कि पाँच-पाँच मिनट में फाँसी के फ़ैसले दे देते थे। अगर किसी मुसलमान की उंगली ज़ख़्मी देखते तो कहते लगता है कि तूने किसी अंग्रेज़ को मारा होगा। चुनाँचे उसकी भी फाँसी का फ़ैसला कर लिया जाता।

अंग्रेज़ बड़ा चालाक दुश्मन था। उसने देखा कि माल तो मैंने ले लिया मगर जब तक इस क़ौम के ईमानी जज़्बे को ख़त्म नहीं करूँगा तो यह क़ौम मुत्तहिद रहेगी। लिहाज़ा इसको ख़त्म करने के लिए मदरसों को ख़त्म करना ज़रूरी है। उस दौर में मदरसे वक़्फ़ जायदादों से चला करते थे। लिहाज़ा अंग्रेज़ ने दूसरा तरीक़ा अपनाया कि उसने मदरसों की जायदाद को सरकारी क़ब्ज़े में ले लिया। जब माली तौर पर गला ही घोंट दिया गया तो उसका नतीजा यह निकला कि चार हज़ार मदरसे बंद हो गए। डराव धमकाव की पालिसी कामयाब रही और लोग सहम गए।

हिंद व पाक में उलूम व फ़ुनून के मरकज़

उस वक़्त हिंदुस्तान में तीन मरकज़ थे। एक देहली में क़ुरआन व हदीस का 'वली इलाही' मरकज़ था, दूसरा लखनऊ में फ़िक़्ह और उसूले फ़िक़्ह का मरकज़ था और तीसरा ख़ैराबाद फ़ुनून का मरकज़ था। अंग्रेज़ों ने इन तीनों मरकज़ों पर अपना क़ब्ज़ा जमा लिया।

देवबंद में मदरसे का क़याम

अल्लाह तआला ने एक बंदे हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम नानौतवी रह० के दिल में बात डाली कि माल मुसलमानों के हाथ से निकल गया तो फिर भी मिलने की उम्मीद है, हुकूमत हाथों से निकल गई तो मिलने की उम्मीद है अगर दीन हाथों से चला गया तो नहीं मिलेगा। लिहाज़ा अंग्रेज़ के इस ज़ुल्म व सितम का तोड़ दीनी मदरसों का क़याम है। क्यों न किसी ऐसी जगह पर मदरसा

क़ायम किया जहाँ अंग्रेज़ की नज़र ही न पड़े और ख़ामोशी से काम होता रहे। हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी रह० के सुसराल वाले देवबंद के रहने वाले थे। चुनाँचे हज़रत रह० देवबंद पहुँचे और वहाँ जाकर छत्ते की मस्जिद में अनार के पेड़ के नीचे ख़ामोशी से काम करना शुरू कर दिया। एक उस्ताद और एक शार्गिद। उस्ताद का नाम मुल्ला महमूद और शार्गिद का नाम महमूदुल हसन। दोनों महमूद थे। हज़रत शाह अब्दुल ग़नी मुजद्दी रह० के शार्गिद मौलाना ममलूक अली रह० को उस्तादे कामिल का ख़िताब मिला क्योंकि उन्होंने सबको पढ़ाया। मौलाना शाह रफ़िउद्दीन नक़्शबंदी रह० पहले मोहतमिम बने।

दारुल उलूम देवबंद का संगे बुनियाद

हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी रह० को ख़्वाब में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब हुई और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़्वाब में दारुल उलूम की इमारत की पूरी हदूद का ताय्युन फ़रमा दिया। इसीलिए तरानाए दारुल उलूम के अल्फ़ाज़ कुछ यूँ हैं—

यह इल्म व हुनर का गहवारा तारीख़ का वह शहपारा है
हर फूल यहाँ इक शोला है हर सरो यहाँ मिनारा है

ख़ुद साक़ीए कौसर ने रखी मैख़ाने की बुनियाद यहाँ
तारीख़ मुरत्तब करती है दीवानों की रुदाद यहाँ

कोहसार यहाँ दब जाते हैं तूफ़ान यहाँ रुक जाते हैं
इस काख़ फ़क़ीरी के आगे शाहों के महल झुक जाते हैं

यह इल्म व हुनर का गहवारा तारीख़ का वह फ़न पारा है
हर फूल यहाँ इक शोला है हर सरो यहाँ मीनारा है

चुनाँचे बुनियादें रखने का वक़्त आया तो हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी रह० ने ऐलान फ़रमाया कि आज दारुल उलूम का संगे बुनियाद मैं ऐसी शख़्सियत से रखवाऊँगा कि जिसने पूरी ज़िंदगी कबीरा गुनाह तो क्या करना कभी गुनाह करने का इरादा भी नहीं किया। चुनाँचे हज़रत शाह हुसैन अहमद रह० जो मियाँ असग़र हुसैन रह० के मामू थे उनको बुलाया और कहा हज़रत! आइए और दारुल उलूम का संगे बुनियाद रखिए।

हज़रत शाह हुसैन अहमद रह० की फ़नाइयते क़ल्बी

शाह हुसैन अहमद पर अल्लाह तआला ने फ़नाइयत का ऐसा परछावा डाल दिया था कि हर वक़्त अल्लाह के ज़िक्र में मशग़ूल रहते थे। उनके एक दामाद का नाम अल्लाह बंदा था। दो साल तक वह उनके पास रहा। जब सामने से गुज़रता तो हज़रत शाह हुसैन अहमद रह० पूछते अरे मियाँ! तुम कौन हो? कहता, हज़रत मैं आपका दामाद अल्लाह बंदा हूँ। फ़रमाते अरे मियाँ सभी तो अल्लाह के बंदे है। दो साल तक दामाद का नाम याद न हुआ। ज़िक्र की फ़नाइयत ऐसी थी कि दिल में एक अल्लाह तआला का नाम बस चुका था। ऐसी नाबग़ा रोज़गार शख़्सियत ने दारुल उलूम देवबंद की बुनियाद रखी।

एक हसीन ख़्वाब

हज़रत शाह मौलाना रफ़िउद्दीन रह० दारुल उलूम के दूसरे

मोहतमिम बने। एक दफ़ा दारुल उलूम में तशरीफ़ लाए तो एक तालिब इल्म ने आकर कहा, हज़रत! आपकी रसोई में यह सालन पकता है, ज़रा देखें तो सही। इससे वुज़ू भी जाएज़ हो जाता है। अगर मोहतमिम साहब के सामने एक तालिब इल्म ऐसी बात करे तो यह मामूली बात तो नहीं थी। हज़रत शाह मौलाना रफ़िउद्दीन रह० ने उस लड़के को सिर से पाँव तक ग़ौर से देखा और फ़रमाया लगता है यह हमारे मदरसे का तालिब इल्म नहीं है, यह बैरूनी लड़का है जो यहाँ आया हुआ है। उस्ताद कहने लगे, हज़रत! देख लेते हैं। उसका नाम रजिस्टर में देखा, लिखा हुआ है। जब बावर्ची से पूछा तो उसने कहा, रोज़ाना खाने के वक़्त आकर खाना भी खाता है लेकिन जब मज़ीद तहक़ीक़ की गई तो पता चला कि वह बाज़ार में काम करता और खाने के वक़्त मदरसे में आकर खाना खा लेता था।

उस्ताद बड़े हैरान हुए। कहने लगे मोहतमिम साहब! हम लोग बच्चों को पढ़ाते हैं, इस लड़के को न पहचान सके, आप तो बच्चों को देखते ही नहीं। आपने कैसे पहचान लिया? मौलाना रफ़िउद्दीन रह० ने फ़रमाया, जब मैं इस मदरसे का मोहतमिम बना तो मैंने एक रात ख़्वाब में देखा कि यहाँ एक कुँआ है और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुँए में से पानी के डोल निकाल रहे हैं। दारुल उलूम के तलबा आते हैं और आप उनको पानी डालकर दे रहे हैं। मैंने ख़्वाब में इस लड़के को नहीं देखा था। इसलिए मैं समझ गया कि यह हमारे मदरसे का तालिब इल्म नहीं है।

दारुल उलूम देवबंद के जामियत

अंग्रेज़ ने हिंद व पाक में नौ साल तक ख़ूब क़दम जमाए रखे। जब उसे यक़ीन हो गया कि अब मेरे क़दम अच्छी तरह जम चुके हैं तो उसने मज़हबी आज़ादी का ऐलान कर दिया चनाँचे दारुल उलूम देवबंद इन तीनों मरकज़ों के उलूम का जामेअ बनकर उभरा।

हज़रत शैख़ुल हिंद रह० पर उलूम व मआरिफ़ की बारिश

शैख़ुल हिंद रह० हज़रत मौलाना थानवी रह० के उस्ताद थे। हज़रत थानवी रह० फ़रमाते हैं कि जिन दिनों में हज़रत रह० से दौराए हदीस किया करता था, तलबा रात को तकरार किया करते थे तो मैं उनको तकरार करवाया करता था। एक बार ऐसा मुक़ाम आया कि हम सब अटक गए। तलबा ने मुझे कहा कि हज़रत से आप ही पूछना। सर्दियों का मौसम था। मैं सुबह सवेरे उठा, जलालैन शरीफ़ अपने सीने से लगाई और मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़ी। हज़रत की आदते शरीफ़ा थी कि फ़ज्र पढ़ते ही इबादत के कमरे में चले जाते थे और इशराक़ तक ज़िक्र करते थे।

नमाज़ पढ़ते ही हज़रत अंदर तशरीफ़ ले गए और कुंडी लगा ली। मैंने जलालैन शरीफ़ को सीने से लगाए रखा और सर्दी में खड़ा ठिठुरता रहा। हज़त ज़िक्र तो अंदर कर रहे थे और मज़ा मुझे आ रहा था। जब इशराक़ के बाद हज़रत रह० ने कुंडी खोली और तशरीफ़ लाए तो मैंने देखा कि पसीने के क़तरे आपकी माथे

और गर्दन पर थे। आपकी सदरी पर भी पसीने के निशानात थे। गोया 'ला इलाहा इलल्लाह' की ऐसी ज़र्बें लगायी थीं कि पसीने में तर हो रहे थे। मुझे रास्ते में खड़ा देखकर हज़रत रह० ने पूछा अशरफ़ अली! क्यों खड़े हो? मैंने कहा हज़रत किताब की एक बात समझ में नहीं आई। वहीं हज़रत ने उसके बारे में खड़े-खड़े तक़रीर शुरू करनी दी। अजीब हालत थी कि न तो मुझे अलफ़ाज़ की समझ आई और न ही मानी की यानी अलफ़ाज़ भी ग़ैर-मानूस और मानी भी। तक़रीर फ़रमाकर हज़रत रह० ने कहा कि समझ आ गई। मैंने अर्ज़ किया कि हज़रत! मुझे तो समझ नहीं आई। हज़रत कुछ हल्की तक़रीर करें ताकि मुझे समझ आ सके। हज़रत रह० ने फिर दोबारा तक़रीर शुरू कर दी। इस बार अलफ़ाज़ तो मानूस थे मगर मानी फिर भी पता न चला। हज़रत रह० ने पूछा अशरफ़ अली समझ गए? मैंने कहा हज़रत! समझ तो नहीं आई। फ़रमाया तुम्हें इस वक़्त समझ नहीं आएगी जाओ फिर किसी वक़्त पूछना। हज़रत थानवी रह० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के ज़िक्र की वजह से उलूम व मआरिफ़ की उन पर इतनी बारिशें होती थीं कि उस वक़्त उनकी तक़रीरों को नहीं समझा जा सकता था।

हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी रह० से मुहब्बत

मुझे हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी रह० से इतनी ज़्यादा मुहब्बत व अक़ीदत है कि बहुत ज़्यादा। हालाँकि दारुल उलूम देवबंद के दूसरे अकाबिरीन से भी से भी अक़ीदत है मगर हज़रत नानौतवी रह० की तरफ़ दिल ज़्यादा खिंचता है, उनके साथ क़ुदरती दिली मुहब्बत है जैसे सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम में

से सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ, चारों इमामों में इमामे आज़म रह० और मशाइख़ उज़्ज़ाम में से हज़रत नक्शबंदी बुख़ारी रह० के साथ मुहब्बत बहुत ज़्यादा है। इसी तरह हज़रत नानौतवी रह० के साथ भी मुहब्बत ज़्यादा है। हत्ताकि उनका नाम आ जाए तो पता नहीं मुझे क्या हो जाता है। मैं इस वक़्त मस्जिद में बैठा हूँ, बा-वुज़ू बैठा हूँ, मिंबर पर बैठा हूँ अगर क़सम खाकर कहूँ कि मुझे हज़रत मौलाना क़ासिम साहब रह० के साथ अपने बाप से भी ज़्यादा मुहब्बत है तो हानिस नहीं बनूँगा।

हज़रत मौलाना क़ासिम साहब रह० का इश्क़े रसूल

हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी रह० तो इल्म के आफ़ताब और माहताब थे। अल्लाह तआला ने उनको बेपनाह इश्क़े रसूल अता फ़रमाया था। एक बार अंग्रेज़ों ने उनकी गिरफ़्तारी का वारंट जारी कर दिया। हज़रत तीन दिन घर में रहे और तीन दिन बाद बाहर निकल आए कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़ार में तीन दिन तक छिपे रहे थे। लिहाज़ा तीन से ज़्यादा मैं अंदर रहना पसंद नहीं करता। ऐसा न हो कि क़ासिम नानौतवी से सुन्नत के ख़िलाफ़ काम हो जाए।

हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० को ख़िलाफ़त मिलने का वाक़िआ

हज़रत मौलााना रशीद अहमद गंगोही रह०, हज़रत हाजी

इमादुल्लाह साहब मुहाजिर मक्की रह० की ख़िदमत में पहुँचे और कहने लगे हज़रत! अवराद व अश्ग़ाल वाला काम तो हम से होता नहीं। हज़रत रह० ने फ़रमाया कि अच्छा न करना मगर हम यह कहते हैं तीन दिन और तीन रातें यहाँ ठहर जाओ। कहने लगे हज़रत! ठीक है तीन रातें ठहरूंगा मगर तहज्जुद में मुझसे नहीं उठा जाएगा, जी करेगा तो उठूँगा वरना नहीं। हज़रत हाजी साहब रह० ने फ़रमाया यह भी ठीक है। शार्गिद को बुलाकर कहा रशीद अहमद की चारपाई मेरी चारपाई के क़रीब डाल देना।

रात को हाजी साहब उठे। 'ला इलाहा इल्लल्लाह' का विर्द करना शुरू किया। हज़रत गंगोही रह० फ़रमाते हैं कि मेरी आँख खुली। मुझे इतना मज़ा आया कि मैंने भी उठकर तहज्जुद पढ़ी और पास बैठकर 'ला इलाहा इल्लल्लाह' की ज़र्ब लगानी शुरू कर दी। तीन दिन के लिए रुके थे मगर तीस दिन वहाँ ठहरे रहे। जब वहाँ से रुख़्सत होने लगे तो हज़रत हाजी साहब रह० ने उनको इजाज़त व ख़िलाफ़त अता फ़रमा दी।

नवाब साहब की इस्लाह

हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० के पास एक नवाब साहब आए। उस वक़्त आपकी ख़िदमत में हज़रत शैख़ुल हदीस रह० के वालिद हज़रत मौलाना याह्या रह० बैठे थे। क्योंकि वह आपके ख़लीफ़ा ख़ास थे। ख़िदमत में लगे रहते थे। उन्होंने नवाब साहब के लिए ख़ानक़ाह फ़ालतू क़ालीन बिछवा दिया। हज़रत को पता चला तो फ़रमाया, मौलाना याह्या साहब! वह क़ालीन कहाँ है? नवाब साहब सामने बैठे हुए हैं। मौलाना याह्या रह० ने कहा हज़रत! मैंने नवाब साहब के लिए बिछवा दिया। फ़रमाया अच्छा

नवाब साहब को क़ालीन की कमी हो गई होगी। नवाब साहब की आधी तबियत तो वहीं साफ़ हो गई। फिर थोड़ी देर गुज़री तो दस्तरख़्वान बिछाया गया। नवाब साहब भी आए। हज़रत रह० भी बैठे और महमूदुल हसन रह० भी आ गए जो बाद में शेख़ुल हिंद बने। नवाब साहब ने एक तालिब इल्म को दस्तरख़्वान पर बैठे देखा तो हैरान हुए। हज़रत ने फ़ौरन फ़रमाया, नवाब साहब अगर तालिबे इल्म का साथ बैठकर खाना अच्छा नहीं लगता तो आप कहीं और बैठकर खा लें। महमदुल हसन का और मेरा तो जीने मरने का साथ है।

मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० की तवाज़ेह

एक बार मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० हदीस पढ़ रहे थे कि एकदम बारिश शुरू हो गई। तलबा ने अपनी किताबें समेटीं और कमरे में भाग गए। हज़रत रह० ने रुमाल बिछाया, पढ़ने वालों की जूतियाँ उसमें डालीं और उसकी गठरी बाँधकर सिर पर रखी और कमरे में ले गए। तलबा ने देखा कि तो उनकी चीख़ें निकल गईं। कहने लगे हज़रत हम ख़ुद जूते उठा लेते। हज़रत रह० ने जवाब दिया बच्चो! तुम सारा दिन ﴿قال الله قال رسول﴾ पढ़ते हो, रशीद अहमद तुम्हारे जूते न उठाएगा तो और क्या करेगा।

हज़रत अनवर शाह कश्मीरी रह० की बेमिसाल याद्दाश्त

हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० मिस्र तशरीफ़ ले गए। वहाँ कुतुबख़ाने में एक किताब 'नूरुल इज़ाह' देखी। पूछा

क्या ले सकता हूँ क्योंकि हमारे पास नहीं है? उन्होंने कहा हम नहीं दे सकते। हज़रत रह० ने उसकी अच्छी तरह देख लिया और वापस आकर उसको ज़बानी लिखवा दिया। जब नक़ल असल के साथ मिलाई गई तो कोई फ़र्क़ न निकला। उनकी लिखी हुई वह किताब आज भी मदरसों के तलबा पढ़ रहे हैं।

कुछ हिंदू नौजवान हज़रत रह० को देखकर मुसलमान हो गए। किसी ने उनसे कहा तुम इस शख़्स के कहने से मुसलमान हो गए हो? तो वे कहने लगे, हाँ यह चेहरा किसी झूठे का नहीं हो सकता, अल्लाहु अकबर।

हज़रत शैख़ुल हिंद रह० की अज़ीब याद्दाश्त

हज़रत शैख़ुल हिंद रह० का हाफ़िज़ा इतना तेज़ था कि एक बार किताबें धूप में रखवाने के लिए बाहर निकलवायीं। एक किताब को दीमक लग चुकी थी। शार्गिद ने कहा, हज़रत! इसको तो दीमक लग चुकी है। फ़रमाया कि इसके जो पन्ने दीमक ने खा लिए हैं वह तुम ज़बानी लिखकर साथ लगा दो। उसने कहा हज़रत! मैंने तो यह किताब पिछले साल पढ़ी थी, मुझे तो याद नहीं। फ़रमाया तुमने पिछले साल पढ़ी थी और भूल गए। इसके बाद हज़रत रह० ने अपनी याद्दाश्त से उन सफ़्हों की इबारत को ज़बानी लिखवाकर साथ जोड़ दिया।

हज़रत मौलाना याह्या रह० की याद्दाश्त का कमाल

हज़रत मौलाना याह्या रह० को 'मंतबी' याद थी, 'हमासा'

याद थी और 'मुस्लिम' दो सौ बार तस्बीह पर पढ़ी थी। एक आदमी आया और कहने लगा हज़रत! मेरे पास क़सीदा बरदा है मगर उसके तीन चार सफ़्हे निकले हुए हैं। हज़रत रह० ने फ़रमाया अच्छा लिख लो। चुनाँचे हज़रत ने तीन चार सफ़्हे उसको ज़बानी लिखवा दिए। सुब्हानअल्लाह! हमारे बड़ों को अल्लाह तआला ने शरह सदर अता किया हुआ था।

﴿فَمَنْ يُرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ﴾

उनके सीने ऐसे खुले हुए गोया किताब उनके सामने खुली हुई हों। जबकि हमारी यह हालत है कि हम सुबह को पढ़ते हैं तो शाम को भूल जाते हैं और शाम को पढ़ते हैं तो सुबह को याद नहीं है।

सैय्यद अताउल्लाह शाह बुख़ारी रह० की हाज़िर जवाबी

ख़िताबत के मैदान में सैय्यद अताउल्लाह शाह बुख़ारी रह० ने तहलका मचा दिया। उनकी तक़रीर सुनकर हिंदू भी मुसलमान हो जाते थे। अल्लाह तआला ने ज़हानत ऐसी दी थी कि हाज़िर जवाब बहुत थे। एक दफ़ा एक साहब कहने लगे, हज़रत! आप तो अंग्रेज़ को 'शो' (तमाशा) दिखाते हैं। फ़रमाया भाई! मैं अंग्रेज़ को 'शो' नहीं दिखाता मैं तो अंग्रेज़ को 'शू' (जूता) दिखाता हूँ।

एक बार एक साहब हज़रत बुख़ारी रह० से मिले और कहने लगे हज़रत! ज़िंदगी कैसी गुज़री? फ़रमाया भाई! अपनी आधी रेल में गुज़री और आधी जेल में गुज़री।

एक बार सैय्यद अबुल आला मौदूदी के साथ शाह जी रह० की मुलाक़ात हुई तो अबुल आला मौदूदी फ़रमाने लगे शाह साहब आपकी जमाअत को तक़रीर का बड़ा हैज़ा है। शाह साहब ने जवाब दिया जैसे आपकी जमाअत को तहरीर का हैज़ा है।

एक जल्सागाह में हिंदुओं और मुसलमानों का मजमा है। शाह जी रह० ने चाहा कि मैं मुसलमानों और हिंदुओ से कुछ पूछूँ। चुनाँचे हिसाब का एक छोटा सा सवाल पूछा। हिंदुओं ने तो जवाब दे दिया मगर मुसलमान न दे सके। अब मुसलमानों की होनी तो सुबकी थी मगर शाह जी फ़रमाने लगे वाह! मुसलमानों तुम यहाँ बे भी बे-हिसाब हो जबकि अल्लाह तआला तुम्हारे साथ आगे भी बे-हिसाब वाला मामला फ़रमाएगा, माशाअल्लाह।

एक आदमी कहने लगा शाह जी मुर्दे सुनते हैं या नहीं? शाह जी रह० ने फ़रमाया भाई! हमारी तो ज़िंदे भी सुनते हम मुर्दों की क्या बात करें।

एक दफ़ा अलीगढ़ पहुँचे। कुछ तलबा ने प्रोग्राम बनाया हुआ था कि तक़रीर नहीं करने देनी। शाह जी रह० स्टेज पर आए तो तलबा उठ खड़े हुए और शोर मचाना शुरू कर दिया कि बयान नहीं करने देना। शाह जी रह० ने कहा, भाई एक बात सुनो, मैं इतना सफ़र करके आया हूँ अगर इजाज़त हो तो मैं एक रुकू पढ़ लूँ। अब तलबा में इख़्तिलाफ़ हो गया। कुछ कहने लगे, जी तिलावत में क्या हर्ज है और कुछ कहने लगे नहीं यह भी सुननी। यहाँ तक कि तिलावत की ताईद करने वाले ग़ालिब आ गए। उन्होंने कहा कि जी आप रुकू सुना दें। शाह जी रह० ने रुकू पढ़ा फिर फ़रमाया अज़ीज़ तालिब इल्मो अगर इजाज़त हो तो मैं

इसका तर्जुमा भी पेश कर दूँ। तलबा पर तिलावत का ऐसा असर था कि सब ख़ामोश रहे। चुनाँचे शाह जी रह० ने तक़रीबन दो घंटे तक़रीर फ़रमाई।

दारुल उलूम देवबंद की जामियत की वजह

हमारे बड़ों ने ख़िताबत के मैदान में, क़लम के मैदान में, बहादुरी के मैदान में, तदरीस के मैदान में, ऐसे ऐसे नुमाया कारनामे अंजाम दिए कि इंसान हैरान होता है। क्यों? इसलिए कि इस दारुल उलूम की बुनियाद तवक्कुल पर रखी गई थी। उसूल हश्तगाना आज भी आप पढ़ सकते हैं। उसमें लिखा है कि दारुल उलूम के लिए मुस्तक़िल आमदनी का कोई ज़रिया क़ुबूल नहीं किया जाएगा। जबकि हमारी यह हालत है कि हम कोशिश करते फिरते हैं और दुआएं मांगते फिरते हैं कि अल्लाह करे हमारे मदरसे का कोई मुस्तक़िल आमदनी का ज़रिया हो जाए।

हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानौतवी रह० का अल्लाह पर तवक्कुल

बहावलपूर में एक नवाब साहब ने मदरसा बनवाया। उसने मुक़ामी उलमा से कहा कि इमारत तो मैं बनवा देता हूँ मगर आबाद कैसे होगा? उलमा ने कहा कि हम आपको एक ऐसी हस्ती के बारे में बताएंगे। आप उन्हें ले आना मदरसा चल जाएगा। उसने कहा हीरा तुम ढूँढना क़ीमत हम लगा देंगे। नवाब साहब को पैसे का बड़ा नाज़ था। चुनाँचे जब इमारत बन गई तो उसने उलमा से पूछा बताओ कौन सा हीर ढूँढा है? कहने लगे,

क़ासिम नानौतवी रह०। उसने उलमा से पूछा हज़रत की तंख़्वाह क्या होगी? उन्होंने कहा हज़रत की तंख़्वाह चार-पाँच रुपए होगी। उस दौर में इतनी तंख़्वाह ही बहुत हुआ करती थी। कहने लगा जाओ और मेरी तरफ़ से हज़रत को सौ रुपया महाना का पैग़ाम दे दो। अब जिस आदमी को पाँच रुपए की बजाए सौ रुपया मिलना शुरू हो जाएं तो कितना फ़र्क़ है। चुनाँचे उलमा बड़े ख़ुश हुए कि जी हाँ अब तो हज़रत ज़रूर आ जाएंगे। देवबंद जाकर हज़रत से मिले। हज़रत ने ख़ूब ख़ातिर तवाज़े फ़रमाई। पूछा कैसे आना हुआ? कहने लगे, हज़रत! नया मदरसा बनाया है, आप वहाँ तशरीफ़ लाएं, नवाब साहब ने आपके लिए सौ रुपया महाना तंख़्वाह तय की है। हज़रत रह० ने फ़रमाया, बात यह कि मेरी तंख़्वाह तो पाँच रुपए है। इसमें से तीन रुपए मेरे निजी ख़र्चे के हैं और दो रुपए मैं ग़रीबों, मिस्कीनों, यतीमों में ख़र्च करता हूँ। अगर मैं वहाँ चला गया और सौ रुपए तंख़्वाह हो गई तो मेरा ख़र्च तो तीन रुपए ही रहेगा और बाक़ी सत्तानवें रुपए ग़रीबों में तक़्सीम करने के लिए मुझे सारा दिन उनको ढूँढना पड़ेगा और मैं पढ़ा तो नहीं सकूँगा, लिहाज़ा मैं वहाँ नहीं जा सकता। ऐसी दलील दी कि उन उलमा की ज़बाने बंद हो गयीं। इसे दुनिया से बेगाना होना कहते हैं, अल्लाहु अकबर कबीरा।

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह० की अजीब माज़रत

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह० ने जब पढ़ने के ज़माने में दौराए हदीस मुकम्मिल किया तो मोहतमिम साहब ने

जलसे के लिए इंतिज़ाम किए कि हम दस्तारबंदी करवाते हैं। हज़रत थानवी रह० अपने साथ पाँच-सात शार्गिदों को लेकर हज़रत शैख़ुल हिंद रह० की ख़िदमत में गए और वहाँ जाकर कहने लगे कि हज़रत! हमने सुना है कि मदरसे वाले तलबा की दस्तारबंदी के लिए इंतिज़ाम कर रहे हैं। हज़रत ने फ़रमाया, हाँ। कहने लगे हज़रत हमारी गुज़ारिश यह है कि हमारी दस्तारबंदी न करवाई जाए, ऐसा न हो कि लोग हमें देखकर यह ऐतिराज़ करें कि ऐसे नालायक़ तलबा की दस्तारबंदी करवा दी गई। कहीं मदरसे की बदनामी न हो। हज़रत शैख़ुल हिंद रह० जलाल में आकर कहने लगे, अज़ीज़म! आप अपने उस्तादों के बीच रहते हो, इसलिए अपने आपको कुछ नहीं पाते हो। जब हम में नहीं होगे तो फिर तुम ही तुम होगे।

शाह अब्दुल क़ादिर रायपुरी रह० का इल्मी ज़ौक़

शाह अब्दुल क़ादिर रह० रायपूर के रहने वाले थे। दारुल उलूम हाज़िर हुए और मोहतमिम साहब से मिले कि हज़रत मैं इल्म हासिल करना चाहता हूँ। हज़रत ने फ़रमाया रहने का इंतिज़ाम तो हो जाएगा मगर आपको खाना का दारुल उलूम की तरफ़ से नहीं मिल सकेगा। अर्ज़ किया हज़रत मंज़ूर है। चुनाँचे हज़रत ने दाख़िला दे दिया। शाह साहब फ़रमाते हैं कि मुझे दाख़िला मिला तो मैं रात के वक़्त गलियों का चक्कर लगाता, गलियों से फलों के छिलके वग़ैरह उठा लाता और पानी से धोकर उन छिलकों को खा लेता था। शाह अब्दुल क़ादिर रह० ने पूरा साल उन छिलकों को खाकर गुज़ारा किया मगर इल्म हासिल

करते रहे।

हज़रत फ़रमाया करते थे मैंने मटके बनाए हुए थे। अज़ीज़ व अक़ारिब के जो ख़त आते थे उन्हें उस मटके में डालता रहता था। जब इम्तिहान देकर फ़ारिग़ होता तब मटके वाले ख़त निकाल कर पढ़ता और वापस वतन जाकर दोस्तों और रिश्तेदारों से मिलता और उनके ख़तों का शुक्रिया अदा करता। उनके बारे में अच्छे अल्फ़ाज़ कहता तो वह बहुत ख़ुश होते और समझते कि हमारा ख़त अब तक याद हैं हालाँकि मैं साल के दौरान अज़ीज़ व अक़ारिब के ख़त पढ़ता ही नहीं था कि मेरी तालीम में रुकावट न पड़े।

शाह अब्दुल क़ादिर रायपुरी रह० की शर्म व हया

हज़रत रायपुरी में शर्म व हया ऐसी थी कि अपनी बहन को भी कभी आँख उठाकर नहीं देखा। फ़रमाते हैं कि एक वक़्त वह भी आया कि मैं अपनी बहन को शक्ल से नहीं पहचान सकता था। वह बोलती थी तो आवाज़ से पहचान लेता था अगर किसी अजनबी औरत के दर्मियान बैठी होती तो मुझे पता नहीं चलता था कि उनमें से मेरी बहन कौन सी है। इसलिए मैं अपनी बहन के चेहरे पर नज़र उठाना हया के ख़िलाफ़ समझा करता था। ऐसे बा-हया लोग थे।

पुराने कंबल में पंद्रह साल

शाह अब्दुल क़ादिर रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक दफ़ा जा रहा था। एक आदमी को देखा कि वह एक कंबल बाहर फेंक रहा है। मैंने पूछा, जी आप यह कंबल क्यों फेंक रहे हैं? कहने लगा

पुराना हो गया इसलिए फेंक रहा हूँ। मैंने कहा क्या यह मैं ले सकता हूँ। कहने लगा हाँ ले लो। मैंने वह कंबल लेकर धो लिया। जब सर्दियाँ आतीं तो मैं ऊपर बिछा लेता, गर्मियाँ होतीं तो नीचे बिछा लेता और जब नमाज़ का वक़्त होता तो मुसल्ला बना लेता था। मैंने उस कंबल में ज़िंदगी के पंद्रह साल गुज़ार दिए, अल्लाहु अकबर।

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह० और अदब

हमारे बड़े बुज़ुर्ग इल्म के साथ अदब का भी बहुत एहतिमाम फ़रमाते थे। हज़रत थानवी रह० फ़रमाते थे कि मैंने हमेशा चार बातों की पाबंदी कीः

एक तो यह कि मेरी लाठी का जो सिरा ज़मीन पर लगता था उसको कभी काबे की तरफ़ करके नहीं रखा। मैंने बैतुल्लाह शरीफ़ का इतना एहतिराम किया।

दूसरी बात यह कि मैं अपने रिज़्क़ का एहतिराम करता था कि चारपाई पर बैठता तो ख़ुद हमेशा पाएंती की तरफ़ बैठता और खाने को सिरहाने की तरफ़ रखता, इस तरह बैठकर खाना खाता था।

तीसरे बात यह है कि जिस हाथ से तहारत करता था उस हाथ से पैसे नहीं पकड़ता था क्योंकि यह अल्लाह का दिया हुआ रिज़्क़ है।

चौथे यह कि जहाँ मेरी किताबें रखी होती हैं। अपने इस्तेमाल

शुदा कपड़ों को उन दीनी किताबों के ऊपर नहीं लटकाया करता था।

अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी को उरूज कैसे मिला

एक दफ़ा मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह रह० ने तलबा से पूछा कि बताओ अनवर शाह कश्मीरी रह० इतने ज़्यादा मशहूर क्यों हो गए? किसी ने कहा मुफ़स्सिर अच्छे थे, किसी ने कहा मुहद्दिस अच्छे थे, शायर अच्छे थे, वह मंतिक़ भी जानते थे। फ़रमाया नहीं किसी ने यह सवाल एक बार हज़रत कश्मीरी रह० से पूछ लिया तो फ़रमाया दो बातें मेरे अंदर थीं। जब मुताला करता था तो बावुज़ू करता था और जब मुझे किताब का हाशिया देखने की ज़रूरत पड़ती और हाशिया दूसरी तरफ़ होता तो मैं अपनी जगह छोड़कर दूसरी तरफ़ आकर हाशिया पढ़ लेता था, हदीस की किताब को मैंने कभी अपने ताबे नहीं किया।

उस्ताद के एहतिराम में उलमाए देवबंद की ख़ासियत

हज़रत शैखुल हिंद रह० जब अरब जाने लगे और हज़रत अनवर शाह कश्मीरी रह० को पता चला तो हज़रत के पास आ गए। तलबा को यह कह आए कि मैं अपने उस्ताद से माफ़ी मांगने जा रहा हूँ, हो सकता है कि ज़िंदगी में कभी उनकी बेअदबी हो गई होगी। हज़रत रह० चारपाई पर बैठे थे और पाँव नीचे लटकाए हुए थे। हज़रत कश्मीरी रह० पाँव के पास आकर

बैठ गए और हज़रत के पाँव मुबारक पकड़कर रोना शुरू कर दिया। हज़रत शैख़ुल हिंद रह० ने रोने दिया। काफ़ी देर रोने के बाद जब ज़रा तबियत ठीह हुई तो फिर उनको फ़रमाया कोई बात नहीं हम तुम्हारे सामने हैं इसलिए तुम्हें अपना आपा नज़र नहीं आ रहा है। अब मैं जा रहा हूँ मगर मैं महसूस कर रहा हूँ कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे अंदर कई कमालात रख दिए हैं। तुम्हें हमारे जाने की कमी महसूस नहीं होगी। चुनाँचे तसल्ली देकर उनको वापस कर दिया।

फिर हज़रत को ख़ुद बात याद आई कि ओहो! मेरे शार्गिद तो मेरे से माफ़ी मांग रहे हैं। अब मैं सफ़र पर जा रहा हूँ और मैंने अपने उस्तादों से माफ़ी नहीं मांगी। सोचने लगे कि अब मैं कहाँ जाऊँ? हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानौतवी रह० का ख़्याल आया। चुनाँचे उनके घर गए। हज़रत तो वफ़ात पा चुके थे मगर दरवाज़े पर दस्तक दी। अम्मा जी ने पर्दे से पूछा कौन है? कहा आपक रूहानी बेटा महमूद हसन आया हूँ। फिर पूछा अम्मा! मेरे हज़रत के कोई जूते पड़े हों तो मुझे भिजवा देना। अम्मा जी ने जूते भिजवा दिए। हज़रत शैख़ुल हिंद रह० उस्ताद के जूते सर पर रखकर काफ़ी देर रोते रहे और कहा आज मेरे उस्ताद ज़िंदा होते तो मैं उनके क़दमों को अपने सिर का ताज बना लेता, सुब्हानअल्लाह।

सैय्यद अताउल्लाह शाह बुख़ारी रह० का क़ीमती मलफ़ूज़

सैय्यद अताउल्लाह शाह बुख़ारी रह० की बात याद आती है,

अकाबिरीन उलमाए देवबंद के बारे में फ़रमाते थे कि पिछलों का क़ाफ़िला जा रहा था, उसमें से कुछ क़ुदसी रूहें पीछे रह गयीं। अल्लाह तआला ने इस दौर में पैदा फ़रमा दिया ताकि अगले आने वालों को पिछलों के नमूने का पता चल सके।

लम्हाए फ़िक्र

मोहतरम उलमाए किराम हमारे अकाबिरीन ने जो किताबें पढ़ी हैं आज का तालिब इल्म भी वही किताबें पढ़ता है। वही बुख़ारी शरीफ़, वही मुस्लिम शरीफ़, वही तिर्मिज़ी शरीफ़, वही अबू दाऊद शरीफ़, वही तफ़्सीर की जलालैन शरीफ़ मगर आज का हर तालिब इल्म क़ासिम नानौतवी क्यों नहीं बनता, रशीद अहमद गंगोही क्यों नहीं बनता? अशरफ़ अली थानवी क्यों नहीं बनता? अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी क्यों नहीं बनता? किताबें वही हैं, पढ़ने वालों के अंदर फ़र्क़ है, तलब में फ़र्क़ है, अदब में फ़र्क़ है जिसकी वजह से वे कमालात हासिल नहीं हो पाते हालाँकि वही अलफ़ाज़ पढ़ते हैं मगर उनके माअरिफ़ हासिल नहीं हो पाते। आज इस बात की ज़रूरत है कि हम वह तक़्वा, वह इल्म और अपने असलाफ़ के अख़्लाक़ अपने अंदर पैदा करें ताकि वही कमालात अल्लाह तआला हमारे अंदर भी पैदा कर दे। आज हम बड़े मज़े से उन हज़रात की बातें सुनते हैं और कहते हैं–

اولئك ابائی فجعنی بمثلهم　　　اذا جمعتنا يا جرير المجامع

यानी सौ फ़ीसद ठीक बात है कि लेकिन सुनने वाला यह भी तो कह सकता है कि जनाब–

لــئــن فـخـرت بــابــاء ذونــسـب   لـقد صدقت ولكن بئس ما ولدوا

अगर हमारे असलाफ़ वह थे तो उनके रूहानी बेटे आज हम हैं। आज हमारे इल्म और अमल में फ़र्क़ है, क़ाल व हाल में फ़र्क़, जलवत व ख़लवत में फ़र्क़, इत्तिबाए सुन्नत भी पूरी नहीं। बस कुछ ज़ाहिरदारी कर लेते हैं। तन्हाई में हमारी शख़्सियत कुछ और होती है, बाहर और होती है, दिल से पूछें दिल कहता है दो चेहरे हैं। एक चेहरा वह जो लोगों को दिखाने के लिए है और एक चेहरा वह जो तेरा परवरदिगार जानता है।

यह दो रंगी कब ख़त्म होगी? हम कब इससे दूर होंगे और अपने अंदर वह कमालात पैदा करने की कोशिश कब करेंगे? आज तो वह वक़्त आ चुका है कि जो लोग हलाल माल से अपने पेटों को नहीं भरते थे उनकी औलादें हराम माल से अपने पेटों को भर रही हैं। वह हज़रात जो चटाई पर बैठकर सारी रात गुज़ार दिया करते थे आज उनकी औलादें नरम गद्दों पर रातें गुज़ारने की आदी बन चुकी हैं। वह हज़रात जिनके तेल का ख़र्चा उनके महाना खाने के ख़र्चे से ज़्यादा होता था, इतना पढ़ते थे, आज उनकी औलादें किताबें पढ़ने के बजाए अख़बार पढ़ने वाली बन चुकी हैं। अगर ये हालात हैं तो बताएं कि हम इन हज़रात के मिशन को लेकर आगे कैसे बढ़ सकते हैं। यह तो अल्लाह का करम है कि इस ताएफ़ा में कुछ हज़रात ऐसे मौजूद हैं, इल्म वाले, ज़िक्र वाले जिनको अल्लाह ने जगाया हुआ है। वे कुछ लोग इल्म व ज़िक्र में काम कर रहे हैं वरना अमूमीतौर पर हमारी हालत पस्त होती चली जा रही है। लिहाज़ा आज हमें उठने की ज़रूरत है और दीन के क़िले बनाने की ज़रूरत है जैसे दारुल उलूम

देवबंद का क़िला बना था–

यह इल्म व हुनर का गहवारा तारीख़ का वह शहपारा है
हर फूल यहाँ इक शोला है हर सरो यहाँ मिनारा है
कोहसार यहाँ दब जाते हैं तूफ़ान यहाँ रुक जाते हैं
इस काख़ फ़क़ीरी के आगे शाहों के महल झुक जाते हैं

क्या दारुल उलूम था? फ़क़ीरों का बनाया हुआ था। शाहों के महल भी काँपते थे। आज हम उनके रूहानी बेटे, उनका फ़ैज़ पाने वाले, इसी चश्मे से सैराब होने वाले हैं। हमारी मस्जिद और मदरसे उसी की बेटियाँ और बेटे हैं। यह चीज़ ऐसे ही पैदा नहीं हो जाएगी बल्कि इसके लिए मेहनत करनी पड़ेगी। जब किताबें पढ़ने का वक़्त हो तो हम अपने आपको किताब पढ़ने में लगा दें और जब ज़रा तन्हाई का वक़्त हो तो ﴿فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ﴾ के मिस्दाक़ अपने मुसल्ले पर बैठे हों। फिर जलवत भी वही हो। इश्राक़ तक बैठकर 'ला इलाहा इल्लल्लाह' की ज़र्बें लगाना भी वही हो, रात की आंहे भी वही हों, रात को दामन भी उसी तरह फैलाएं, रात को आँसू भी उसी तरह गिरें तो अल्लाह तआला रहमत फ़रमाएंगे। हमें ज़ाहिरी व बातिनी उलूम का हामिल, कामिल और आलिम बा-अमल बना देंगे।

मोहतरम उलमाए किराम! अपने ज़ाहिर को सुन्नत नबवी से और अपने बातिन को माअरिफ़त इलाही से सजा लीजिए। अगर कुफ़्र हमारे दिमाग़ टटोले तो उसे इल्मे नबवी नज़र आए। हमारा दिल टटोले तो उसे इश्क़े नबवी नज़र आए और हमारे सरापा को देखे तो सुन्नत नबवी से आरास्ता नज़र आए। जब उनको हर तरफ़ नबवी नूर नज़र आएगा तो ज़ुलमतें छट जाएंगी। फिर क़दम

उठाएंगे, अल्लाह पूरी दुनिया में ऐसा वक़ार क़ायम कर देंगे कि कुफ़्र अपने महलों में बैठे-बैठे काँप रहा होगा। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें अपने बुज़ुर्गों के नक़्शे क़दम पर चलने की और इल्म व ज़िक्र के दोनों पलड़ों में बराबरी रखने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा दे। (आमीन सुम्मा आमीन)

❁ ❁ ❁

الدنيا كلها متاع وخير متاع

الدنيا المراة الصالحة

दुनिया सारी की सारी नफ़े की चीज़ है और दुनिया में बेहतरीन नफ़ा की चीज़ सालेह (नेक) औरत है।

इस्लाम में औरत का मुक़ाम

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اما بعد.

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ○ وَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى فِيْ مَقَامٍ آخَرَ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً. اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُوْنَ ○ وَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى فِيْ مَقَامٍ آخَرَ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ○ سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ○

दुनिया की तारीख़ का मुताला किया जाए तो यह बात खुलकर सामने आती है कि औरत के हक़ों के लिए हर दौर और हर ज़माने में कमी व ज़्यादती का मामला बरता गया लेकिन इस्लाम ने जिस ऐतिदाल के साथ औरत के हक़ को वाज़ेह किया उसको जानकर हर इंसान अश-अश कर उठता है। आज का उनवान इसी तफ़्सील है।

ज़माना जाहिलियत में (इस्लाम से पहले) औरत के हक़ूक़ की पामाली

अरब में इस्लाम से पहले औरत के हक़ूक़ को इस क़दर दबाया जा चुका था कि लोग अपने घर में बेटी का पैदा होना बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। मासूम बच्चियों को ज़िंदा दरगोर कर दिया जाता था। औरत के हक़ इस हद तक छीन लिए गए थे कि कि अगर कोई आदमी मर जाता तो जिस तरह उसकी जाएदाद उसके बड़े बेटे की विरासत में आती थी उसकी बीवियाँ भी उसके बड़े बेटे की बीवियों के तौर पर मुन्तक़िल हो जाती थीं। बीवी को पाँव की जूती समझा जाता था बल्कि औरत की जाएज़ बातों को मानना भी मर्दानगी के ख़िलाफ़ समझा जाता था।

आमदे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मुसर्रत का पैग़ाम

अल्लाह के प्यारे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुनिया में तशरीफ़ लाकर वाज़ेह फ़रमा किया कि ऐ लोगो! औरत अगर बेटी है तो यह तुम्हारी इज़्ज़त है अगर बहन है तो तुम्हारी नामूस है अगर बीवी है तो तुम्हारी ज़िंदगी की साथी है और अगर यह माँ है तो तुम्हारे लिए उसके क़दमों में जन्नत है। और यह भी फ़रमाया कि जिस आदमी की दो बेटियाँ हों वह उनकी अच्छी तर्बियत करे, उनको तालीम दिलवाए यहाँ तक कि उनका फ़र्ज़ अदा कर दे तो यह जन्नत में यूँ मेरे साथ होगा जैसे हाथ की दो उंगलियाँ एक दूसरे के क़रीब होती हैं। गोया बेटी के पैदा होने पर जन्नत का दरवाज़ा खुलने की बशारत दी गई।

साथ यह भी ख़ुशख़बरी दे दी गई। ﴿مَنْ عَمِلَ صَالِحًا﴾ जो कोई भी नेक अमल करे ﴿مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَى﴾ मर्द हो या औरत हो ﴿وَهُوَ مُؤْمِنٌ﴾ और वह ईमान वाला हो ﴿فَلَنُحْيِيَنَّهُ حَيٰوةً طَيِّبَةً﴾ हम उसको ज़रूर-ज़रूर पाकीज़ा ज़िंदगी अता करेंगे यानी जिस तरह मर्द नेकी और इबादत करके अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के वली बन सकते हैं, औरतें भी इसी तरह नेकी और इबादत के ज़रिए विलायत के अनवारात हासिल कर सकती है। अल्लाह तआला ने उनके लिए भी विलायत के दरवाज़े को खुला रखा है चुनाँचे दीन इस्लाम ने औरत को ऐसा वक़ार अता किया कि बाक़ी दुनिया आज तक औरत को नहीं दे सकी।

इस्लाम दुश्मन क़ुव्वतों का परोपेगंडा

आजकल इस्लाम दुश्मन क़ुव्वतों ने अजीब परोपेगंडा शुरू कर दिया है जिससे वह मुसलमान औरतों को यह समझाने की कोशिश करते हैं कि इस्लाम ने औरतों पर बहुत ज़्यादा पाबंदियाँ लगा दी हैं। हमारे समाज की कई पढ़ी लिखी औरतें और बच्चियाँ ग़लत फ़हमी का शिकार हो जाती हैं और वह यह समझती हैं कि शायद हमें हमारे जाएज़ हुक़ूक़ नहीं दिए गए हालाँकि बात हर्गिज़ ऐसी नहीं है।

इस्लाम में पर्दे का हुक्म

देखिए सबसे पहली बात तो यह की जाती है कि इस्लाम ने औरत को पर्दे में रहने का हुक्म दिया है जबकि ग़ैर-मुस्लिम समाज में औरत बेपर्दा फिरती है। यह बात समझनी बहुत आसान है कि औरत पर्दे में रहे तो इसका फ़ायदा औरत को भी है मर्द को

भी। आइए यूरोप की बेपर्दगी के नुक़सानों पर ग़ौर करें।

स्वीडन में बेपर्दगी के दो मुज़िर असरात

स्वीडन बर्तानिया के बिल्कुल क़रीब यूरोपी दुनिया का एक अमीर मुल्क है। हमारे मुल्कों में नुक़सान का बजट होता है तो उस मुल्क में नफ़े का बजट होता है। हम सोचते हैं कि पैसा आएगा कहाँ से और वह सोचते हैं कि पैसा लगाएंगे कहाँ पर। ये इतने अमीर हैं कि अगर इस पूरे मुल्क के मर्द, औरत, बच्चे और बूढ़े काम करना छोड़ दें, सिर्फ़ खाएं, पिएं और अय्याशी करते रहें तो वह क़ौम छः साल अपने पड़े हुए ख़ज़ाने को खा सकती है। अगर कोई आदमी नौकरी नहीं ढूँढ पाता तो वह सिर्फ़ हुकूमत को इत्तिला दे तो उसको घर बैठे बीस हज़ार रुपया महाना मिल जाया करेगा। अगर उसका मकान नहीं है तो हुकूमत उसको मकान लेकर देती है। बीमार हो तो पैदा होने से लेकर उसके मरने तक उसकी बीमारी पर लाख रुपए लगें, करोड़ रुपया लगे, हुकूमत की ज़िम्मेदारी है कि वह इसका ईलाज करवाए।

उनकी रोटी कपड़े मकान का मसूअला तो हल हो गया। बाक़ी रह गयीं इंसान की ख़्वाहिशात वह इस मुल्क में इस हद तक पूरी होती हैं कि उसे जिन्सी ख़्वाहिशात के ऐतिबार से आज़ाद मुल्क कहा जाता है। जानवरों की तरह मर्द व औरत एक दूसरे के साथ जहाँ चाहें जब चाहें मिलें उन पर कोई पाबंदी नहीं। अब सोचने की बात है कि जिनको रोटी कपड़े, मकान की फ़िक्र नहीं, जिनकी ख़्वाहिशात मर्ज़ी के मुताबिक़ पूरी होती हों उनको तो और कोई ग़म ही नहीं होना चाहिए मगर दो बातें बहुत अजीब हैं। सबसे पहली बात यह कि इस समाज में तलाक़ की दर सत्तर फ़ीसद से

ज़्यादा है। गोया सौ में सत्तर से ज़्यादा घरों में तलाक़ हो जाती है और दूसरी बात यह है कि इस समाज में खुदकशी करने वालों को तनासुब पूरी दुनिया में सबसे ज़्यादा है। जितने लोग वहाँ खुदकशी करते हैं पूरी दुनिया में किसी मुल्क में नहीं करते। इस बेहयाई और बेपर्दगी की वजह से दिलों को सकून नहीं मिलता। मर्द भी बेहतर से बेहतरीन की तलाश में और औरत भी ख़ूब से ख़ूब तर की तलाश में। चुनाँचे सकून की ज़िंदगी किसी को भी नसीब नहीं होती। जिस माहौल में सत्तर फ़ीसद से ज़्यादा औरतों को तलाक़ हो जाए वहाँ किसको ख़ुशी होगी? चुनाँचे आज वे ज़हनी परेशानी की ज़िंदगी गुज़ारते हैं।

पर्दे की पाबंदी के अच्छे असरात

इस्लाम ने हमें पर्दे की पाबंदी का हुक्म दिया है तो उसका फ़ायदा भी हमें ही है। चाहे हमारे समाज में खाने की चीज़ों की कमी, लिबास और मकान की कमी है मगर इसके बावजूद हमारे समाज में सात फ़ीसद भी तलाक़ की दर नहीं है। हम यह सुखी ज़िंदगी क्यों गुज़ार रहे हैं? यह खुशियों भरी ज़िंदगी क्यों गुज़ार रहे हैं? इसलिए कि इस गए गुज़रे दौर में कुछ न कुछ इस्लामी अहकाम की पाबंदी बाक़ी है। जिसका फ़ायदा हमें ख़ुद मिल रहा है।

यूरोप में बेपर्दा औरतों की बदहाली

हमारी मुसलामान औरतें यह न समझें कि ग़ैर-मुस्लिम समाज में पर्दा नहीं जिसकी वजह से उनको आज़ादी मिल गई। नहीं हर्गिज़ ऐसी बात नहीं है। मैंने यूरोप में एक फ़ैक्ट्री में देखा कि सामान उठाकर एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाने के लिए चार

लड़के थे वे भी बोरियों को कमर पर रखकर ले जा रहे थे और दो लड़कियाँ थीं। उन्होंने भी अपनी कमर पर अपनी बोरी उठाई हुई थी और वे भी चल रही थीं तो मैंने उस फ़ैक्ट्री के मेनेजर से कहा कि क्या कम समझी है कि आपने लड़कियों को यह काम दे दिया। वह कहने लगा जी अगर काम नहीं करेंगी तो फिर खाएंगी कहाँ से? औरत को आज़ादी मिली कि अब वह बोरियाँ उठाकर क़ुलियों की तरह फ़ैक्ट्री मे काम कर रही हैं। क्या इसी का नाम आज़ादी है?

देखिए पाकिस्तान में एनएलसी के बड़े-बड़े ट्रेलर कराची से पेशावर तक चलते हैं। उस साइज़ के बड़े-बड़े ट्रेलर यूरोप में लड़कियाँ भी चलाती हैं। जिस तरह ड्राइवर रास्ते में किसी जगह रात होने पर चाय-पानी पी लेते हैं और चारपाई बिस्तर किराए पर लेकर सो जाते हैं बिल्कुल इसी तरह चारपाई बिस्तर किराए पर लेकर ड्राइवर लड़कियाँ सो जाती हैं। यह औरत को इज़्ज़त मिली या ज़िल्लत मिली? फ़ैसला आप खुद कर लीजिए।

औरत घर की मलिका

इस्लाम ने औरत पर रोज़ी कमाना ज़िंदगी में कभी फ़र्ज़ नहीं किया। बेटी है तो बाप का फ़र्ज़ है कि वह बेटी को रोटी कमाकर खिलाए अगर बहन है तो भाई पर फ़र्ज़ है कि कमाकर लाए अगर बीवी है तो ख़ाविंद का फ़र्ज़ है कि कमाकर लाए अगर माँ है तो औलाद की ज़िम्मेदारी है कि वह कमाए और अपनी माँ को लाकर खाना खिलाए। गोया औरत पर पूरी ज़िंदगी में इस्लाम ने रोज़ी कमाने का बोझ नहीं डाला बल्कि उसके क़रीबी महरम मर्दों की ज़िम्मेदारी लगाई कि तुम ने कमाना है और इस औरत को घर में

लाकर देना है। यह घर की मलिका बनकर रहेगी, बच्चों की तर्बियत करेगी और घर की ज़िंदगी के तमाम मामलात को संभालेगी। अब बताइए कि किस समाज ने औरत को ज़्यादा आसानी दी, इस्लाम ने या यूरोप ने?

इस्लाम में औरत के साथ नरमी क्यों

अगर आप ग़ौर करें तो यह बात बहुत साफ़ नज़र आएगी कि इस्लाम ने औरत के साथ नरमी का मामला बरता है। इसलिए कि मर्द को अल्लाह तआला ने ताक़त दी, औरत को उसके मुक़ाबले में जिस्मानी ऐतबार से कमज़ोरी दी, नज़ाकत दी। लिहाज़ा औरत की ज़िम्मेदारियाँ भी उसी तरह की हैं जिस तरह अल्लाह ने उसका जिस्म बनाया और मर्द की ज़िम्मेदारियाँ भी उसी तरह की हैं जिस तरह अल्लाह ने उसका जिस्म सख़्त जान बनाया।

पाकिस्तान में एक अजीब परोपेगंडा

पिछले दिनों एक परोपेगंडा हमारे मुल्क में भी होता रहा कि इस्लाम में औरत को आधा शहरी तसव्वुर किया जाता है यानी औरत की दइय्यत आधी होती है और औरत की गवाही आधी होती है। यह ऐसा सवाल है कि कालिजों, युनिवर्सिटियों और स्कूलों में लड़कियाँ एक दूसरे से पूछती हैं। अगर आप ग़ौर करें तो यह मामला बहुत आसानी से समझ में आने वाला है। मैं इन पर थोड़ी सी रोशनी डाल देता हूँ।

अगर कोई क़ातिल मक़्तूल को इरादे से क़त्ल करे तो उसे 'क़त्ले अम्द' कहते हैं और बग़ैर इरादे के क़त्ल हो जाए तो उसे 'क़त्ल ख़ता' कहते हैं। क़त्ले अम्द हो तो उसका क़िसास अदा

करना पड़ता है और अगर क़त्ले ख़ता हो तो फिर उसकी दइय्यत आधी देनी पड़ती है। मतलब यह है कि अगर ख़ाविन्द मारा गया तो उसकी बीवी को उसकी दइय्यत मिलेगी और अगर बीवी मारी गई तो उसके ख़ाविन्द को उसकी दइय्यत मिलेगी।

दइय्यत के बारे में शरियत का हुक्म

शरियत का हुक्म यह है कि अगर ख़ाविंद मरेगा तो बीवी को पूरी दइय्यत अदा की जाएगी और अगर बीवी मरेगी तो ख़ाविन्द को उसका आधा दिया जाएगा। इस सूरत में रोना तो मर्दों को चाहिए था कि देखो जी हमारे साथ नाइंसाफ़ी हुई है। हम मरेंगे तो औरत को पूरा हिस्सा मिलेगा, औरत मरी तो हमें आधा हिस्सा मिलेगा। मर्दों ने तो क्या रोना था उल्टा ग़लत फ़हमी औरतों में डाल दी गई कि जी औरत की दइय्यत आधी होती है। ओ अल्लाह क़ी बंदी! औरत की दइय्यत आधी होती है तो पैसा मिल किसे रहा है। वह तो ख़ाविंद को मिल रहा है। जहाँ मर्द को मिलने का मामला था वहाँ अल्लाह तआला ने उसको आधा दिलवाया और जहाँ औरत के लेने का मामला था उसे मर्द से दुगना दिलवाया गोया औरत के साथ हमदर्दी की गई।

औरत की गवाही आधी होने में हिकमत

इसी तरह गवाही के मामले में कहते हैं कि औरत की गवाही आधी है। आपने देखा होगा कि लोग अपनी आँखों के सामने क़त्ल होते हुए देखते हैं लेकिन गवाह नहीं बनते किस लिए? कि कौन मुसीबत में पड़े? कौन गवाहियाँ भुगते? कौन अदालतों के चक्कर लगाए? और फिर क़ातिलों के साथ दुश्मनी कौन ले?

देखने में भी आया है कि लोग तो अदालत के अंदर गवाहों को क़त्ल करते हैं। उनकी जान, माल, इज़्ज़त, आबरू हर चीज़ ख़तरे में होती है। गोया गवाही देना एक बोझ है। इसलिए बहुत से लोग इस बोझ को अदा करने से कतराते हैं और देखने के बावजूद ख़ामोश हो जाते हैं, किसी को कुछ नहीं कहते। जहाँ मर्द ने गवाही देनी थी तो हुक्म दिया कि तुम्हारी गवाही पूरी गवाही होगी, तुम्हारे सिर पर पूरा बोझ रखा जाएगा। औरत ने गवाही देनी थी तो फ़रमाया कि हम पूरा बोझ तुम्हारे ऊपर नहीं रखते, तुम दो औरतें आधा-आधा बोझ मिलकर उठा लो ताकि अगर कोई तुम्हारे साथ दुश्मनी करे तो वह एक ख़ाविंद के साथ नहीं बल्कि दो ख़ाविंदों के साथ दुश्मनी ले रहा होगा। तुम्हारे ऊपर जो बोझ आएगा वह आधा बोझ होगा। गोया औरत के साथ नरमी की गई वरना अगर औरत को कह दिया जाता कि आपने पूरी गवाही देनी है तो ये फिर रोती फिरतीं कि जी इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी मेरे सिर पर डाल दी। अल्लाह तआला ने औरत के साथ नरमी का मामला किया कि गवाही देने का वक़्त आया, बोझ उठाने का वक़्त आया तो कहा कि अब दो ख़ानदान मिलकर यह बोझ उठा लें ताकि औरत को हिफ़ाज़त ज़्यादा मिल सके। उसके जान, माल, इज़्ज़त, आबरू की ज़्यादा हिफ़ाज़त हो सके। अगर इन दो मसाइल पर ग़ौर करें तो साफ़ तौर पर वाज़ेह होगा कि अल्लाह तआला ने औरत के साथ नरमी का मामला किया है।

बहुत अच्छा सवाल

एक दफ़ा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में एक औरत आकर अर्ज़ करने लगी ऐ अल्लाह के नबी! मर्द लोग तो

नेकियों में हम से बहुत आगे बढ़ गए। पूछा वह कैसे? कहने लगी कि जी, ये आपके साथ जिहाद में शरीक रहते हैं, सारी-सारी रात जागकर दुश्मन की सरहद पर पहरा देते हैं और हम घरों के अंदर उनके बच्चो की परवरिश करती रहती हैं, उनको पकाकर खिलाती हैं, उनकी तर्बियत का ख़्याल रखती हैं, उनके जान व माल, इज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त करती हैं। हम जिहाद में दुश्मनों के सामने इस तरह पहरा नहीं देतीं। इसी तरह हम क़िताल नहीं करतीं जिस तरह मर्द करते हैं। ये तो नेकियों में हम से आगे बढ़ गए। ये तो मस्जिदों में जाकर जमाअत के साथ नमाज़ें पढ़ते हैं जबकि हम घरों में ही में नमाज़ पढ़ लेती हैं। हम तो जमाअत के सवाब से भी महरूम हो गयीं। जब उन्होंने सवाल पूछा तो अल्लाह के प्यारे नबी ने फ़रमाया कि सवाल पूछने वाली ने बहुत अच्छा सवाल पूछा।

बहुत अच्छा जवाब

अल्लाह के नबी ने फ़रमाया कि जो औरत अपने घर में अपने बच्चे की वजह से रात को जागती है तो अल्लाह तआला उसे मुजाहिद के बराबर अज्र अता फ़रमा देते हैं जो सारी रात जागकर दुश्मन की सरहद पर पहरा दिया करता है। घर के नरम बिस्तर पर औरत को बैठे हुए अल्लाह तआला ने जिहाद का सवाब अता फ़रमा दिया और फ़रमाया कि जो औरत अपने घर में नमाज़ पढ़ लेती है अल्लाह तआला उसे मर्द के बराबर अज्र अता फ़रमाते हैं जो मस्जिद में जाकर जमाअत के साथ तकबीर ऊला के साथ नमाज़ पढ़ता है।

औरतों की ज़िंदगी के मुख़्तलिफ़ दर्जे

आइए आपको औरत की ज़िंदगी के मुख़्तलिफ़ मौक़ों के अज्र व सवाब के बारे में बता देता हूँ ताकि यह वाज़ेह हो जाए कि इस्लाम ने औरत के साथ किस क़दर नरमी का मामला किया है।

लड़की की पैदाइश

शरियत का हुक्म है कि अगर बेटी घर में पैदा हुई तो अल्लाह तआला ने रहमत का दरवाज़ा खोल दिया। अगर दो बेटियाँ हो गयीं तो बाप के लिए पहले रहमत बन गयीं कि उनका बाप जन्नत में अल्लाह के प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम के इतना क़रीब होगा जैसे हाथ की दो उंगलिया एक दूसर के क़रीब होंगी।

कुँवारी लड़की की वफ़ात

हदीस पाक का मफ़हूम है कि जब कोई कुँवारी लड़की मर जाती है, माँ-बाप के घर रहती थी, फ़ौत हो गई तो क़यामत के दिन अल्लाह तआला उसको शहीदों की क़तार में खड़ा करेंगे। इसलिए कि यह कुँवारी थी, यह माँ बाप के घर रह रही थी, उसने अपनी इज़्ज़त व इफ़्फ़त की हिफ़ाज़त की। अभी उसने ख़ाविंद की घर नहीं देखा था, वह ऐश व आराम नहीं देखे जो ख़ाविंद के साथ मिलकर इंसान को नसीब होते हैं। यह क्योंकि महरूम रही इस वजह से अल्लाह तआला ने उस पर मेहरबानी कर दी कि

इसको 'शहीद आख़िरत' का दर्जा दे दिया। दुनिया में तो शहीद नहीं कहेंगे मगर क़यामत के दिन अल्लाह तआला शहीदों की क़तार में इसको खड़ा कर देंगे।

शादी-शुदा औरत के अज्र में इज़ाफ़ा

इससे आगे क़दम बढ़ाइए कि अगर इस बच्ची की शादी हो गई और यह अपने ख़ाविंद की फ़रमांबरदारी करती है और साथ ही अल्लाह की इबादत भी करती है तो फ़ुक़्हा ने मस्अला लिखा है कि कुँवारी औरत एक नामज़ पढ़ेगी तो एक नमाज़ का सवाब मिलेगा और शादी-शुदा होने के बाद नमाज़ पढ़ेगी तो इक्कीस नमाज़ों को सवाब अता किया जाएगा। इसलिए कि अब इस पर दो ख़िदमतें ज़रूरी हो गयीं, एक ख़ाविंद की और एक अल्लाह तआला की इबादत। जिसकी वजह से दो बोझ पड़ गए। जब यह ख़ाविंद की ख़िदमत करते हुए अल्लाह की इबादत करेगी तो अल्लाह तआला इसकी इबादत के अज्र व सवाब को बढ़ा देंगे। देखा! एक नमाज़ पढ़ेगी मगर इक्कीस नमाज़ों का सवाब पाएगी।

अल्लाह तआला की सिफ़ारिश

अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक में मर्दों से सिफ़ारिश की है। औरतों के बारे में फ़रमाया ﴿عَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ﴾ तुमने इन औरतों के साथ अच्छे तरीक़े से ज़िंदगी गुज़ारनी है। देखिए आज किसी की सिफ़ारिश उसकी बहन करती है, किसी की सिफ़ारिश उसकी माँ करती है, किसी की सिफ़ारिश उसकी ख़ाला करती है, किसी की सिफ़ारिश उसकी फूफी करती है, अज़ीज़ व अक़ारिब करते हैं लेकिन औरतों की सिफ़ारिश अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त अपने क़ुरआन

में ख़ुद फ़रमा रहे हैं। फ़रमाया ﴿عَاشِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ﴾ ऐ मर्दो! तुमने औरतों के साथ अच्छे अख़्लाक़ और अच्छे अंदाज़ के साथ ज़िंदगी बसर करनी है।

हमल के ठहरने पर गुनाहों की बख़्शिश

अगर यह औरत अपने ख़ाविंद के साथ अच्छे अंदाज़ में ज़िंदगी बसर कर रही थी हत्ताकि उस औरत को उम्मीद लग गई। तो हदीस पाक का मफ़्हूम है कि जिस लम्हे इस औरत को हमल हुआ उसी लम्हे अल्लाह तआला उस औरत के पिछले तमाम गुनाहों को माफ़ फ़रमा देते हैं। इसलिए अब कुछ अर्सा यह बीमारी की हालत में गुज़रेगी क्योंकि हमल का ज़माना औरत के लिए बीमारी का ज़माना हुआ करता है। इसलिए अल्लाह तआला ने मेहरबानी फ़रमा दी कि जैसे ही हामला हुई उसी लम्हे अल्लाह तआला ने उसकी ज़िंदगी के पिछले गुनाहों को माफ़ कर दिया।

हमल के दौरान कराहने का अज्र

अगर यह अपने बच्चे को पेट में लिए हुए फिर रही है और घर के काम-काज कर रही है और थकन की वजह से उसकी ज़बान से कराहने की आवाज़ निकलती है मसलन 'हूँ', 'हूँ' की आवाज़ निकलेगी लेकिन अल्लाह फ़रिश्तों को फ़रमाते हैं कि मेरी बंदी एक बड़े बोझ को संभाल रही है और तकलीफ़ की वजह से उसकी ज़बान से 'हूँ', 'हूँ' की आवाज़ निकल रही है। तुम इसकी बजाए 'सुब्हानअल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह, अल्लाहु अकबर' कहने का सवाब इसके आमालनामे में लिख दो।

बच्चे की पैदाईश के दर्द पर अज्र व सवाब

अगर बच्चे की पैदाईश का वक़्त क़रीब हो तो यह औरत दर्दें महसूस कर रही है। हदीस पाक में आया है कि हर दफ़ा औरत को जो दर्द महसूस होता है उसके बदले अल्लाह तआला उसको एक अरबी नस्ल ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब अता फ़रमाते हैं जबकि दूसरी हदीसों का मफ़हूम है कि जिसने किसी एक ग़ुलाम को आज़ाद किया अल्लाह तआला उसको जहन्नम से बरी फ़रमा देते हैं। अब देखिए कि औरत के साथ कितनी नरमी का मामला किया गया कि हर हर दर्द के उठने पर एक अरबी नस्ल ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब लिखा गया।

ज़चगी दौरान के मरने वाली औरत शहीद है

अगर बच्चे की पैदाईश के दौरान यह औरत फ़ौत हो गई तो हदीस पाक में आता है कि यह औरत शहीद मरी। क़यामत के दिन इसको शहीदों की क़तार में खड़ा किया जाएगा।

बच्चे की पैदाईश पर गुनाहों की बख़्शिश

अगर बच्चा सही पैदा हो गया, जच्चा-बच्चा ख़ैरियत से हैं तो हदीस पाक का मफ़हूम है कि अल्लाह तआला एक फ़रिश्ते को हुक्म देते हैं जो उस औरत को आकर कहता है ऐ माँ! अल्लाह तआला ने तुझे गुनाहों से ऐसे पाक कर दिया जैसे तू उस दिन पाक थी जब तू अपनी माँ के पेट से पैदा हुई थी। देखा उसने अगर अपने बच्चे की ख़ातिर यह तकलीफ़ उठाई तो अल्लाह तआला ने इसका कितना बड़ा अज्र दिया कि उसके पिछले गुनाहों को इस तरह धो दिया गया कि जिस तरह वह अपनी माँ के पेट

से पैदा हुई थी तो उस दिन मासूम थी।

बच्चे को पहला लफ़्ज़ 'अल्लाह' सिखाने पर अज्र

अच्छा अब अगर यह औरत अपने बच्चे की अच्छी तर्बियत करती है, उसको 'अल्लाह', 'अल्लाह' का लफ़्ज़ सिखाती है तो हदीस पाक का मफ़्हूम है कि जो बच्चा अपनी ज़िंदगी में सबसे पहले अपनी ज़बान से 'अल्लाह' का लफ़्ज़ निकालता है तो अल्लाह तआला माँ-बाप के पिछले तमाम गुनाहों को माफ़ फ़रमा देते हैं। यह कितना आसान काम है कि जब बच्चे को उठाए तो 'अल्लाह', 'अल्लाह' का लफ़्ज़ कहा। आज हमारी बहू बेटियाँ बच्चे के सामने 'मम्मी' का लफ़्ज़ कहेंगी और कोई ज़्यादा मार्डन होगी तो वह कहेगी 'टविंकल टविंकल लिटिल स्टार'। इस मस्अले का पता नहीं अगर हम इस बच्चे के सामने 'अल्लाह', 'अल्लाह' का लफ़्ज़ बोला तो अल्लाह तआला हमारे पिछले तमाम गुनाहों को माफ़ फ़रमा देंगे।

बच्चे को नाज़रा क़ुरआन पाक पढ़ाने की फ़ज़ीलत

अगर इस औरत ने बच्चे को क़ुरआन पाक पढ़ाने के लिए भेजा हत्ताकि वह बच्चा क़ुरआन पाक नाज़रा पढ़ गया तो जिस लम्हे वह नाज़रा क़ुरआन पाक पूरा करेगा अल्लाह तआला उसी वक़्त उसके माँ-बाप के गुनाहों को माफ़ फ़रमा देंगे।

बच्चे को क़ुरआन पाक हिफ़्ज़ कराने की फ़ज़ीलत

अगर बेटे या बेटी को क़ुरआन पाक हिफ़्ज़ करने के लिए

डाला और वह हाफ़िज़ बन गया या बेटी हाफ़िज़ा बन गई तो हदीस पाक का मफ़हूम है कि अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसके माँ-बाप को नूर का ऐसा ताज पहनाएंगे कि जिसकी रोशनी सूरज की रोशनी से भी ज़्यादा होगी बल्कि सूरज किसी के घर में आ जाए तो इतनी रोशनी नहीं होगी जितना कि उस नूर के बने हुए ताज की रोशनी होगी। लोग हैरान होंगे, वे पूछेंगे कि यह कौन है? उनको कहा जाएगा कि यह तो अंबिया भी नहीं, शहीद भी नहीं बल्कि वह ख़ुशनसीब वालदैन हैं जिन्होंने अपने बेटे या बेटी को क़ुरआन पाक हिफ़्ज़ कराया था। आज अल्लाह तआला ने नूर के बने हुए ताज उनके सिरों पर रख दिए। देखा औरत को क़दम-क़दम पर अज्र व सवाब मिल रहे हैं।

घरेलू काम-काज पर अज्र

औरत को अपने घर के काम-काज करती है तो घर के काम-काज करने पर भी अज्र व सवाब अता किया जाता है। मसलन कौनसी औरत है जो घर के अंदर सफ़ाई का काम नहीं करती, घर के अंदर अपने कपड़े नहीं धोती या घर के अंदर खाना वग़ैरह नहीं पकाती। यह काम तो सब ही औरतें घर में करती हैं। इस पर भी औरत को अज्र व सवाब अता किया जाता है। एक हदीस पाक अर्ज़ कर रहा हूँ। फ़रमाया गया कि जो औरत अपने ख़ाविंद के घर में कोई बेतर्तीब पड़ी हुई चीज़ को उठाकर तर्तीब के साथ रख देती है तो अल्लाह तआला एक नेकी अता फ़रमाते हैं। एक गुनाह माफ़ फ़रमाते हैं और जन्नत में एक दर्जा बुलंद फ़रमा देते हैं। देखा अब औरतें रोज़ाना कितनी चीज़ों को तर्तीब से घर में रखती हैं। किचन की चीज़ों को ले लें। मेरा ख़्याल है

पचास चीज़ों को तर्तीब से रखती होंगी।

घरेलू काम-काज पर अज्र न मिलने की वजह

औरतों को नियत करने का पता नहीं होता है कि हमने किस नियत से काम करना है। आज औरतें किस नियत से घरों को साफ़ रखती है? ओ जी लोग क्या कहेंगे, लोग कहेंगे कि यह तो गंदी ही बनी रहती है। जब औरत इस नियत के साथ घर को साफ़ सुथरा रखेगी तो उसे ज़र्रा बराबर भी सवाब नहीं मिलेगा। इसलिए कि इसने तो लोगों को दिखाने के लिए काम किया।

नियत सही होना एक अहम मस्अला

नियत ठीक करना एक मुस्तक़िल मस्अला है। आज औरतों को नियत सही करने का सबक़ नहीं सिखाया जाता कि किस नियत के साथ उन्होंने सफ़ाई करनी है। याद रखें कि नियत ठीक होगी तो सवाब मिल जाएगा, नियत ठीक नहीं होगी तो सवाब नहीं मिलेगा।

मिसाल : नियत का ठीक करना क्योंकि अहम मस्अला है। इसलिए इसको एक मिसाल से वाज़ेह कर दिया जाता है। उलमा ने लिखा है कि अगर कोई आदमी घर बनाए और कमरे के अंदर खिड़की लगवाए, रोशनदान बनवाए मगर नियत यह हो मुझे इसमें से हवा आएगी और रोशनी आएगी। इस आदमी को हवा और रोशनी तो मिलेगी मगर सवाब बिल्कुल नहीं मिलेगा। इसलिए कि जब इसने नियत ही हवा और रोशनी की की तो वह चीज़ उसको मिल गई। मगर एक दूसरा आदमी अपना कमरा बनवाता है।

उसमें खिड़की या रोशनदान लगवाता है और नीयत करता है कि मुझे इसमें से अज़ान की आवाज़ कमरे में सुनाई दिया करेगी तो उलमा ने लिखा है कि उसको उसका अज्र व सवाब भी मिलेगा और हवा और रोशनी तो उसको मुफ़्त मिल जाएगी।

मिसाल : एक और मिसाल समझें कि एक औरत घर में खाना पका रही है। अगर खाना बनाते हुए उसने सालन में एक घूँट पानी ज़्यादा डाल दिया तो उलमा ने मस्अला लिखा है कि जितना पानी मुनासिब था घर के सब लोगों के लिए उतना पानी डालने के बाद अगर वह एक घूँट पानी और डाल देती है, इस नीयत के साथ कि शायद कोई मेहमान आ जाए, शायद किसी पड़ौसी को खाना देना पड़ जाए। इस नीयत के साथ अगर एक घूँट पानी उसने सालन में डाल दिया तो इस औरत को मेहमान के लिए खाना पकाने का सवाब अता किया जाएगा। अब बताओ कौन सी औरत है जो यह सवाब नहीं ले सकती? सब ले सकती हैं मगर दीन का इल्म न होने की वजह से इन सवाबों से महरूम रह जाती हैं। इसीलिए तो अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿طلب العلم فريضة على كل مسلم و مسلمة﴾

इल्म का तलब करना हर मुसलमान मर्द व औरत पर फ़र्ज़ है।

गोया औरतों पर भी फ़र्ज़ है कि दे दीन का इल्म हासिल करें और ये बेचारियाँ दीन से इस क़दर बेगानी रह जाती है कि उनको ग़ुस्ल के फ़राईज़ का पता नहीं होता, मसाइल सही पता नहीं होता।

घर की सफ़ाई किस नीयत से की जाए

आमतौर पर घर की सफ़ाई औरत इसलिए करती है कि जी लोग क्या कहेंगे कि बेवक़ूफ़ सी है, लोग कहेंगे कि इसको ज़रा अक़्ल नहीं है। नहीं अल्लाह की बंदी! इसलिए सफ़ाई न कर बल्कि नीयत कर ले कि अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ۝﴾

बेशक अल्लाह तआला तौबा करने वालों से भी मुहब्बत करता है और साफ़ सुथरा रहने वालों से भी मुहब्बत करता है। क्या मतलब? तौबा करने से तो दिल की सफ़ाई होती है और वैसे साफ़ रहने से बाहर की सफ़ाई होती है। गोया जो आदमी बाहर की सफ़ाई करेगा उससे भी अल्लाह राज़ी और जो दिल की सफ़ाई करेगा उससे भी अल्लाह राज़ी। औरतों को चाहिए कि अगर घर में झाड़ू दे रही हो तो नीयत यह कर लें कि अल्लाह तआला पाकीज़गी को और सफ़ाई को पसंद फ़रमाते हैं। शरियत का हुक्म है ﴿الطهور نصف الايمان﴾ सफ़ाई आधा ईमान है। आप दिल में नीयत यह कर लिया करें कि इसलिए घर की सफ़ाई कर हूँ कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया की पाकीज़गी आधा ईमान है और पाकीज़गी और साफ़ रहने वालों से अल्लाह तआला मुहब्बत करते हैं। आप इस नीयत से घर को साफ़ रखें, नगीना बनाकर रखें, घर के फ़र्नीचर को चमकाएं, कपड़ों को धो-धोकर रखें। आपको हर काम पर अज्र व सवाब मिलता चला जाएगा क्योंकि आपकी नीयत ठीक हो गई कि आपने अल्लाह की रज़ा के लिए सब कुछ किया है।

शादी के बाद माँ-बाप से मिलने की फ़ज़ीलत

वह कौन सी बेटी होगी जिसकी शादी हो और वह अपने माँ-बाप को मिलने न आए? सभी बेटियाँ आती ही हैं, मगर नीयत क्या होती है? जी बस मैं अम्मी से मिलने जा रही हूँ। हदीस पाक में आता है कि जिस बच्ची का शादी हो जाए और वह अपने माँ-बाप की ज़ियारत करने की नीयत कर ले कि मैं माँ-बाप से मिलने ज़ा रही हूँ और ख़ाविंद से इजाज़त लेकर जाए और दिल में यह हो कि इस अमल से अल्लाह राज़ी होंगे तो अल्लाह तआला हर क़दम पर उसको सौ नेकियाँ अता फ़रमा देते हैं, सौ गुनाह माफ़ कर देते हैं और जन्नत में सौ दर्जे बुलंद कर देते हैं।

अब बताइए कि बेटी अपने माँ-बाप की ज़ियारत के लिए इस नीयत से आ रही है कि इस अमल से अल्लाह राज़ी होंगे तो हदीस का मफ़हूम है हर क़दम उठाने पर उसे सौ नेकियाँ मिलेंगी, सौ गुनाह माफ़ होंगे और जन्नत में सौ दर्जे बुलंद कर दिए जाएंगे।

हदीस पाक में आया है कि अगर यह माँ-बाप के पास आई और उनके चहरे पर इसने अक़ीदत की निगाह डाली तो अल्लाह तआला हर नज़र डालने पर इसको एक हज या उमरे का सवाब अता फ़रमाएंगे। सहाबा किराम ने पूछा ऐ अल्लाह के नबी जो आदमी अपने माँ-बाप को बार-बार मुहब्बत और अक़ीदत की नज़र से देखे? अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जितनी बार देखेंगे उतनी बार हज या उमरे का सवाब आत किया जाएगा।

बच्चों की सही तर्बियत न होने की बुनियादी वजह

आज औरतें माँए तो बन जाती हैं लेकिन उनको यह पता नहीं होता कि बच्चे को तर्बियत कैसे देनी है। इस बेचारी ने खुद ही तर्बियत नहीं पाई होती। अपने बच्चे को क्या तर्बियत देगी। आज यही बुनियादी वजह है कि हमारे माहौल व समाज में बच्चों की सही तर्बियत नहीं होती। एक वक़्त था जब माँएं बच्चों की अच्छी तर्बियत के लिए ख़ूब कोशिश करती थीं। आज मैं आपको एक वाक़िआ सुना देता हूँ जिससे आपको अच्छी तरह अंदाज़ा हो जाएगा कि नेक औरतें बच्चों की कैसे तर्बियत करती थीं?

हज़रत ख़्वाजा बख़्तियार काकी रह०
के बचपन का वाक़िआ

देहली में एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं हज़रत ख़्वाजा बख़्तियार काकी रह०। यह मुग़ल बादशाहों के पीर समझे जाते हैं। मैंने उनका मज़ार देखा है, क़ुतब मीनार के बिल्कुल क़रीब है। इन्हीं के नाम पर क़ुतब मीनार बनाया गया। नाम तो था क़ुतबुद्दीन मगर काकी का लफ़्ज़ साथ कहा जाता है। काकी हिंदी ज़बान का लफ़्ज़ है और इसका मतलब रोटी होता है। तो उनका पूरा नाम ख़्वाजा बख़्तियार काकी रह० था।

उनके बचपन का मशहूर वाक़िआ है कि जब उन्होंने मदरसे जाना शुरू किया तो माँ-बाप ने सोचा कि क्यों न हम बच्चे की अच्छी तर्बियत करें। सबसे पहले उस बच्चे के दिल में यह बात बिठाई जाए कि अपने हर मामले में अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करे यानी उसको तौहीद सिखाएं। यह हर चीज़ अल्लाह से

मांगे, हर वक़्त अल्लाह से मांगे ताकि उसके दिल में अल्लाह के साथ तवक्कुल पैदा हो जाए। उसकी निगाहें मख़्लूक़ के बजाए ख़ालिक़ के साथ जुड़ी रहें। चुनाँचे माँ ने कहा कि अच्छा मैं एक हीला करती हूँ ताकि इस बच्चे के दिल में अल्लाह तआला की तरफ़ रुज्हान पैदा हो जाए। अगले दिन जब बच्चा मदरसे गया और वापस आया तो माँ ने खाना पकाकर पहले किसी बिस्तर में छिपा दिया। बच्चे ने कहा अम्मी मुझे भूख लगी है, मुझे खाना दे। उसने कहा बेटा! खाना तो अल्लाह से मांगो वह देगा। बच्चे ने कहा अम्मी! अल्लाह से कैसे मांगते हैं? कहा बेटा! यह मुसल्ला बिछाओ और यहाँ बैठकर अपने अल्लाह से दुआ मांगो तो अल्लाह तआला भेज देंगे। वह छोटा सा मासूम बच्चा मुसल्ला बिछाता है और उसके ऊपर अपने मासूम हाथ फैलाकर बड़ी लजाजत से दुआ मांगता है, "ऐ अल्लाह! मैं भूखा हूँ, मैं अभी स्कूल से आया हूँ, ऐ अल्लाह मुझे भूख लगी है तू मुझे खाना दे दे, ऐ अल्लाह मुझे खाना दे दे मुझे भूख लगी है।" बच्चा अपनी प्यारी मासूम ज़बान से यह दुआ मांग रहा है और माँ सिखा रही है। जब बच्चा दुआ मांग चुका तो माँ ने कहा बेटा! देखो तुम्हारी रोटी कहीं न कहीं अल्लाह ने रखवा दी होगी। चुनाँचे बच्चे ने ढूँढा तो बिस्तर में से उसे रोटी मिल गई। बच्चे ने खुश होकर खा ली। यह रोज़ाना का मामूल बन गया। माँ खुद रोटी पकाकर कभी अलमारी में छिपा देती, कभी बिस्तर में छिपा देती। बच्चा आता, मुसल्ला बिछाता, बैठकर अपने मासूम हाथ फैलाकर दुआ मांगता कि ऐ अल्लाह! मुझे भूख लगी है, मुझे रोटी दे दे। जब बच्चा दुआ मांगता तो फिर उसे ढूँढने से रोटी मिल जाती। माँ का दिल खुश होता कि मेरे बच्चे की तवज्जेह अल्लाह की तरफ़ हो रही है।

एक दफ़ा वह माँ रिश्तेदारों के घर किसी काम की गर्ज़ से

चली गई। वहाँ गई तो ऐसी मसरूफ़ हुई कि इस बात को भूल ही गई। जब ख़्याल आया तो कहा ओ हो! बच्चा तो मदरसे से वापस आ चुका होगा। मेरे बेटे को भूख लगी होगी और मैं तो आज खाना पकाकर रखकर नहीं आई। पता नहीं आज क्या मामला बनेगा। अब आँखों से आँसू टपक रहे हैं और दिल परेशान है। तेज़ी से क़दम उठाती हुई और दुआएं करती हुई जा रही है। ऐ अल्लाह! मैंने तो बच्चे का यक़ीन और ईमान तेरे साथ मज़बूत बनाना था, मुझसे ख़ता हुई, भूल गई, मैं उसके लिए खाना पकाकर नहीं रख सकी, मेरा बेटा आया होगा, उसने दुआ मांगी होगी, ऐ अल्लाह! तू मेरा राज़ फ़ाश न करना। चुनाँचे माँ रो भी रही है और घर की तरफ़ चल भी रही थी। जब घर पहुँची तो देखती है उसका बेटा तो बड़े मज़े की नींद सो रहा है। वह सोचने लगी भूखा तो था शायद इसलिए सो गया। उसने जल्दी से रोटी बनाई और एक जगह छिपा दी। इतने में बच्चा उठा, माँ ने कहा बेटा तुझे तो बहुत भूख लगी होगी। उसने कहा अम्मी! मैं मदरसे से आया था और मैंने मुसल्ला बिछाकर अल्लाह से दुआ मांगी ऐ अल्लाह! मुझे भूख लगी है तू मुझे रोटी दे दे। आज अम्मी भी नहीं है, तू मुझे अच्छी सी रोटी दे दे और जब मैंने इधर-उधर देखा तो मुझे बिस्तर पर पड़ा हुआ ऐसा खाना मिला कि अम्मी! जो मज़ा मुझे आज आया है पहले कभी नहीं आया था।

देखा यूँ एक वक़्त था जब माँए अपने बच्चे का यक़ीन बनाया करती थीं।

लम्हाए फ़िक्र

आज कोई माँ है जो कहे कि मैं बच्चे का यक़ीन अल्लाह के साथ बनाती हूँ? है कोई माँ जो कहे कि मैं तो सुबह शाम खाना

खिलाते हुए अपने बच्चे को तर्ग़ीब देती हूँ कि हर हाल में सच बोलना है? इन चीज़ों की तरफ़ तवज्जेह ही नहीं होती। बाप ज़रा सी नसीहत कर दे तो माँ फ़ौरन कहती है, बड़ा होगा तो ठीक हो जाएगा हालाँकि बचपन की बुरी आदतें बचपन में भी नहीं छूटती। आज तर्बियत न होने की वजह से जब औलाद बड़ी होती है तो वह अपने बाप से यूँ नफ़रत करती है कि जैसे पाप से नफ़रत की जाती है।

एक वक़्त था कि औरत सुबह की नमाज़ पढ़ा करती थी और बच्चों को अपनी गोद में लेकर सूरः यासीन पढ़ रही होती थी, कभी सूरः वाक़िआ पढ़ रही होती थी। उस वक़्त बच्चे के दिल में अनवारात उतर रहे होते थे। आज वे माँऐं कहाँ गयीं जो सुबह के वक़्त बच्चे को गोद में लेकर क़ुरआन पढ़ा करती थीं। आज तो सूरज निकल जाता है मगर बच्चा भी सोया हुआ होता है और माँ भी सोई हुई होती है। शाम का वक़्त होता है बच्चे को गोद में डाल, इधर सीने से लगाकर दूध पिला रही है साथ ही बैठी टीवी पर ड्रामा देख रही होती है। ऐ माँ! जब तू ड्रामे में ग़ैर-महरम मर्दों को देखेगी, संगीत सुनेगी और ग़लत काम करेगी और ऐसी हालत में बेटे को दूध पिलाएगी तो बता तेरा बेटा जुनैद बग़दादी कैसे बनेगा, बता तेरा बेटा अब्दुल क़ादिर जिलानी कैसे बनेगा?

एक सहाबिया का क़ुरआन पाक से लगाव

सुनिए और दिल के कानों से सुनिए जिस तरह मर्द इबादत करके अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का ताल्लुक़ हासिल कर सकता है उसी तरह औरत भी इबादत करके अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का ताल्लुक़ और उसकी माअरिफ़त हासिल कर सकती है। एक सहाबिया ने

तन्दूर पर रोटियाँ पकवायीं और उनको अपने सिर पर रखा और चलते हुए कहने लगीं मेरे तो तीन पारे भी पूरे हो गए और मेरी रोटियाँ भी पक गयीं। तब पता चला कि यह औरत जितनी देर रोटी पकने के इंतिज़ार में बैठती थीं उनकी ज़बान पर क़ुरआन जारी रहता था। यहाँ तक कि इस दौरान तीन-तीन पारे क़ुरआन की तिलावत कर लिया करती थीं।

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का इबादत का ज़ौक़

एक वक़्त था कि औरतें सारा दिन घर के काम-काज में मसरूफ़ रहती थीं और जब रात आती थी तो मुसल्ले के ऊपर रात गुज़ार दिया करती थीं। सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में आता है कि सर्दियों की लम्बी रात थी, ईशा की नमाज़ पढ़ कर दो रकअत नफ़्ल की नीयत बाँध ली। तबियत में ऐसा सुरूर था, ऐसा मज़ा था, तिलावत क़ुरआन में ऐसी हलावत नसीब हुई कि पढ़ती रहीं यहाँ तक कि जब सलाम फेरा तो देखा कि सुबह का वक़्त होने को है तो रोने बैठ गयीं और यह दुआ करने लगीं कि ऐ अल्लाह! तेरी रातें भी कितनी छोटी हो गयीं कि मैंने दो रकअत की नीयत बाँधी और तेरी रात ख़त्म हो गई।

एक वे औरतें थीं जिनको रातों के छोटा होने की शिकायत हुआ करती थी। एक आज हमारी माँए बहने हैं जिनमें से क़िस्मत वालियों को पाँच वक़्त की नमाज़ पढ़ने की तौफ़ीक़ नसीब होती है।

चाश्त की नमाज़ और रिज़्क़ में बरकत

एक वक़्त था जब कि ख़विन्द हज़रात तिजारत के लिए घर

से निकला करते थे उनकी बीवियाँ मुसल्ले पर बैठकर चाश्त की नमज़ें पढ़ा करती थीं। उनकी बीवियाँ अपने दामन फैलाकर अल्लाह से दुआएं मांगती थीं, ऐ अल्लाह! मेरा ख़ाविंद इस वक़्त रिज़्क़े हलाल के लिए घर से निकल पड़ा है, उसको रिज़्क़ में बरकत अता फ़रमा, उसके काम में बरकत अता फ़रमा। औरत रो रोकर दुआ मांग रही होती थी। अल्लाह तआला मर्द के काम में बरकत दे देते थे।

खुलासाए कलाम

मुसलमान समाज में औरत घर की मलिका का दर्जा रखती है। लिहाज़ा घर के माहौल का दारोमदार औरत की दीनदारी पर टिका होता है। औरतें अगर नेक होंगी तो बच्चों को भी दीनी रंग में रंग देंगी। बस मुसलमान लड़कियों और औरतों की दीनी तालीम और अख़्लाक़ी तर्बियत पर ख़ासतौर मेहनत की ज़रूरत है। किसी ने सच कहा, 'मर्द पढ़ा फ़र्द (अकेला) पढ़ा, औरत पढ़ी ख़ानदान पढ़ा।' अंग्रेज़ दानिश्वरों में से किसी का क़ौल है कि "तुम मुझे अच्छी माँए दो मैं तुम्हें अच्छी क़ौम दूँगा।" उम्मते मुस्लिमा को आजकल मुसलमान लड़कियों की दीनी तालीम व तर्बियत पर मेहनत करने की निस्बतन ज़्यादा ज़रूरत है ताकि हमारी आने वाली नस्लें माँ की गोद से ही दीन की मुहब्बत और उम्दा अख़्लाक़ की दौलत पाएं और दुनिया के आसमान पर चाँद व सूरज की तरह नूर बरसाएं।

❁ ❁ ❁